हिंदी कोर

कक्षा XII

2025-26

विद्यार्थी सहायक सामग्री
Student Support Material

केन्द्रीय विद्यालय संगठन~Kendriya Vidyalaya Sangathan

संदेश

विद्यालयी शिक्षा में शैक्षिक उत्कृष्टता प्राप्त करना एवं नवाचार द्वारा उच्च–नवीन मानक स्थापित करना केन्द्रीय विद्यालय संगठन की नियमित कार्य प्रणाली का अविभाज्य अंग है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं पी.एम. श्री विद्यालयों के निर्देशों का पालन करते हुए गतिविधि आधारित पठन-पाठन, अनुभवजन्य शिक्षण एवं कौशल विकास को समाहित कर, अपने विद्यालयों को हमने ज्ञान एवं खोज की अद्‌भुत प्रयोगशाला बना दिया है। माध्यमिक स्तर तक पहुँचकर हमारे विद्यार्थी सैद्धांतिक समझ के साथ-साथ, रचनात्मक-विश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक चिंतन भी विकसित कर लेते हैं। यही कारण है कि वह बोर्ड कक्षाओं के दौरान विभिन्न प्रकार के मूल्यांकनों के लिए सहजता से तैयार रहते हैं। उनकी इस यात्रा में हमारा सतत योगदान एवं सहयोग आवश्यक है। केन्द्रीय विद्यालय संगठन के पांचों आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा संकलित यह विद्यार्थी सहायक-सामग्री इसी दिशा में एक आवश्यक कदम है। यह सहायक-सामाग्री कक्षा 9 से 12 के विद्यार्थियों के लिए सभी महत्वपूर्ण विषयों पर तैयार की गयी है। केन्द्रीय विद्यालय संगठन की विद्यार्थी सहायक-सामग्री अपनी गुणवत्ता एवं परीक्षा संबंधी सामग्री संकलन की विशेषज्ञता के लिए जानी जाती है और शिक्षा से जुड़े विभिन्न मंचों पर इसकी सराहना होती रही है। मुझे विश्वास है कि यह सहायक सामग्री विद्यार्थियों की सहयोगी बनकर निरंतर मार्गदर्शन करते हुए उन्हें सफलता के लक्ष्य तक पहुँचाएगी।

शुभाकांक्षा सहित।

निधि पांडे
आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन

PATRON

Smt. Nidhi Pandey, Commissioner, KVS

CO-PATRON

Dr. P. Devakumar, Additional Commissioner (Acad.), KVS (HQ)

CO-ORDINATOR

Ms. Chandana Mandal, Joint Commissioner (Training), KVS (HQ)

COVER DESION

KVS Publication Section

EDITORS:

1. Mr. B L Morodia, Director, ZIET Gwalior
2. Ms. Menaxi Jain, Director, ZIET Mysuru
3. Ms. Shaheeda Parveen, Director, ZIET Mumbai
4. Ms. Preeti Saxena, In-charge Director, ZIET Chandigarh
5. Mr. Birbal Dhinwa, In-charge Director, ZIET Bhubaneswar

CONTENT CREATORS:

क्रम	शिक्षक का नाम	केन्द्रीय विद्यालय
1.	श्री रामनरेश मीना (पी जी टी, हिन्दी)	बीएसएफ, सुन्दरबनी (जम्मू संभाग)
2.	श्री संजय पुरोहित (पी जी टी, हिन्दी)	क्र.1 उधमपुर (जम्मू संभाग)

क्रम-सूची/ INDEX

सामग्री

क्रम-सूची/ INDEX 4
पाठ्यक्रम 6
अपठितबोध 8
गद्यांश-1 8
गद्यांश-2 9
गद्यांश-3 9
गद्यांश-4 11
गद्यांश-5 12
पद्यांश – 1 13
पद्यांश – 2 14
पद्यांश – 3 15
पद्यांश – 4 16
पद्यांश – 5 17
पाठ-1: आत्म-परिचय व एकगीत→ हरिवंशरायबच्चन 18
पाठ-2: पतंग → आलोक धन्वा 24
पाठ-3: कविता के बहाने, बात सीधी थी पर→कुँवरनारायण 28
पाठ-4: कैमरे में बंद अपाहिज→रघुवीर सहाय 31
पाठ-5: उषा→शमशेरबहादुरसिंह 35
पाठ-6: बादल राग→सूर्यकांत त्रिपाठी निराला 37
पाठ-7: कवितावली व लक्ष्मणमूर्च्छा→तुलसीदास 40
पाठ-7: लक्ष्मण मूर्च्छा और राम का विलाप→तुलसीदास 43
पाठ 8: रुबाईयाँ→फिराक गोरखपुरी 46
पाठ 9: छोटा मेरा खेत→उमाशंकर जोशी 48
पाठ 9: बगुलों के पंख →उमाशंकर जोशी 50
आरोहभाग-2 गद्यखंड 51
पाठ 10: भक्तिन→ महादेवी वर्मा 51
पाठ 11: बाज़ार दर्शन→जैनेंद्र कुमार 55
पाठ 12: काले मेघा पानी दे→धर्मवीर भारती 60
📘 पाठ 13: पहलवान की ढोलक ✍️ लेखक: फणीश्वरनाथ 'रेणु' 66
📘 पाठ 14: शिरीष के फूल ✍️ लेखक: आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी 68
📘 पाठ 15: श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा ✍️ डॉ. भीमराव आंबेडकर 71
📘 पाठ 15: मेरी कल्पना का आदर्श समाज ✍️ डॉ. भीमराव अंबेडकर के दृष्टिकोण से 74
वितान भाग-2 79
1-सिल्वर वेडिंग→ मनोहर श्याम जोशी 79
2-जूझ-आनंद यादव 80

3-अतीत में दबे पाँव-ओम थानवी 82
अभिव्यक्ति और माध्यम 84
3-विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन 84
4-पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया 89
5-विशेष-लेखन स्वरुप एवं प्रकार 96
11-कैसे करें कहानी का नाट्य रूपांतरण 99
12-कैसे बनता है रेडियो नाटक 103
13. नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन 105
प्रतिदर्श प्रश्न पत्र, सत्र-2025-26 (सेट-1) 114
प्रतिदर्श प्रश्न पत्र,सत्र-2025-26 (सेट-2) 122
प्रतिदर्श प्रश्न पत्र, सत्र-2025-26 (सेट- 3) 134
प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र, 2025-26 (सेट- 4) 145
प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र 2025-26 (सेट-5) 155

पाठ्यक्रम

हिंदी (आधार)
विषय कोड – 302
कक्षा 12वीं (2025 -26)
परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम विनिर्देशन

- **प्रश्न -पत्र तीन खण्डों – खंड- क, ख और ग में होगा।**
- **खंड- क में अपठित बोध पर आधारित प्रश्न पूछे जाएँगे I सभी प्रश्नों के उत्तर देने होंगे।**
- **खंड- ख में अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए जाएँगे ।**
- **खंड- ग में आरोह भाग – 2 एवं वितान भाग – 2 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए जाएँगे ।**

भारांक-80 **निर्धारित समय – 03 घंटे**

वार्षिक परीक्षा हेतु भार विभाजन

	खंड-क (अपठित बोध)	18 अंक
1	01 अपठित गद्यांश (लगभग 250 शब्दों का) पर आधारित बोध, चिंतन, विश्लेषण पर बहुविकल्पीय प्रश्न, अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न, लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे I (बहुविकल्पीय प्रश्न 01 अंक x 03 प्रश्न = 03 अंक, अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न 01 अंक x 01 प्रश्न = 01 अंक, लघूत्तरात्मक प्रश्न 02 अंक x 03 प्रश्न = 06 अंक)	10 अंक
2	01 अपठित पद्यांश (लगभग 100 शब्दों का) पर आधारित बोध, सराहना, सौंदर्य, चिंतन, विश्लेषण आदि पर बहुविकल्पीय प्रश्न, अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे I (बहुविकल्पीय प्रश्न 01 अंक x 03 प्रश्न = 03 अंक, अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न 01 अंक x 01 प्रश्न = 01 अंक, लघूत्तरात्मक प्रश्न 02 अंक x 02 प्रश्न = 04 अंक)	08 अंक
	खंड- ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर) **पाठ संख्या 3, 4, 5, 11, 12 तथा 13 पर आधारित**	22 अंक
3	दिए गए 03 अप्रत्याशित विषयों में से किसी 01 विषय पर **आधारित** लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन (06 अंक x 01 प्रश्न)	06 अंक
4	**पाठ संख्या 3, 4, 5, 11 तथा 13 पर आधारित** (02 अंक x 04 प्रश्न= 08 अंक) (लगभग 40 शब्दों में), (04 अंक x 02 प्रश्न = 08 अंक) (लगभग 80 शब्दों में) (विकल्प सहित)	16 अंक
	खंड- ग (आरोह भाग – 2 एवं वितान भाग-2 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर)	40 अंक
5	पठित काव्यांश पर आधारित 05 बहुविकल्पी प्रश्न (01 अंक x 05 प्रश्न)	05 अंक
6	काव्य खंड पर आधारित 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 60 शब्दों में)	06 अंक

	(03 अंक x 02 प्रश्न)	
7	काव्य खंड पर आधारित 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (02 अंक x 02 प्रश्न)	04 अंक
8	पठित गद्यांश पर आधारित 05 बहुविकल्पी प्रश्न (01 अंक x 05 प्रश्न)	05 अंक
9	गद्य खंड पर आधारित 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 60 शब्दों में) (03 अंक x 02 प्रश्न)	06 अंक
10	गद्य खंड पर आधारित 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (02 अंक x 02 प्रश्न)	04 अंक
11	वितान के पाठों पर आधारित 03 में से 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 60 शब्दों में) (05 अंक x 02 प्रश्न)	10 अंक
13	**(अ) श्रवण तथा वाचन** **(ब) परियोजना कार्य**	10+10 = 20 अंक
कुल अंक		**100 अंक**

निर्धारित पुस्तकें :

1. **आरोह**, **भाग–2**, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित
2. **वितान**, **भाग–2**, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित
3. **'अभिव्यक्ति और माध्यम'**, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित

नोट – पाठ्यक्रम के निम्नलिखित पाठ हटा दिए गए हैं

आरोह भाग - 2	काव्य खंड	• गजानन माधव मुक्तिबोध – सहर्ष स्वीकारा है (पूरा पाठ) • फ़िराक गोरखपुरी – गज़ल
	गद्य खंड	• विष्णु खरे – चार्ली चैप्लिन यानी हम सब (पूरा पाठ) • रज़िया सज्जाद ज़हीर - नमक (पूरा पाठ)
वितान भाग - 2		• एन फ्रैंक - डायरी के पन्ने

कक्षा बारहवीं हेतु प्रश्नपत्र का विस्तृत प्रारूप जानने के लिए कृपया बोर्ड द्वारा जारी प्रतिदर्श प्रश्नपत्र देखें।

....

अपठितबोध

1.निम्नलिखित गद्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर लिखिए—

गद्यांश-1

सभी मनुष्य स्वभाव से ही साहित्य-स्रष्टा नहीं होते, पर साहित्य-प्रेमी होते हैं। मनुष्य का स्वभाव ही है सुंदर देखने का। घी का लड्डू टेढ़ा भी मीठा होता है, पर मनुष्य उसे गोल बनाकर सुंदर कर लेता है। मूर्ख-से-मूर्ख हलवाई के यहाँ भी गोल लड्डू ही प्राप्त होता है; लेकिन सुंदरता को सदा-सर्वदा तलाशने की शक्ति साधना के द्वारा प्राप्त होती है। उच्छृंखलता और सौंदर्य-बोध में अंतर है। बिगड़े दिमाग का युवक परायी बहू-बेटियों को घूरने को भी सौंदर्य-प्रेम कहता है, हालाँकि यह संसार की सर्वाधिक असुंदर बात है। जैसा कि पहले ही बताया गया है, सुंदरता सामंजस्य में होती है और सामंजस्य का अर्थ होता है—किसी चीज़ का बहुत अधिक और किसी का बहुत कम न होना। इसमें संयम की बड़ी ज़रूरत है। इसलिए सौंदर्य-प्रेम में संयम होता है, उच्छृंखलता नहीं। इस विषय में भी साहित्य ही हमारा मार्गदर्शक हो सकता है। जो व्यक्ति दूसरों के भावों का आदर करना नहीं जानता, उसे दूसरों से भी सद्भावना की आशा नहीं करनी चाहिए। मनुष्य कुछ ऐसी जटिलताओं में आ फँसा है कि उसके भावों को ठीक-ठीक पहचानना हर समय संभव नहीं होता। ऐसी अवस्था में हमें मनीषियों के चिंतन का सहारा लेना पड़ता है। इस दिशा में साहित्य के अलावा दूसरा उपाय नहीं है। मनुष्य की सर्वोत्तम कृति साहित्य है, और मनुष्य पद का अधिकारी बने रहने के लिए साहित्य ही उसका एकमात्र सहारा है। यहाँ साहित्य से हमारा अभिप्राय उसकी समस्त सात्त्विक चिंतन-धारा से है।

1.बहुविकल्पीय (03 प्रश्न)

(i) सुंदरता को तलाश करने की शक्ति कैसे प्राप्त होती है?
- (अ) संयम के द्वारा
- (ब) साधना के द्वारा
- (स) साहित्य प्रेम के द्वारा
- (द) उच्छृंखलता के द्वारा

(ii) सामंजस्य का क्या अर्थ होता है?
- (अ) किसी चीज़ का बहुत अधिक होना और किसी का बहुत कम होना।
- (ब) किसी चीज़ का बहुत अधिक और किसी का बहुत कम होना।
- (स) किसी चीज़ का न बहुत अधिक और न बहुत कम होना।
- (द) उपर्युक्त सभी सही हैं।

(iii) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है -
- (अ) साहित्य और सौंदर्य-बोध
- (ब) युवाओं की उच्छृंखलता
- (स) संयम का महत्त्व
- (द) साहित्य प्रेम

2.'साहित्य-स्रष्टा' का क्या अर्थ है?

3.लघुत्तरात्मक प्रश्न (03)

(i) जीवन में संयम की ज़रूरत क्यों है?
(ii) लेखक ने संसार की सबसे बुरी बात किसे माना है और क्यों?
(iii) उच्छृंखलता और सौंदर्य-बोध में क्या अंतर है?

उत्तर- गद्यांश-1

(क) बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर –

1. **(ब)** साधना के द्वारा
2. **(स)** किसी चीज़ का न बहुत अधिक और न बहुत कम होना।
3. **(अ)** साहित्य और सौंदर्य-बोध

(ख) अतिलघुत्तरात्मक उत्तर –

साहित्य-स्रष्टा वे व्यक्ति होते हैं जो साहित्य का सृजन करते हैं।

(ग) लघुत्तरात्मक उत्तर –

1. जीवन में संयम की ज़रूरत इसलिए है क्योंकि संयम से ही सामंजस्य का भाव उत्पन्न होता है, जिससे मनुष्य दूसरों की भावना का आदर कर सकता है।
2. लेखक ने संसार की सबसे बुरी बात परायी बहू-बेटियों को घूरना बताया है, क्योंकि यह सौंदर्य-बोध के नाम पर उच्छृंखलता है।
3. **उच्छृंखलता** में नियमों का पालन नहीं होता, जबकि **सौंदर्य-बोध** में संयम होता है।

गद्यांश-2

बाजार ने, विज्ञापन ने हिंदी को एक क्रांतिकारी रूप दिया, जिसमें रवानगी है, स्वाद है, रोमांच है, आज की सबसे बड़ी चाहत का अकूत संसार है। इस तरह हिंदी भविष्य की भाषा, समय का तकाजा और रोजगार की जरूरत बनती जा रही है। लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ पत्रकारिता है। सूचना-क्रांति ने विश्व को ग्राम बना दिया है। मीडिया की जागरूकता ने समाज में एक क्रांति ला दी है और इस क्रांति की भाषा हिंदी है। इतने सारे समाचार चैनल हैं और सभी चैनलों पर हिंदी अपने हर रूप में नए कलेवर, तेवर में निखरकर, संवरकर, लहरकर, 'बोले' तो बिंदास बनकर छाई रहती है।' तुलनात्मक अर्थों में आज अंग्रेज़ी-पत्रकारिता से हिंदी-पत्रकारिता का मूल्य, बाजार, उत्पादन, उपभोग और वितरण बहुत बड़ा है।

प्रिंट मीडिया की स्थिति ज्यादा बेहतर है, पत्र-पत्रिकाओं की लाखों प्रतियाँ रोजाना बिकती हैं। चीन के बाद सबसे अधिक अखबार हमारे यहाँ पढ़े जाते हैं, हिंदी के सम्प्रेषण की यह मानवीय, रचनात्मक और सारगर्भित उपलब्धि है। पत्र-पत्रिकाएँ हिंदी की गुणवत्ता और प्रचार-प्रसार के लिए कृतसंकल्प हैं। यह भ्रम फैलाया गया था कि हिंदी रोजगारोन्मुखी नहीं है। आज सरकारी, गैर-सरकारी क्षेत्रों में करोड़ों हिंदी पढ़े-लिखे लोग आजीविका कमा रहे हैं। भविष्य में हिंदी की बाजार-मांग और अधिक होगी। पसीनों में, प्रार्थनाओं में, सिरहानों की सिसकियों में और हमारे सपनों में जब तक हिंदी रहेगी तब तक वह बिना किसी पीड़ा या रोग के सवाक् और सस्वर रहेगी।

1.बहुविकल्पीय (03 प्रश्न)

(i) उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक क्या होगा ?

(अ) पत्रकारिता (ब) हिंदी – समय की मांग

(स) प्रिंट मीडिया (द) सूचना क्रांति और भारत

(ii) लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ किसे कहा जाता है?

(अ) रोजगार (ब) कंप्यूटर

(स) पत्रकारिता (द) बाजार

(iii) 'सम्प्रेषण' शब्द में उपसर्ग है -

(अ) स (ब) सम (स) सम् (द) प्रेषण

2.अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

(i) विश्व को ग्राम बना देने से क्या आशय है?

3.लघूत्तरात्मक प्रश्नों (03 प्रश्न)

(i) तुलनात्मक दृष्टि से हिंदी और अंग्रेजी पत्रकारिता में लेखक ने किसे व्यापक माना है और क्यों?

(ii) 'सरकारी' और 'अतीत' शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।

(iii) हिंदी पर रोजगारपरक न होने का आक्षेप क्यों ठीक नहीं है?

उत्तर- गद्यांश-2

क (i) ब- हिंदी – समय की मांग

(ii) स -पत्रकारिता

(iii) स- सम्

ख विश्व को ग्राम बना देने का आशय है - विश्व के लोगों को एक-दूसरे के नजदीक लाना

ग (i)अंग्रेजी की तुलना में हिंदी पत्रकारिता को अधिक व्यापक माना गया है। कारण है कि समाचार-पत्र से लेकर अन्य संचार साधनों में हिंदी के पाठक और दर्शक बहुत अधिक हैं।

(ii)सरकारी – गैर सरकारी , अतीत – वर्तमान

(iii)हिंदी भाषा के माध्यम से करोड़ों देशवासियों को रोजगार मिल रहा है। हिंदी पत्रकारिता में अनेक सम्भावनाएं है। इसलिए यह आरोप लगाना ठीक नहीं है।

गद्यांश-3

लोकतंत्र के तीन स्तंभ-विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका हैं। जब प्रथम दो अपने मार्ग या उद्देश्य के प्रति शिथिल होते हैं तो न्यायपालिका का विशेष महत्व हो जाता है। न्यायपालिका ही है जो हमें आईना दिखाती है, किन्तु आईना तभी

उपयोगी होता है जब उसमें दिखाई देने वाले चेहरे की विद्रूपता को सुधारने का प्रयास हो। सर्वोच्च न्यायालय के अनेक जनहितकारी निर्णयों को कुछ लोगों ने न्यायपालिका की अति सक्रियता माना पर जनता को लगा की न्यायालय सही है।

प्रश्न यह है कि जब संविधान की सत्ता सर्वोपरि है तो उसके अनुपालन में शिथिलता क्यों होती है? राजनीतिक दलगत स्वार्थ या निजी हित आड़े आ जाते हैं और यही भ्रष्टाचार को जन्म देता है। हम कसमें खाते हैं जनकल्याण की और कदम उठाते हैं आत्मकल्याण के। ऐसे तत्वों से देश और समाज को सदा खतरा रहता है। अतः जब कोई न्यायालय ऐसे फैसले देता है जो समाज कल्याण के हों और राजनीतिक ठेकेदारों को उनकी औकात बताते हों तो जनता को उसमें आशा की किरण दिखाई देती है अन्यथा वह अंधकार में जीने को तो विवश ही है।

1.बहुविकल्पीय (03 प्रश्न)

(i) गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक क्या होगा?
- (अ) अ-लोकतंत्र
- (ब) न्यायपालिका का महत्त्व
- (स) संविधान और हमारा समाज
- (द) हमारा संविधान

(ii) भ्रष्टाचार का जन्म कब और कैसे होता है?
- (अ) राजनीतिक स्वार्थ
- (ब) दलगत स्वार्थ
- (स) निजी स्वार्थ
- (द) उपर्युक्त सभी

(iii) लोकतंत्र में न्यायपालिका कब विशेष महत्त्वपूर्ण हो जाती है?
- (अ) जब समाज में भ्रष्टाचार बढ़ जाता है
- (ब) कार्यपालिका और विधायिका अपने दायित्वों का निर्वहन ठीक से नहीं करतीं
- (स) जब स्वार्थ बढ़ जाता है
- (द) भ्रष्टाचार की वृद्धि होने पर

2.अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न
- 'चेहरे की विद्रूपता' से क्या तात्पर्य है? यह संकेत किसके प्रति है?

3.लघूत्तरात्मक प्रश्न (03)

(i) लोकतंत्र का आइना कौन है और यह बहुत उपयोगी कब होता है?
(ii) किसकी सत्ता सर्वोपरि है? संविधान के अनुपालन में शिथिलता क्यों होती है?
(iii) संविधान के अनुपालन में कौन सबसे बड़ा रोड़ा है और क्यों?

उत्तर- गद्यांश-3

क- बहुविकल्पीय (03 प्रश्न)

(i) (ब) न्यायपालिका का महत्व
(ii) (द) उपरोक्त सभी
(iii) (ब) कार्यपालिका और विधायिका अपने दायित्वों का निर्वहन ठीक से नही करते

ख- अतिलघूत्तरात्मक (01 प्रश्न)

चेहरे की विद्रूपता से तात्पर्य है कि कार्यपालिका और विधायिका अपने कर्तव्यों का निर्वहन ठीक से नहीं करते हों यह संकेत कार्यपालिका और विधायिका तथा न्यायपालिका के लिए है।

ग- लघूत्तरात्मक प्रश्न (03 प्रश्न)

(i)न्यायपालिका ही है जो हमें आईना दिखाती है, किन्तु आईना तभी उपयोगी होता है जब उसमें दिखाई देने वाले चेहरे की विद्रूपता को सुधारने का प्रयास हो।

(ii) संविधान की सत्ता सर्वोपरि है उसके अनुपालन में शिथिलता तब होती है जब राजनीतिक दलगत स्वार्थ या निजी हित आड़े आ जाते हैं।

(iii)संविधान के अनुपालन में राजनीतिक दल एवं उसके ठेकेदार सबसे बड़ा रोड़ा है, क्योंकि ऐसे में उनके स्वार्थ की पूर्ति होना मुश्किल हो जाता है।

गद्यांश-4

मनुष्य के जीवन में लक्ष्य का होना अत्यंत आवश्यक है। लक्ष्य के बिना जीवन दिशाहीन और व्यर्थ होता है। एक बार एक दिशाहीन युवा आगे बढ़े जा रहा था। राह में महात्मा जी की कुटिया देखकर वह रुक गया और महात्मा जी से पूछने लगा—"यह रास्ता कहाँ जाता है?" महात्मा जी ने पूछा—"तुम कहाँ जाना चाहते हो?" युवक ने कहा—"मैं नहीं जानता कि मुझे कहाँ जाना है।" तब महात्मा जी ने उत्तर दिया—"जब तुम्हें पता ही नहीं कि तुम कहाँ जाना चाहते हो, तो यह रास्ता कहीं भी जाए, तुम्हें क्या फर्क पड़ेगा?" कहने का तात्पर्य है कि बिना लक्ष्य के जीवन में भटकते रहो, तो कुछ भी प्राप्त नहीं कर पाओगे। यदि कुछ करना चाहते हो, तो पहले अपना एक लक्ष्य निर्धारित करो और फिर उस पर निष्ठा से कार्य करो। अपनी राह स्वयं बनाओ। वास्तव में जीवन उसी का सार्थक होता है जिसमें परिस्थितियों को बदलने का साहस होता है। गांधीजी कहा करते थे—"कुछ न करने से अच्छा है कुछ करना।" जो कुछ करता है, वही सफल-असफल होता है। हर व्यक्ति की अपनी-अपनी क्षमता होती है और उसी के अनुसार वह अपना लक्ष्य तय करता है।

विद्यार्थी का लक्ष्य सर्वाधिक अंक प्राप्त करना होता है, तो नौकरी करने वाले का लक्ष्य पदोन्नति प्राप्त करना हो सकता है। किसी महिला का लक्ष्य आत्मनिर्भर बनना हो सकता है। प्रत्येक मनुष्य को बड़ा लक्ष्य बनाना चाहिए, किंतु उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए छोटे-छोटे लक्ष्य निर्धारित करना आवश्यक होता है। छोटे लक्ष्यों की पूर्ति से ही आत्मविश्वास प्राप्त होता है। स्वामी विवेकानंद ने कहा था—"जीवन में एक ही लक्ष्य बनाओ और दिन-रात उसी के बारे में सोचो।" वह लक्ष्य स्वप्न में भी दिखाई देना चाहिए और उसे पूरा करने की धुन सवार हो जानी चाहिए। तब सफलता अवश्य मिलती है। परंतु यदि असफलता मिले, तो उससे घबराना नहीं चाहिए। विवेकानंद जी का कथन है—"हजार बार प्रयास करने के बाद भी यदि हारकर गिर पड़ो, तो एक बार पुनः उठो और प्रयास करो।" अतः हमें लक्ष्य प्राप्ति तक निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए और स्वयं पर अटूट विश्वास बनाए रखना चाहिए।

1.बहुविकल्पीय (03 प्रश्न)

(i) युवक कहाँ जा रहा था?
- (अ) दिशाहीन लक्ष्य की ओर
- (ब) दिशा सहित लक्ष्य की ओर
- (स) लक्ष्य की ओर
- (द) मंज़िल की ओर

(ii) किसी विद्यार्थी का लक्ष्य क्या होना चाहिए?
- (अ) आत्मनिर्भर होना
- (ब) सर्वाधिक अंक प्राप्त करना
- (स) परीक्षा में उत्तीर्ण होना
- (द) सफल बनना

(iii) लक्ष्य के बिना जीवन कैसा हो जाता है?
- (अ) दिशाहीन
- (ब) व्यर्थ
- (स) दिशाहीन, व्यर्थ
- (द) आत्मविश्वासी

2.अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न (01)
- किसका जीवन सार्थक होता है?

3.लघुत्तरात्मक प्रश्न (03)

(i) व्यक्ति को सर्वप्रथम छोटे-छोटे लक्ष्य क्यों बनाने चाहिए?

(ii) असफलता से नहीं घबराना चाहिए—इसके लिए स्वामी विवेकानन्द जी ने कौन-सा विचार दिया है?

(iii) उपर्युक्त गद्यांश से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर- गद्यांश-4

प्रश्न 1

क (i) (अ) दिशाहीन लक्ष्य की ओर
(ii) (ब) सर्वाधिक अंक प्राप्त करना
(iii) (स) दिशाहीन ,व्यर्थ

ख जिसमे परस्थितियों को बदलने का साहस है।

ग (i) क्योंकि ऐसा करने से बड़े लक्ष्य को प्राप्त करने का हममें आत्मविश्वास आ जाता है।

(ii) विवेकानंद जी ने कहा कि हजार बार प्रयास करने के बाद भी यदि हार कर गिर पड़े तो पुनः एक बार उठे और प्रयास करे ।

(iii) कि हमें अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हुए निरंतर प्रयास करते रहने चाहिए।

गद्यांश-5

एक युवा अपनी जोश और ताकत से पूरी तरह ओत-प्रोत होता है। युवा पीढ़ी किसी भी समाज और देश की रीढ़ की हड्डी होती है। किसी भी देश के युवा ही उस देश का भविष्य तय करते हैं। इसकी बानगी हम स्वाधीनता संग्राम में देख चुके हैं।युवा की सबसे बढ़ी खासियत है कि वह फौलादी जिगर दृढ़ इच्छा शक्ति जोखिम लेने की क्षमता, और कुछ नया करने की ललक रखते हैं। जब युवाओं की बात हो तो भला स्वामी विवेकानंद को कौन भूल सकता है, जो आज भी दुनिया के लाखों युवाओं के प्रेरणास्रोत हैं। स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था कि युवा ही राष्ट्र की वास्तविक शक्ति है। युवाओं को अवसर दिए बिना कोई भी देश प्रगति नहीं कर सकता है। आज भारत jiको हम सबसे युवा देश कह सकते हैं, वह इसलिए नहीं कि देश अभी-अभी आजाद हुआ है बल्कि इसलिए क्योंकि इस समय भारत में युवा वर्ग की जनसंख्या पूर विश्व के देशों से अधिक है। युवा की विशेषता यही है कि उसके काम में तेजी, फुरती, और एक नया जोश है, उसमें ऊर्जा की भरमार है। पर हाँ, यह नहीं कि युवाओं से बड़े, जिन्हें हम बुज़ुर्ग कह सकते हैं, उनकी ज़रूरत नहीं है, ऐसा कहना उचित नहीं है। बुज़ुर्ग भी देश के विकास के लिए उतने ही ज़रूरी है जितने युवा। इन दोनों के ताल-मेल से बड़े से बड़े कार्य को जल्द से जल्द और एक बेहतर तरीके से कर सकते हैं। बड़े-बुज़ुर्ग अपने अनुभव और युवा अपनी ऊर्जा का उपयोग कर देश को नई उपलब्धि दिला सकते हैं। पर देश का दुर्भाग्य ही समझो कि युवा और बुज़ुर्गों के ताल-मेल में कमी आ रही है। हमारी संस्कृति जिसमें इन युवाओं को अपने बुजुर्गों से सीखना चाहिए वे उनसे दूर होते जा रहे हैं। आज का आधुनिकीकरण दोनों वर्गों में जैसे दीवार बन गया हो।अब वक्त आ गया है कि युवा सक्रिय राजनीति में प्रवेश करें क्योंकि हमारी राजनीति बूढ़ी हो गई है और यह हमारे देश की अपेक्षा को पूरा नहीं कर सकती। भ्रष्टाचार को लगाम लगाने के लिए युवाओं को अब तैयार होना होगा। युवाओं को एक ज़िम्मेदार नागरिक बनना होगा। पढ़े-लिखे, ज़्यादातर युवा राजनीति से दूरी बनाए रखते हैं, लेकिन कमल तोड़ना है तो कीचड़ में उतरना ही होगा। ठीक उसी प्रकार राजनीति में आए बिना राजनीति को शुद्ध करना संभव नहीं है। अतः मैं चाहता हूँ कि युवा राजनीति में प्रवेश करें। तभी देश के संसाधनों का सही इस्तेमाल होगा और तब जाकर कहीं शोषित-वंचित वर्ग को उनका हक मिल सकता है।

अतः आज के युवाओं को अपनी ज़िम्मेदारी समझनी चाहिए और कोई भी काम व्यक्तिगत लाभ की बजाय समाज तथा देश हित में करना चाहिए। परिवार से समाज बनता है और समाज से देश बनता है। आज की युवा पीढ़ी का अपने परिवार की ओर उदसीनता देख मेरा मन काफी व्यथित होता है। माँ-बाप सीमित संसाधनों में भी अपने बच्चों को तमाम सुख सुविधा देने का भरसक प्रयास करते हैं, परंतु माँ-बाप का बोझ आज की हमारी युवा पीढ़ी नहीं उठा पा रही है। यह बड़े ही शर्म की बात है जिसने हमारी दुनिया को सजाया हो उसे हम युवा वृद्धाश्रम में छोड़ आते हैं। उनकी कुछ बुनियादी ज़रूरतों को भी पूरा नहीं कर पाते। और अगर एक युवा इतना भी नहीं कर सकता तो वह युवा-पीढ़ी के लिए शर्म की बात है। अतः हमारे युवाओं को अपने परिवार के प्रति संवेदनशील और ज़िम्मेदार बनाना ही होगा। मैं तो सोचता हूँ कि युवा पीढ़ी के रहते वृद्धाश्रम बनाना ही बड़े शर्म की बात है।समाज में हो रहे अन्याय के खिलाफ आवाज़ उठाना की ही सामाजिक ज़िम्मेदारी है। अर्थात एक स्वस्थ समाज की संकल्पना तभी पूरी हो सकती है, जब हर युवा व्यक्ति ईमानदारी से अपने परिवार, समाज और देश के प्रति छोटी-छोटी ज़िम्मेदारियों को पूरा करना होगा।

1.बहुविकल्पीय प्रश्न

(i) प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक है—

(अ) आज की युवा पीढ़ी
(ब) युवा पीढ़ी और देश का भविष्य
(स) युवा पीढ़ी की समस्याएँ
(द) युवा पीढ़ी और बुज़ुर्ग

(ii) युवा पीढ़ी को किसी भी देश की 'रीढ़ की हड्डी' क्यों कहा गया है?

(अ) उसे दृढ़ता प्रदान करने की शक्ति के कारण
(ब) उसका भविष्य निर्माता होने के कारण
(स) उसकी स्वतंत्रता की रक्षा करने के कारण
(द) जोश और ताकत से ओत-प्रोत होने के कारण

(iii) युवाओं और बुज़ुर्गों के बीच बढ़ती खाई का कारण है—

(अ) तकनीकी विकास
(ब) व्यस्त जीवन-शैली
(स) पाश्चात्य संस्कृति

(द) आधुनिकीकरण

2.अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

(i) भारत को 'युवा भारत' क्यों कहा जाता है?

3.लघुत्तरात्मक प्रश्न

(i) देश के विकास के लिए युवाओं और बुज़ुर्गों के बीच तालमेल क्यों ज़रूरी है?

(ii) "कमल तोड़ना है तो कीचड़ में उतरना ही होगा"का आशय है —

(iii) एक स्वस्थ समाज की संरचना के लिए क्या-क्या आवश्यक है?

उत्तर- गद्यांश-5

1.बहुविकल्पीय प्रश्न(03)

(i) (ब) युवा पीढ़ी और देश का भविष्य

(ii) (ब) उसका भविष्य निर्माता होने के कारण

(iii) (द) आधुनिकीकरण

2.अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

(i) भारत में युवाओं की संख्या अधिक होने के कारण

3.लघुत्तरात्मक प्रश्न

(i) (ब) युवाओं की ऊर्जा और बुज़ुर्गों का अनुभव देश को नई उपलब्धि दिलवा सकता है।

(ii) (द) देश में बदलाव लाने के लिए राजनीति का हिस्सा बनना पड़ता है।

(iii) (ब) ईमानदारी से अपनी ज़िम्मेदारी पूरी करना

पद्यांश

→निम्नलिखित पद्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और प्रत्येक के पश्चात् दिए गए प्रश्नों के लिए सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए।

पद्यांश – 1

आँसू से भाग्य पसीजा है, हे मित्र कहाँ इस जग में?
नित यहाँ शक्ति के आगे, दीपक जलते मग-मग में।
कुछ तनिक ध्यान से सोचो, धरती किसकी हो पाई?
बोलो युग-युग तक किसने, किसकी विरुदावली गाई?
मधुमास मधुर रुचिकर है, पर पतझर भी आता है।
जग रंगमंच का अभिनय, जो आता सो जाता है।
सचमुच वह ही जीवित है, जिसमें कुछ बल-विक्रम है।
पल-पल घुड़दौड़ यहाँ है, बल-पौरुष का संगम है।
दुर्बल को सहज मिटाकर, चुपचाप समय खा जाता,
वीरों के ही गीतों को, इतिहास सदा दोहराता।
फिर क्या विषाद, भय-चिंता, जो होगा सब सह लेंगे,
परिवर्तन की लहरों में, जैसे होगा बह लेंगे।

(क) बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs)

(i) इतिहास किसके गीत गाता है?

- (अ) दुर्बल के
- (ब) परिवर्तन के
- **(स) वीरों के**
- (द) समय के

(ii) कवि के अनुसार इस संसार में भाग्य किससे नहीं बदलता?

- (अ) गीत गाने से
- (ब) चुपचाप रहने से
- **(स) आँसू बहाने से**
- (द) अभिनय करने से

(iii) ‘विषाद’ का अर्थ है –
- (अ) सुख
- (ब) समस्या
- **(स) दुख**
- (द) सभी गलत हैं

(ख) अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न
- कवि ने किसे जीवित माना है?

उत्तर: कवि ने उसे ही जीवित माना है जिसमें शक्ति और साहस हो।

(ग) लघुत्तरात्मक प्रश्न

(i) जीवन कैसा है तथा किसका मेल है?

उत्तर: जीवन घुड़दौड़ जैसा है तथा यह शक्ति और परिश्रम का मेल है।

(ii) जीवन कैसे जीना चाहिए?

उत्तर: जीवन भय, दुख और चिंता छोड़कर, परिवर्तनों से बिना डरे जीना चाहिए।

पद्यांश – 2

तरुणाई है नाम सिन्धु की उठती लहरों के गर्जन का,
चट्टानों से टक्कर लेना लक्ष्य बने जिनके जीवन का।
विफल प्रयासों से भी दूना वेग भुजाओं में भर जाता,
जोड़ा करता जिनकी गति से नव उत्साह निरंतर नाता।
पर्वत के विशाल शिखरों-सा यौवन उसका ही है अक्षय,
जिनके चरणों पर सागर के होते अनगिन ज्वार साथ लय।
अचल खड़े रहते जो ऊँचा, शीश उठाए तूफानों में,
सहनशीलता, दृढ़ता हँसती जिनके यौवन के प्राणों में।
वही पंथ बाधा को तोड़ बहते हैं जैसे हों निर्झर,
प्रगति नाम को सार्थक करता यौवन दुर्गमता पर चलकर।

(क) बहुविकल्पीय प्रश्न (03 प्रश्न)

(i) प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने किसका आह्वान किया है?
- (अ) देश की प्रगति का
- (ब) देश के यौवन का
- (स) दृढ़ता का
- (द) तूफ़ान का

(ii) ‘चट्टानों से टक्कर लेना’ से क्या तात्पर्य है?
- (अ) बड़ी मुश्किल से सड़क का निर्माण करना
- (ब) मार्ग में बड़ी-बड़ी रुकावट
- (स) बड़ी-बड़ी मुसीबतों से हार जाना
- (द) बड़ी-बड़ी मुसीबतों से मुकाबला करना

(iii) पंथ की बाधाओं को तोड़कर प्रगति कौन करता है?
- (अ) सागर
- (ब) नवयौवन
- (स) विशाल शिखर
- (द) तूफ़ान

(ख) अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न (01 प्रश्न)
- प्रस्तुत पद्यांश में ‘यौवन’ शब्द का समानार्थी शब्द कौन-सा है?

(ग) लघुत्तरात्मक प्रश्न (02 प्रश्न)

(i) आशय स्पष्ट कीजिए →**'जिनके चरणों पर सागर के होते अनगिन ज्वार साथ लय।'**

(ii) तरुणाई की किन विशेषताओं का उल्लेख किया गया है?

उत्तर-पद्यांश-2

क (i) ब- देश के यौवन का
(ii) द- बड़ी-बड़ी मुसीबतों से मुकाबला करना
(iii) ब- नवयौवन

ख तरुणाई

ग (i)नवयुवकों के साहस के सामने सागर में उठने वाली लहरें भी शांत होकर झुक जातीहै।
(ii) कवि की तरुणाई में उत्साह, साहस, जुझारूपन, जोश, गति, सहनशीलता और दृढ़ता।

पद्यांश – 3

तुमको नया गौरव दे रही है! यह तुम्हारे कर्म का ही प्रस्फुटन है।
नागरिक जय, प्रजा-जन जय! राष्ट्र के सच्चे विधायक, जय!
हम आलोक-मंजूषा समर्पित कर रहे हैं, और यह मंजूषा तुम्हारी है।
और यह आलोक तुम्हारे ही अडिग विश्वास का आलोक है।
किन्तु रूपाकार यह केवल प्रतिज्ञा है, उत्तरोत्तर लोक का कल्याण ही है साध्य,
अनुशासन उसी के हेतु है। यह प्रतिज्ञा ही हमारा दाय है लम्बे युगों की साधना का, जिसे हमने धर्म जाना।
स्वयं अपनी अस्थियाँ देकर हमने असत पर सत की विजय का मर्म जाना।
संपुटित कर हाथ, जिसने गोलियाँ निज वक्ष पर झेली, शमन कर ज्वार हिंसा का,
उसी के नत-शीश धीरज को हमारे स्तिमित चिर-संस्कार ने सच्चा कर्तृत्व का कर्म जाना।
साधना रुकती नहीं, आलोक जैसे नहीं बंधता।
यह सुघर मंजूषा भी झर गिरा सुंदर फूल है पथ-कूल का।
मांग पथ की इससे चूकती नहीं। फिर भी बीन लो यह फूल,
स्मरण कर लो इसी पथ पर गिरे सेनानी जयी को,
बढ़ चलो फिर शोध में अपने उसी धुंधले युगों के स्वप्न की,
जिसे हम आलोक-मंजूषा समर्पित कर रहे हैं।
आज हम अपने युगों के स्वप्न को यह नई आलोक-मंजूषा समर्पित कर रहे हैं।

(क) बहुविकल्पीय प्रश्न (03 प्रश्न)

(i) कवि ने किस प्रकार की गति से आगे बढ़ने का व्रत धारण किया है?
- (अ) बिना थके हुए
- (ब) ध्रुव के समक्ष अटल होकर
- (स) बिना पथ में रुके
- (द) उपर्युक्त सभी

(ii) कवि ने देश के नागरिकों को कौन-सी आलोक-मंजूषा समर्पित की है?
- (अ) गणतंत्रता की
- (ब) सुंदर फूलों की
- (स) स्वप्नों की
- (द) कर्म की

(iii) असत पर सत की विजय प्राप्ति किस प्रकार की गई?
- (अ) भक्ति द्वारा
- (ब) अनुशासन से
- (स) अस्थियों को समर्पित करके
- (द) कठिन प्रतिज्ञा द्वारा

(ख) अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न (01 प्रश्न)

• देश सेवकों का अंतिम लक्ष्य क्या है?

(ग) लघुत्तरात्मक प्रश्न (02 प्रश्न)
(i) कवि किस–किस की जय-जयकार कर रहा है?
(ii) कवि कर्तव्य-पथ पर चलते हुए किसे याद करने के लिए कह रहा है और क्यों?

उत्तर-पद्यांश-3

क. बहुविकल्पीय (03 प्रश्न)
(i)(द) उपर्युक्त सभी
(ii)(अ) गणतंत्रता की
(iii) (स) अस्थियों को समर्पित करके

ख. अतिलघूत्तरात्मक (01 प्रश्न)
देश सेवकों का अंतिम लक्ष्य है देश के काम आना।

ग. लघूत्तरात्मक प्रश्न(02 प्रश्न)
(i)देश के सच्चे नागरिकों की, प्रजा की, तथा देश भक्त नेताओं की जय कर रहा है।
(ii)कवि कर्तव्य पथ पर चलते हुए उन्हें याद करने के लिए कह रहा है जिन्होंने देश की सेवा में और आजादी के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया था क्योंकि उन्हें याद करने से हमें भी उस राह पर चलने की प्रेरणा मिलती है।

पद्यांश – 4

हम जब होंगे बड़े, देखना — ऐसा नहीं रहेगा देश।
अब भी कुछ लोगों के दिल में नफरत अधिक, प्यार है कम,
हम जब होंगे बड़े, घृणा का नाम मिटाकर लेंगे दम।
हिंसा के विषमय प्रवाह में कब तक और बहेगा देश?
भ्रष्टाचार, जमाखोरी की आदत बड़ी पुरानी है,
यह कुरीतियाँ मिटा हमें तो नई चेतना लानी है।
एक घरौंदे जैसा आखिर कितना और ढहेगा देश?
इसकी बागडोर हाथों में ज़रा हमारे आने दो,
पाँव हमारे थोड़े-से बस जीवन में टिक जाने दो।
हम खाते हैं शपथ, दुर्दशा कोई नहीं सहेगा देश।
हम भारत का झंडा हिमगिरि से ऊँचा फहरा देंगे,
रेगिस्तान, बंजरों तक में हरियाली लहरा देंगे।
घोर अभावों की ज्वाला में बिल्कुल नहीं दहेगा देश।

(क) बहुविकल्पीय प्रश्न (03 प्रश्न)
(i) कवि कौन-सा परिवेश बदलना चाहता है?
- (अ) प्यार का
- (ब) संघर्ष का
- (स) घृणा का
- (द) शांति का

(ii) काव्यांश का मूल स्वर क्या है?
- (अ) चुनौती का
- (ब) संकल्प का
- (स) प्रश्न का
- (द) चिंता का

(iii) भविष्य में देश किसकी ज्वाला में नहीं दहेगा?
- (अ) रेगिस्तान की गर्मी में
- (ब) घोर अभावों की ज्वाला में
- (स) हिमगिरि की आग में
- (द) प्यार की आग में

(ख) अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न (01 प्रश्न)
• कवि के अनुसार कौन-सी आदत सबसे पुरानी है?

(ग) लघुत्तरात्मक प्रश्न (02 प्रश्न)
(i) जब पुरानी प्रथाएँ समाप्त हो जाएँगी, तो देश की तस्वीर कैसी होगी?
(ii) कवि प्रस्तुत पंक्तियों में क्या संदेश देना चाहते हैं?

उत्तर-पद्यांश-4

क (i) (स) घृणा का
(ii) (ब) संकल्प का
(iii) (ब) घोर अभावों की ज्वाला में

ख भ्रष्टाचार और जमाखोरी की

ग (i)भारत का झंडा हिमगिरी से ऊँचा होगा,हरियाली लहराएगी,शांतिव् प्रेम का प्रसार होगा।
(ii) हमें देश से भ्रष्टाचार ,जमाखोरी हिंसा खत्म करने में अपना सहयोग देना है।

पद्यांश – 5

एक फ़ाइल ने दूसरी फ़ाइल से कहा
बहन लगता है
साहब हमें छोड़कर जा रहे हैं
इसीलिए तो सारा काम जल्दी जल्दी निपटा रहे हैं।
मैं बार-बार सामने जाती हूँ
रोती हूँ.गिड़गिड़ाती हूँ
करती हूँ विनती हर बार
साहब जी! इधर भी देख लो एक बार।
पर साहब है कि
कभी मुझे नीचे पटक देते हैं। कभी पीछे सरका देते हैं
और कभी-कभी तो
फ़ाइलों के देर तले
दबा देते हैं
अधिकारी बार-बार अंदर झांकजाता है
डरते-डरते पूछ जाता है
साहब कहाँ गए हैं?
हस्ताक्षर हो गए.?
दूसरी फ़ाइल ने उसे
प्यार से समझाया
जीवन का नया फलसफा सिखाया
बहन! हम यूँ ही रोते हैं
बेकार गिड़गिड़ाते हैं,लोग आते हैं,जाते हैं
हस्ताक्षर कहाँ रुकते हैं
हो ही जाते हैं।
पर कुछ बातें ऐसी होती हैं जो दिखाई नहीं देती
और कुछ आवाजें सुनाई नहीं देती
जैसे फूल खिलते हैं
और अपनी महक छोड़ जाते हैं। वैसे ही कुछ लोग कागज पर नहीं
दिलों पर हस्ताक्षर छोड़ जाते हैं।

बहुविकल्पीय प्रश्न

i) कविता के अनुसार जो कार्य दिखाई-सुनाई नहीं देते हैं

(क) वे अस्पष्टता के कारण बेमानी होते हैं

(ख) वह यह शिक्षा देते हैं कि हमें एकाग्रचित्त होकर सुनना-देखना चाहिए

(ग) वे लोगों पर अपना प्रभाव छोड़ जाते हैं

(घ) वे केवल सिद्ध लोगों को ही प्रभावित करते हैं

(ii) जीवन के फलसफे के अनुसार किसी भी परिस्थिति में

(क) हार नहीं माननीचाहिए।

(ख) विलाप नहीं करना चाहिए।

(ग) हार से सबक सीखना चाहिए।

(घ) जीत हार सभी कुछ अंतिम हैं।

(iii) उपर्युक्त काव्यांश का उपयुक्त शीर्षक क्या होगा?

(क) हृदय स्पर्श

(ख) जीवन सार

(ग) जीवन दर्शन

(घ) भाग्य व कर्म

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

(i) फाइल क्यों रोती और गिड़गिड़ाती है?

लघुत्तरात्मक प्रश्न

(i) कविता का संदेश क्या है?

(ii) उपर्युक्त काव्यांश में दूसरी फाइल ने पहली फाइल को क्या समझाया होगा ?

उत्तर-पद्यांश-5

(क) बहुविकल्पीय प्रश्न

(i) (ग) वे लोगों पर अपना प्रभाव छोड़ जाते हैं।

(ii) (ख) विलाप नहीं करना चाहिए।

(iii) (ख) जीवन सार।

(ख). अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर:-(i) अपना कार्य पूर्ण न होने की पीड़ा के कारण।

(ग) लघुत्तरात्मक प्रश्न

(i) लोग जल्दी कार्य करने वाले अधिकारी से प्रभावित होते हैं।

(ii) कार्य कैसा भी हो समयानुसार हो ही जाता है।

आरोहभाग-2 काव्यखंड

पाठ-1: आत्म-परिचय व एकगीत→ हरिवंशरायबच्चन

आत्मपरिचय मूलभाव- कवि: हरिवंश राय बच्चन

कवि हरिवंश राय बच्चन ने 'आत्मपरिचय' में प्रेम और मस्ती का संदेश दिया है। कवि अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक है, परंतु प्रेम के बिना उसे ये संसार अधूरा लगता है।

कवि सांसारिक लोभ-लालच और मोह-माया के ज्ञान को भुलाना चाहता है और धन-दौलत को ठोकर मारता है।

कवि कहता है कि दुनिया से मेरा संबंध प्रीति-कलह का है, मेरा जीवन विरुद्धों का सामंजस्य है—उन्मादों में अवसाद, रोदन में राग, शीतल वाणी में आग।

एक गीत – मूलभाव

निशा-निमंत्रण से उद्धृत इस गीत में कवि प्रकृति की दैनिक परिवर्तनशीलता के संदर्भ में प्राणी-वर्ग के धड़कते हृदय को सुनने की काव्यात्मक कोशिश व्यक्त करता है।

किसी प्रिय आलंबन से भावी साक्षात्कार का आश्वासन ही हमारे प्रयास के पगों की गति में चंचलता भर सकता है, अन्यथा हम शिथिलता और फिर जड़ता को प्राप्त होने लगते हैं।

यह गीत समय के गुजरते जाने के एहसास में लक्ष्य-प्राप्ति के लिए कुछ कर गुजरने का जज्बा भी लिए हुए है।

काव्यांशों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

काव्यांश-1

मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ,
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ;
कर दिया किसीने झंकृत जिनको छूकर
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ!
मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ,
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ,
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ!

प्रश्न:

(क) कवि किसका भार लेकर फिरता है?
(i) अपने जीवन का
(ii) दुनिया का
(iii) अपने परिवार का
(iv) लोगों की उम्मीदों का
उत्तर: (ii) दुनिया का

(ख) संसार किनको महत्व देता है?
(i) संसार के हित में काम करने वालों को
(ii) संसार की अवहेलना करने वालों को
(iii) संसार की झूठी प्रशंसा करने वालों को
(iv) लोक हित में काम करने वालों को
उत्तर: (iii) संसार की झूठी प्रशंसा करने वालों को

(ग) कॉलम-। को कॉलम-।। से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए:

कॉलम-।	**कॉलम-।।**
A. जग	1. कवि
B. स्नेह-सुरा	2. संसार
C. अपने मन का गान	3. रूपक अलंकार

विकल्प:
(i) A (1), B (2), C (3)
(ii) A (2), B (3), C (1)
(iii) A (2), B (1), C (3)
(iv) A (3), B (2), C (1) **उत्तर:** (ii) A (2), B (3), C (1)

(घ) 'मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ' पंक्ति में कवि ने किसके प्रति संकेत किया है?
(i) जीवन की संगीतमयता, प्रेम और संवेदनशीलता
(ii) शारीरिक मजबूती और साहस
(iii) साँसों की गिनती और मृत्यु का भय
(iv) विज्ञान और तकनीकी प्रगति
उत्तर: (i) जीवन की संगीतमयता, प्रेम और संवेदनशीलता

(ड.) निम्नलिखित कथन तथा कारण को पढ़कर उचित विकल्प का चयन कर लिखिए:
कथन: कवि संसार का भार अपने कंधों पर लिए फिरता है।
कारण: कवि स्वतंत्र चेतना का व्यक्ति है।
विकल्प:

(i) कथन सही है, लेकिन कारण गलत है।
(ii) कथन गलत है, लेकिन कारण सही है।
(iii) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किन्तु कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।
(iv) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।
उत्तर: (iii) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किन्तु कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

काव्यांश-2

मैं निज उर के उद्गार लिए फिरता हूँ
मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ;
है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता
मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ!
मैं जला हृदय में अग्नि, दहा करता हूँ,
सुख-दुःख दोनों में मग्न रहा करता हूँ;
जग भव-सागर तरने को नाव बनाए,
मैं भव मौजों पर मस्त बहा करता हूँ!

प्रश्न:
(क) 'जला हृदय में अग्नि' पंक्ति का अभिप्राय क्या है?
(i) कवि केवल क्रोध में है
(ii) कवि ज्ञान की ज्योति जलाए हुए है
(iii) कवि के भीतर प्रेम भावना और क्रोध की ज्वाला है
(iv) कवि अग्नि-पूजा करता है
उत्तर: (iii) कवि के भीतर प्रेम भावना और क्रोध की ज्वाला है
(ख) निम्नलिखित में से कौन-सा भाव काव्यांश में प्रमुख रूप से प्रकट होता है?
(i) भय और चिंता
(ii) आत्मबल और स्वप्नशीलता
(iii) मोह और आसक्ति
(iv) क्रोध और विद्रोह
उत्तर: (ii) आत्मबल और स्वप्नशीलता
(ग) कॉलम-। को कॉलम-।। से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए:

कॉलम-।	**कॉलम-।।**
A. नाव बनाना	1. कल्पनाशीलता और आशावाद
B. स्वप्नों का संसार	2. आत्मबल और संघर्ष
C. हृदय में अग्नि	3. जीवन की कठिनाइयों से पार पाना

विकल्प:
(i) A (1), B (2), C (3)
(ii) A (2), B (3), C (1)
(iii) A (2), B (1), C (3)
(iv) A (3), B (1), C (2) **उत्तर:** (iv) A (3), B (1), C (2)

(घ) 'मैं निज उर के उद्गार लिए फिरता हूँ' का क्या तात्पर्य है?
(i) कवि दूसरों के विचारों को अपनाता है।
(ii) कवि अपने मन के भावों को संजोए रहता है।
(iii) कवि राजनीति में रुचि रखता है।
(iv) कवि समाज के आदेशों को मानता है। **उत्तर:** (ii) कवि अपने मन के भावों को संजोए रहता है।

(ड.) निम्नलिखित कथन तथा कारण को पढ़कर उचित विकल्प का चयन कर लिखिए:
कथन: कवि जीवन के सुख-दुःख में संतुलन बनाए रखता है।
कारण: कवि हर स्थिति में मस्त और आनंदित रहता है।
विकल्प:
(i) कथन सही है, लेकिन कारण गलत है।
(ii) कथन गलत है, लेकिन कारण सही है।
(iii) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किन्तु कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।
(iv) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।
उत्तर: (iv) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

काव्यांश-3

बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है!
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!
मुझसे मिलने को कौन विकल?
मैं होऊँ किसके हित चंचल?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विह्वलता है!
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!

प्रश्न:
(क) चिड़िया के बच्चे किस आशा में अपने घोंसलों से झाँक रहे होंगे?
(i) बाहर की दुनिया देखने की आशा में
(ii) माँ चिड़िया से भोजन, प्यार व सुरक्षा पाने की आशा में
(iii) आसमान में उड़ने की आशा में
(iv) घोंसले से जल्दी बाहर निकलने की आशा में
उत्तर: (ii) माँ चिड़िया से भोजन, प्यार व सुरक्षा पाने की आशा में
(ख) कवि के कदम शिथिल क्यों पड़ जाते हैं?
(i) रास्ते में रात हो जाने के कारण
(ii) कवि के बीमार हो जाने के कारण
(iii) कवि से मिलने के लिए किसी का व्याकुल न होना
(iv) थका होने के कारण
उत्तर: (iii) कवि से मिलने के लिए किसी का व्याकुल न होना
(ग) कॉलम-। को कॉलम-।। से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए:

कॉलम-।	**कॉलम-।।**
A. शिथिल	1. व्याकुलता
B. विह्वलता	2. हृदय
C. उर	3. धीमे

विकल्प:
(i) A (1), B (2), C (3)
(ii) A (2), B (3), C (1)
(iii) A (2), B (1), C (3)
(iv) A (3), B (1), C (2)
उत्तर: (iv) A (3), B (1), C (2)

(घ) 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' — इस पंक्ति से कवि किस बात की ओर संकेत कर रहे हैं?
(i) समय की गतिशीलता
(ii) मौसम का परिवर्तन
(iii) सूरज की गति

(iv) कवि की व्यस्तता

उत्तर: (i) समय की गतिशीलता

(ङ) कथन व कारण को ध्यानपूर्वक पढें-

कथन: बच्चों की सुरक्षा की चिंता का भाव चिड़िया को अस्थिर कर देता है।

कारण: चिड़िया की उड़ान की गति मंद है।

विकल्प:

(i) कथन सही है, लेकिन कारण गलत है।

(ii) कथन गलत है, लेकिन कारण सही है।

(iii) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किन्तु कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

(iv) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

उत्तर: (i) कथन सही है, लेकिन कारण गलत है।

वर्णनात्मक प्रश्न

1. **कविता एक ओर जग-जीवन का भार लिए घूमने की बात करती है और दूसरी ओर 'मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ'—विपरीत से लगने वाले इन कथनों का आशय स्पष्ट कीजिए।**

   उत्तर:

   जग-जीवन का भार लिए घूमने की बात सामाजिक दायित्वों के प्रति सचेत होने और संसार में प्रेम बढ़ाने की कोशिश करने की ओर संकेत करती है। संसार के प्रति मेरी जिम्मेदारियाँ निभा रहा हूँ।

   'मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ'—कवि प्रेम बढ़ाने के लिए संसार की निंदा की परवाह नहीं करता। इस प्रकार कवि संसार के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभा रहा है और संसार में प्रेम बढ़ाने के लिए वह संसार की निंदा की परवाह नहीं करता1।

2. **जहाँ पर दाना रहते हैं, वहीं नादान भी होते हैं—कवि ने ऐसा क्यों कहा है?**

   उत्तर:

   दाना—सांसारिक लोभ-लालच, मोह-माया

   नादान—सांसारिक लोभ-लालच, मोह-माया में डूबे मूर्ख लोग

   तात्पर्य यह है कि जहाँ सांसारिक लोभ-लालच, मोह-माया है वहीं उसमें डूबने वाले मूर्ख लोग भी हैं जो प्रेम को महत्व नहीं देते हैं1।

3. **'मैं और, और जग और कहाँ का नाता'—पंक्ति में 'और' शब्द की विशेषता बताते हुए पंक्ति के अर्थ को स्पष्ट कीजिए।**

   उत्तर:

   'और' शब्द की विशेषता—प्रथम व तृतीय 'और' का अर्थ है—अलग/भिन्न, द्वितीय 'और' का अर्थ है—तथा। इस प्रकार इसमें यमक अलंकार है।

   पंक्ति का अर्थ—कवि कहता है कि मैं अलग हूँ तथा संसार अलग है क्योंकि मैं प्रेम को महत्व देता हूँ और संसार के लोग सांसारिकता को महत्व देते हैं। इसलिए संसार से मेरा कोई रिश्ता नहीं है1।

4. **'शीतल वाणी में आग'—के होने का क्या अभिप्राय है?**

   उत्तर:

   शीतल वाणी—कोमल शब्दों व शीतल स्वरों का प्रयोग

   आग—प्रेमरहित संसार के प्रति क्रोध व विरोध की भावना

   संसार में प्रेम की कमी देखकर कवि को क्रोध आता है और उनमें विरोध की भावना प्रबल होती है परंतु इस क्रोध को वह कोमल शब्दों और शीतल स्वरों के माध्यम से अपनी कविता में प्रकट करता है। इसे शीतल वाणी में आग कहा गया है1।

5. **'आत्मपरिचय' कविता के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।**

   उत्तर:

   इस कविता में कवि ने स्वयं की अस्मिता को दुनिया के सामने प्रकट किया है।

   कवि ने अपने कोमल भाव और प्रेम भरे विचार तथा स्वप्नों के संसार को प्रकट किया है। कवि ने अपने निजी प्रेम को सबके सामने प्रकट किया है। इस प्रकार कविता की एक-एक पंक्ति कवि का परिचय दे रही है। अतः यह शीर्षक सार्थक है1।

6. **पथिक के कदम तेज़ व धीमे होने के कारण लिखिए।**

   उत्तर:

मंजिल नज़दीक दिखाई देने, मंजिल पर जल्दी पहुँचने और प्रियजनों से जल्दी मिलने की इच्छा के कारण पथिक जल्दी चलता है। साथ ही पथिक को यह आशंका भी है कि कहीं रास्ते में ही रात न हो जाए! जब पंथी के मन में विचार आता है कि उसका इंतजार करने वाला कोई नहीं है और वह किसके भले के लिए जल्दी जाए, तब उसके कदम धीमे हो जाते हैं1।

7. **बच्चे किस बात की आशा में नीड़ों से झाँक रहे होंगे?**

उत्तर:

बच्चे इस बात की आशा में नीड़ों से झाँक रहे होंगे कि उनकी माँ चिड़िया शीघ्र ही आएगी और उन्हें भोजन देकर उनका भरण-पोषण करेगी। साथ ही उन्हें प्यार और सुरक्षा भी देगी1।

8. **'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है'—की आवृत्ति से कविता की किस विशेषता का पता चलता है?**

उत्तर:

'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है'—की आवृत्ति से प्रेम की आतुरता और उसके प्रभावी रूप से प्रकट करना, कविता में लय पैदा करना तथा कविता में रोचकता पैदा करना आदि विशेषताओं का पता चलता है1।

अवधारणा मानचित्र

आत्मपरिचय

- **मुख्य भाव:** प्रेम और मस्ती का संदेश, सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति जागरूकता, प्रेम के बिना संसार अधूरा।
- **विशेषताएँ:**
  - सांसारिक लोभ-लालच, मोह-माया को भुलाना
  - प्रीति-कलह, विरुद्धों का सामंजस्य
  - कोमल शब्दों में प्रेम और विरोध की भावना

अवधारणा मानचित्र आत्मपरिचय

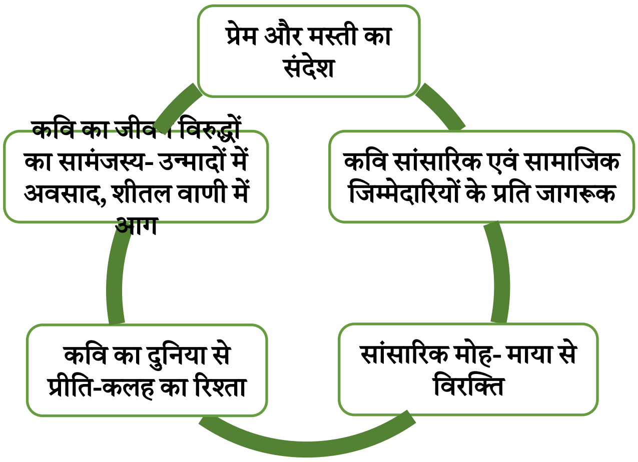

दिन जल्दी-जल्दी ढलता है

पथिक के कदम तेज़ होने के कारण	•रास्ते में रात होने की आशंका •मंजिल नज़दीक दिखाई देना •प्रियजनों का इंतज़ार करना
चिड़िया के पंखों में चंचलता का कारण	•उसके बच्चे भोजन प्यार व सुरक्षा की प्रत्याशा में •घोंसले में बच्चों का राह देखना
पथिक के कदम धीमे होने के कारण	•उसका कोई इंतज़ार करने वाला नहीं है •उसे लगता है वह किसके भले के लिए जल्दी जाए ?

पाठ-2: पतंग → आलोक धन्वा

मूलभाव

- **पतंग कविता** में भादों माह के बाद हुए प्राकृतिक परिवर्तनों और बाल क्रियाकलापों को चित्रित करने के लिए सुंदर बिम्बों का प्रयोग किया गया है।
- **भादों** के महीने के बाद शरद ऋतु के सवेरे की तुलना खरगोश की लाल आँखों से की गई है।
- **शरद** की तुलना साइकिल चलाते बच्चे से की गई है। साइकिल चलाते बच्चे के समान शरद ऋतु बच्चों को अपनी ओर आकर्षित करती है।
- **शरद ऋतु** में बच्चे पतंग उड़ाते हैं और उनके लिए पतंग दुनिया की सबसे हलकी और रंगीन चीज़ है, साथ ही पतंग का कागज़ सबसे पतला कागज़ है तथा उसकी कमानी सबसे पतली कमानी है।
- **कवि** ने शरद ऋतु में बच्चों द्वारा रंग-बिरंगी पतंगें उड़ाने के साथ-साथ खुश होकर चिल्लाने व सीटी बजाने को नाज़ुक दुनिया कहकर वर्णित किया है।
- **आलोक धन्वा** के अनुसार बच्चे कपास के समान कोमल, लचीले व पवित्र होते हैं।
- **बच्चे** पतंग के लिए बेसुध होकर तेज़ गति से दौड़ते हैं।
- **पतंग** के लिए दौड़ते बच्चों के पैरों की गूँज सभी दिशाओं में गूँजती है।
- **बच्चों** में झूले व पेड़ की डाली की तरह लचीलापन होता है।
- **बच्चों** में उत्साह, जोश व लचीलेपन के कारण वे छतों के खतरनाक किनारों से गिरने से बच जाते हैं।
- **पतंग** के साथ बच्चा केवल एक धागे से जुड़ा होता है परन्तु ऊँची उड़ती पतंग के साथ उसके दिल की धड़कन भी जुड़ जाती है।
- **छतों** के खतरनाक किनारों से गिरकर बचने पर बच्चे निडर हो जाते हैं और वह चमकदार धूप में भी पतंग उड़ाते हैं तथा तेज़ी से दौड़ते हैं

काव्यांशों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

काव्यांश-1

सबसे तेज बौछारें गयीं भादों गया
सवेरा हुआ
खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा
शरद आया पुलों को पार करते हुए
अपनी नयी चमकीली साइकिल तेज़ चलाते हुए
घंटी बजाते हुए ज़ोर-ज़ोर से
चमकीले इशारों से बुलाते हुए
पतंग उड़ाने वाले बच्चों के झुंड को
चमकीले इशारों से बुलाते हुए और
आकाश को इतना मुलायम बनाते हुए
कि पतंग ऊपर उठ सके-
दुनिया की सबसे हलकी और रंगीन चीज उड़ सके
दुनिया का सबसे पतला कागज उड़ सके-
बाँस की सबसे पतली कमानी उड़ सके-
कि शुरू हो सके सीटियों, किलकारियों और
तितलियों की इतनी नाज़ुक दुनिया

प्र.(1)"आकाश को इतना मुलायम बनाते हुए" से कवि का क्या आशय है ?

(क) आसमान पर्याप्त साफ़ है (ख) आकाश कोमल है
(ग) शीतल मंद हवा चल रही है (घ) उपर्युक्त सभी

प्र.(2)शरद की तुलना किससे की गई है ?

(क) साइकिल चलाने वाले बच्चे से (ख) पतंगसे
(ग) खरगोश की आँखों से (घ) तितलियों से

प्र.(3)कॉलम-। को कॉलम-।। से सुमेलितकीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए –

कॉलम 1	कॉलम 2
A भादो	1 खेलकूद और आनंद
B शरद की साइकिल	2 अँधेरा
C बच्चों की किलकारियाँ	3 नया उत्साह

विकल्प :

(क) A (1), B (2), C (3)
(ख) A (2), B (3), C (1)
(ग) A (2), B (1), C (3)
(घ) A (3), B (1), C (2)

प्र.(4)निम्नलिखित कथन औरकारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए।

कथन (A) :पतंग को पतले कागज और पतली कमानी से बनायाजाता है।

कारण (R) : पतले कागज और पतली कमानी के कारण पतंगआसानी से ऊपर उड़ जाती हैं।

(क) कथन (A) सही है, कारण (R) गलत है।
(ख) कथन (A) सही नहीं है, कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं, किंतु कारण (R) उसकी सही व्याख्या नहींकरता।
(घ) कथन (A) सही है तथा कारण (R) दोनों सही हैं, कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्याकरता है।

प्र.(5) चमकीले इशारों का अर्थ है –

(क) चमकदार सूर्य द्वारा आकर्षित करना
(ख) चमकदार चाँदनी द्वारा आकर्षित करना
(ग) बिजली चमकना
(घ) पतंगोंकाचमकना

उत्तरमाला-

1	2	3	4	5
(घ)	(क)	(ख)	(घ)	(क)

काव्यांश-2

जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास
पृथ्वी घूमती हुई आती है उनके बेचैन पैरों के पास
जब वे दौड़ते हैं बेसुध
छतों को भी नरम बनाते हुए
दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए
जब वे पेंग भरते हुए चले आते हैं डाल की तरह लचीले वेग अकसर
छतों के खतरनाक किनारों तक-
उस समय गिरने से बचाता है उन्हें
सिर्फ़ उनके ही रोमांचित शरीर का संगीत
पतंगों की धड़कती ऊँचाइयाँ उन्हें थाम लेती हैं महज़ एक धागे के सहारे
पतंगों के साथ-साथ भी उड़ रहे हैं
अपने रंध्रों के सहारे
अगर वे कभी गिरते हैं छतों के खतरनाक किनारों से और बच जाते हैं तब तो
और भी निडर होकर सुनहले सूरज के सामने आते हैं
पृथ्वी और भी तेज़ घूमती हुई आती है
उनके बेचैन पैरों के पास।

प्र.(1) "सिर्फ उनके रोमांचित शरीर का संगीत" का क्या अर्थ है?

(क) बच्चों का उत्साह और ऊर्जा(ख) कोई संगीत वाद्य
(ग) किसी विशेष संगीत का उल्लेख(घ) बच्चों की कोमलता

प्र.(2) 'छतों को नरम बनाते हुए' पंक्ति का अर्थ है –

(क) बच्चों के कोमल पैरों से छत मुलायम महसूस होना(ख) छतों पर रूई फैलाना
(ग) छत पर पतंगें रख देना (घ) आसमान में बादलों का आना

प्र.(3) दिशाओं को मृदंग की तरह बजाने का अर्थ है-

(क) ढोल-नगाड़ों की आवाज़ गूँजना (ख) तबलों की आवाज़ गूँजना
(ग) पैरों की आवाज़ गूँजना (घ) हवाओं की आवाज़ गूँजना

प्र.(4) निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए-
कथन (A) :बच्चों में कपास की तरह नरमी, लोच और कोमलता जन्मजात होती है।
कारण (R) : पृथ्वी घूमती हुई बच्चों के बेचैन पैरों के पास आती है।
(क) कथन (A) सही है, कारण (R) गलत है।
(ख) कथन (A) सही नहींहै, कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं, किंतु कारण (R) उसकी सही व्याख्या नहीं करता।
(घ) कथन (A) सही हैतथा कारण (R) दोनों सही हैं, कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

प्र.(5) कॉलम- I को कॉलम- I I से सुमेलितकीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए –

कॉलम 1	कॉलम 2
A बेचैन पैरों के पास	1 लचीलेपन के साथ गतिशीलता
B डाल की तरह लचीले वेग	2 पाँवों की गूँज
C दिशाओं को बजाना	3 तेज गति से दौड़ना

विकल्प :
(क) A (1), B (2), C (3)
(ख) A (2), B (3), C (1)
(ग) A (2), B (1), C (3)
(घ) A (3), B (1), C (2)

<u>उत्तरमाला-</u>

1	2	3	4	5
(क)	(क)	(ग)	(ग)	(घ)

वर्णनात्मक प्रश्न

प्रश्न 1:'सबसे तेज़ बौछारें गयीं, भादो गया' के बाद प्रकृति में जो परिवर्तन कवि ने दिखाया है, उसका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
उत्तर:'सबसे तेज़ बौछारें गयीं, भादो गया' के बाद प्रकृति में जो परिवर्तन कवि ने दिखाया है, वह इस प्रकार है—
शरद ऋतु का आगमन:कवि के अनुसार, भादो मास की तेज़ बौछारों के बाद शरद ऋतु का आगमन होता है। यह ऋतु कई ऋतुओं के बाद आती है।
सुबह का सूर्य:शरद ऋतु में सुबह का सूर्य लाल और चमकदार होता है, जिसे कवि ने खरगोश की आँखों से तुलना की है।
आसमान: शरद ऋतु में आसमान साफ और स्वच्छ हो जाता है।
हवा और आकाश: शरद ऋतु में शीतल और मंद हवा चलती है और आकाश मुलायम लगता है।

प्रश्न 2:'जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास' – कपास से बच्चों की तुलना क्यों की गई है?
उत्तर: कपास कोमल, मुलायम, लचीली और साफ होती है। बच्चे भी जन्म से कोमल, मुलायम, सहनशील और पवित्र-मन वाले होते हैं। जिस प्रकार कपास कोमलता और सफेदी का प्रतीक है, उसी प्रकार बच्चे भी अपने साथ निर्मलता और कोमलता लेकर आते हैं। उनका मन स्वच्छ और पवित्र होता है।

प्रश्न 3: 'पतंगों के साथ-साथ वे भी उड़ रहे हैं' – बच्चों का उड़ान से कैसा सम्बन्ध है?
उत्तर: जब बच्चे पतंग उड़ाते हैं तो पतंग के साथ-साथ उनका मन भी उड़ता है। जिस बच्चे की पतंग जितनी ऊँची उड़ती है, वह बच्चा भी अपने-आप को उतना ही ऊँचा महसूस करता है। इस प्रकार, पतंग उड़ाने का अनुभव बच्चों को मानसिक रूप से भी ऊँचाई पर ले जाता है।

प्रश्न 4:'दिशाओं को मृदंग की तरह बजाने' का क्या तात्पर्य है?
उत्तर:जब बच्चे पतंग के लिए बेसुध होकर खुरदरी छतों पर दौड़ते हैं, तो उनके पैरों की आवाज़ चारों दिशाओं में गूँजती है। यह आवाज़ इस प्रकार लगती है, मानो चारों दिशाओं में ढोल-नगाड़े और मृदंग बज रहे हों। पाँवों की इस गूँज को कवि ने दिशाओं को मृदंग की तरह बजाना माना है।

प्रश्न 5:खतरनाक परिस्थितियों का सामना करने के बाद आप दुनिया की चुनौतियों के सामने स्वयं को कैसा महसूस करते हैं?

उत्तर:खतरनाक परिस्थितियों का सामना करने के बाद हम अपने-आप को निडर और आत्मविश्वास से भरा महसूस करते हैं। हम अपने-आप को चुनौतियों का मुकाबला करने में अधिक सक्षम पाते हैं और दुगुने उत्साह से हम चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार हो जाते हैं।

प्रश्न 6:कविता में आए बिम्बों को स्पष्ट कीजिए।
उत्तर: दृश्य बिम्ब (आँखों के सामने उभरने वाले):
- सबसे तेज़ बौछारें गयीं, भादो गया
- खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा
- शरद आया पुलों को पार करते हुए
- अपनी नई चमकीली साइकिल तेज़ चलाते हुए
- चमकीले इशारों से बुलाते हुए
- सुनहले सूरज के सामने आते हैं

श्रव्य बिम्ब (सुनाई देने वाले):
- घंटी बजाते हुए ज़ोर-ज़ोर से
- दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए

स्पर्श बिम्ब (महसूस करने वाले):
- आकाश को इतना मुलायम बनाते हुए
- छतों को नरम बनाते हुए

प्रश्न 7:शरद के सवेरे की तुलना किससे की गई है और क्यों? शरद की तुलना किससे की गई है और क्यों?
उत्तर:शरद के सवेरे की तुलना खरगोश की आँखों से की गई है, क्योंकि शरद के सवेरे का सूर्य खरगोश की आँखों की तरह लाल और चमकदार होता है।
शरद की तुलना साइकिल चलाते बच्चे से की गई है, क्योंकि साइकिल चलाते बच्चे के समान शरद ऋतु उत्साह और उमंग से भरी होती है।

प्रश्न 8:छतों को नरम बनाने से क्या तात्पर्य है?
उत्तर:जब बच्चे पतंग केलिए बेसुध होकर खुरदरी छतों पर दौड़ते हैं और उनके कोमल पैरों में चुभन का अहसास नहीं होता, तो कवि या देखने वालों को ऐसा महसूस होता है कि बच्चों ने अपने कोमल पैरों से छतों को नरम बना दिया है। इसका तात्पर्य है कि बच्चों का उत्साह और कोमलता इतनी प्रबल होती है कि वे कठोर छतों को भी मुलायम अनुभव करा देते हैं

अवधारणा मानचित्र

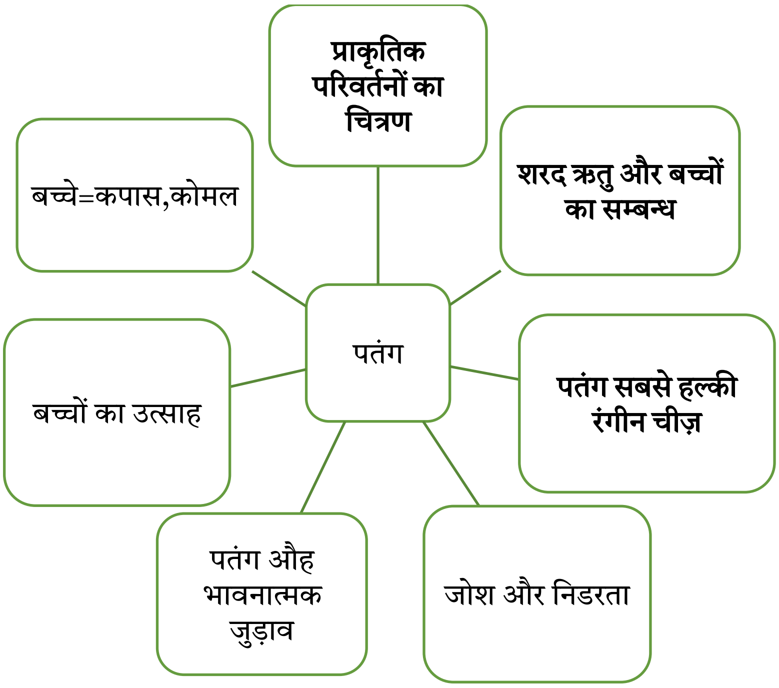

पाठ-3: कविता के बहाने, बात सीधी थी पर→कुँवरनारायण

कविता के बहाने (मूलभाव)

कविता का सार

- यह कविता एक यात्रा है, जो चिड़िया, फूल से लेकर बच्चे तक की है। कवि कहता है कि चिड़िया की उड़ान की सीमा है, फूल के खिलने के साथ उसकी परिणति निश्चित है, लेकिन बच्चे के सपने असीम हैं। बच्चों के खेल में किसी प्रकार की सीमा का कोई स्थान नहीं होता। कविता भी शब्दों का खेल है, और शब्दों के इस खेल में जड़, चेतन, अतीत, वर्तमान और भविष्य—सभी उपकरण मात्र हैं। इसीलिए जहाँ कहीं रचनात्मक ऊर्जा होगी, वहाँ सीमाओं के बंधन खुद-ब-खुद टूट जाते हैं।

बात सीधी थी (मूलभाव)

- इसमें कथ्य के द्वंद्व उकेरते हुए भाषा की सहजता की बात की गई है।
- अच्छी बात या अच्छी कविता का बनना सही बात का सही शब्द से जुड़ना होता है और जब ऐसा होता है तो किसी दबाव या अतिरिक्त मेहनत की जरूरत नहीं होती, वह सहूलियत के साथ हो जाता है।
- सही बात को सही शब्दों के माध्यम से कहने से ही रचना प्रभावशाली बनती है।
- मनुष्य अपनी भाषा को टेढ़ी तब बना देता है जब वह आडंबरपूर्ण और चमत्कारपूर्ण शब्दों के माध्यम से कथ्य को प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।
- अंततः शब्दों के चक्कर में पड़कर वे कथ्य अपना अर्थ खो बैठते हैं।

काव्यांशों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

काव्यांश-1 (कविता के बहाने)

कविता एक उड़ान है चिड़िया के बहाने
कविता की उड़ान भला चिड़िया क्या जाने
बाहर-भीतर, इस घर उस घर
कविता के पंख लगा उड़ने के माने
चिड़िया क्या जाने?
कविता एक खिलना है फूलों के बहाने
कविता का खिलना भला फूल क्या जाने!
बाहर भीतर, इस घर उस घर
बिना मुरझाए महकने के माने, फूल क्या जाने?

प्रश्न

1.कवि ने कविता को किसकी उड़ान माना है?

(a) प्रश्नों की
(b) शब्द की
(c) सीमाओं की
(d) कल्पना की   उत्तर: (d) कल्पना की

2."कविता की उड़ान भला चिड़िया क्या जाने" पंक्ति का आशय क्या है?

(a) कविता की उड़ान चिड़िया की उड़ान से कम होती है
(b) कविता की उड़ान असीमित है, इसे चिड़िया नहीं समझ पाती है
(c) कविता और चिड़िया दोनों की उड़ान अनन्त है
(d) कविता की उड़ान से चिड़िया भली-भाँति परिचित है
उत्तर: (b) कविता की उड़ान असीमित है, इसे चिड़िया नहीं समझ पाती है

3.कवि ने फूल और कविता के खिलने में क्या अंतर बताया है?

(a) फूल क्षणिक होता है जबकि कविता अमर होती है
(b) फूल में सुगंध होती है जबकि कविता में नहीं होती
(c) फूल में सौंदर्य होता है जबकि कविता में क्षणिक सौंदर्य होता है
(d) फूल और कविता दोनों में कोई समानता नहीं है
उत्तर: (a) फूल क्षणिक होता है जबकि कविता अमर होती है

4.निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए।

कथन (A): कवि के अनुसार फूल कविता की समता नहीं कर सकते हैं।

कारण (R): कविता अनंत जीवन एवं आनंद से युक्त होती है।

(a) कथन (A) सही है, कारण (R) गलत है।
(b) कथन (A) सही नहीं है, कारण (R) सही है।
(c) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं, किंतु कारण (R) उसकी सही व्याख्या नहीं करता।
(d) कथन (A) सही है तथा कारण (R) दोनों सही हैं, कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
उत्तर: (d) कथन (A) सही है तथा कारण (R) दोनों सही हैं, कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

5.कॉलम- I को कॉलम- I I से सुमेलितकीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए –

कॉलम 1	कॉलम 2
A कविता की उड़ान	1 कल्पना शक्ति
B कविता के पंख	2 असीमित
C बिना मुरझाए महकने के माने	3 अमरता और आनन्द

विकल्प :
(a) A (1), B (2), C (3)
(b) A (2), B (3), C (1)
(c) A (2), B (1), C (3)
(d) A (3), B (1), C (2)

उत्तरमाला-

1	2	3	4	5
d	b	a	d	c

काव्यांश-2 (बात सीधी थी पर)

आखिरकार वही हुआ जिसका मुझे डर था
ज़ोर ज़बरदस्ती से
बात की चूड़ी मर गई
और वह भाषा में बेकार घूमने लगी!
हारकर मैंने उसे कील की तरह
उसी जगह ठोंक दिया।
ऊपर से ठीक ठाक
पर अंदर से, न तो उसमें कसाव था
न ताकत !
बात ने, जो एक शरारती बच्चे की तरह
मुझसे खेल रही थी,
मुझे पसीना पोंछते देखकर पूछा-
"क्या तुमने भाषा को
सहूलियत से बरतना कभी नहीं सीखा ?"

1.बात कवि के साथ कैसे खेल रही थी?
(a)शांत बच्चे के समान
(b)चंचल बच्चे के समान
(c) शरारती बच्चे के समान
(d) बुद्धिमान बच्चे के समान

2.'बात की चूड़ी मर जाना' से कवि का का तात्पर्य है?
(a)बात का पकड़ में आना
(b)बात का प्रभावशाली हो जाना
(c)बात का प्रभावहीनहो जाना
(d)सरल व सहज भाषा का प्रयोग करना

3.कॉलम- I को कॉलम- I I से सुमेलितकीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए –

कॉलम 1	कॉलम 2
A कवि का डर	1 थक-हारकर
B कील की तरह ठोंक देना	2 बात का प्रभाव खत्म होना
C पसीना पोंछते	3 बात में कसावट न होना

विकल्प :
(a) A (1), B (2), C (3)(b) A (2), B (3), C (1)
(c) A (2), B (1), C (3)(d) A (3), B (1), C (2)

बहुविकल्पीय प्रश्न

4. निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए।
कथन (A):"क्या तुमने भाषा को सहूलियत से बरतना कभी नहीं सीखा?"
कारण (R):यह व्यक्ति के भाषा ज्ञान की कमी को दर्शाता है।
(a) कथन (A) सही है, कारण (R) गलत है।
(b) कथन (A) सही नहीं है, कारण (R) सही है।
(c) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं, किंतु कारण (R) उसकी सही व्याख्या नहीं करता।
(d) कथन (A) सही है तथा कारण (R) दोनों सही हैं, कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
उत्तर:(c) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं, किंतु कारण (R) उसकी सही व्याख्या नहीं करता।

5. 'भाषा में बेकार घूमने लगी' का अर्थ क्या है?
(a) बात भाषा में अर्थहीन हो गई
(b) बात कविता बन गई
(c) भाषा को नई दिशा मिली
(d) कविता में भावनात्मक मज़बूती उत्तर:(a) बात भाषा में अर्थहीन हो गई

उत्तरमाला

1	2	3	4	5
c	c	b	d	a

वर्णनात्मक प्रश्न

प्रश्न (1):इस कविता के बहाने बताएँ कि 'सब घर एक कर देने के माने' क्या है?
उत्तर:'सब घर एक कर देने के माने' है—आपसी भेदभाव समाप्त कर अपनत्व की भावना का विकास करना। कवि के अनुसार बच्चे आपसी भेदभाव मिटाकर अपनत्व व भाईचारे की भावना का विकास करते हैं। बच्चे खेलते हुए एक घर से दूसरे घर में बिना भेदभाव के चले जाते हैं और भाईचारा बढ़ाते हैं।

प्रश्न (2):'उड़ने' व 'खिलने' का कविता से क्या सम्बन्ध बनता है? तथा कविता और बच्चे को समानांतर रखने के क्या कारण हो सकते हैं? अथवा
कविता, फूल और बच्चे से कविता की तुलना कवि ने किस प्रकार की है?

उत्तर: चिड़िया, फूल, बच्चा और कविता में तुलना:
चिड़िया, फूल, बच्चा कविता
चिड़िया—उड़ान सीमित होती है और आसमान में एक निश्चित ऊँचाई तक ही उड़ सकती है। कविता की उड़ान असीमित होती है और वह दिल की गहराइयों से आसमान की ऊँचाइयों तक उड़ सकती है।
फूल—फूल के खिलने के साथ ही मुरझाना भी निश्चित हो जाता है और वह थोड़े समय के लिए ही खुशबू देता है। कविता बिना मुरझाए महकती रहती है। इसका प्रभाव कभी खत्म नहीं होता और यह हमेशा पाठकों को आनंद देती रहती है।
बच्चा = कविता
1. बच्चे खेल खेलते हैं व आनंद देते हैं, उसी प्रकार कविता भी शब्दों का खेल है और आनंद प्रदान करती है।
2. दोनों ही भेदभाव मिटाकर अपनत्व व भाईचारे की भावना बढ़ाते हैं। (सब घर एक कर देना)
3. दोनों में ही रचनात्मक ऊर्जा होती है।

प्रश्न (3):'भाषा को सहूलियत' से बरतने का क्या अभिप्राय है?
उत्तर:'भाषा को सहूलियत' से बरतने का अभिप्राय है—भाषा को सरलता और सहजता से प्रयोग में लाना। बात को सीधे और सरल शब्दों में कहना, जिससे कथ्य और भाषा में सामंजस्य स्थापित हो सके और बात लोगों तक सरलता से पहुँच सके। भाषा को सुविधाजनक एवं सहज ढंग से प्रयोग में लाना।

प्रश्न (4):'सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है।' कैसे?
उत्तर:कवि सीधी-सरल बात को प्रभावी बनाने की कोशिश करता है। इसके लिए वह सुंदर, अलंकृत, प्रभावी व जटिल भाषा का प्रयोग करता है। भाषा के इस प्रदर्शन के चक्कर में सीधी बात भी टेढ़ी व पेचीदा हो जाती है।

प्रश्न (5):निम्नलिखित मुहावरों/ बिम्बों के आशय को स्पष्ट कीजिए:

(i) बात की चूड़ी मर जाना
(ii) पेंच को कील की तरह ठोंक देना

उत्तर:
(i) बात की चूड़ी मर जाना: बात का प्रभावहीन होना। जब भाषा के साथ ज़ोर-जबरदस्ती की जाए तो बात का प्रभाव समाप्त हो जाता है। इसे कवि ने बात की चूड़ी मरना कहा है।
(ii) पेंच को कील की तरह ठोंक देना: बात में कसावट न होना। जब कवि से बात बन नहीं पा रही थी तब वह उसे जैसे-तैसे पूरी कर देता है। यह बात उसकी कील की तरह महसूस होती है जो बाहर से तो पूरी लगती है परन्तु अंदर से उसमें कसावट नहीं होती।

प्रश्न (6):'बात सीधी थी पर' कविता का सन्देश / कथ्य स्पष्ट कीजिए।
उत्तर:कविता में कथ्य और माध्यम के द्वंद्व को बताते हुए कहा गया है कि हमें बात को सीधे-सरल शब्दों में कहना चाहिए। भाषा को सुन्दर, अलंकृत और जटिल बनाने के चक्कर में बात उलझने लगती है और मूल बात का प्रभाव समाप्त हो जाता है। इसलिए हमें सही बात के लिए सही शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। साथ ही भाषा की सरलता पर ध्यान देना चाहिए।

अवधारणा मानचित्र - कविता के बहाने

चिड़िया की उड़ान सीमित	•कविता की उड़ान असीमित •कल्पना के पंखों से उड़ान
फूल का खिलना और मुरझाना	•कविता हमेशा आनंद देती है •कविता का प्रभाव कभी न खत्म होना
बच्चा = कविता	•दोनों ही अपनत्व व भाईचारा बढ़ाते हैं •दोनों ही आनन्द देते हैं

अवधारणा मानचित्र - बात सीधी थी पर

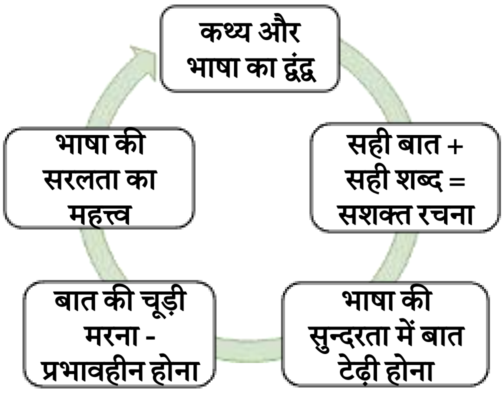

पाठ-4: कैमरे में बंद अपाहिज→रघुवीर सहाय

मूलभाव-
दूरदर्शन-कर्मियों की संवेदनहीनता और क्रूरता पर प्रकाश डाला गया है। प्राय: मीडिया में कार्यक्रम को आकर्षक और बिकाऊ बनाने के लिए मानवीय दुख-दर्द को खोलकर दिखाया जाता है । अपाहिजों को कैमरे के सामने लाकर उनसे बड़े क्रूर प्रश्न पूछे जाते हैं। उनके सोए हुए दर्द को जानबूझकर ताज़ा किया जाता है।मीडिया की कोशिश होती है कि अपाहिज व्यक्ति अपने दर्द से और दर्शक करुणा से रो पड़े जिससे उनका कार्यक्रम रोचक बन सके।

काव्यांशों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

काव्यांश-1

हम दूरदर्शन पर बोलेंगे —
हम समर्थ, शक्तिवान।

हम एक दुर्बल को लाएँगे,
एक बंद कमरे में।
उससे पूछेंगे —
"तो, आप क्या अपाहिज हैं?
तो आप क्यों अपाहिज हैं?
आपका अपाहिजपन तो दुख देता होगा — देता है?"
(कैमरा दिखाओ — इसे बड़ा, बहुत बड़ा!)
"हाँ तो बताइए, आपका दुख क्या है?
जल्दी बताइए, वह दुख बताइए!"
...बता नहीं पाएगा।

प्रश्नावली – पद्यांश 1 पर आधारित

प्र.1: पद्यांश में 'समर्थ, शक्तिवान' किसके लिए कहा गया है?

- (i) कवि के लिए
- (ii) कार्यक्रम के संचालक के लिए
- (iii) अपाहिज के लिए
- (iv) दर्शकों के लिए

प्र.2: प्रस्तुत पद्यांश का उद्देश्य क्या है?

- (i) मीडिया के सामाजिक उत्तरदायित्व को दर्शाना
- (ii) मीडियाकर्मियों की संवेदनशीलता को दर्शाना
- (iii) मीडियाकर्मियों की संवेदनशून्यता को दर्शाना
- (iv) मीडिया की परंपरा को बताना

प्र.3: कॉलम-। को कॉलम-।। से सुमेलित कीजिए —

कॉलम-।	कॉलम-।।
A. हम समर्थ, शक्तिवान	2. अहंकार का भाव
B. (कैमरा दिखाओ...)	1. व्यावसायिक मानसिकता
C. आप क्यों अपाहिज हैं?	3. संवेदनहीनता

विकल्प:
- (i) A(1), B(2), C(3)
- (ii) A(2), B(3), C(1)
- (iii) A(2), B(1), C(3)
- (iv) A(3), B(1), C(2)

प्र.4: 'हम एक दुर्बल को लाएँगे' — इस पंक्ति में 'दुर्बल' किसके लिए कहा गया है?

- (i) कवि के लिए
- (ii) कार्यक्रम के संचालक के लिए
- (iii) अपाहिज के लिए
- (iv) दर्शकों के लिए

प्र.5: कथन: दूरदर्शन पर शारीरिक विकलांग व्यक्ति का साक्षात्कार लिया जाता है।
कारण: दूरदर्शन वाले उसका दुख बाँटना चाहते हैं।

विकल्प:

- (i) कथन सही है, लेकिन कारण गलत है।
- (ii) कथन गलत है, लेकिन कारण सही है।
- (iii) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किन्तु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

- (iv) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

उत्तरमाला:

1 – (ii)
2 – (iii)
3 – (iii)
4 – (iii)
5 – (i)

पद्यांश – 2

फिर हम पर्दे पर दिखलाएँगे —
फूली हुई आँख की एक बड़ी तस्वीर, बहुत बड़ी तस्वीर।
और उसके होंठों पर एक कसमसाहट भी...
(आशा है आप उसे उसकी अपंगता की पीड़ा मानेंगे)।
एक और कोशिश — दर्शक! धैर्य रखें।
देखिए, हमें दोनों को एक संग रुलाना है —
आप और वह दोनों।
(कैमरा! बस करो... नहीं हुआ... रहने दो,
पर्दे पर वक्त की कीमत है)।
अब मुस्कुराएँगे हम...
आप देख रहे थे —
'सामाजिक उद्देश्य से युक्त कार्यक्रम'
(बस थोड़ी ही कसर रह गई!)

प्र.(1)कार्यक्रम संचालक परदे पर फूली हुई आँख की तसवीर क्यों दिखाना चाहता है ?
(i)उनके कष्टों को बताकर कार्यक्रम प्रभावी बनाना
(ii) उनके प्रति सहानुभूति दिखाना
(iii) अपाहिजों को समाज के सामने लाना
(iv) उनकी वास्तविकता बताना

प्र.(2)'एक और कोशिश' इस पंक्ति का क्या तात्त्पर्य है ?
(i)अपाहिज को समझाने की
(ii)अपाहिज के कष्ट दूर करने की
(iii)अपाहिज से मनमाना व्यवहार करने की
(iv)अपाहिज को घर भेजने की

प्र.(3)कॉलम-। को कॉलम-।। से सुमेलितकीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए –

कॉलम 1	कॉलम 2
A आप और वह	1 कार्यक्रम संचालक
B अबमुसकुराएँगेहम	2 कैमरामैन
C नहींहुआ, रहनेदो	3 दर्शक और अपाहिज

विकल्प :
(i) A (3), B (2), C (1)
(ii) A (2), B (3), C (1)
(iii) A (2), B (1), C (3)
(iv) A (3), B (1), C (2)

बहुविकल्पीय प्रश्न (पद्यांश – 2 के आधार पर)
प्र.4 'परदे पर वक्त की कीमत है' — इस पंक्ति से प्रश्नकर्त्ता के किस नज़रिए का पता चलता है?

- (i) व्यावसायिक नज़रिया
- (ii) संवेदनशील नज़रिया
- (iii) सकारात्मक नज़रिया
- (iv) सहानुभूतिपूर्ण नज़रिया

प्र.5 कथन: दर्शक उस अपंग व्यक्ति के रोने का इंतज़ार करते हैं।
कारण: दर्शक भी दूरदर्शन पर उस अपंग व्यक्ति के दुख-दर्द को उसके मुख से सुनना चाहते हैं।

विकल्प:

- (i) कथन सही है, लेकिन कारण गलत है।
- (ii) कथन गलत है, लेकिन कारण सही है।
- (iii) कथन एवं कारण दोनों सही हैं, किन्तु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।
- (iv) कथन एवं कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

उत्तरमाला:
प्र.1 – (ii)
प्र.2 – (iii)
प्र.3 – (iii)
प्र.4 – (i)
प्र.5 – (i)

वर्णनात्मक प्रश्न

प्र.1: 'कैमरे में बंद अपाहिज करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है' — स्पष्ट कीजिए।
अथवा
'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता के शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।
उत्तर: इस कविता में मीडियाकर्मियों की व्यावसायिक मानसिकता और संवेदनहीनता को उजागर किया गया है। वे अपनी टी.वी. रेटिंग और लोकप्रियता के लिए एक अपाहिज व्यक्ति को स्टूडियो में लाकर उस पर बेहूदा प्रश्न करते हैं — "आप अपाहिज हैं?", "आप क्यों अपाहिज हैं?", "आपको कैसा लगता है?" आदि।
जब वह अपाहिज व्यक्ति इन प्रश्नों से आहत होकर रोने लगता है, तब उस दृश्य को कैमरे में कैद कर करुणा के नाम पर प्रचार और लाभ कमाने का माध्यम बना दिया जाता है।
इस प्रकार यह कविता अपाहिज व्यक्ति की पीड़ा नहीं, बल्कि करुणा के नाम पर क्रूरता की प्रस्तुति है। इसलिए शीर्षक पूरी तरह सार्थक है।
प्र.2: "हम समर्थ, शक्तिवान" और "हम एक दुर्बल को लाएँगे" — इन पंक्तियों के माध्यम से कवि ने क्या व्यंग्य किया है?
उत्तर:• "हम समर्थ, शक्तिवान" — मीडियाकर्मी स्वयं को ताकतवर और निर्णयकर्ता समझते हैं।
• "हम एक दुर्बल को लाएँगे" — अपाहिज व्यक्ति को वे कमज़ोर, लाचार और उपयोग की वस्तु मानते हैं।
कवि ने इन पंक्तियों के माध्यम से मीडिया की क्रूर व्यावसायिकता, संवेदनहीनता और अहंकार पर तीखा व्यंग्य किया है।

प्र.3: "परदे पर वक्त की कीमत है" — कहकर कवि ने साक्षात्कार के प्रति अपना नज़रिया किस रूप में रखा है?
उत्तर:इस पंक्ति के माध्यम से कवि ने मीडिया का व्यावसायिक दृष्टिकोण दर्शाया है।
मीडिया कर्मियों के लिए न तो अपाहिज की पीड़ा मायने रखती है और न ही उसका आत्म-सम्मान।
उनका एकमात्र उद्देश्य होता है — कार्यक्रम की लोकप्रियता और अधिक से अधिक लाभ अर्जन।
इसलिए वे समय, संवेदना और नैतिकता को भी दरकिनार कर देते हैं।

प्र.4: यदि शारीरिक रूप से चुनौती का सामना कर रहे व्यक्ति और दर्शक दोनों एक साथ रोने लगें, तो प्रश्नकर्ता का कौन-सा उद्देश्य पूरा होगा?
उत्तर:यदि अपाहिज व्यक्ति और दर्शक दोनों एक साथ रोते हैं,
तो प्रश्नकर्ता का उद्देश्य —
• कार्यक्रम को लोकप्रिय बनाना,
• उसे भावनात्मक और करुणा-प्रधान सिद्ध करना,
• अधिकतम लाभ कमाना
— सभी सफल हो जाते हैं।
साथ ही, यह दृश्य दिखा कर मीडिया सामाजिक उद्देश्य भी पूर्ण करने का दिखावा कर लेता है।

अवधारणा मानचित्र

मीडियाकर्मियों की संवेदनहीनता	•स्टूडियो में अपाहिज व्यक्ति से बेहूदे प्रश्न - "क्या आप अपाहिज हैं?", "आप अपाहिज क्यों हैं?" आदि
अपाहिज की प्रतिक्रिया	•बेहूदे प्रश्नों से दुखी होकर रोना •अपनी पीड़ा न कह पाना
परदे पर वक्त की कीमत	•मीडिया द्वारा अपाहिज की पीड़ा बेचकर धन कमाना, अपाहिज की पीड़ा को महत्त्व न होना

पाठ-5: उषा→शमशेरबहादुरसिंह

मूलभाव-

'उषा' कविता कवि 'शमशेर बहादुर सिंह' द्वारा रचित है जिसमें प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ गाँव की गतिशीलता को जोड़ा गया है। सुबह का आसमान कवि को ऐसा लगने लगता है जैसे किसी ने **राख से चौका लीपा हो** अर्थात आसमान धीरे-धीरे गहरे नीले रंग से राख के रंग यानी गहरा स्लेटी होने लगता है। अतः **नीले नभ को गीले चौके के समान** बताया गया है। प्रातः कालीन वातावरण की नमी ने सुबह के वातावरण को किसी **शंख की भांति और भी सुंदर, निर्मल व पवित्र बना दिया है**।धीरे-धीरे जैसे-जैसे सूर्योदय होने लगता है, तो हलकी लालिमा आकाश में फैल जाती है। उस दृश्य को देखकर ऐसा लगता है जैसे **काली रंग की सिल अर्थात काले पत्थर को लाल केसर से धो दिया गया है**। सुबह के समय आकाश ऐसा लगता है मानो किसी बच्चे की **काली स्लेट पर किसी ने लाल खड़िया (चॉक) मल दी हो**।सूरज की किरणें सूर्योदय के समय ऐसे प्रतीत हो रही है जैसे **किसी युवती का सुंदर शरीर साफ़ नीले जल में झिलमिला रहा हो।**

काव्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे, भोर का नभ,
राख से लीपा चौका, (अभी गीला पड़ा है)
बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से
कि जैसे धुल गई हो,
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक, मल दी हो किसी ने
नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो।
और ....
जादू टूटता हैं इस उषा का अब
सूर्योदय हो रहा हैं।

प्र.(1)कवि ने प्रातःकालीन वातावरण की समानता नीले शंख से क्यों की है?

(i) भोर में आसमान का रंग नीले शंख जैसा बुझा होने के कारण
(ii) कवि को नीला रंग पसंद होने के कारण
(iii)केवल नए उपमान का प्रयोग करने के कारण
(iv) उपरोक्त सभी कारणों से

प्र.(2)अभी गीला पड़ा है, का तात्पर्य है-

(i)नए जीवन का उदय (ii) वातावरण में नमी
(iii) मैदान गीला है (iv) वातावरण में शुष्कता

प्र.(3)कॉलम-। को कॉलम-।। से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए –

कॉलम 1	कॉलम 2
A काली सिल	1 ग्रामीण बच्चों की गतिशीलता

B राख से लीपा चौका	2 रात्रि की समाप्ति
C स्लेट पर या लाल खड़िया चाक	3 नभ का सुरमई रंग

विकल्प :

(i) A (1), B (2), C (3) (ii) A (3), B (1), C (2)
(iii) A (2), B (1), C (3) (iv) A (3), B (2), C (1)

प्र.(4)उषा का जादू- का तात्पर्य है-

(i)केवलतालाब का दृश्य (ii)आसमान के बदलते रंग
(iii) महिलाओं का स्नान करना (iv)पानी का नीला रंग

प्र.(5) कथन: उषा का जादू दिखाई देता है
कारण : उषाकाल में सूर्य की तेज़ रौशनी आसमान में होती है

विकल्प :(i) कथन सही है, लेकिन कारण गलत है।
(ii) कथन गलत है, लेकिन कारण सही है।
(iii) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किन्तु कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।
(iv) कथन तथा कारण दोनों गलत हैं।

उत्तरमाला:

प्रश्न	उत्तर
1	(i)
2	(ii)
3	(iv)
4	(ii)
5	(ii)

वर्णनात्मक प्रश्न

प्रश्न 1:
कविता के किन उपमानों को देखकर कहा जा सकता है कि 'उषा' गाँव की सुबह का गतिशील शब्द-चित्र है?

उत्तर:
कविता में निम्नलिखित उपमानों से यह स्पष्ट होता है कि 'उषा' गाँव की जीवंत व गतिशील सुबह का चित्रण है –

1. **"आसमान नीले शंख व गीली राख के समान"** – इससे स्पष्ट होता है कि आकाश में नमी है। गाँव की महिलाएँ भोर में ही चूल्हा-चौका लीपकर दिनचर्या प्रारंभ कर देती हैं।
2. **"काली सिल पर लाल केसर, स्लेट पर लाल चाक"** – काले आकाश में लालिमा की आभा दिखाई देती है। पुरुष पूजा की तैयारी करते हैं और बच्चे स्लेट पर लाल चाक से लिखते हैं।
3. **"गौर झिलमिल देह"** – सूर्य की किरणें तालाब पर मानवीय आकृति जैसी प्रतीत होती हैं। महिलाएँ प्रातः स्नान के लिए तालाब जाती हैं।

प्रश्न 2:
"भोर का नभ, राख से लीपा चौका (अभी गीला पड़ा है)" — नई कविता में कोष्ठक और विराम चिह्नों एवं पंक्तियों के बीच का स्थान किस प्रकार कविता को अर्थ प्रदान करता है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:
नई कविता में शिल्पगत प्रयोग विशेष स्थान रखते हैं। कोष्ठक अक्सर किसी अतिरिक्त या सूक्ष्म अर्थ की ओर संकेत करता है। यहाँ "अभी गीला पड़ा है" कोष्ठक में होने से यह संकेत मिलता है कि राख का चौका अभी गीला है, उसमें नमी है — यह नमी ग्रामीण जीवन की ताजगी का प्रतीक बनती है।

सूखा चौका फीका लगता है, जबकि गीला चौका गहराई और ठंडक लिए होता है। इसीलिए यह पंक्ति कविता में **बिंबात्मकता और अर्थवत्ता** को बढ़ाती है।

प्रश्न 3:
उषा का जादू क्या है? यह जादू कब टूटता है?

उत्तर:
भोर से सूर्य के उदय तक आकाश में जो रंगों का परिवर्तन दिखाई देता है — नीला, राख जैसा स्लेटी और हल्की लालिमा — वही **उषा का जादू** कहलाता है।
यह जादू **सूर्योदय के साथ समाप्त** हो जाता है जब सूर्य अपनी पूर्ण चमक के साथ आकाश में छा जाता है।

प्रश्न 4:
'उषा' कविता की भाषागत विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर:

1. कविता में **खड़ी बोली हिंदी** का प्रयोग किया गया है।
2. **देशज एवं ग्रामीण शब्द** प्रयुक्त हुए हैं — जैसे: राख, चौका, खड़िया आदि।
3. **नए उपमानों** का प्रयोग है — जैसे: नीला शंख, राख से लीपा चौका।
4. उषाकाल के **प्रकृति–चित्रण व बिंब** हैं — जैसे: "झिलमिल देह की तरह पानी में पड़ती सूर्य किरणें"।

अवधारणा मानचित्र

पाठ- 5 उषा

प्राकृतिक वातावरण	**•आसमान : नीले शंख व गीली राख जैसा – नमी युक्त** **•सूर्य की लालिमा : काली स्लेट पर लाल चाक जैसा दृश्य, काली सिल पर लाल केसर** **•तालाब की झिलमिलाहट : गौर झिलमिल देह की तरह – मानवीय आकृति का आभास**
गाँव की महिलाएँ, पुरुष, बच्चे	**• महिलाएँ- भोर में उठकर चूल्हा-चौका लीपना, तालाब में स्नान करना** **•पुरुष- सुबह-सवेरे सिल पर केसर घिसकर पूजा की तैयारी** **•बच्चे- काली स्लेट पर लाल चाक से पढ़ाई करना**

पाठ-6: बादल राग→सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

मूलभाव –

- कवि बादलों को देखकर कल्पना करता है कि बादल हवारूपी समुद्र में तैरते हुए अमीरों के क्षणिक सुखों पर दुख की छाया है
- कवि को क्रांतिदूत बादल युद्ध की नौका के समान लगते हैं।
- बादल की गर्जना को सुनकर धरती के अंदर सोए हुए बीज या अंकुर नए जीवन की आशा से अपना सिर ऊँचा उठाकर देखने लगते हैं।
- आकाश में तैरते बादल ऐसे लगते हैं मानो वज्रपात से सैकड़ों वीर धराशायी हो गए हो और उनके शरीर क्षत-विक्षत है।
- कवि बादलों को क्रांति दूत की संज्ञा देता है। बादलों का गर्जन किसानों व मजदूरों को नवनिर्माण की प्रेरणा देता है। क्रांति से सदा आम आदमी को ही फ़ायदा होता है।
- कवि कहता है कि कमजोर शरीर वाले कृषक बादलों को अधीर होकर बुलाते हैं क्योंकि पूँजीपति वर्ग ने उनका अत्यधिक शोषण किया है।

काव्यांशों पर आधारित बहु विकल्पीय प्रश्न

काव्यांश-1

तिरती हैं समीर-सागर पर
अस्थिर सुख पर दुख की छाया-

जग के दग्ध हृदय पर
निर्दय विप्लव की प्लावित माया-
यह तेरी रण-तरी
भरी आकांक्षाओं से,
घन, भेरी-गर्जन से सजग सुप्त अंकुर
उर में पृथ्वी के, आशाओं से
नवजीवन की, ऊँचा कर सिर,
तक रहे हैं, ऐ विप्लव के बादल!

प्र.(1) 'अस्थिर सुख पर दुख की छाया' पंक्ति में दुःख की छाया किसे कहा गया है?
(i)क्रांतिदूत बादलों को (ii)अमीरों को
(iii)पहाड़ों को (iv)नाव को

प्र.(2) 'यह तेरी रण-तरी' पंक्ति में 'रण-तरी' किसे कहा गया है?
(i)युद्ध में तैरने वाली नाव(ii)युद्ध की आकांक्षाएँ
(iii)युद्ध रूपी नौका अर्थात बादल(iv)पहाड़ रूपीनाव को

प्र.(3) कथन और कारणको पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए:
कथन: बादल को क्रांतिदूत के रूप में प्रस्तुत किया गया है।
कारण: बादल के बरसने से अग्नि शांत हो जाती है।
(i)कथन सही है, कारण गलत है
(ii)कथन गलत है, कारण सही है
(iii)कथन तथा कारण दोनों सही हैं, कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।
(iv)कथन तथा कारण दोनों सही हैं, कारण, कथनकी सही व्याख्या नहीं करता है।

प्र.(4)कॉलम-। को कॉलम-।। से सुमेलितकीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए –

कॉलम 1	कॉलम 2
A समीर – सागर	1 विनाश
B प्लावित	2 वायुरूपी समुद्र
C विप्लव	3 बाढ़ से ग्रस्त

विकल्प :
(i) A (1), B (2), C (3) (ii) A (2), B (3), C (1)
(iii) A (2), B (1), C (3) (iv) A (3), B (2), C (1)

प्र.(5)क्रांति का सबसे अधिक लाभ किसे मिलता है?
(i) मध्यम वर्ग को(ii) गरीबों व आम आदमी को
(iii) अमीरों व पूँजीपतियों को (iv) उदासीन वर्ग को

<u>उत्तरमाला-</u>

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
i	iii	i	ii	ii

काव्यांश-2

रुद्ध कोष हैं, क्षुब्ध तोष
अंगना-अंग से लिपटे भी
आतंक अंक पर काँप रहे हैं।
धनी, वज्र-गर्जन से बादल!
त्रस्त नयन-मुख ढाँप रहे हैं।
जीर्ण बाहु, हैं शीर्ण शरीर,
तुझे बुलाता कृषक अधीर,
ऐ विप्लव के वीर! चूस लिया है उसका सार,
हाड़-मात्र ही है आधार,

ऐ जीवन के पारावार!

प्र.(1)'चूस लिया है उसका सार' पंक्ति में किसकी ओर संकेत किया गया है?

(i) बादल की ओर (ii) शोषित वर्ग की ओर

(iii) शोषक वर्ग की ओर (iv) धनी वर्ग की ओर

प्र.(2)'ऐ जीवन के पारावार!' पंक्ति में 'पारावार' किसे कहा गया है?

(i) समुद्र को(ii) बादल को

(iii) जीवन को पार लगाने वाले भगवान को (iv) पूँजीपतियों को

प्र.(3)कथन और कारणको पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए:

कथन: काव्यांश में अत्यधिक शोषण के कारण किसानों की दयनीय स्थिति को चित्रित किया गया है।

कारण: शोषण के कारण किसान का शरीर कृश हो गया है।

(i) कथनसही है, कारणगलत है।

(ii) कथनगलत है, कारणसही है।

(iii) कथनतथा कारणदोनों सही हैं,कारण, कथनकी सही व्याख्या करता है।

(iv) कथनतथा कारणदोनों सही हैं,कारणकथनकी सही व्याख्यानहीं करता है।

प्र.(4)कॉलम-। को कॉलम-।। से सुमेलितकीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए –

कॉलम 1	**कॉलम 2**
A रुद्ध	1 कमजोर
B क्षुब्ध	2 खिन्न
C जीर्ण	3 एकत्रित/रुका हुआ

विकल्प :

(i) A (1), B (2), C (3) (ii) A (3), B (1), C (2)

(iii) A (2), B (1), C (3) (iv) A (3), B (2), C (1)

प्र.(5)मुख-ढाँपना किस मानसिकता का द्योतक है?

(i) सहयोगी मानसिकता (ii) रूढ़िवादी मानसिकता

(iii)भयभीत मानसिकता (iv) फैशन की मानसिकता

<u>उत्तरमाला-</u>

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
ii	ii	iii	iv	iii

<u>वर्णनात्मक प्रश्न-</u>

1. अस्थिर सुख पर दुख की छाया पंक्ति में दुख की छाया किसे कहा गया है और क्यों?

उत्तर-अस्थिर सुख- अमीरों ने गरीबों का शोषण कर जो अस्थाई सुख पाया है।

दुख की छाया- बादल

दुख की छाया बादलों को कहा गया है क्योंकि बादल अमीरों के अस्थाई सुख पर मँडरा कर व क्रांति कर उसे खत्म करने वाले हैं। अमीरों ने गरीबों का शोषण कर जो सुख पाया है, वह अस्थाई है और बादल वर्षा कर उसे नष्ट करने वाले हैं।

2.अशनि-पात से शापित उन्नत शत-शत वीर पंक्ति में किसकी ओर संकेत किया गया है?

उत्तर-अशनि-पात का अर्थ है- बिजली गिरना, क्रांति होना।

वीर का अर्थ है- ऊँचे पहाड़, अमीर व पूँजीपति

जिस प्रकार जब बिजली गिरती है तब ऊँचे-ऊँचे पहाड़ टूट-फूट जाते हैं व उन्हें नुकसान उठाना पड़ता है। उसी प्रकार जब क्रांति होती है तब सबसे पहले बड़े-बड़े पूँजीपतियों व शोषक वर्ग को नुकसान उठाना पड़ता है।

3.'बादल राग' कविता के आधार पर भाव स्पष्ट कीजिए-'विप्लव-रव से छोटे ही हैं शोभा पाते।'

उत्तर-विप्लव रव का अर्थ है - बादलों की गर्जना, क्रांति की आवाज

छोटे का अर्थ है- छोटे पौधे तथा गरीब, मजदूर, किसान व आम आदमी।

जिस प्रकार जब बादल गरजते है और वर्षा करते हैं, तब छोटे-छोटे पौधे तेजी से पनपते हैं। उसी प्रकार जब क्रांति होती है तब गरीबव आम आदमी को लाभ मिलता है तथा अमीरों व शोषक वर्ग को नुकसान उठाना पड़ता है।

4.बादलों के आगमन से प्रकृति में होने वाले किन परिवर्तनों को कविता रेखांकित करती है?

उत्तर- कविता में बादलों के आगमन से प्रकृति में होने वाले परिवर्तन इस प्रकार है -

i) आसमान में बादल गरज रहे हैं। बहुत तेज़ बारिश हो रही है।

ii) ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों पर बिजली गिर रही है और वे टूट-फूट रहे हैं।
iii)छोटे-छोटे पौधे पनप रहे हैं।
iv) कमलों से पानी टपक रहा है।

5. क्रांति की गर्जना का शोषक वर्ग पर क्या प्रभाव पड़ता है? उनका मुख ढाँपना किस मानसिकता का द्योतक है? 'बादल राग' कविता के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर- शोषक वर्ग ने आर्थिक साधनों पर एकाधिकार जमा लिया है, परंतु क्रांति की गर्जना सुनकर वह अपनी सत्ता को खत्म होते देखता है। वह बुरी तरह भयभीत हो जाता है। उसकी शांति समाप्त हो जाती है। शोषक वर्ग का मुख ढाँपना उनकी कमजोर स्थिति को दर्शाता है। क्रांति के परिणामों से वे भयभीत हैं।

6. 'बादल राग' कविता में 'ऐ विप्लव के वीर' किसे कहा गया है और क्यों?

उत्तर- इस कविता में 'ऐ विप्लव के वीर!' बादल को कहा गया है। बादल घनघोर वर्षा करता है तथा बिजलियाँ गिराता है। इससे सारा जनजीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। बादल क्रांति का प्रतीक है। क्रांति आने से बुराई रूपी कीचड़ समाप्त हो जाता है तथा आम व्यक्ति को जीने योग्य स्थिति मिलती हैं।

7. 'बादल राग' शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

उत्तर-'बादल राग' क्रांति की आवाज का परिचायक है। यह कविता जनक्रांति की प्रेरणा देती है। कविता में बादलों के आने से नए पौधे हर्षित होते हैं, उसी प्रकार क्रांति होने से आम आदमी को विकास के नए अवसर मिलते हैं। कवि बादलों को बारिश करने या क्रांति करने के लिए आहवान करता है। यह शीर्षक उद्देश्य के अनुरूप है। अत: यह शीर्षक सर्वथा उचित है।

अवधारणा मानचित्र

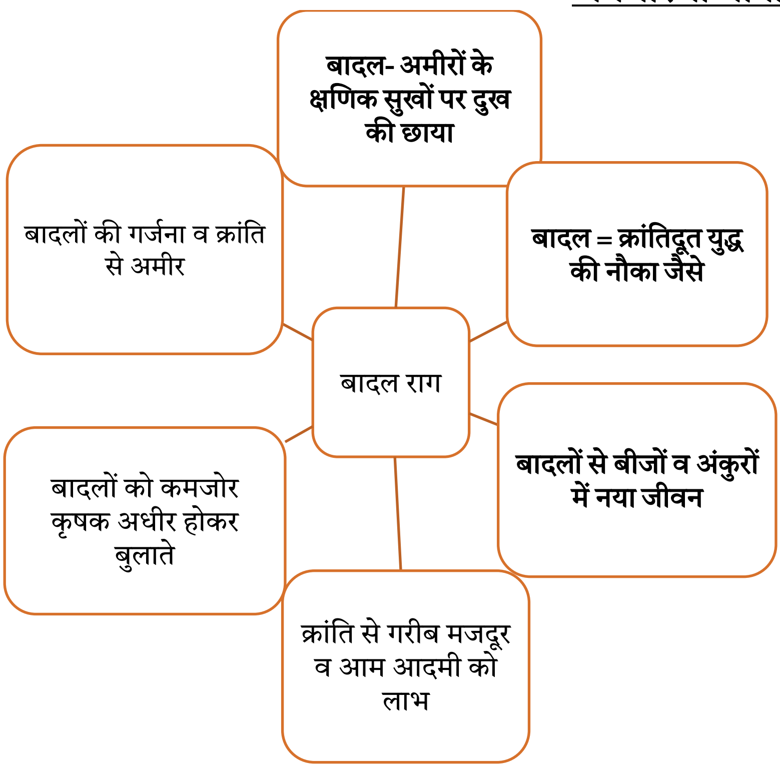

पाठ-7: कवितावली व लक्ष्मणमूर्च्छा→तुलसीदास

पाठ का सार :

निम्न पंक्तियाँ तुलसीदास द्वारा रचित कवितावली रचना के उत्तर कांड से ली गई है जिसमे कवि ने समाज में व्याप्त बरोजगारी व भुखमरी का दारुण चित्रण किया है। मजदूर,भिखारी,किसान,व्यापारी नौकर आदि सभी रोजगार हीन हो कर अपना पेट भरने के लिए अनैतिक,अधार्मिक कर्म करने को मजबूर है। वे अपने पेट की आग को शांत करने के लिए अपनी संतान तक को बेचने के लिए तैयार हो जाते है। तुलसीदास जी ने पेट की आग का शमन श्रीराम रूपी (मेघ) की कृपा रूपी (वर्षा) बताया है। समाज में व्याप्त जातिवाद का खंडन किया है व अपने आप को राम का गुलाम माना है। तुलसीदास ने ऊँच-नीच के भेदभाव का खंडन किया है व श्रीराम की भक्ति का संदेश दिया है।

पठित काव्यांश -1

“किसबी, किसान-कुल, बनिक, भिखारी, भाट,
चाकर, चपल नट, चोर, चार, चेटकी।
पेटको पढ़त, गुन गढ़त, चढ़त गिरि,
अटत गहन-गन अहन अखेटकी।।

ऊँचे-नीचे करम, धरम-अधरम करि,
पेट ही को पचत, बेचत बेटा-बेटकी।।
'तुलसी' बुझाइ एक राम घनस्याम ही तें,
आगि बड़वागितें बड़ी है आगि पेटकी"।।

बहुविकल्पीय प्रश्न

(क) काव्यांश के अनुसार विद्या प्राप्त करने में लगे लोगों का उद्देश्य इनमें से क्या है?

(i) ज्ञानवान बनना
(ii) समाज में शिक्षा का बढ़ावा देना।
(iii) जीवन यापन का साधन बनाना
(iv) सामाजिक बुराइयों दूर करने में सक्षम बनना

(ख)'आगि बडवागिते बड़ी है आगि पेट की'पंक्ति के भावार्थ हेतु कौन-सा कथन सत्य है ?

कथन- । पेट की आग बादल बुझाते है।
कथन- ।। पेट की आग समुद्र की आग से बढ़कर है।
कथन- ।।। समुद्र की आग पेट की आग से बढ़कर।
कथन- ।V पेट की आग समुद्र बुझाता है।
(i) केवलकथन । सहीहै। (ii) केवलकथन ।। सहीहै।
(iii) केवलकथन ।। और ।।। सहीहैं। (iv)केवलकथन । और ।V सहीहैं।

(ग) संसार के सभी लोग काम क्यों करते हैं ?

(i) पेट भरने के लिए
(ii)आनंद के लिए
(iii) खेल के लिए
(iv) ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए

(घ) तुलसीदास के राम किसके समान कृपालु है?

(i) बादलों के समान
(ii) समुद्र के समान
(iii) जंगलों के समान
(iv) नदी के समान

(ड) निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिजिए।

कथन (A): पेट भरने के लिए लोग छोटे बड़े कार्य करते हैं।
कारण (R) : पेट की आग समुद्र की आग से भी भयंकर है।
(i) कथन (A) सही है. कारण (R) गलत है।
(ii) कथन (A) सही नहीं है, कारण (R) सही है।
(iii)- कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं, किंतु कारण (R) उसकी सही व्याख्या नहीं करता।
(iv) कथन (A) सही है तथा कारण (R) दोनों सही हैं, कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

उत्तर कुंजिका काव्यांश -1 :

क	ख	ग	घ	ड.
iii	।i	i	i	iv

पठित काव्यांश -2

"धूत कहौ, अवधूत कहौ,
रजपूतु कहौ, जोलहा कहौ कोऊ।
काहूकी बेटीसों बेटा न व्याहब,
काहूकी जाति बिगार न सोऊ॥
तुलसी सरनाम गुलामु है रामको,
जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ॥
माँगि कै खैबो, मसीतको सोइबो,
लैबो को एकु न दैबे को दोऊ॥

बहुविकल्पीय प्रश्न :

(क) तुलसीदास रात को कहाँ सोते थे?
- मंदिर में
- मस्जिद में
- घर में
- खुले में

(ख) निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए –
कथन (A): तुलसीदास समाज के लोगों से कोई मतलब नहीं रखना चाहते।
कारण (R): समाज के लोग जातिगत मानसिकता से ग्रसित हैं।
- (i) कथन और कारण दोनों सही हैं, तथा कारण कथन की सही व्याख्या कर रहा है।
- (ii) कथन और कारण दोनों सही हैं, किन्तु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं कर रहा है।
- (iii) कथन सत्य है, किन्तु कारण असत्य है।
- (iv) कथन असत्य है, किन्तु कारण सत्य है।

(ग) 'लैबो को एकु न दैबे को दोऊ' को आप क्या कहेंगे?
- अनुप्रास अलंकार
- मुहावरा
- प्रतीक
- उदाहरण

(घ) निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनिए –
कथन : इसमें तुलसीदास का क्षोभ व्यक्त हुआ है।
कारण : वे मानो अपने विरोधियों को चुनौती दे रहे हैं।
- (i) कथन और कारण दोनों सही हैं।
- (ii) कथन सही है और कारण गलत है।
- (iii) कथन गलत है, किन्तु कारण सही है।
- (iv) कथन और कारण दोनों गलत हैं।

(ड) 'धूत कहौ, अवधूत कहौ'......... के माध्यम से कवि किन पर व्यंग्य कर रहा है?
- धर्म के ठेकेदारों पर
- जातीय आधार पर भेदभाव करने वालों पर
- संप्रदाय के आधार पर भेदभाव करने वालों पर
- उपर्युक्त सभी पर

उत्तरकुंजिका काव्यांश-2 :

क	ख	ग	घ	ड.
Ii	I	ii	i	Iv

वर्णनात्मक प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1- कवितावली में उदधृत छंदों के आधार पर स्पष्ट करें कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है?

उत्तर i) तुलसी ने लिखा है कि उस समय बेरोजगारी व भुखमरी की समस्या थी।
ii) किसान, व्यापारी, नौकर, भिखारी सभी बेरोजगार थे।
iii) आम-आदमी बेरोजगारी के कारण चिंतित था और पेट की आग बुझाने के लिए लोग अच्छे-बुरे काम करते थे।
iv) उस समय अमीर अधिक अमीर व गरीब अधिक गरीब थे।गरीबी के कारण लोग अपनी संतान तक को बेचने के लिए तैयार थे। सभी और विवशता का वातावरण था। इससे स्पष्ट है कि तुलसी को अपने युग की आर्थिकविषमता की अच्छी समझ थी।

प्रश्न 2. पेट की आग का शमन ईश्वर (राम) भक्ति का मेघ ही कर सकता है- तुलसी का यह काव्य सत्य क्या इस समय का भी युग-सत्य है? तर्क संगत उत्तर दीजिए।

उत्तर :- तुलसीदास ने 'कवितावली' के एक पद में माना है कि 'पेट की आग' रामभक्ति रूपी मेघ ही बुझा सकते हैं। कवि का मानना है कि कर्म-फल ईश्वर के अधीन है और प्रकृति भी ईश्वर है। जब प्रकृति (ईश्वर) की कृपा से वर्षा होती है और मनुष्य कर्म करता है तो अन्न पैदा होता है जिससे पेट की आग का शमन होता है।निष्ठा और पुरुषार्थ से मनुष्य के पेट की आग का शमन तभी हो सकता है,जब ईश्वर की कृपा हो। अतः यह वर्तमान युग का भी सत्य है।

प्रश्न 3. "धूत कहो : ... वाले छंद में ऊपर से सरल व निरीह दिखलाई पड़ने वाले तुलसी की भीतरी असलियत एक स्वाभिमानी भक्त हृदय की है। इससे आप कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर- हम इस बात से पूर्णत: सहमत है कि तुलसी स्वाभिमानी भक्त हृदय व्यक्ति है क्योंकि धूत कहो.....वाले छंद में भक्ति की गहनता और सघनता में उपजे भक्त हृदय के आत्मविश्वास का सजीव चित्रण है,जिससे समाज में व्याप्त जाति-पाति और दुराग्रहो के तिरस्कार का साहस पैदा होता है। वे सच्चे राम भक्त हैं तथा उन्हीं के प्रति समर्पित हैं। वे कहते हैं कि चाहे कोई उन्हें धूर्त कहे या योगी कहे, राजपूत कहे या जुलाहा कहे, उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। वे तो संसार-प्रसिद्ध राम के गुलाम है। वे समाज में व्याप्त कुरीतियों का विरोध करते हैं व अपने स्वाभिमान को महत्त्व देते हैं।

प्रश 4.व्याख्या करें /भावार्थ करें

(क) 'माँगि कै खैबो, मसीत को सोइबो, लैबोको एकु न दैबको दोऊ'।।

उत्तर- तुलसीदास को समाज के उलाहनों-तानों से कोई फर्क नहीं पड़ता कि समाज उनके बारे में क्या सोचता है,वे किसी पर आश्रित नहीं है। वे श्रीराम का नाम लेकर दिन बिताते है,माँग कर खाते है और मस्जिद में सो जाते है। उन्हें किसी से कुछ लेना देना नहीं है।

(ख) **'ऊँचे नीचे करम, धरम-अधरम करि, पेट ही को पचत, बेचत बेटा-बेटकी'।।**

उत्तर - तुलसीदास जी ने समाज में व्याप्त आर्थिक विषमताओं का वर्णन करते हुए कहा कि पेट भरने की समस्या से मजदूर,किसान,नौकर,भिखारी आदि सभी परेशान थे।वे अपनी भूख मिटाने के लिए सभी अनैतिक,अधार्मिक कार्य कर रहे है।अपने पेट की भूख मिटाने के लिए लोग अपनी संतान तक को बेच रहे है।सब के मूल में मात्र यहीं कारण है कि सभी सिर्फ अपनी ही चिंता करते है।

पाठ-7: लक्ष्मण मूर्च्छा और राम का विलाप→तुलसीदास

कविता का मूलभाव- लक्ष्मण मूर्छा और राम का विलाप का मूल भाव प्रेम, कर्तव्य, और निराशा का एक जटिल मिश्रण है। यह लक्ष्मण के धैर्य और प्रेम की परीक्षा करता है, जबकि राम का विलाप उनके भाई के लिए चिंता और निराशा व्यक्त करता है।

प्रेम और समर्पण:लक्ष्मण की मूर्छा के समय राम का विलाप उनके भाई के प्रति गहरा प्रेम और समर्पण दिखाता है।

कर्तव्य और चिंता:राम को अपनी पत्नी सीता की रक्षा और अपनी प्रजा की देखभाल करने का कर्तव्य भी याद है, जो उन्हें लक्ष्मण के लिए चिंता से परे ले जाता है।

निराशा:लक्ष्मण की मूर्छा राम के लिए एक बड़ी निराशा है, क्योंकि वे अपने भाई को खोने के डर से त्रस्त हैं।

आत्म-समर्पण:लक्ष्मण का धैर्य और प्रेम, उनकी मूर्छा के दौरान भी, उनकी आत्म-समर्पण की भावना को प्रदर्शित करता है, जो उन्हें राम के प्रति समर्पित करता है।

प्रेरणा:यह कथा हमें सिखाती है कि प्रेम और विश्वास हर मुश्किल को पार कर सकते हैं।

पठितपद्यांश –1

तव प्रताप उर राखि प्रभु, जैहउँ नाथ तुरंत।
अस कहि आयसु पाहि पद, बंदि चलेउ हनुमंत।
भरत बाहूबल सील गुन, प्रभुपद प्रीति अपार।
मन महुँ जात सराहत, पुनि-पुनि पवन कुमार।।

प्रश्न 1 – दोहे में किस रस की प्रधानता है?

(क) शांतरस
(ख) वीररस
(ग) भक्तिरस
(घ) शृंगाररस

प्रश्न 2 – "बाहुबल" , "मनमहुँ" , "प्रभुपदप्रीति" में कौन-सा अलंकार है?

(क) अनुप्रासअलंकार
(ख) उत्प्रेक्षाअलंकार
(ग) उपमाअलंकार

(घ) श्लेषअलंकार

प्रश्न 3 – निम्न कथनों पर विचार कीजिए।

कथन (A) हनुमान भरत के बाहुबल और शील गुणों की मन ही मन में प्रशंसा कर रहे थे।

कारण- (R) भरत के मन में भाई के प्रति अपार प्रेम और आदर था

(क) कथन (A) सही है कारण (R) गलत है

(ख) कथन (A) और है कारण (R) गलत है

(ग) कथन (A) और है कारण (R) सही है

(घ) कथन (A) गलत है कारण (R) सही है

प्रश्न 4 – हनुमानजी भरतजी के किस गुण से प्रभावित हुए?

(क) रामभक्ति

(ख) बाहूबल

(ग) शीतलस्वभाव

(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 5 – कॉलम -1 को कॉलम-2 से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए ?

कॉलम -1	**कॉलम-2**
1-पद	i वंदना
2-आयसु	ii चरण
3-बंदि	iii आज्ञा

(क) 1-(ii), 2-(iii),3-(i)

(ख) 1-(i), 2-(iii),3-(ii)

(ग) 1-(ii), 2-(iii),3-(i)

(घ) 1-(iii), 2-(ii),3-(ii)

2 –

सुत, बित, नारि, भवन, परिवारा।
होहिं जाहिं जग बारहिं बारा।।
अस विचारि जियँ जागहु ताता।
मिल इन जगत सहोदर भ्राता।।
जथा पंख बिनु खग अति दीना।
मनि बिनु फनि करि बरु करहीना।।
असम मजिवन बंधु बिनु तोही।
जौं जड़ दैव जिआवै मोही।।
जैहउँ अवध कवन मुँह लाई।
नारि हेतु प्रिय भाई गँवाई।।
बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं।
नारि हानि बिसेष छति नाहीं।।

प्रश्न 1 – दोहे में किस रस की प्रधानता है?

(क) शांतरस

(ख) वीररस

(ग) करुणरस

(घ) शृंगाररस

प्रश्न 2 – 'पक्षी और हाथी के माध्यम से श्री राम जी क्या बताना चाहते है ?

(क) पक्षी पंख के बिना उड़ नहीं सकते है

(ख) सूंड के बिना हाथी का कोई अस्तित्त्व नहीं है

(ग) लक्ष्मण के बिना राम का जीवन व्यर्थ है

(घ) पक्षी और हठी समान उनका जीवन स्वतंत्र है

प्रश्न 3 – 'जाहिंजग', 'बारहिंबारा', 'बंधुबिनु', 'करिबरकर' में कौन-सा अलंकार है?

(क) श्लेषअलंकार

(ख) पुनरुक्तिप्रकाशअलंकार
(ग) रूपकअलंकार
(घ) अनुप्रासअलंकार

प्रश्न 4 – इस संसार में कौन दोबारा नहीं मिल सकता?

(क) माता-पिता
(ख) स्त्री
(ग) सगा भाई
(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 5 – प्रस्तुत पद्यांश में श्रीराम किसके बिना अपना जीवन कठिन कह रहे हैं?

(क) भरत
(ख) लक्ष्मण
(ग) सीता
(घ) हनुमान

उत्तर माला

काव्यांश-1					**काव्यांश -2**				
1	2	3	4	5	1	2	3	4	5
क	क	ग	घ	ग	ग	ग	घ	ग	ख

वर्णनात्मक प्रश्न

प्रश्न-1 स्त्री के प्रति तुलसी युग का दृष्टिकोण कैसा था?

उत्तर: तुलसी का युग स्त्रियों के लिए बहुत कष्टदायी था। लोग स्त्री को घोर अपमान करते थे। पैसों के लिए वे बेटी तक को बेच देते थे। इस काल में स्त्रियों का हर प्रकार से शोषण होता था। नारी के बारे में लोगों की धारणा संकुचित थी। नारी केवल भोग की वस्तु थी। इसी कारण उसकी दशा दयनीय थी। वह शोषण की चक्की में पिसती जा रही थी।

प्रश्न 2. क्या तुलसी का साहित्य आज भी प्रासंगिक है?

उत्तर: तुलसी ने लगभग 450 वर्ष पहले जो कहा था, वह आज भी प्रासंगिक है। उन्होंने अपने समाज की सभी समस्याओं का चित्रण किया। इन्हीं समस्याओं के कारण तुलसी युग का समाज पूरी तरह से बिखर चुका था। उन्होंने इन सारी विद्रूपताओं को देखा और उसका चित्रण किया। जिस प्रकार की परिस्थितियाँ उस युग में विद्यमान थी ठीक वही परिस्थितियाँ आज भी विद्यमान हैं। इसीलिए तुलसीदास का साहित्य आज भी प्रासंगिक है।

प्रश्न-3 लक्ष्मण के मूर्छित हो जाने पर राम क्या सोचने लगे?

उत्तर: जब लक्ष्मण को शक्तिबाण लगा तो वे मूर्छित हो गए। यह देखकर राम भावुक हो उठे। वे सोचने लगे कि इस वन में आकर मैंने पहले तो जानकी को खो दिया अब अपने भाई को खोने जा रहा हूँ। केवल एक स्त्री के कारण मेरा भाई आज मृत्यु की गोद में सो रहा है। यदि स्त्री खो जाए तो कोई बड़ी हानि नहीं होती किंतु भाई के खो जाने से जीवनभर कलंक मेरे माथे पर रहेगा।

प्रश्न-4. भ्रातृशोक में हुई राम की दशा को कवि ने प्रभु की नर लीला की अपेक्षा सच्ची मानवीय अनुभूति के रूप में रचा है। क्या आप इससे सहमत हैं? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

उत्तर:जब लक्ष्मण को शक्ति बाण लगा तो राम एकदम विह्वल हो उठे। वे ऐसे रोए जैसे कोई बालक पिता से बिछुड़कर होता है। सारी मानवीय संवेदनाएँ उन्होंने प्रकट कर दीं। जिस प्रकार मानव-मानव के लिए रोता है ठीक वैसा ही राम ने किया। राम के ऐसे रूप को देखकर यही कहा जा सकता है कि राम की दशा को कवि ने प्रभु की नर लीला की अपेक्षा सच्ची मानवीय अनुभूति के रूप में रचा है। मानव में अपेक्षित सारी अनुभूतियाँ इस शोक सभा में दिखाई देती हैं।

प्रश्न 5. शोकग्रस्त माहौल में हनुमान के अवतरण को करुण रस के बीच वीर रस का आविर्भाव क्यों कहा गया है?

उत्तर: हनुमान लक्ष्मण के इलाज के लिए संजीवनी बूटी लाने हिमालय पर्वत गए थे। उन्हें आने में देर हो रही थी। इधर राम बहुत व्याकुल हो रहे थे। उनके विलाप से वानर सेना में शोक की लहर थी। चारों तरफ शोक का माहौल था। इसी बीच हनुमान संजीवनी बूटी लेकर आ गए। सुषेण वैद्य ने तुरंत संजीवनी बूटी से दवा तैयार कर के लक्ष्मण को पिलाई तथा लक्ष्मण ठीक हो गए। लक्ष्मण के उठने से राम का शोक समाप्त हो गया और सेना में उत्साह की लहर दौड़ गई। लक्ष्मण स्वयं उत्साही वीर थे। उनके आ जाने से सेना का खोया पराक्रम प्रगाढ़ होकर वापस आ गया। इस तरह हनुमान द्वारा पर्वत उठाकर लाने से शोक-ग्रस्त माहौल में वीर रस का आविर्भाव हो गया था।

प्रकृति और शासन की विषमता से उपजी बेकारी और

विविध विषमताओं से ग्रस्त युगीन यथार्थ को

कविता से समाज में व्याप्त जात पाँत और धर्म के विभेदक दुराग्रहों के तिरस्कार का सहस पैदा होता है

भक्ति की रचनात्मक भूमिका

पाठ 8: रुबाईयाँ→फिराक गोरखपुरी

पाठ का सारांश

प्रस्तुत **रुबाईयाँ** फिराक गोरखपुरी द्वारा रचित है। चार रुबाइयों (चार पंक्तियों की कविता) का संग्रह है। रुबाई फारसी कविता की एक शैली है जिसमें चार पंक्तियां होती है पहली पंक्ति दूसरी और चौथी पंक्ति में तुक मिलाया जाता है तथा तीसरी पंक्ति स्वच्छंद होती है एवं जिसमें गहरी बातों को संक्षेप में कहा जाता है।

रुबाइयों में यह बताया गया है कि:

- बीता हुआ समय लौट कर नहीं आता, इसीलिए हर क्षण का सदुपयोग करना चाहिए।
- मां के वात्सल्य और प्रेम का वर्णन किया गया है।
- जीवन में त्योहारों का महत्व दर्शाया है।
- उर्दू मिश्रित हिंदी सरल भाषा एवं लोक भाषा का अद्भुत मिश्रण है।
- फिराक गोरखपुरी की रुबाई में हिंदी का एक घरेलू रूप दिखाता है भाषा सहज एवं सरल है।
- "मुझे चांद चाहिए मैया री" जैसे वाक्य में बिंबात्मकता सूरदास जी के वात्सल्य को ताजा कर देती है।
- कविता में एक बच्चे के जीवन के विभिन्न पहलुओं का वर्णन है, जैसे कि उसकी मासूमियत, खेलने की इच्छा, और परिवार के साथ उसके संबंध। कविता में दीपावली और रक्षाबंधन जैसे त्योहारों का भी उल्लेख है, जो बच्चे के जीवन को और भी रंगीन बनाते हैं।

मुख्य बिंदु:

- बच्चे की मासूमियत*: कविता में बच्चे की मासूमियत और उसकी खेलने की इच्छा का वर्णन है।
- परिवार के साथ संबंध*: कविता में परिवार के साथ बच्चे के संबंधों का वर्णन है, जैसे कि मां का प्यार और भाई के साथ उसका संबंध।
- त्योहारों का महत्व*: कविता में दीपावली और रक्षाबंधन जैसे त्योहारों का उल्लेख है, जो बच्चे के जीवन को और भी रंगीन बनाते हैं।
- बच्चे की जिज्ञासा*: कविता में बच्चे की जिज्ञासा और अन्वेषण की भावना का वर्णन है, जैसे कि वह चांद को देखकर आकर्षित होता है।
- इन मुख्य बिंदुओं से कविता के अर्थ और भाव को समझने में मदद मिलती है।

काव्यांश-1

आंगन में लिए चांद के टुकड़े को खड़ी
हाथों पे झुलाती है उसे गोद-भरी
रह-रह के हवा में जो लोका देती है
गूँज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हंसी"
नहला के छलके-छलके निर्मल जल से
उलझे हुए गेसुओं में कंघी करके
किस प्यार से देखता है बच्चा मुंह को
जब घुटनियों में ले के हैं पिन्हाती कपड़े।"

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. 'चाँद का टुकड़ा' किसे कहा गया है?

a) चाँद b) झूला c) बच्चा d) गुड़िया

2. 'गोद-भरी' किसे कहा गया है

a) माँ को b) चाँद को c) हवा को d) दादी को

बहुविकल्पीय प्रश्न

3. माँ बच्चे को किस प्रकार नहलाती है?

a) उबले पानी से b) ठंडे पानी से
c) छलकते निर्मल जल से d) झील के पानी से

4.गेसुओं' का अर्थ क्या है?

a) कपड़े b) बाल c) पाँव d) आँखें

उत्तर:1. c) 2. A) 3.c) 4.b)

दीपावली की शाम घर पुते और सजे
चीनी के खिलौने जगमगाते लावे
वो रूपवती मुखड़े पै इक नर्म दमक
बच्चे के घरौंदे में जलाती है दिए।"
आंगन में ठुनक रहा है जिदयाया है
बालक तो हई चाँद पर ललचाया है
दर्पण उसे दे के कह रही है मां
देख आईने में चांद उतर आया है"
रक्षाबंधन की सुबह रस की पुतली
छायी है घटा गगन की हल्की-हल्की
बिजली की तरह चमक रहे हैं लच्छे
भाई के हैं बाँधती चमकती राखी।"

5.रूपवती मुखड़े पै इक नर्म दमक' – यह किसका वर्णन है?

a) बच्चा b) पिता c) माँ d) बहन

6. 'घरौंदे में जलाती है दिए' – यह दृश्य किसका प्रतीक है?

a) पूजा का b) माँ-बच्चे के प्रेम का c) विवाह का d) संकट का

7.माँ की बात से बालक को क्या अनुभव होता है?

a) चाँद मिल गया b) चाँद दूर है
c) चाँद नहीं चाहिए d) डर लग रहा है

8.रस की पुतली' से किसका बोध होता है?

a) बहन का b) माँ का c) बच्चे का d) चाँद का

उत्तर:5-c) 6-b) 7-a) 8-a)

1.कथन (Assertion):दीपावली के अवसर पर माँ बच्चे के घरौंदे में दिए जलाती है।
कारण (Reason):माँ अपने बच्चे की कल्पनाओं और भावनाओं का सम्मान करती है।

a) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
b) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता।
c) A सही है लेकिन R गलत है।
d) A गलत है लेकिन R सही है

सही उत्तर: a) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।

2.कथन (Assertion):बालक चाँद को पाने के लिए जिद करता है।
कारण (Reason):माँ बच्चे को बहलाने के लिए उसे दर्पण में चाँद दिखा देती है।

a) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
b) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता।
c) A सही है लेकिन R गलत है।
d) A गलत है लेकिन R सही है।

सही उत्तर: a) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।

लघुत्तरात्मक प्रश्न

1. 'चाँद के टुकड़े' जैसी उपमा का प्रयोग क्यों किया गया है?

उत्तर:बच्चे की मासूमियत और सुंदरता को दर्शाने के लिए उसे 'चाँद का टुकड़ा' कहा गया है।

2. माँ बच्चे की देखभाल कैसे करती है?

उत्तर:माँ बड़े प्यार से बच्चे को नहलाती है, उसके उलझे बाल सुलझाती है और घुटनों में बिठाकर उसे कपड़े पहनाती है।

3. कविता में मातृत्व का कौन-सा रूप झलकता है?
उत्तर:कविता में एक माँ का स्नेह, सेवा, देखभाल और वात्सल्य भाव झलकता है।
4.दीपावली की शाम में माँ की क्या भूमिका दिखाई गई है?
उत्तर:माँ दीपावली की सजावट में भाग लेती है और बच्चे के घरौंदे में प्रेमपूर्वक दिए जलाकर उसके उत्साह को बढ़ाती है।
5. माँ ने दर्पण देकर बच्चे की जिद कैसे शांत की?
उत्तर:माँ ने बच्चे को दर्पण देकर कहा कि उसमें चाँद उतर आया है, जिससे बच्चा प्रसन्न हो गया।
6. रक्षाबंधन के अवसर पर बहन का स्वरूप कैसा दिखाया गया है?
उत्तर:बहन को रस से भरी पुतली के रूप में दिखाया गया है जो प्यार से चमकती राखी बाँधती है।
क्रिटिकल थिंकिंग वाले प्रश्न:*
1. प्रथम रूबाइयों में बच्चे की मासूमियत को कैसे दर्शाया गया है?
उत्तर: कविता में बच्चे की मासूमियत को उसके खेलने की इच्छा, चांद को देखकर आकर्षित होने, और परिवार के साथ उसके संबंधों के माध्यम से दर्शाया गया है।
2.त्योहारों का महत्व रुबाइयों में कैसे दिखाया गया है?
उत्तर: कविता में त्योहारों का महत्व दिखाया गया है कि वे बच्चे के जीवन को और भी रंगीन बनाते हैं और परिवार के साथ उसके संबंधों को मजबूत करते हैं।
3. रुबाइयों में परिवार के साथ बच्चे के संबंधों का क्या महत्व है?
उत्तर: कविता में परिवार के साथ बच्चे के संबंधों का महत्व है कि वे बच्चे को सुरक्षा, प्यार, और समर्थन प्रदान करते हैं।
4. चतुर्थ रुबाई में बच्चे की जिज्ञासा को कैसे दर्शाया गया है?
उत्तर: कविता में बच्चे की जिज्ञासा को उसके चांद को देखकर आकर्षित होने और नए चीजों को खोजने की इच्छा के माध्यम से दर्शाया गया है।
5. फिराक गोरखपुरी द्वारा रचित रूबाइयों का मुख्य संदेश क्या है?
उत्तर: कविता का मुख्य संदेश है कि बचपन एक मासूम और खुशी भरा समय है, और परिवार और त्योहार इस समय को और भी विशेष बनाते हैं।

अवधारणा मानचित्र

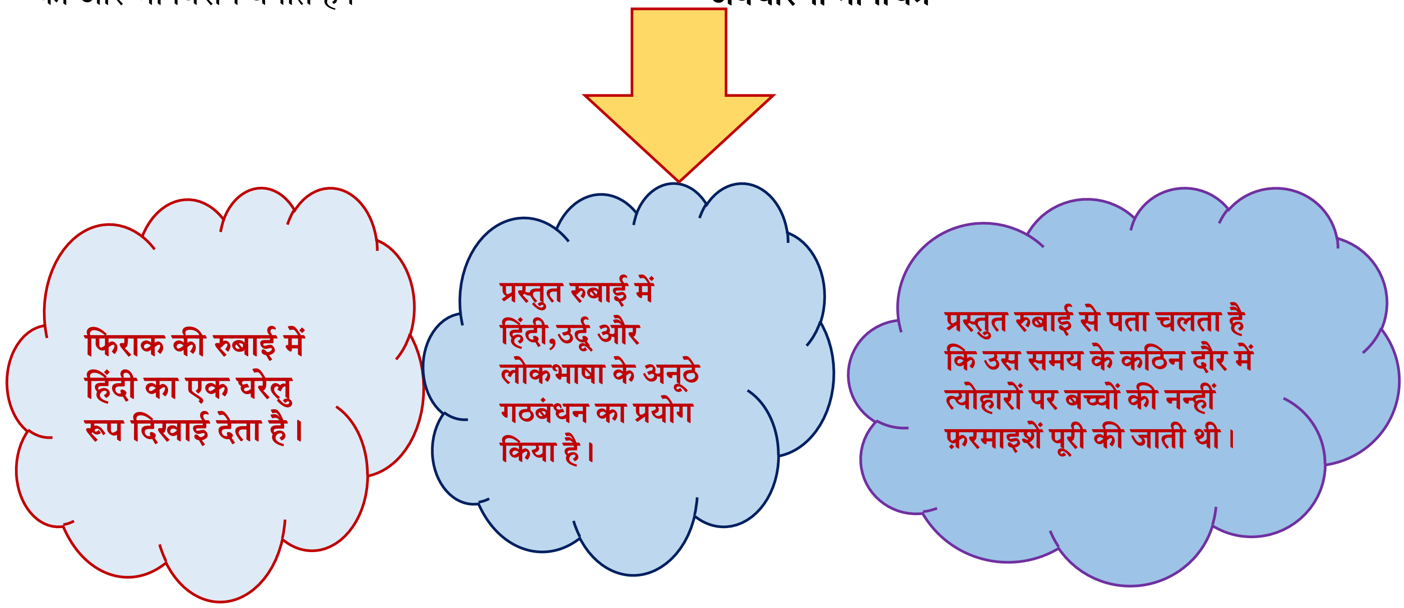

पाठ 9: छोटा मेरा खेत→उमाशंकर जोशी

कविता का मूल भाव - 'छोटा मेरा खेत'
'छोटा मेरा खेत' कविता में कवि ने कागज़ को खेत के रूप में प्रस्तुत किया है। कवि को कागज़ का पन्ना एक चौकोर खेत की तरह प्रतीत होता है। कवि को अपनी कविता और किसान के खेत में कई समानताएँ दिखाई देती हैं। कविता रूपी इस खेत में, किसी आँधी के प्रभाव से, एक बीज बोया जाता है। यह बीज कवि की कल्पना का सहारा लेकर विकसित होता है और इस प्रक्रिया में स्वयं गल जाता है, जिससे शब्दों के अंकुर फूटते हैं और कवि के विचार रचना का रूप ले लेते हैं। कविता में व्यक्त रस-धारा क्षणिक होते हुए भी अनंत काल तक चलती है, जो साहित्य की अमरता को दर्शाती है।

काव्यांश-1

छोटा मेरा खेत चौकोना

कागज़ का एक पन्ना,
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया।
कल्पना के रसायनों को पी
बीज गल गया नि:शेष;
शब्द के अंकुर फूटे,
पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. कवि ने कागज़ की तुलना किससे की है?
   - मन से
   - कवि से
   - घर से
   - खेत से
2. 'बीज' से कवि का क्या तात्पर्य है?
   - भावना
   - वास्तविकता
   - कल्पना
   - अनाज के बीज
3. 'पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष' पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?
   - यमक अलंकार
   - अनुप्रास अलंकार
   - उत्प्रेक्षा अलंकार
   - मानवीकरण अलंकार
4. कथन को पढ़कर सही कारण की विवेचना कीजिए –

कथन: अंधड़ अर्थात अचानक कोई विशेष घटना से प्रभावित होना एवं कविता रचित करना।
कारण: कविता के लिए कोई विशेष विचार अचानक ही आता है।

   - कथन सही है पर कारण सही नहीं है
   - कथन सही है और कारण उसकी सही व्याख्या है
   - कथन और कारण का आपस में सामंजस्य नहीं है
   - उपयुक्त सभी

5. कविता का मन में उद्भव कितने समय में होता है?
   - वर्ष में
   - दिन में
   - कुछ क्षणों में
   - अनंत समय में

उत्तर कुंजिका – काव्यांश 1

1 – घ   2 – ग   3 – ख   4 – ख   5 – ग

वर्णनात्मक प्रश्न

प्र.1 कवि ने कविकर्म की तुलना किससे की है और क्यों की है?

कवि ने कविकर्म की तुलना एक छोटे खेत से की है। जैसे किसान अपने खेत में बीज बोता है और परिश्रम कर फसल प्राप्त करता है, वैसे ही कवि भी कागज़ के पन्ने पर अपनी रचना को लिखता है और अपनी कल्पना एवं मेहनत से उसे संपूर्ण करता है।

प्र.2 'शब्द रूपी अंकुर फूटने' से कवि का क्या आशय है?

कवि का आशय है कि जैसे खेत में बीज बोने के बाद अंकुर फूटते हैं, उसी प्रकार जब कवि के मन में विचार उत्पन्न होते हैं, तो वे कल्पना के माध्यम से शब्दों के रूप में प्रकट होते हैं, जो कविता की पहली सीढ़ी बनते हैं।

प्र.3 कवि के विचार रचना का रूप कैसे ले लेते हैं?

जब कवि के मन में कोई भावनात्मक तूफ़ान आता है, तब विचार रूपी बीज बोया जाता है। वह बीज कवि की कल्पनाओं के रसायनों को पीकर गल जाता है और शब्दों के अंकुर के रूप में प्रकट होता है, जिससे रचना का जन्म होता है।

प्र.4 चौकोने छोटे खेत को कवि ने कागज़ का पन्ना क्यों कहा है? उसमें 'रोपाई क्षण की, कटाई अनंतता की' कैसे है?

कवि ने कागज़ के पन्ने को खेत कहा क्योंकि कविता सृजन भी खेती की तरह है। इसमें भी कल्पना, चिंतन और अभिव्यक्ति की प्रक्रिया चलती है। कविता की 'रोपाई' एक क्षण में होती है (अर्थात विचार का बीज बोना), पर उसका 'कटना' यानी उसका रस और प्रभाव अनंत समय तक चलता रहता है।

पाठ 9: बगुलों के पंख →उमाशंकर जोशी

मूल भाव:

कविता 'बगुलों के पंख' उमाशंकर जोशी द्वारा रचित है। इसमें कवि ने प्राकृतिक सौंदर्य – विशेषतः साँझ के समय काले बादलों के बीच पंक्तिबद्ध उड़ते हुए सफेद बगुलों का दृश्य – को अत्यंत सुंदरता से चित्रित किया है। यह दृश्य कवि की आँखों को जैसे चुरा लेता है और वह उस सौंदर्य में डूब जाता है।

काव्यांश – 2

नभ में पांति-बंधे बगुलों के पंख,
चुराई लिए जाती वे मेरी आँखें।
कजरारे बादलों की छाई नभ-छाया,
तैरती साँझ की सतेज श्वेत काया।
हौले-हौले जाती मुझे बाँध निज माया से।
उसे कोई तनिक रोक रखो।
वह तो चुराए लिए जाती मेरी आँखें,
नभ में पांति-बँधी बगुलों की पांखे।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. कवि के मन को किसने प्रभावित किया?
   - आसमान ने
   - बादलों ने
   - पंक्तिबद्ध श्वेत बगुलों ने
   - संध्या ने

2. कवि ने किस समय का वर्णन किया है?
   - सुबह का
   - दोपहर का
   - रात का
   - संध्या का

3. 'मेरी आँखें चुराई लिए जाती हैं' से क्या तात्पर्य है?
   - आँखें बंद होना
   - आँखें नम होना
   - आँखों का एकटक हो जाना
   - आँखें खुली रह जाना

4. 'काया' के पर्यायवाची शब्द कौन-से हैं?
   - तन, शरीर
   - तन, मन
   - शरीर, आत्मा
   - उपर्युक्त सभी

5. कथन और कारण का विश्लेषण करें –

कथन: कवि का मन श्वेत पंक्तिबद्ध बगुलों की सुंदरता से बहुत प्रभावित हुआ।
कारण: उस समय की प्रकृति बहुत सुंदर थी।
   - कथन सही है और कारण उसकी व्याख्या है
   - कथन सही है पर कारण उसकी व्याख्या नहीं है
   - कथन और कारण में कोई तालमेल नहीं है
   - कथन की संभावना में कोई और भी कारण हो सकता है**उत्तर कुंजिका काव्यांश-1 :**

1	2	3	4	5
ग	घ	ग	क	क

वर्णनात्मक प्रश्न

प्रश्न-1 कौन सा दृश्य कवि की आँखों को चुरा ले जाता है?

कवि आकाश में छाए काले बादलों में पंक्ति बनाकर उड़ते हुए बगुलों के सुंदर पंखों को देखता है। यह दृश्य कवि की आँखों को चुरा ले जाता है अर्थात कवि को यह दृश्य अत्यधिक मनमोहक लगता है।

प्रश्न-2 कवि को बगुलों की पंक्ति आकाश में कैसी प्रतीत हो रही है?

काले बादल आकाश पर किसी छाया अर्थात परछाई की तरह छाए हुए हैं और बगुलों की पंक्ति आकाश में ऐसी प्रतीत हो रही है जैसे सायंकाल में चमकीला सफेद शरीर काले बादल भरे आकाश में तैर रहा हो।

प्रश्न-3: कवि क्यों चाहता है कि मनमोहक दृश्य को कोई लुप्त होने से रोक ले?

आकाश में छाए काले बादलों के बीच पंक्तिबद्ध उड़ते हुए बगुलों का दृश्य कवि को अत्यंत मनमोहक लगता है। कवि को ऐसा प्रतीत होता है कि यह दृश्य अपने जादू से उसे धीरे-धीरे बाँधता जा रहा है। जैसे-जैसे बगुलों की पंक्ति उड़ते हुए

क्षितिज की ओर बढ़ती है, यह दृश्य कवि की आँखों से ओझल होता जाता है। इसीलिए कवि की इच्छा होती है कि कोई इस सुंदर और अद्वितीय दृश्य को लुप्त होने से रोक ले। इस दृश्य का कवि पर इतना गहरा प्रभाव पड़ता है कि वह अपने चारों ओर की दुनिया को भूल जाता है और उसकी दृष्टि बगुलों के पंखों पर स्थिर हो जाती है। वह अपनी आँखें उस पंक्ति से हटा ही नहीं पाता। यही कारण है कि वह चाहता है – यह दृश्य स्थायी हो जाए और कभी न जाए।

प्रश्न-4: 'बगुलों के पंख' कविता का प्रतिपाद्य बताइए।

'बगुलों के पंख' कविता का प्रतिपाद्य प्रकृति के अद्भुत सौंदर्य के प्रति कवि की संवेदनशीलता और सौंदर्य-बोध को दर्शाना है। यह कविता एक अत्यंत सुंदर दृश्य का चित्रण करती है, जिसमें कवि आकाश में उड़ते हुए बगुलों की सफेद पंक्ति को देखता है। ये बगुले काले बादलों के ऊपर तैरती हुई सांझ की एक श्वेत काया के समान प्रतीत होते हैं। कवि इस दृश्य से मंत्रमुग्ध हो जाता है। उसका मन उसमें अटक जाता है। वह एक ओर तो इस सौंदर्य से स्वयं को बचाना चाहता है, परंतु दूसरी ओर वह उसमें पूरी तरह खो भी जाना चाहता है। यह विरोधाभास ही कविता का केंद्रीय भाव है — सौंदर्य का आकर्षण, उसमें बंधने की इच्छा और उससे छूटने की असमर्थता।

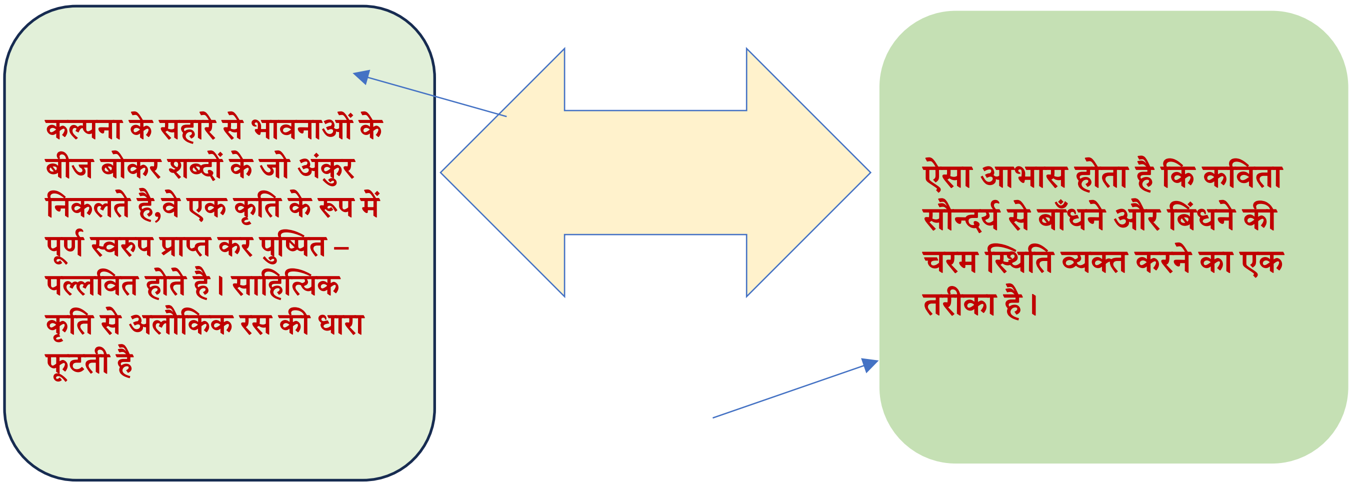

आरोहभाग-2 गद्यखंड
पाठ 10: भक्तिन→ महादेवी वर्मा

<u>पाठ का मूलभाव</u> महादेवी वर्मा के 'भक्तिन' पाठ का मूल भाव है - सच्ची भक्ति और सेवा की मिसाल पेश करना। इस पाठ में लेखिका ने अपनी सेविका भक्तिन के जीवन के विभिन्न चरणों का वर्णन किया है. इस पाठ के ज़रिए लेखिका ने भक्तिन की संघर्षपूर्ण यात्रा और उसकी आंतरिक शक्ति का सम्मान किया है।

'भक्तिन' पाठ के बारे में ज़्यादा जानकारी:

- यह पाठ महादेवी वर्मा के संस्मरणात्मक रेखाचित्र संग्रह 'स्मृति की रेखाएँ' में संकलित है।
- इस पाठ में लेखिका ने भक्तिन के अतीत और वर्तमान का परिचय देते हुए उसके व्यक्तित्व का बहुत आकर्षक चित्रण किया है।
- इस पाठ में भक्तिन के संघर्षों, व्यक्तित्व की दृढ़ता और जीवन के उतार-चढ़ाव का संवेदनशील चित्रण किया गया है।
- इस पाठ में भक्तिन की कठिनाइयों, समर्पण और निष्ठा का गहन चित्रण है।
- इस पाठ में भक्तिन महादेवी जी के जीवन में आकर छा जाने वाली एक ऐसी परिस्थिति के रूप में दिखलाई पड़ती है।

<u>गद्यांश-1</u>

जीवन के दूसरे परिच्छेद में भी सुख की अपेक्षा दुःख ही अधिक है। जब उसने गेहुँए रंग और बटिया जैसे मुख वाली पहली कन्या के दो संस्करण और कर डाले तब सास और जिठानियों ने ओठ बिचकाकर उपेक्षा प्रकट की। उचित भी था, क्योंकि सास तीन-तीन कमाऊ वीरों की विधात्री बनकर मचिया के ऊपर विराजमान पुरखिन के पद पर अभिषिक्त हो चुकी थी और दोनों जिठानियाँ काक- भुशंडीजैसे काले लालों की क्रम बद्ध सृष्टि करके इस पद के लिए उम्मीदवार थी। बहू के लीक छोड़कर चलने के कारण उसे दंड मिलना आवश्यक हो गया।

(क) 'जीवन के दूसरे परिच्छेद' से क्या आशय है?

(i) वैवाहिक जीवन (ii) संन्यासी जीवन
(iii) अवैवाहिक जीवन (iv) मिश्रित जीवन

(ख) भक्तिन ने कितनी लड़कियों को जन्म दिया था?

(i) पाँच (ii) तीन (iii) दो (iv) चार

(ग) कथन (A) भक्तिन पुत्र-महिमा में अंधी अपनी जिठानी व सास की घृणा तथा उपेक्षा का पात्र बनी।

कारण (R) भक्तिन ने तीन कन्याओं को जन्म दिया था।

कूट

(i) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
(ii) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
(iii) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
(iv) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, लेकिन कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता हैं।

(घ) गद्यांश में प्रयुक्त **'छोटी बहू'** संबोधन किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

(i) महादेवी वर्मा (ii) सास (iii) भक्तिन (iv) छोटी जेठानी

(ङ) **लीक छोड़कर चलने** से क्या अभिप्राय है?

(i) पुरानी परंपरा पर चलना
(ii) नए तरीके को छोड़कर पुराने पर चलना
(iii) सभी के साथ मिलकर चलना
(iv) पुरातन तरीके से अलग हटकर नए तरीके से चलना

गद्यांश-2

इस दंड-विधान के भीतर कोई ऐसी धारा नहीं थी, जिसके अनुसार खोटे सिक्कों की टकसाल-जैसी पत्नी से पति को विरक्त किया जा सकता। सारी चुगली-चबाई की परिणति उसके पत्नी-प्रेम को बढ़ाकर ही होती थी। जिठानियाँ बात-बात पर धमाधम पीटी-कूटी जातीं, पर उसके पति ने उसे कभी उँगली भी नहीं छुआई। वह बड़े बाप की बड़ी बात वाली बेटी को पहचानता था। इसके अतिरिक्त परिश्रमी, तेजस्विनी और पति के प्रति रोम-रोम से सच्ची पत्नी को वह चाहता भी बहुत रहा होगा, क्योंकि उसके प्रेम के बल पर ही पत्नी ने अलगोझा करके सबको अँगूठा दिखा दिया। काम वही करती थी, इसलिए गाय-भैंस, खेत-खलिहान, अमराई के पेड़ आदि के संबंध में उसी का ज्ञान बहुत बढ़ा-चढ़ा था। उसने छाँट-छाँट कर, ऊपर से असंतोष की मुद्रा के साथ और भीतर से पुलकित होते हुए जो कुछ लिया, वह सबसे अच्छा भी रहा, साथ ही परिश्रमी दंपति के निरंतर प्रयास से उसका सोना बन जाना भी स्वाभाविक हो गया।

(क) खोटे सिक्के की टकसाल किसे कहा गया हैं –

(1)जिठानियों को (2)भक्तिन को
(3)भक्तिन की बेटियों को (4)भक्तिन की सास को

(i)विकल्प 1 और 2 सही हैं
(ii)केवल विकल्प 3 और 4 सही हैं
(iii)केवल विकल्प 2 सही है
(iv)विकल्प 1 और 3 सही हैं

(ख)यहाँ दंड-विधान की बात जिसके संदर्भ में की जा रही हैं-

(i)लछमिन के संदर्भ में की जा रही है।
(ii)लछमिन के पति के संदर्भ में की जा रही है।
(iii)जिठानियों के संदर्भ में की जा रही है।
(iv) भक्तिन की बेटियों के संदर्भ में की जा रही है।

(ग)गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

(1)भक्तिन का पति उसे प्रेम नहीं करता था।
(2)भक्तिन की जेठानियाँ बहुत मारी पीटी जाती थी।
(3)भक्तिन के पिता बहुत निर्धन थे।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/ से कथन सही हैं –

(i) केवल कथन 1 (ii) कथन 1 और 2
(iii) कथन 1 और 3 (iv)उपरोक्त में से कोई नहीं

(घ)सुमेलित कीजिये

सूची 1	सूची 2
A.परिश्रमी दंपति	1.भक्तिन
B.परिश्रमी, तेजस्विनी और पति के प्रति रोम-रोम से सच्ची पत्नी	2. भक्तिन और उसका पति
C. बात-बात पर धमाधम पीटी-कूटी जातीं	3.जेठानियाँ

(i) A -1, B-3, C.-2
(ii) B-1, C-2 A-3
(iii) A -1, B-3, C.-2
(iv) A -2,B-1, C- 3

(ङ) भक्तिन को अलग होते समय सबसे अच्छा भाग कैसे मिला?

(i) भक्तिन को पशु, जमीन व पेड़ों की सही जानकारी थी।
(ii) भक्तिन से सभी बहुत प्रेम करते थे।
(iii) भक्तिन का स्वभाव बहुत सरल था।
(iv) उपरोक्त में से कोई नहीं।

गद्यांश – 3

सेवक-धर्म में हनुमान जी से स्पर्द्धा करने वाली भक्तिन किसी अंजना की पुत्री न होकर एक अनामधन्या गोपालिका की कन्या है-नाम है लछमिन अर्थात् लक्ष्मी, पर जैसे मेरे नाम की विशालता मेरे लिए दुर्वह है, वैसे ही लक्ष्मी की समृद्धि भक्तिन के कपाल की कुंचित रेखाओं में नहीं बँध सकी। वैसे तो जीवन में प्रायः सभी को अपने-अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता है, पर भक्तिन बहुत समझदार है, क्योंकि वह अपना समृद्धि-सूचक नाम किसी को बताती नहीं। केवल जब नौकरी की खोज में आई थी, तब ईमानदारी का परिचय देने के लिए उसने शेष इतिवृत्तके साथ यह भी बता दिया, पर इस प्रार्थना के साथ कि मैं कभी नाम का उपयोग न करूँ।

(क) प्रस्तुत गद्यांश में अंजना का नाम किस प्रसंग में उधृत हुआ है?

(i) महादेवी जी के प्रति भक्तिन की भावना दर्शाने के लिए
(ii) भक्तिन की माता को दर्शाने के लिए
(iii)महादेवी जी के के लिए
(iv) उपरोक्त में से कोई नहीं

(ख) 'अनामधन्या गोपालिका की कन्या' संबोधन किसके लिए प्रयोग किया गया है?

(i) धन की देवी (ii) महादेवी (iii) भक्तिन (iv) लेखिका

(ग) कथन (A) भक्तिन अपना असली नाम किसी को नहीं बताती थी।
कारण (R) वास्तविक नाम के अर्थ और उसके जीवन के यथार्थ में विरोधाभास था।

(i) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही है तथा कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
(ii) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(iii) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(iv) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, लेकिन कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।

(घ) सुमेलित कीजिए-

सूची 1	सूची 2
A. गोपालिका की बेटी	1. हनुमान जी से समानता
B. समृद्धि-सूचक नाम	2. भक्तिन
C.सेवक-धर्म में	3. लक्ष्मी

(i) A -1, B-3, C.-2
(ii) B-1, C-2, A-3
(iii) A -2, B-3, C.-1
(iv) A -2,B-1, C- 3

(ङ) गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए

1. भक्तिन बहुत समझदार थी।
2. भक्तिन ने लेखिका को अपना असली नाम कभी नहीं बताया।
3. भक्तिन ने लेखिका से उसे वास्तविक नाम से न पुकारने की प्रार्थना की।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(i) केवल कथन 1
(ii) केवल कथन 2
(iii) कथन1, 2 और 3
(iv) कथन1 और 3

उत्तर माला

गद्यांश -1					गद्यांश -2					गद्यांश -3				
क	ख	ग	घ	ड.	क	ख	ग	घ	ड.	क	ख	ग	घ	ड.
i	ii	i	iii	iv	iii	i	ii	iv	i	ii	iii	i	iii	iv

वर्णनात्मक प्रश्न

प्रश्न-1 पाठ के आधार पर भक्तिन की तीन विशेषताएँ बताइए।

उत्तर: भक्तिन की तीन विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

(क) जुझारू – भक्तिन जुझारू महिला थी। उसने कठिन परिस्थितियों का डटकर सामना किया। शादी के बाद ससुराल में मेहनत से खेतीबाड़ी की। पति की मृत्यु के बाद बेटियों की शादी की। समाज के भेदभावपूर्ण व्यवहार का कड़ा विरोध किया।

(ख) भाग्य से पीड़ित – भक्तिन मेहनती थी, परंतु भाग्य उसके सदैव विपरीत रहा। बचपन में माँ की मृत्यु हो गई थी। विमाता का देश उसे हमेशा झालता रहा। ससुराल में तीन पुत्रियों का जन्म देने के कारण उपेक्षा मिली। पति की अकाल मृत्यु हुई। फिर दामाद की मृत्यु व परिवार के षड्यंत्र ने उसे तोड़कर रख दिया।

(ग) सेवाभाव – भक्तिन महादेवी की सेविका थी। वह छाया के समान हर समय महादेवी के साथ रहती थी। महादेवी के कार्य को खुशी से करती थी।

प्रश्न-2 'भक्तिन' अनेक अवगुणों के होते हुए भी महादेवी जी के लिए अनमोल क्यों थी?

उत्तर: भक्तिन उनके अवगुणों के होते हुए भी महादेवी के लिए अनमोल थी क्योंकि वह लेखिका के हर कष्ट को लेने को तैयार थी। वह लेखिका की सेवा करती थी। लेखिका के पास पैसे की कमी की बात सुनकर वह जीवन भर की अपनी कमाई उसे देना चाहती थी।

प्रश्न-3 भक्तिन का अतीत परिवार और समाज की किन समस्याओं से जूझते हुए बीता है? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर - भक्तिन का जीवन सदैव परेशानी भरा रहा। बचपन में माँ की मृत्यु हो गई थी। विमाता ने उससे भेदभाव किया। विवाह के बाद उसकी तीन लड़कियाँ हुई जिसके कारण सास व जेठानियों ने उसके व लड़कियों के साथ भेदभाव किया। 36 वर्ष की आयु में पति की मृत्यु हो गई। ससुराल वालों ने संपत्ति हड़पने के तमाम प्रयास किए, परंतु उसने बेटियों की शादी की। एक घरजमाई बनाया, परंतु दुर्भाग्य से वह शीघ्र मृत्यु को प्राप्त हो गया। इसके बाद ससुराल वालों ने मिलकर उसकी विधवा पुत्री का बलात्कार कराने की कोशिश की। पंचायत ने बलात्कारी के साथ ही लड़की का विवाह जबरन कर दिया। इसके बाद भक्तिन की संपत्ति का विनाश हो गया

प्रश्न-4 'भक्तिन वाक्पटुता में बहुत आगे थी', पाठ के आधार पर उदाहरण देकर पुष्टि कीजिए।

उत्तर- यह कथन सही है कि भक्तिन वाक्पटुता में बहुत आगे थी। उसके पास हर बात का सटीक उत्तर तैयार रहता था। लेखिका ने जब उसको सिर घुटाने से रोका तो उसका उत्तर था – तीरथ गए मुंडाए सिद्ध' इसी तरह उसके बनाएँ खाने पर कटाक्ष करने पर उसने उत्तर दिया – वह कुछ अनाड़िन या फूछड़ नहीं। ससुर, पितिया ससुर, अजिया सास आदि ने उसकी पाक कुशलता के लिए न जाने कितने मौखिक प्रमाणपत्र दे डाले थे।

प्रश्न-5 भक्तिन की बेटी पर पंचायत द्वारा जबरन पति थोपा जाना एक दुर्घटना भर नहीं, बल्कि विवाह के संदर्भ में स्त्री के मानवाधिकार (विवाह करें या न करें अथवा किससे करें) इसकी स्वतंत्रता को कुचलते रहने की सदियों से चली आ रही सामाजिक परंपरा का प्रतीक है। कैसे?

उत्तर- भक्तिन की विधवा बेटी के साथ उसके ताऊ के लड़के के साले ने जबरदस्ती करने की कोशिश की। लड़की ने उसकी खूब पिटाई की, परंतु पंचायत ने अपीलहीन फ़ैसले में उसे तीतरबाज युवक के साथ रहने का फ़ैसला सुनाया। यह सरासर स्त्री के मानवाधिकारों का हनन है। भारत में यह परंपरा सदियों से चली आ रही है। यहाँ शादी करने का निर्णय सिर्फ़ पुरुष के हाथ में होता है। महाभारत में द्रौपदी को उसकी इच्छा के विरुद्ध पाँच पतियों की पत्नी बनना पड़ा। मीरा की शादी बचपन में ही कर दी गई तथा लक्ष्मीबाई की शादी अधेड़ उम्र के राजा के साथ कर दी गई। ऐसे अनेक उदाहरण हैं जहाँ अयोग्य लड़के के साथ गुणवती कन्या का विवाह किया गया तथा लड़की की जिंदगी नरक बना दी गई।

पाठ 11: बाज़ार दर्शन→जैनेंद्र कुमार

मूल भाव : "बाज़ार दर्शन" पाठ का मूल भाव बाजारवाद और उपभोक्तावाद की आलोचना है, जिसमें लेखक जैनेन्द्र कुमार ने बाजार के आकर्षण और उपभोक्ता को फंसाने के तरीके का वर्णन किया है। पाठ में बाजार को एक जादूगर के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है और उन्हें अनावश्यक वस्तुओं को खरीदने के लिए प्रेरित करता है।

- **बाजार का जादू:**

जैनेन्द्र कुमार ने बाजार को एक जादूगर के रूप में चित्रित किया है जो अपनी चमक और वस्तुओं के प्रदर्शन से लोगों को आकर्षित करता है।

- **उपभोक्तावाद की आलोचना:**

पाठ में लेखक ने उपभोक्तावाद की आलोचना की है, जो लोगों को अनावश्यक वस्तुओं को खरीदने के लिए प्रेरित करता है और उनकी आर्थिक स्थिति को कमजोर करता है।

- **संयम और समझ का महत्व:**

लेखक ने संयम और समझ के महत्व पर जोर दिया है, ताकि लोग बाजार के आकर्षण से प्रभावित न हों और अपनी आवश्यकताओं को समझकर खरीदारी करें।

- **बाजार का नकारात्मक प्रभाव:**

पाठ में बाजार के नकारात्मक प्रभाव को भी दर्शाया गया है, जैसे कि अनावश्यक खर्च, ऋण और जीवन की गुणवत्ता पर प्रभाव।

- **उदाहरण:**

लेखक ने विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से बताया है कि बाजार किस तरह लोगों को फंसाता है और उन्हें नुकसान पहुँचाता है।

- **निष्कर्ष:**

"बाजार दर्शन" पाठ का मूल संदेश है कि हमें बाजार के आकर्षण से सावधान रहना चाहिए और अपनी आवश्यकताओं को समझकर खरीदारी करनी चाहिए।

पठित गद्यांश 1 –

इस सद्भाव के ह्रास पर आदमी आपस में भाई-भाई और सुहृत और पड़ोसी फिर रह ही नहीं जाते हैं और आपस में कोरे ग्राहक और बेचक की तरह व्यवहार करते हैं। मानो दोनों एक दूसरे को ठगने की घात में हों। एक की हानि में दूसरे को अपना लाभ दिखता है और यह बाजार का ही नहीं, बल्कि इतिहास का, सत्य माना जाता है। ऐसे बाजार को बीच में लेकर लोगों में आवश्यकताओं का आदान-प्रदान नहीं होता, बल्कि शोषण होने लगता है, तब कपट सफल होता है, निष्कपट शिकार होता है। ऐसे बाजार मानवता के लिए विडंबना हैं।

1.गद्यांश में किस सद्भाव के हास की बात की जा रही है?

(क) ग्राहक के सद्भाव (ख) दुकानदार के सद्भाव
(ग) क और ख दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं

2 सद्भाव के हास का क्या परिणाम होता है?

(क)ग्राहक पैसे की ताकत दिखाता है
(ख) बहुत खरीददारी करता है
(ग) दुकानदार निरर्थक वस्तुएं बेच देता है
(घ) उपर्यक्त सभी

3.'ऐसे बाजार को' कथन से लेखक का तात्पर्य है-

(क) जहाँ कपट हो
(ख) जहाँ ग्राहक को संतुष्टि मिले
(ग) ग्राहक व दुकानदार के मध्य सद्भाव हो
(घ)एक की हानि में दूसरे की हानि हो।

4 ग्राहक और विक्रेता के बीच बाजार में कैसा संबंध होता है?

(क) सद्भावना का (ख) परस्पर लाभ वितरण का
(ग) ठगी का (घ) प्रेम का

5 उपर्युक्त अनुच्छेद के अनुसार बाज़ार जब शोषण का माध्यम बन जाता है, तो इसका समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है?

कथन (A): बाज़ार में जब कपट व्यवहार बढ़ता है, तो निष्कपट व्यक्ति शोषण का शिकार बनता है।
कारण (R): लोग आपस में ग्राहक और बेचक की तरह व्यवहार करते हैं, जिससे एक की हानि में दूसरे का लाभ देखा जाता है।

A. A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
B. A और R दोनों सही हैं, पर R, A की सही व्याख्या नहीं है।
C. A सही है, पर R गलत है।

D. A गलत है, पर R सही है। उत्तरः 1.ग, 2. घ. 3. क, 4. ग. 5. क

पठित गद्यांश 2

पैसा पावर है। पर उसके सबूत में आस-पास माल-टाल न जमा हो, तो क्या वह खाक पावर है। पैसे को देखने के लिए बैंक-हिसाब देखिए, पर माल असबाब मकान कोठी तो अनदेखे भी दिखते हैं। पैसे की उस 'पर्चेजिंग पावर' के प्रयोग में ही पावर का रस है, लेकिन नहीं। लोग संयमी भी होते हैं। वेफिजूल सामान को फिजूल समझते हैं। वे पैसा बहाते नहीं हैं और बुद्धिमान होते हैं। बुद्धि और संयमपूर्वकवह पैसे को जोड़ते जाते हैं, जोड़ते जाते हैं। वह पैसे की पावर को इतना निश्चित समझते हैं कि उसके प्रयोग की उन्हें दरकार नहीं है। बस पैसे के जुड़ा होने पर खुद उनका मन गर्व से भरा-फूला रहता है।

1.संयमी व्यक्ति पैसे के प्रयोग की आवश्यकता क्यों नहीं समझते हैं?

(क) पैसे जोड़ने पर मन गर्व से भरा रहने के कारण
(ख) पैसे की आवश्यकता न समझ पाने के कारण
(ग) पैसे को फिजूल सामान समझने के कारण
(घ) पैसे की पावर का सही उपयोग करने के कारण

2. पैसे की पर्चेजिंग पावर के प्रयोग को पावर का रस नहीं मानते। ऐसेकौन लोग फिजूल सामान को फिजूल समझते हैं?

(क) बुद्धिहीन (ख) संयमी (ग) क्रूर (घ)अमानवीय

3. पैसे को जोड़कर... गर्व का अनुभव करते हैं।

(क) बुद्धिमान व संयमी व्यक्ति (ख) मन की इच्छा पूरी करने वाले व्यक्ति
(ग) स्वार्थी व्यक्ति (घ)लाचार व बेबस व्यक्ति

4. **कथन (A): पैसे की 'पर्चेजिंग पावर' के प्रयोग में ही पावर का रस है।**
कारण (R):पैसे की पावर मकान- कोठी, माल- असबाब से दिखाई देती है।

(क) कथन (A)और कारण (R)दोनों सही है तथा कारण (R)औरकथन (A) की सहीव्याख्या करता है।
(ख) कथन (A) गलत है, परंतु कारण (R)सही है।
(ग) कथन (A) तथा कारण (R)दोनों गलत है।
(घ) कथन (A) सही है, परंतु कारण (R)उसकी गलत व्याख्या करता है।

5 गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।

(i) संयमी व बुद्धिमान व्यक्ति केवल पैसा जोड़ते हैं।
(ii) बुद्धिमान व्यक्ति पैसे को खर्च करते हैं।
(iii) पैसा जुड़ा होने पर बुद्धिमान व्यक्ति गर्व महसूस करता है।
(iv) मन कमजोर, पीला और अशक्त हो जाता है

उपरोक्त कथनों में से कौन सा / से सही है / हैं ?

(क) केवल 1
(ख) 1 केवल 3
(ग)1 और 2
(घ)1 और 3

उत्तरमाला

गद्यांश -1					**गद्यांश -2**				
1	2	3	4	5	1	2	3	4	5
ग	घ	क	ग	क	क	ख	क	घ	घ

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 बाज़ार का जादू क्या है? उसके चढ़ने-उतरने का मनुष्य पर क्या प्रभाव पड़ता है? 'बाज़ार दर्शन' पाठ के आधार पर उत्तर लिखिए।

उत्तर- बाज़ार का जादू उस आकर्षण में छिपा होता है जो चीज़ों की चमक-दमक और प्रचार के माध्यम से हमारे मन पर असर डालता है। जब इंसान के पास पैसे होते हैं लेकिन विवेक नहीं होता, तो वह बाज़ार के इस जादू में उलझ जाता है। वह केवल दिखावे या सुविधा के नाम पर ऐसी वस्तुएँ खरीद लेता है जो असल में उसकी ज़रूरत नहीं होतीं। शुरुआत में उसे खुशी और संतोष का एहसास होता है, लेकिन जब खर्च किए गए पैसों की असलियत सामने आती है, तब वह पछताता है। बाज़ार का यह चढ़ाव और उतार मनुष्य के मनोभावों को गहराई से प्रभावित करता है—कभी खुशी, कभी चिंता, कभी गर्व तो कभी पछतावा। वह झल्लाता है, परंतु उसका अभिमान उसे तुष्ट करता है। यही बाज़ार का दर्शन है—आकर्षण और अभाव के बीच झूलती हुई एक चालाक दुनिया।

प्रश्न 2 बाज़ारूपन' से क्या तात्पर्य है? किस प्रकार के व्यक्ति बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं अथवा बाज़ार की सार्थकता किसमें हैं?

उत्तर- बाज़ारूपन' का मतलब है–बाज़ार का इस्तेमाल सिर्फ दिखावे, शान-शौकत और झूठी प्रतिष्ठा के लिए करना। जब लोग अपनी असली ज़रूरतों को भूलकर सिर्फ दूसरों को प्रभावित करने के लिए चीज़ें खरीदते हैं, तब बाज़ार में छल, कपट और दिखावे की भावना बढ़ जाती है। यही बाजारूपन कहलाता है।

बाज़ार को वही लोग सार्थक बनाते हैं जो सोच-समझकर, अपनी असली ज़रूरतों के अनुसार ही खरीदारी करते हैं। जब हम केवल जरूरी चीजें खरीदते हैं और व्यर्थ का खर्च नहीं करते, तब ही बाज़ार का सही उपयोग होता है। बाजार की सार्थकता इस बात में है कि वह इंसान की ज़रूरतें पूरी करे, न कि सिर्फ शक्ति या स्टेटस दिखाने का ज़रिया बने।

प्रश्न 3 लेखक ने 'बाज़ार दर्शन' पाठ में भगत जी का उदाहरण क्यों दिया है?

उत्तर लेखक ने भगत जी का उदाहरण इसलिए दिया है क्योंकि वे केवल ज़रूरी सामान खरीदते हैं और बाज़ार की चकाचौंध से प्रभावित नहीं होते। उनके पास आत्मसंयम और ज़रूरत की समझ है। ऐसे लोग फिज़ूल खर्ची नहीं करते और न ही दूसरों को प्रभावित करने के लिए खरीदारी करते हैं। इससे समाज में दिखावे की प्रवृत्ति और बेवजह की होड़ भी नहीं फैलती। इस तरह के लोग बाजार को एक शांति और समझदारी से भरा स्थान बनाते हैं, ऐसे लोग ही बाजार को सार्थक बनाते हैं, क्योंकि वे न तो दिखावे के लिए खरीदते हैं और न ही अनावश्यक प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देते देते हैं।उनका व्यवहार यह सिखाता है कि सादा जीवन और सोच-समझकर किया गया खर्च समाज में शांति और संतुलन बनाए रखता है।

प्रश्न 4 लेखक ने पाठ में संकेत किया है कि कभी-कभी बाज़ार में आवश्यकता ही शोषण का रूप धारण कर लेती है। क्या आप इस विचार से सहमत हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर : हाँ, मैं इस विचार से सहमत हूँ कि कभी-कभी आवश्यकता शोषण का रूप ले लेती है। जब किसी वस्तु की अत्यधिक आवश्यकता होती है, तो व्यक्ति उसे किसी भी कीमत पर खरीदने को मजबूर हो जाता है। इस स्थिति का लाभ उठाकर विक्रेता मूल्य बढ़ा देता है। ऐसे में ज़रूरतमंद व्यक्ति की विवशता ही उसका शोषण बन जाती है। यही कारण है कि आवश्यकता कभी-कभी लालच और शोषण की जननी बन जाती है।

प्रश्न 5 बाज़ार किस आधार पर समाज को विभाजित करता है?

उत्तरः वैसे तो बाज़ार के लिए हर व्यक्ति बस एक ग्राहक होता है। बाज़ार किसी को भी उसकी जात, धर्म, या क्षेत्र के आधार पर विभाजित नहीं करता। लेकिन सामजिक विभाजन से अलग एक आधार है जिसके आधार पर बाज़ार अपने ग्राहकों विभाजित करता है। बाज़ार किसी भी व्यक्ति को उसकी क्रय शक्ति अर्थात उसके खर्च करने की क्षमता और मानसिकता के आधार पर देखता है। बाज़ार का किसी भी व्यक्ति से संबंध लेनदेन के आधार पर ही है। उसके

प्रश्न 6 पाठ के अनुसार ग्राहक कितने प्रकार के होते है?

उत्तरः पाठ के अनुसार निम्न प्रकार के ग्राहक होते हैं:

1. क्रय-शक्ति को प्रदान करने वाल
2. भरी जेब एवं भरे मन वाले
3. खाली ज़ेब एवं ख़ाली मन वाले
4. मितव्ययी और धैर्य रखने वाले
5. अपव्ययी ग्राहक
6. बाज़ारूपन को प्रोत्साहित करने वाले

प्रश्न 7: पैसे की व्यंग्य शक्ति' कथन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:'बाज़ार दर्शन' पाठ के अनुसार पैसे में एक प्रकार की व्यंग्यात्मक शक्ति होती है। जब कोई व्यक्ति महंगी चीज़ें खरीदता है या दिखावे के लिए खर्च करता है, तो दूसरे लोग स्वयं को छोटा महसूस करने लगते हैं। जैसे, जब कोई महंगी कार में निकलता है और बगल से पैदल या साइकिल सवार गुजरता है, तो वह अपने साधनों को तुच्छ समझने लगता है। वह स्वयं को कोसता रहता है। वह भी कार खरीदने के पीछे लग जाता है। इसी कारण बाज़ार में माँग बढ़ती है। यह तुलना ही बाजार में नई इच्छाएँ और प्रतिस्पर्धा पैदा करती है।

प्रश्न: 8 बाजार जाते समय आपको किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए? ('बाज़ार दर्शन' पाठ के आधार पर)

उत्तर:बाजार जाते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए:

1ज़रूरत की सूची बनाएं – खरीदारी से पहले आवश्यक वस्तुओं की सूची तैयार करें।

2 बाजार के आकर्षण से बचें – फिज़ूल की चीज़ें न खरीदें, केवल ज़रूरत की चीज़ें ही लें।

3 निर्धारित उद्देश्य रखें – मन में तय हो कि क्या खरीदना है, भटकाव न हो।

4 दिखावा न करें – अपनी क्रय शक्ति का प्रदर्शन न करें, सादगी से खरीदारी करें।

5 तुलना और हीन भावना से बचें – दूसरों की चीज़ें देखकर खुद को कमतर न समझें।

6 संतुलित व्यवहार रखें – भावनाओं में बहकर खरीदारी न करें, सोच-समझकर खर्च करें।

7 विज्ञापनों के प्रभाव में न आएं – प्रचार और ऑफ़र्स देखकर ऐसे उत्पाद न खरीदें जिनकी ज़रूरत न हो।

प्रश्न :9 बाजार दर्शन' पाठ का प्रतिपादय बताइए।

उत्तर: 'बाजार दर्शन' निबंध में गहरी वैचारिकता व साहित्य के सुलभलालित्य का संयोग है। कई दशक पहले लिखा गया यह लेख आज भी उपभोक्तावाद व बाजारवाद को समझाने में बेजोड़ है। लेखक अपने परिचितों, मित्रों से जुड़े अनुभव बताते हुए यह स्पष्ट करते हैं कि बाजार की जादुई ताकत मनुष्य को अपना गुलाम बना लेती है। यदि हम अपनी आवश्यकताओं को ठीक-ठीक समझकर बाजार का उपयोग करें तो उसका लाभ उठा सकते हैं। इसके विपरीत, बाजार की चमक-दमक में फँसने के बाद हम असंतोष, तृष्णा और ईर्ष्या से घायल होकर सदा के लिए बेकार हो सकते हैं। लेखक ने कहीं गहराई से विचार रखे हैं तो कहीं मज़ेदार किस्सों के जरिए अपनी बात सामने रखी है है, जिससे पाठ रोचक भी बन जाता है और विचारशील भी।

प्रश्न 10 लेखक ने अर्थशास्त्र को अनीति शास्त्र क्यों कहा है बाजार दर्शन पाठ के आधर पर उत्तर लिखें।

उत्तर: लेखक ने अर्थशास्त्र को अनीति शास्त्र इसलिए कहा है क्योंकि आज का बाजार केवल लाभ और उपभोग पर केंद्रित है। इसमें नैतिकता, समरसता,संवेदना और इंसानियत के लिए कोई स्थान नहीं बचा है। बाज़ार दर्शन' में लेखक बाजार की उस सोच पर प्रहार करता है जो मनुष्य को उपभोक्ता वस्तु मानता है। इस कारण अर्थशास्त्र केवल धन कमाने का माध्यम बन गया है, जिससे यह नीति नहीं बल्कि अनीति का शास्त्र बनता जा रहा है।

निष्कर्ष : लेखक अर्थशास्त्र की उस दिशा की आलोचना करता है जिसमें बाजार केवल धन और लाभ की भाषा बोलता है, और इंसानी मूल्यों की अनदेखी करता है।

उपभोक्तावाद को बढ़ावा देता हुआ ग्राहक

संयमित ग्राहक

बीवी संग शॉपिंग ऐसे की, अब सामान है ढेरों और किराया को नहीं पैसा — चलो पैदल ही घर! 😩 😩

सेल? ऑफर? डिस्काउंट? भगत जी को फर्क नहीं पड़ता!

1. भूमिका

बाज़ारीआकर्षण, उपभोक्तावाद, मन की चंचलता, और जीवन मूल्य उसके अंदर छिपी मनोवैज्ञानिक और सामाजिक प्रभावों पर चर्चा करना है।यह निबंध भौतिक आकर्षणों, लोभ, और बदलती जीवन-प्राथमिकताओं पर गहन दृष्टि डालता है।

बाज़ार दर्शन – एक दृष्टि

2. विषयवस्तु

१ बाजार की चकाचौंध और आकर्षण शक्ति
२ पैसे की ताकत और फ़िज़ूल खर्ची
३ स्थिति और ज़रूरतों की स्पष्टता
४ उपभोक्तावाद और लालच की प्रवृत्ति
५ दिखावा
६ नैतिकता और मानवता का ह्रास
७ लेखक के अनुभव (बाज़ार को शक्ति और भ्रम)
१० भगत जी (संयमित जीवन का प्रतीक)

बाज़ार दर्शन
(जैनेंद्र कुमार)

4.कटाक्ष
१ उपभोक्तावादी समाज की मानसिकता पर
२ आडंबरपूर्ण जीवन शैली पर
३ इच्छाओं की अंधी दौड़ पर
४ संयम और विवेक हीनता की कमी पर
५ संबंधों की जगह सौदा
६ मानवता और नैतिकता के पतन पर
७ भ्रमित उपभोक्ता संस्कृति पर
८ सजावटी छल की स्वीकृति पर
६ झूठे सुख की तलाश पर

3.बाज़ार का वातावरण
१.चकाचौंध भरा (लुभावना)
२. मानवता विहीन
३ प्रलोभनों से भरा
४ दिखावे पर आधारित
५ लालच और असंतोष का जन्मदाता
६.मौन आमंत्रण देता
७.प्रतिस्पर्धात्मक

बाज़ार दर्शन (जैनेंद्र कुमार)

5. शिक्षा
१ विवेक से खरीदारी
२ मन पर नियंत्रण
३ संतोष का महत्व
४ दिखावे और फ़िज़ूलखर्ची से बचाव
५ नैतिकता की आवश्यकता
६ आय का सही उपयोग
७ इच्छा नहीं जरूरत को पहचानो
८ आकर्षण से सावधानी
९ बाजार को साधन बनाओ साध्य नहीं

6.लेखन शैली और दृष्टिकोण
१ सरल और सहज भाषा
२ चिंतनशील, भावात्मक और व्यंग्यात्मक
३ प्रतीकात्मकता
४ प्रेरणादायक दृष्टिकोण
५ मानवता की वकालत
६ आदर्श चरित्र चित्रण (भगत जी)
७ नैतिक और आत्म नियंत्रण
८प्रासंगिकता

परीक्षा के लिए त्वरित सुझाव
मन खाली हो और जेब भरी हो तो बाजार का जादू चलता है। लेकिन अगर मन स्पष्ट हो तो बाजार भी हार जाता है।

7.निष्कर्ष
बाजार आकर्षक है पर विवेक संयम और जरूरत की समझ जरूरी है मानवीय मूल्यों से शून्य हो तो खतरनाक है। इसके बिना खरीदारी व्यक्ति को नुकसान लालच और असंतोष की ओर ले जाती है

पाठ 12: काले मेघा पानी दे→धर्मवीर भारती

गद्यांश -1

सचमुच ऐसे दिन होते जब गली-मुहल्ला, गाँव-शहर हर जगह लोग गरमी में भुन-भुन कर त्राहिमाम कर रहे होते, जेठ के दसतपा बीतकर आषाढ़ का पहला पखवारा भी बीत चुका होता, पर क्षितिज पर कहीं बादल की रेख भी नहीं दिखती होती, कुएँ सूखने लगते, नलों में एक तो बहुत कम पानी आता और आता भी तो आधी रात को भी मानो खौलता हुआ पानी हो। शहरों की तुलना में गाँव में और भी हालत खराब होती थी। जहाँ जुताई होनी चाहिए वहाँ खेतों की मिट्टी सूख कर पत्थर हो जाती, फिर उसमें पपड़ी पड़कर जमीन फटने लगती, लू ऐसी कि चलते-चलते आदमी आधे रास्ते में लू खाकर गिर पड़े। ढोर-ढंगर प्यास के मारे मरने लगते लेकिन बारिश का कहीं नाम निशान नहीं, ऐसे में पूजा-पाठ कथा-विधान सब करके लोग जब हार जाते तब अंतिम उपाय के रूप में निकलती यह इंदर सेना। वर्षा के बादलों के स्वामी हैं इंद्र और इंद्र की सेना टोली बाँधकर कीचड़ में लथपथ निकलती, पुकारते हुए मेघों को, पानी माँगते हुए प्यासे गलों और सूखे खेतों के लिए।

प्रश्न क) प्रस्तुत गद्यांश में किस ऋतु का वर्णन किया गया है ?

I.वसंत ऋतु
II.आषाढ ऋतु
III.शरद ऋतु
IV.शीत ऋतु

प्रश्न ख) लेखक ने गाँव में पानी मांगने वाले किशोरों की टोली को क्या नाम दिया है ?

I.वानर सेना
II.मूर्खों का झुण्ड
III.प्यासी सेना
IV.इंदर सेना

प्रश्न ग) निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए –

कथन (A) आषाढ माह ज्येष्ठ माह के बाद आता है।

कारण (R) आषाढ माह को ऋतुओं का संधिकाल कहा जाता है।

I. कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है

।।. कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही है तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।

।।।) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

।V) कथन (A) सही है किन्तु कारण (R) गलत है।

प्रश्न घ) इंदर सेना मेघों से पानी किसके लिए मांगती थी ?

।.केवल खेतों के लिए

।।.प्यासे गलों और सूखे खेतों के लिए।

।।।.सूखे गलों और प्यासे खेतों के लिए।

।V.केवल प्यासे गलों के लिए

प्रश्न ड.) बारिश न होने पर गाँव वाले पहले किसका सहारा लेते थे ?

।.इंदर सेना का

।।.वर्षा के स्वामी इंदर का

।।।.कथा विधान और पूजा पाठ का

।V.इनमें से कोई नहीं

उत्तर –

क) ।।. आषाढ ऋतु

ख) ।V. इंदर सेना

ग) ।। कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही है तथा कारण (R) कथन (A)की सही व्याख्या नहीं करता है

घ) ।।. प्यासे गलों और सूखे खेतों के लिए।

ड़) ।।।. कथा विधान और पूजा पाठ का

गद्यांश -2

मैं असल में था तो इन्हीं मेढक-मंडली वालों की उमर का, पर कुछ तो बचपन के आर्यसमाजी संस्कार थे और एक कुमार सुधार सभा कायम हुई थी उसका उपमंत्री बना दिया गया था-सी समाज-सुधार का जोश कुछ ज्यादा ही था। अंधविश्वासों के खिलाफ तो तरकस में तीर रखकर घूमता रहता था। मगर मुश्किल यह थी कि मुझे अपने बचपन में जिससे सबसे ज्यादा प्यार मिला वे थीं जीजी। यूँ मेरी रिश्ते में कोई नहीं थीं। उम्र में मेरी माँ से भी बड़ी थीं, पर अपने लड़के-बहू सबको छोड़कर उनके प्राण मुझी में बसते थे। और वे थीं उन तमाम रीति-रिवाजों, तीज-त्योहारों, पूजा-अनुष्ठानों की खान जिन्हें कुमार सुधार सभा का यह उपमंत्री अंधविश्वास कहता था, और उन्हें जड़ से उखाड़ फेंकना चाहता था। पर मुश्किल यह थी कि उनका कोई पूजा-विधान, कोई त्योहार अनुष्ठान मेरे बिना पूरा नहीं होता था।

क) लेखक किस सभा का उपमंत्री था ?

1.आर्य समाज सभा का

2.ब्रहम समाज

3.कुमार सभा का

4.इनमें से कोई नहीं

ख) लेखक कुमार सभा में किस पद पर कार्यरत था ?

1.सचिव पद पर

2.महामंत्री पद पर

3.उपमंत्री पद पर

4.कोषाध्यक्ष के पद पर

ग) लेखक किसे जड़ से उखाड़ फैंक देना चाहता है ?

1.पूजा-अनुष्ठानों की खान को

2. रीति रिवाजों को

3.समाज में फैले अंधविश्वास को

4.पेड़ों की जड़ को

घ) जीजी लेखक की रिश्ते में क्या लगती थी ?

1.बहन
2.माँ
3.मौसी
4.लेखक का जीजी से कोई रिश्ता नहीं था

ङ) निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए –

कथन (A) लेखक अंधविश्वास के प्रति तरकस में तीर लिए घूमता था।
कारण (R) क्योंकि वह आर्य समाजी संस्कार के प्रभाव में था

1) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
2)कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही है तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।
3) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
4) कथन (A) सही है किन्तु कारण (R) गलत है।

उत्तर -

क) 3)कुमार सभा का
ख) 3). उपमंत्री पद पर
ग) 3.) समाज में फैले अंधविश्वास को
घ) 4.) लेखक का जीजी से कोई रिश्ता नहीं था।
ङ) 1) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

गद्यांश -3

फिर जीजी बोलीं, "देख तू तो अभी से पढ़-लिख गया है। मैंने तो गाँव के मदरसे का भी मुँह नहीं देखा। पर एक बात देखी है। कि अगर तीस-चालीस मन गेहूँ उगाना है तो किसान पाँच-छह सेर अच्छा गेहूँ अपने पास से लेकर जमीन में क्यारियाँ बनाकर फेंक देता है। उसे बुवाई कहते हैं। यह जो सूखे के समय हम अपने घर का पानी इन पर फेंकते हैं वह भी बुवाई है। यह पानी गली में बोएँगे तो सारे शहर, कस्बा, गाँव पर पानी वाले बादलों की फसल आ जाएगी। हम बीज बनाकर पानी देते हैं, फिर काले मेघा से पानी माँगते हैं। सब ऋषि-मुनि कह गए हैं कि पहले खुद दो तब देवता तुम्हें चौगुना-अठगुना करके लौटाएँगे। भइया, यह तो हर आदमी का आचरण है, जिससे सबका आचरण बनता है। 'यथा राजा तथा प्रजा' सिर्फ यही सच नहीं है। सच यह भी है कि 'यथा प्रजा तथा राजा'। यह तो गाँधी जी महाराज कहते हैं।" जीजी का एक लड़का राष्ट्रीय आंदोलन में पुलिस की लाठी खा चुका था, तब से जीजी गाँधी महाराज की बात अकसर करने लगी थीं।

प्रश्न 1 बुवाई के लिए किसान किस प्रकार श्रम करता है ?

क) जमीन की निराई , गुड़ाई करना
ख) हल चलाना एवं क्यारियां बनाना
ग) बीज बोना
घ) उपर्युक्त सभी

प्रश्न 2 त्याग की महत्ता को किसने बताया था ?

क) ऋषि – मुनियों ने
ख) इंदर सेना ने
ग) लेखक ने
घ) राजा ने

प्रश्न 3 इंदर सेना पर पानी फेंकना जीजी के अनुसार क्या है ?

क) पानी की बर्बादी
ख) पानी की बुवाई
ग) अन्धविश्वास
घ) पानी का विसर्जन

प्रश्न 4 गद्यांश के अनुसार "यथा राजा तथा प्रजा" से क्या आशय है ?

क) कर भला हो भला
ख) जैसा करना वैसा भरना
ग) जैसा राजा वैसी प्रजा
घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 5 निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए –

कथन (A) जीजी सदैव अब गांधी जी की बात करने लगी थी।

कारण (R) क्योंकि उसका लड़का राष्ट्रीय आन्दोलन में पुलिस की लाठी खा चुका है।

क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

ख)कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही है तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।

ग) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

घ) कथन (A) सही है किन्तु कारण (R) गलत है।

उत्तर-

1 घ) उपर्युक्त सभी

2 क) ऋषि – मुनियों ने

3 ख) पानी की बुवाई

4 ख) जैसा करना वैसा भरना

5 क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

गद्यांश -4

कभी-कभी कैसे-कैसे संदर्भों में ये बातें मन को कचोट जाती हैं, हम आज देश के लिए करते क्या हैं? माँगें हर क्षेत्र में बड़ी-बड़ी हैं पर त्याग का कहीं नाम-निशान नहीं है। अपना स्वार्थ आज एक मात्र लक्ष्य रह गया है। हम चटखारे लेकर इसके या उसके भ्रष्टाचार की बातें करते हैं पर क्या कभी हमने जाँचा है कि अपने स्तर पर अपने दायरे में हम उसी भ्रष्टाचार के अंग तो नहीं बन रहे हैं? काले मेघा दल के दल उमड़ते हैं, पानी झमाझम बरसता है, पर गगरी फूटी की फूटी रह जाती है, बैल पियासे के पियासे रह जाते हैं? आखिर कब बदलेगी यह स्थिति ?

प्रश्न 1 लेखक के मन को कौन सी बात कचोटती है ?

क) समाज में भ्रष्टाचार व्यापत होना

ख) कर्तव्य बोध की कमी

ग) अपनी बात को मनवाने की जिद्द करना

घ) दान देने में कंजूसी करना

प्रश्न 2 लेखक का गगरी से क्या अभिप्राय है ?

क) कल्याणकारी सरकारी योजनाएं

ख) जल संग्रहण के उपयुक्त पात्र

ग) सरकारी मदद

घ) क और ग दोनों विकल्प सही हैं

प्रश्न 3 सुविधाओं की बरसात में भी गरीब प्यासा क्यों रह जाता है ?

क) सरकारी योजना का अभाव

ख) देश में व्याप्त भ्रष्टाचार के कारण

ग) गरीब सरकारी मदद नहीं लेना चाहता

घ) सभी विकल्प सही हैं

प्रश्न 4 आखिर कब बदलेगी स्थिति में लेखक किस स्थिति की बात कर रहा है ?

क) देश में व्याप्त भ्रष्टाचार की स्थिति

ख) देश में सूखे की स्थिति

ग) सरकारी सुविधाओं की स्थिति

घ) देश में बाढ़ की स्थिति

प्रश्न 5 प्रस्तुत गद्यांश का केन्द्रीय भाव किस समस्या से जुड़ा है ?

क) देश में व्याप्त भ्रष्टाचार की समस्या से

ख) देश में सूखे की समस्या से

ग) सरकारी सुविधाओं के अभाव की समस्या

घ) देश के लोगों में परोपकार तथा त्याग की भावना न होने की समस्या से

उत्तर –

1 ख) कर्तव्य बोध की कमी

2 घ) क और ग दोनों विकल्प सही हैं।

3 घ) सभी विकल्प सही हैं
4 ग) सरकारी सुविधाओं की स्थिति
5 ग) सरकारी सुविधाओं के अभाव की समस्या

गद्यांश -5

लेकिन इस बार मैंने साफ़ इन्कार कर दिया। नहीं फेंकना है मुझे बाल्टी भर-भरकर पानी इस गंदी मेढक-मंडली पर। जब जीजी बाल्टी भरकर पानी ले गईं-उनके बूढ़े पाँव डगमगा रहे थे, हाथ काँप रहे थे, तब भी मैं अलग मुँह फुलाए खड़ा रहा। शाम को उन्होंने लड्डू-मठरी खाने को दिए तो मैंने उन्हें हाथ से अलग खिसका दिया। मुँह फेरकर बैठ गया, जीजी से बोला भी नहीं। पहले वे भी तमतमाई, लेकिन ज्यादा देर तक उनसे गुस्सा नहीं रहा गया। पास आकर मेरा सर अपनीगोद में लेकर बोलीं, 'देख भइया, रूठ मत। मेरी बात सुन। यह सब अंधविश्वास नहीं है। हम इन्हें पानी नहीं देंगे तो इंद्र भगवान हमें पानी कैसे देंगे?" मैं कुछ नहीं बोला। फिर जीजी बोलीं, "तू इसे पानी की बरबादी समझता है पर यह बरबादी नहीं है। यह पानी का अर्घ्य चढ़ाते हैं, जो चीज मनुष्य पाना चाहता है उसे पहले देगा नहीं तो पाएगा कैसे? इसीलिए ऋषि-मुनियों ने दान को सबसे ऊँचा स्थान दिया है।"

प्रश्न 1 जीजी ज्यादा समय तक लेखक से क्रोधित क्यों न रह सकी ?
क) लेखक के मन की बात समझ जाने के कारण
ख) लेखक से प्रेम के कारण
ग) लेखक की नासमझी के कारण
घ) लेखक को एक बार दोबारा समझाना चाहती थी

प्रश्न 2 पानी का अर्घ्य चढाने का क्या आशय है ?
क) इंद्र को जल समर्पित करना
ख) पानी दान देना
ग) पानी का महत्त्व बताना
घ) उपर्युक्त सभी

प्रश्न 3 जीजी पानी फेंकने को क्या मानती है ?
क) बर्बादी
ख) संचयन
ग) अर्घ्य
घ) छिडकाव

प्रश्न 4 ऋषि – मुनियों ने किसे सबसे ऊँचा स्थान दिया है ?
क) इंदर सेना को
ख) इंद्र देव को
ग) मेंढक- मंडली पर पानी फेंकने वालों को
घ) दान करने को

प्रश्न 5 निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए –

कथन (A) लेखक ने मेंढक – मंडली पर पानी फेंकने से मना कर दिया।
कारण (R) लेखक पानी फेंकने को पानी की बर्बादी मानता है।

क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
ख)कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही है तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।
ग) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
घ) कथन (A) सही है किन्तु कारण (R) गलत है।

उत्तर –
1 ख) लेखक से प्रेम के कारण
2 ख) पानी दान देना
3 ग) अर्घ्य
4 घ) दान करने को
5 क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

लघुत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1: 'यथा राजा तथा प्रजा' व 'यथा प्रजा तथा राजा' में क्या अंतर है ?

उत्तर: 'यथा राजा तथा प्रजा' का अर्थ है-राजा के आचरण के अनुसार ही प्रजा का आचरण होना। 'यथा प्रजा तथा राजा' का आशय है-जिस देश की जनता जैसी होती है, वहाँ का राजा वैसा ही होता है।

प्रश्न 2: जीजी ने दान के पक्ष में क्या तर्क दिए?

उत्तर: जीजी ने दान के पक्ष में यह तर्क दिया कि यदि हम इंदर सेना को पानी नहीं देंगे तो इंद्र भगवान हमें पानी कैसे देगा। यह पानी की बर्बादी नहीं है। यह बादलों पर अर्घ्य चढ़ाना है। जो हम पाना चाहते हैं, उसे पहले दान देना पड़ता है। तभी हमें वह बढ़कर मिलता है। ऋषि-मुनियों ने दान को सबसे ऊँचा स्थान दिया है

प्रश्न 3 जीजी के अनुसार दान क्या है?

उत्तर - जीजी के अनुसार दान त्याग से ही किया जाता है परन्तु पर्याप्त धन-सम्पत्ति में से कुछ देना त्याग नहीं, अपनी जरूरत को पीछे रखकर पर हितार्थ कुछ देना त्याग है। जीजी की आस्था, विश्वास, प्रेम की प्रबलता।

प्रश्न 4 जीजी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए?

लेखक ने जीजी के व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताएँ बताई हैं।

(क) स्नेहशील : जीजी लेखक को अपने बच्चों से भी अधिक प्यार करती थीं। वे सारे अनुष्ठान, कर्मकांड लेखक से करवाती थीं ताकि उसे पुण्य मिलें।

(ख) आस्थावती- जीजी आस्थावती नारी थीं। उनकी धर्म तथा धार्मिक संस्कारों में गहरी आस्था थी।

प्रश्न 5 आपको जीजी की आस्था अधिक प्रभावित करती है या लेखक के तर्क ?

उत्तर- हमें जीजी की आस्था अधिक प्रभावित करती है। कारण यह है कि जीजी की व्याख्या भी तर्कसम्मत हैं। वह परंपराओं पर आस्था रखती है। वह अनपढ़ होते हुए भी परंपराओं में छिपे मर्म को जानती है। वह तर्क की मारक शक्ति, सीमा और कमी को भी जानती हैं। इसके अतिरिक्त उसके व्यक्तित्व में अपार ममता ,स्नेह आत्मविश्वास है। यह विश्वास लेखक के तर्कों को परास्त कर देता है। सच तो यह है कि लेखक भी जीजी की आस्था से अभिभूत हो जाता है।

प्रश्न 6 गगरी फूटी बैल पियासा इंदर सेना के इस खेल गीत में बैलों के प्यासा रहने की बात क्यों मुखरित हुई ?

उत्तर – कृषि प्रधान देश भारत में कृषक के कृषि कार्यों में 'बैल' रीढ़ के समान हैं। वे ही खेतों को जोतकर अन्न उपजाते हैं। उनके प्यासे रहने से सारी कृषि के नष्ट होने का खतरा होता है। अतः पठित अध्याय में लेखक संकेत के माध्यम से यही कहना चाहता है कि वर्षा के आभाव में खेती सूखी जा रही है और खेती का आधार कहे जाने वाले बैल भी प्यासे मरे जा रहे हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 7 काले मेघा पानी दे नामक निबंध का उद्देश्य/ सन्देश या प्रतिपाद्य क्या है ?

उत्तर - काले मेघा पानी दे' निबंध के दो उद्देश्य हैं-

प्रथम, जीवन में तर्क और आस्था का अलग –अलग महत्त्व तथा स्थान है। तर्क केवल वैज्ञानिक तथ्य को सत्य मानता है। आस्था भावनात्मक सच्चाई को पुष्ट करती है। दोनों जीवन के लिए अनिवार्य हैं। तर्क विध्वंसशील होता है। जो सत्य उसकी समझ से परे होता है वह उसे नष्ट कर देना चाहता है। दूसरी ओर, आस्था अनहोने सत्य को भी स्वीकार करके मन को संस्कारित कर देती है।

दूसरा उद्देश्य यह है कि जीवन में कुछ पाने के लिए त्याग करना बहुत आवश्यक है। जो लोग त्याग और दान के महत्त्व को नहीं समझते, वे देश में भ्रष्टाचार करते हैं तथा समाज को लूट खाते हैं।

प्रश्न 8 पानी की बुवाई किसे कहा गया है ? आप इसे कितना सच मानते हैं ?

उत्तर- जिस प्रकार किसान फसल पाने के लिए उसी बीज की बुवाई करता है। वह अधिक पाने के लिए थोड़ा-बहुत त्याग और दान भी करता है। उसी प्रकार बादलों से वर्षा पाने के लिए मनुष्य को पहले अपने संचित जल का दान करना पड़ता है। यह एक प्रकार से जल की बुवाई है। जीजी के अनुसार आज हमने एक घड़ा जल बोया है तो बादल कई घड़े वर्षा के रूप में प्रदान करेंगे।

इस बात की वैज्ञानिकता पर हमारे मन में सवाल उठता है। न तो यह पूरी तरह सच है, न झूठ। इसमें सत्य की संभावना हो सकती है। शायद गलियों में बिखरे जल का वाष्प बादलों को बरसने के लिए बाध्य कर पाता हो।

प्रश्न.9 पानी दे, गुड़धानी दे मेघों से पानी के साथ-साथ गुड़धानी की माँग क्यों की जा रही है ?

उत्तर- गुड़धानी गुड़ और अनाज के मेल से बने लड्डू को कहते हैं। गाँव की मेंढक मंडली इंद्र से पानी और गुड़धानी दोनों की माँग कर रही है। कारण यह है कि इस मंडली के बच्चों को पीने-नहाने-धोने के लिए पानी चाहिए और खाने के लिए गुड़धानी चाहिए। यह गुड़धानी भी बादलों पर आधारित है। यदि बादल बरसेंगे, तभी गन्ना-गुड़ और चना-अनाज आदि पैदा होंगे। अतः गुड़धानी का दाता भी बादल या भगवान इंद्र ही हैं।

प्रश्न 10 इंदर सेना' क्या थी ? जीजी ने इंदर सेना पर पानी फेंके जाने को किस प्रकार सही ठहराया है ?

उत्तर – लेखक के गाँव के कुछ नंग-धड़ंग बच्चे कीचड़ में लथपथ होकर गाँववालों से पानी माँगते थे। गाँव वालों का विश्वास था कि बच्चों के ऐसा करने से इंद्र देवता प्रसन्न होते हैं और वर्षा होती है। अध्याय में इसी मंडली को 'इंदर सेना' कहा गया है। जीजी ने इंदर सेना पर पानी फेंकने की परंपरा को बिल्कुल सही ठहराया। उनकी मान्यता थी कि देवता से कुछ पाने के लिए पहले कुछ दान और त्याग करना पड़ता है। किसान पाँच-छः सेर अनाज को बीज रूप में त्यागता है, तभी वह खेतों में से कई मन अनाज उगा पाता है। यहीं बात इंदर सेना पर लागू होती है। गाँव की यह इंदर सेना लोगों से जल का दान करवाकर

भगवान इंद्र को भेंट करवाती है, तभी भगवान इंद्र अपनी ओर से झमाझम वर्षा करते हैं। जीजी के अनुसार इंदर सेना पर पानी फैंकना वर्षा की बुवाई के समान है।

प्रश्न 11 लोगों ने लड़कों की टोली को मेढक मंडली नाम किस आधार पर दिया ? यह टोली अपने आपको इदर सेना कहकर क्यों बुलाती थी ?

उत्तर - गाँव के कुछ लोगों को लड़कों का नंग-धड़ंग होकर कीचड़ में लथपथ होना बुरा लगता था। वे इसे उनका पिछड़ापन, ढोंग और अंधविश्वास मानते थे। इसलिए वे उन्हें गाली देते थे। इसी नफ़रत के कारण उन्होंने इंदर सेना के लड़कों को मेढ़क मंडली की संज्ञा दी थी। गाँव के बच्चों की टोली भगवान इंद्र से वर्षा करने की गुहार लगाना चाहती थी। बच्चे चाहते थे कि अगर भगवान इंद्र वर्षा करने के लिए पानी की माँग कर रहे हैं तो वे उनके दूत बनकर लोगों से जल दान करवाएँगे। शायद इसी से इंद्र देवता प्रसन्न होकर उन्हें वर्षा का दान करें।

▧ पाठ 13: पहलवान की ढोलक ✍ लेखक: फणीश्वरनाथ 'रेणु'

✨ लेखक परिचय:

फणीश्वरनाथ 'रेणु' का जन्म 4 मार्च 1921 को बिहार के पूर्णिया जिले के औराही हिंगना गाँव में हुआ था। वे हिन्दी साहित्य के प्रमुख साहित्यकारों में गिने जाते हैं। रेणु जी को विशेष रूप से ग्रामीण परिवेश और वहाँ के पात्रों की जीवन्तता, लोक संस्कृति, बोलचाल और संवेदना के चित्रण के लिए जाना जाता है। उनकी कृतियाँ सामाजिक यथार्थ की सजीव तस्वीर प्रस्तुत करती हैं।

📌 पाठ प्रतिपाद्य:

'पहलवान की ढोलक' कहानी एक ऐसे लोक कलाकार की कथा है जो बदलते सामाजिक और राजनीतिक परिवेश में अप्रासंगिक होता जा रहा है। यह कहानी भारत की पारंपरिक संस्कृति और 'इंडिया' के नव-सभ्यतागत बदलावों के टकराव को दिखाती है। ढोलक इस कथा में सिर्फ़ एक वाद्ययंत्र नहीं, बल्कि लोकशक्ति, जनचेतना और जीवन-संघर्ष का प्रतीक है। लुट्टन पहलवान का संघर्ष केवल भूख और महामारी से नहीं, बल्कि बदलती मानसिकता और संस्कृति से भी है।

📄 सारांश:

यह कहानी साहसी और संघर्षशील पहलवान लुट्टन सिंह की है जो बचपन में अनाथ हो गया था और अपनी विधवा सास के साथ रहते हुए गायें चराते-चराते पहलवानी की ओर आकर्षित हुआ। किशोरावस्था में ही वह बलवान बन गया।
श्यामनगर के मेले में उसने पंजाब के प्रसिद्ध पहलवान चाँद सिंह को हराकर 'शेर का बच्चा' कहलाया और राजा के दरबार में पहुँचा।
राजा साहब की मृत्यु के बाद आए नए राजकुमार ने दरबारी पहलवानों को हटा दिया। लुट्टन गाँव लौट आया और युवाओं को कुश्ती सिखाने लगा।
महामारी और दु:खों के बीच लुट्टन की ढोलक गाँववालों को जीने का हौसला देती रही।
अपने बेटों की मृत्यु के बाद भी लुट्टन ढोलक बजाकर गाँव को उत्साह देता रहा। जब ढोलक की आवाज़ बंद हुई तो लोग उसे चित अवस्था में मृत पाए। उसकी अंतिम इच्छा के अनुसार, उसे चिता पर पेट के बल जलाया गया, क्योंकि जीवन में वह कभी 'चित' नहीं हुआ था।

🎯 बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs):

1. यह गद्यांश किस पाठ से अवतरित है?
   - पहलवान की ढोलक
   - बाज़ार दर्शन
   - भक्तिन
   - काले मेघा पानी दे → उत्तर: पहलवान की ढोलक

2. अँधेरी रात के वातावरण में क्या नहीं था?
   - निस्तब्धता
   - सिसकियाँ
   - तारों की चमक
   - कोलाहल → उत्तर: कोलाहल

3. रात्रि की निस्तब्धता को कौन भंग कर देती थी?
- सियारों का क्रंदन
- पेचक की डरावनी आवाज़
- दोनों
- कोई नहीं → उत्तर: दोनों

4. ठंडी और काली रात किसकी थी?
- सर्दी की
- गर्मी की
- अमावस्या की
- पूर्णिमा की → उत्तर: अमावस्या की

5. गांव भयार्त्त शिशु की तरह क्यों काँप रहा था?
- सर्दी से
- डर से
- हैजा एवं मलेरिया से
- अँधेरे से → उत्तर: हैजा एवं मलेरिया से

🧠 कथन-कारण आधारित प्रश्न:
प्र.1
कथन (A): निस्तब्धता करुण सिसकियों और आहों को बलपूर्वक अपने हृदय में दबाने की चेष्टा कर रही थी।
कारण (R): कुत्तों में परिस्थिति को ताड़ने की विशेष बुद्धि होती है।
- कथन सही, कारण गलत।
- कारण सही, कथन गलत।
- दोनों सही, पर कारण उसकी सही व्याख्या नहीं करता।
- दोनों सही, और कारण कथन की व्याख्या करता है। → उत्तर: दोनों सही, पर कारण उसकी सही व्याख्या नहीं करता।

प्र.2
कथन (A): दुखी लोगों के प्रति संवेदनशीलता की भावना होनी चाहिए।
कारण (R): दुखी व्यक्तियों के प्रति समाज के लोगों में संवेदनशीलता का अभाव है।
→ उत्तर: कथन सही है, लेकिन कारण उसकी गलत व्याख्या करता है।

✍️ लघु उत्तरीय प्रश्न:
1. लुट्टन सिंह को दरबार छोड़ने के लिए क्यों मजबूर होना पड़ा?
→ राजासाहब की मृत्यु के बाद नए राजकुमार ने सभी पहलवानों को दरबार से हटा दिया।
2. लुट्टन पहलवान किसे गुरु मानता था और क्यों?
→ वह ढोलक को अपना गुरु मानता था, क्योंकि उसकी ताल से ही उसने कुश्ती के दाँव-पेंच सीखे थे।
3. पहलवान की ढोलक की आवाज़ गाँव वालों पर क्या प्रभाव डालती थी?
→ महामारी से जूझते गाँव में ढोलक की आवाज़ लोगों को साहस देती थी और जीवन की आशा बनाए रखती थी।
4. लुट्टन ने श्यामनगर मेले में किसे हराया था?
→ पंजाब के प्रसिद्ध पहलवान चाँद सिंह को।
5. चाँद सिंह को 'शेर का बच्चा' उपाधि किसने दी थी?
→ राजा साहब ने।

📜 **दीर्घ उत्तरीय प्रश्न:**
1. लेखक ने महामारी के वातावरण का चित्रण कैसे किया है?
→ लेखक ने महामारी के दौरान गाँव की दशा का अत्यंत मार्मिक वर्णन किया है – सन्नाटा, कराहटें, सिसकियाँ और मृत्यु के भय से ग्रस्त जीवन। इस वातावरण में केवल ढोलक की आवाज़ ही जीवन का संबल थी।

2. 'पहलवान की ढोलक' कथा से हमें क्या संदेश मिलता है?
→ लोक कलाकार और परंपरागत कलाएं समाज की चेतना और जीवटता की प्रतीक हैं। उनका संरक्षण जरूरी है, क्योंकि वे कठिन परिस्थितियों में भी आशा बनाए रखती हैं।

💡 **आलोचनात्मक चिंतन प्रश्न:**

प्रश्न:
“पहलवान की ढोलक महामारी से पीड़ित गाँव के लिए सिर्फ़ एक वाद्ययंत्र नहीं थी, बल्कि एक प्रतीक बन चुकी थी।” इस कथन के आलोक में ढोलक की भूमिका का सामाजिक और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण कीजिए।

उत्तर:
ढोलक इस कहानी में केवल एक वाद्ययंत्र नहीं, बल्कि पूरे गाँव के लिए आशा, जीवटता और सांस्कृतिक चेतना का प्रतीक बन जाती है। जब औषधियाँ, सुविधाएँ और शासन विफल हो जाते हैं, तब यह ढोलक अपने स्वर से लोगों को मानसिक संबल देती है। यह दर्शाता है कि हमारी लोक-संस्कृति में भी वह शक्ति है जो जीवन को दिशा और ऊर्जा प्रदान कर सकती है।

अवधारणा-मानचित्र:

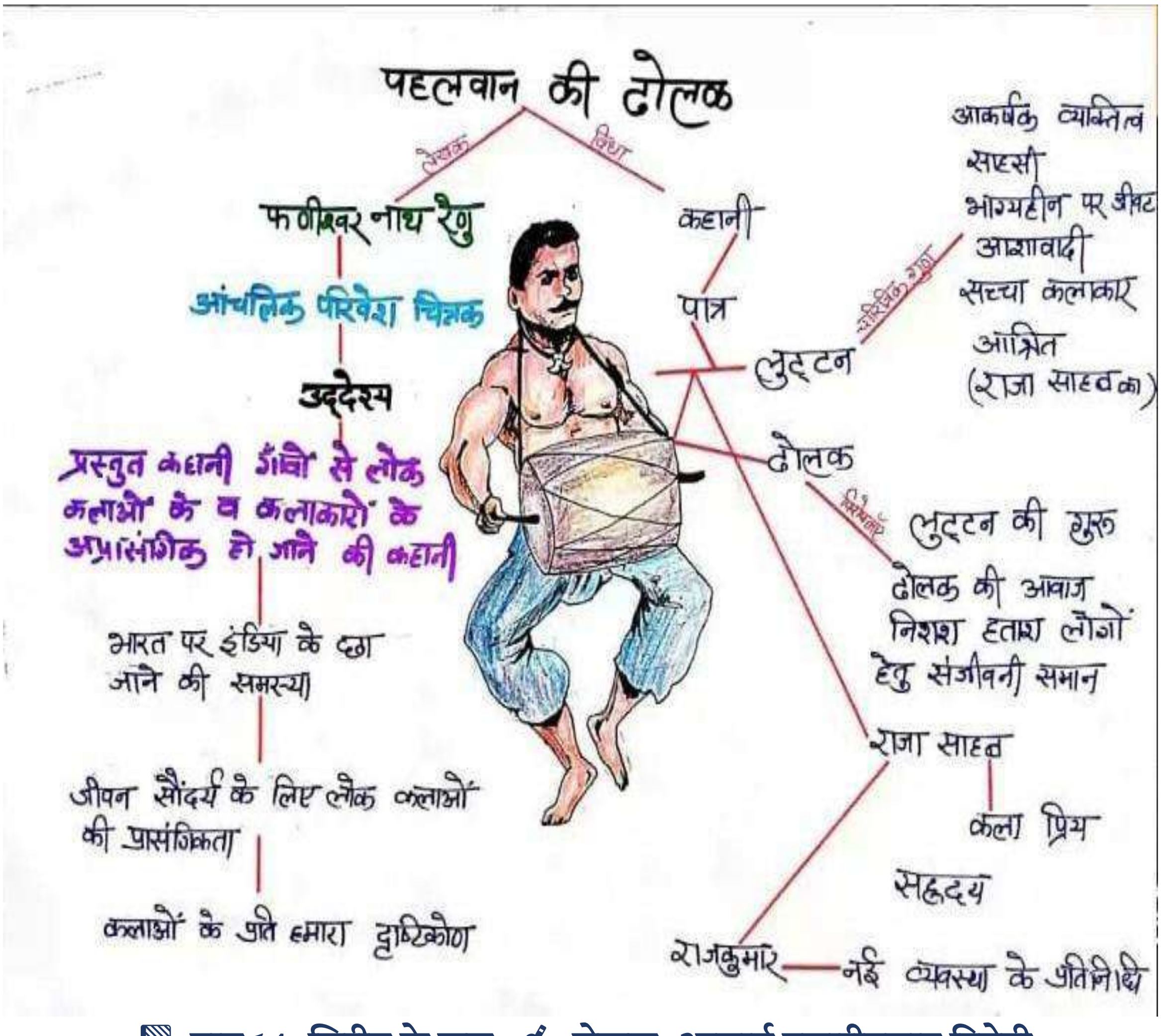

▧ पाठ 14: शिरीष के फूल ✍ लेखक: आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

✨ पाठ परिचय:

प्रस्तुत पाठ निबंध विधा की रचना है, जिसके लेखक आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी हैं। उनके निबंधों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे केवल विषय का गंभीरता से वर्णन ही नहीं करते, बल्कि उस विषय के माध्यम से संस्कृति, कला और परंपरा पर विचार करते हुए चलते हैं। ‘शिरीष के फूल’ पाठ में लेखक ने शिरीष के फूल को जीवन की कठिनाइयों के बावजूद आशा और सकारात्मकता का प्रतीक बताया है। यह फूल प्रतिकूल परिस्थितियों में भी खिलने की क्षमता रखता है तथा अपनी सुंदरता और सुगंध बनाए रखता है। लेखक ने इसके माध्यम से जीवन की चुनौतियों का सामना करने की प्रेरणा दी है। यह फूल विपरीतता में भी अपने अस्तित्व और सौंदर्य को बनाए रखता है, जो आशा और सकारात्मक दृष्टिकोण का प्रतीक है। लेखक ने शिरीष के फूल की तुलना अवधूत से की है, जो अपनी आध्यात्मिक शक्ति और विपरीत परिस्थितियों में भी स्थिरता के लिए जाने जाते हैं। यह तुलना शिरीष के फूल की आंतरिक शक्ति और संतुलन को दर्शाती है। पाठ में महात्मा गांधी की भी चर्चा की

गई है, जिन्होंने सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलते हुए भारत को स्वतंत्रता दिलाई। उनका विचार और संघर्ष शिरीष के फूल की भांति ही प्रतिकूल परिस्थितियों में भी स्थिरता और सकारात्मकता का प्रतीक है। शिरीष के फूल की प्रमुख विशेषताएँ हैं – कठिन परिस्थितियों में भी खिलना, अपनी सुंदरता और सुगंध को बनाए रखना, तथा जीवन की चुनौतियों के बावजूद आशा और सकारात्मकता का संदेश देना। यह पाठकों को जीवन की कठिनाइयों का सामना करने और आत्मबल के साथ स्थिर रहने की प्रेरणा देता है।
अतः यह पाठ हमें सिखाता है कि जीवन में सफलता पाने के लिए मानसिक दृढ़ता, संतुलन, और सकारात्मक दृष्टिकोण आवश्यक है।यह निबंध जीवन में आशा, धैर्य, जिजीविषा और अनासक्ति के भावों को दर्शाता है। लेखक ने शिरीष के फूल को प्रतीक बनाकर बताया है कि किस प्रकार यह फूल प्रतिकूल परिस्थितियों में भी खिलता है और सौंदर्य, कोमलता एवं रस को बनाए रखता है। लेखक का यह भाव सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में जीवन-दर्शन की ओर इंगित करता है, जिसमें आत्मबल और संतुलित दृष्टि के साथ कठिनाइयों में भी सकारात्मक बने रहना चाहिए। इसमें गांधीजी, कबीर, कालिदास, पंत और रवींद्रनाथ ठाकुर जैसे महापुरुषों की अनासक्त दृष्टि का उल्लेख करते हुए श्रेष्ठता की कसौटी बताई गई है।

📜 गद्यांश – 1
"शिरीष के फूलों की कोमलता देखकर परवर्ती कवियों ने समझा कि उसका सब कुछ कोमल है! यह भूल है। इसके फल इतने मजबूत होते हैं कि नये फूलों के निकल आने पर भी स्थान नहीं छोड़ते। जब तक नये फल-पत्ते मिलकर, धकियाकर उन्हें बाहर नहीं कर देते, तब तक वे डटे रहते हैं। वसंत के आगमन के समय जब सारी वनस्थली पुष्प-पत्र से मर्मरित होती रहती है, शिरीष के पुराने फल बुरी तरह खड़खड़ाते रहते हैं।"

☑ बहुविकल्पीय प्रश्न:
1. परवर्ती कवियों ने शिरीष के बारे में क्या समझा?
- वह बहुत कठोर है
- उसका रंग गहरा होता है
- वह पूरी तरह कोमल है
- उसमें कोई गंध नहीं होती

2. शिरीष के फल वृक्ष से कब तक नहीं गिरते?
- जब तक वसंत आता है
- जब तक सूख नहीं जाते
- जब तक नये फल-पत्ते उन्हें बाहर नहीं कर देते
- जब तक वर्षा नहीं होती

3. वसंत ऋतु में वनस्थली किससे भर जाती है?
- सूखे पत्तों से
- धूल से
- पुष्प-पत्र से मर्मरित
- पानी से भरी

4. शिरीष के फूल और फल किन बातों का प्रतीक हैं?
- सुख और दुख
- सफलता और असफलता
- कोमलता और कठोरता
- दिन और रात

5. पुराने फलों का 'खड़खड़ाना' किस ओर संकेत करता है?
- उनका गिरना
- उनकी जड़ता और हटने से इनकार
- वसंत के स्वागत का संकेत

- फूलों का खिलना

✍️ अतिलघुउत्तरीय प्रश्न:

1. शिरीष के पुराने फल कब तक वृक्ष पर टिके रहते हैं?

→ जब तक नये फल-पत्ते उन्हें धकियाकर बाहर नहीं कर देते।

2. शिरीष के फूलों की कोमलता ने किसे भ्रमित किया?

→ परवर्ती कवियों को।

🖋️ लघुउत्तरीय प्रश्न:

1. लेखक ने शिरीष के पुराने फलों के माध्यम से समाज के किन तत्वों की आलोचना की है?

→ लेखक उन लोगों की आलोचना करता है जो समाज में समय के साथ बदलाव नहीं स्वीकारते। जैसे पुराने फल, वे स्थान नहीं छोड़ते, वैसे ही समाज में कुछ विचारधाराएं व सत्ता में बैठे लोग नयी सोच को आने नहीं देते।

📜 गद्यांश – 2

"कालिदास सौंदर्य के बाह्य आवरण को भेदकर उसके भीतर तक पहुँच सकते थे, दुख हो कि सुख, वे अपना भाव-रस उस अनासक्त कृपीवल की भाँति खींच लेते थे, जो निर्दलित ईक्षुदंड से रस निकाल लेता है। रवींद्रनाथ ने कहा — 'राजोद्यान का सिंहद्वार कितना ही अभेद्य क्यों न हो, उसकी शिल्पकला कितनी ही सुंदर क्यों न हो, वह यह नहीं कहता कि हमीं अंतिम स्थान हैं।'"

☑️ बहुविकल्पीय प्रश्न:

1. कालिदास किस प्रकार सौंदर्य का अनुभव करते थे?
   - दृष्टिगत भाव से
   - अनासक्त भाव से
   - केवल चित्रण द्वारा
   - ईर्ष्या के साथ

2. कृषीवल का क्या कार्य बताया गया है?
   - खजूर तोड़ना
   - गन्ना पीसना
   - ईक्षुदंड से रस निकालना
   - पत्ते बीनना

3. रवींद्रनाथ के अनुसार सिंहद्वार क्या नहीं कहता?
   - वह सुंदर नहीं है
   - उसका मार्ग कठिन है
   - वही अंतिम गंतव्य है
   - वह भव्य है

4. सिंहद्वार का प्रयोग किस बात का प्रतीक है?
   - भव्यता का
   - भय का
   - बाह्य स्वरूप के आगे के सत्य का संकेत
   - बंद द्वार का

5. लेखक ने सौंदर्य का सत्य अनुभव किन कवियों में माना है?
   - कालिदास और तुलसीदास
   - कालिदास, रवींद्रनाथ और सुमित्रानंदन पंत

- सूरदास और जायसी
- रैदास और नानक

✍ अतिलघुउत्तरीय प्रश्न:
1. रवींद्रनाथ ने किस प्रतीक द्वारा गंतव्य बोध कराया?
→ सिंहद्वार

2. कालिदास की अनासक्ति की तुलना किससे की गई है?
→ कृपीवल से (जो गन्ने से रस निकालता है)

🖉 लघुउत्तरीय प्रश्न:
1. लेखक ने कवि की अनासक्ति को क्यों आवश्यक बताया है?
→ क्योंकि सच्चा कवि वही है जो सौंदर्य के भीतर छिपे भावों को आत्मसात कर सके और विषय से जुड़कर भी उसमें लिप्त न हो – यही अनासक्ति उसे सच्चा रसास्वादक बनाती है।

▧ पाठ 15: श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा ✍ डॉ. भीमराव आंबेडकर

सारांश – प्रस्तुत पाठ आंबेडकर के विख्यात भाषण 'एनीहिलेशन ऑफ़ कास्ट' (1936) का ललई सिंह यादव द्वारा रूपांतरित रूप है।
इस पाठ में लेखक ने जातिवाद के आधार पर किए जाने वाले भेदभाव को समाज के लिए हानिकारक बताया है। डॉक्टर भीमराव आंबेडकर का मानना है कि इस आधुनिक युग में भी जातिवाद का समर्थन विभिन्न तर्कों के आधार पर लोग कर रहे हैं। जातिवाद के उन समर्थकों द्वारा एक तर्क यह भी दिया जाता है कि आधुनिक सभ्य समाज में कार्यकुशलता के लिए श्रम विभाजन (कार्य विभाजन /कार्य का बंटवारा) करना आवश्यक है और जातिप्रथा , श्रम विभाजन का ही दूसरा रूप है। इसीलिए जातिवाद में कोई बुराई नहीं है।

लेकिन देखा जाए तो जाति प्रथा न केवल श्रम विभाजन (काम का बंटवारा) करती है अपितु श्रमिक विभाजन (लोगों का बंटवारा) भी करती है। समाज के लिए श्रम विभाजन आवश्यक है। किंतु यह श्रम विभाजन जाति के आधार पर न होकर व्यक्ति की योग्यता, उसकी रूचि और उसके कार्य कुशलता व निपुणता के आधार पर होना चाहिए।
भारतीय समाज के जाति प्रथा की यह विशेषता है कि यह कार्य के आधार पर श्रमिकों का विभाजन नहीं करती बल्कि पहले से ही विभाजित वर्गों (ब्राह्मण , क्षत्रिय , वैश्य और शूद्र) के आधार पर कार्य का विभाजन करती है।

आंबेडकर इस निबंध के माध्यम से कहते हैं कि जाति प्रथा को यदि श्रम विभाजन मान भी लेते हैं तो यह स्वाभाविक और उचित नहीं है क्योंकि यह मनुष्य की रुचि के अनुसार नहीं होता है इसमें व्यक्ति जिस जाति या वर्ग में जन्म लेता है , उसे उसी के अनुसार कार्य करना होता है।
यहाँ यह भी उल्लिखित है कि भले ही वह उसकी रूचि का कार्य हो या ना हो। और यह सब कुछ उसके माता-पिता के सामाजिक स्तर के हिसाब से बच्चे के जन्म से पहले यानि गर्भ से ही निर्धारित कर दिया जाता है कि उसका पेशा क्या होगा। यही जाति प्रथा का सबसे बड़ा नकारात्मक पहलू है।

जबकि व्यक्ति को उसकी रूचि के आधार पर कार्य करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। यानी व्यक्ति को अपनी रूचि व क्षमता के हिसाब से अपना कार्य क्षेत्र चुनने की आजादी मिलनी चाहिए। तभी देश को कार्यकुशल व क्षमतावान व्यक्ति मिल सकेंगे , जो समाज व राष्ट्र निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेंगे।

हम देखते हैं कि आधुनिक समय में कई बार प्रतिकूल परिस्थितियों में इंसान को अपना पेशा या कार्यक्षेत्र बदलने की जरूरत पड़ती है ताकि वह अपने परिवार का भरण पोषण अच्छे से कर सकें। लेकिन प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मनुष्य को यदि अपना कार्यक्षेत्र बदलने की स्वतंत्रता नहीं हो तो उसके भूखे मरने की स्थिति आ जाएगी।

भारतीय परिदृश्य में जाति प्रथा किसी भी व्यक्ति को ऐसा कोई पेशा चुनने की अनुमति नहीं देती है जो उसका पैतृक पेशा ना हो। भले ही वह उस कार्य को करने में कितना ही निपुण और पारंगत क्यों ना हो। इसीलिए पेशा परिवर्तन की अनुमति न देकर जाति प्रथा भारत में बेरोजगारी बढ़ाने में भी अहम भूमिका निभाती है।

अतः इस बात से यह सिद्ध होता है व्यक्ति के आर्थिक पहलू के लिए भी जाति प्रथा हानिकारक है। क्योंकि यह मनुष्य की स्वाभाविक रुचि के अनुसार कार्य करने की अनुमति नहीं देती हैं। बेमन से किया गए कार्य में व्यक्ति कभी भी उन्नति नहीं कर सकता है।

गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

गद्यांश - 1

यह विडंबना की ही बात है, कि इस युग में भी 'जातिवाद' के पोषकों की कमी नहीं है। इसके पोषक कई आधारों पर इसका समर्थन करते हैं। समर्थन का एक आधार यह कहा जाता है कि आधुनिक सभ्य समाज 'कार्य-कुशलता' के लिए श्रम विभाजन को आवश्यक मानता है, और चूँकि जाति-प्रथा भी श्रम विभाजन का ही दूसरा रूप है इसलिए इसमें कोई बुराई नहीं है। इस तर्क के संबंध में पहली बात तो यही आपत्तिजनक है, कि जाति-प्रथा श्रम विभाजन के साथ-साथ श्रमिक-विभाजन का भी रूप लिए हुए है। श्रम विभाजन, निश्चय ही सभ्य समाज की आवश्यकता है, परंतु किसी भी सभ्य समाज में श्रम विभाजन की व्यवस्था श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन नहीं करती। भारत की जाति-प्रथा की एक और विशेषता यह है कि यह श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन ही नहीं करती बल्कि विभाजित विभिन्न वर्गों को एक-दूसरे की अपेक्षा ऊँच-नीच भी करार देती है, जो कि विश्व के किसी भी समाज में नहीं पाया जाता।

प्रश्न : 1 लेखक विडंबना की बात कहकर किस ओर इशारा करना चाहते हैं?

(क) जातिवादकेपोषकोंकीतरफ

(ख) कार्य-कुशलताकेपोषकोंकीतरफ

(ग) श्रमविभाजनकेपोषकोंकीतरफ

(घ) श्रमिक-विभाजनकेपोषकोंकीतरफ

उत्तर – (क) जातिवादकेपोषकोंकीतरफ

प्रश्न:2 जातिवाद के पोषक जाति का समर्थन क्यों करते हैं ?

(क) 'कार्य-कुशलता' के लिए श्रम विभाजन को आवश्यक मानने के कारण

(ख) 'जाति-प्रथा भी श्रम विभाजन का ही दूसरा रूप है इसलिए इसमें कोई बुराई नहीं है' के कारण।

(ग) केवल (ख) (घ) (क) और (ख) दोनों **उत्तर – (घ) (क) और (ख) दोनों**

प्रश्न : 3 जाति को आधार मानकर श्रम का विभाजन करने से क्या परिणाम मिलता है ?

(क) राष्ट्र समृद्ध बनता है

(ख) कार्य-कुशलता में वृद्धि होती है

(ग) क्षमताओं का सटीक आकलन नहीं हो पाता है

(घ) सभी विकल्प सही है **उत्तर – (घ) सभी विकल्प सही है**

प्रश्न : 4 जाति प्रथा को नकारात्मक क्यों मानना चाहिए ?

(क) यह विभिन्न वर्गों में ऊँच -नीच पैदा करती है

(ख) यह श्रमिकों का अस्वाभाविक वर्गीकरण करती है

(ग) काम को जन्म के आधार पर बांट देती है

(घ) उपर्युक्त सभी**उत्तर – (घ) उपर्युक्त सभी**

प्रश्न : 5 निम्नलिखित कथन और कारण को पढ़कर उत्तर दें-

कथन : कोई भी सभ्य समाज श्रमिकों का विभाजन नहीं करता है।

कारण: यह सभी को रोजगार के समान अवसर प्रदान करता है।

(क) कथन सही नहीं है, कारण सही है

(ख) कथन तथा कारण दोनों सही हैं

(ग) कथन सही है, कारण सही नहीं है

(घ) उपर्युक्त सभी

उत्तर – (ख) कथन तथा कारण दोनों सही हैं

गद्यांश – 2

इस प्रकार हम देखते हैं कि श्रम-विभाजन की दृष्टि से भी जाति-प्रथा गंभीर दोषों से युक्त है। जाति-प्रथा का श्रम-विभाजन मनुष्य की स्वेच्छा पर निर्भर नहीं रहता। मनुष्य की व्यक्तिगत भावना तथा व्यक्तिगत रुचि का इसमें कोई स्थान अथवा महत्त्व नहीं रहता। 'पूर्व लेख' ही इसका आधार है। इस आधार पर हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि आज के उद्योगों में ग़रीबी और उत्पीड़न इतनी बड़ी समस्या नहीं जितनी यह कि बहुत से लोग 'निर्धारित' कार्य को 'अरुचि' के साथ केवल विवशतावश करते हैं। ऐसी स्थिति स्वभावतः मनुष्य को दुर्भावना से ग्रस्त रहकर टालू काम करने और कम काम करने के लिए प्रेरित करती है। ऐसी स्थिति में जहाँ काम करने वालों का न दिल लगता हो न दिमाग़, कोई कुशलता कैसे प्राप्त की जा सकती है। अतः यह निर्विवाद रूप से सिद्ध हो जाता कि आर्थिक पहलू से भी जाति-प्रथा हानिकारक प्रथा है। क्योंकि यह मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणारुचि व आत्म-शक्ति को दबा कर उन्हें अस्वाभाविक नियमों में जकड़ कर निष्क्रिय बना देती है।

प्रश्न:1 उपरोक्तगद्यांश किस भाषण का संपादित अंश है?

(क) द कास्ट्स इन इंडिया: देयर मैकेनिज्म (ख) जनेसिस एंड डेवलपमेंट
(ग) एनीहिलेशन ऑफ कास्ट (घ)हू आर शूद्राज **उत्तर – (ग) एनीहिलेशन ऑफ कास्ट**

प्रश्न:2 किन परिस्थितियों के कारण मनुष्य काम टालता है या कम काम करता है ?
(क) कार्य के प्रति अरुचि के कारण (ख) अपना काम न होने के कारण
(ग) कार्य के प्रति रुचि के कारण (घ) धन की आवश्यकता न होने के कारण **उत्तर – (क) कार्य के प्रति अरुचि के कारण**

प्रश्न : 3 जाति-प्रथा का श्रम-विभाजन किस पर निर्भर करता है ?
(क) मनुष्य की स्वेच्छा पर
(ख) जाति प्रथा के पोषकों पर
(ग) व्यक्ति की रुचि पर
(घ) विकल्प (क) एवं (ग) दोनों सही हैं **उत्तर – (ख) जाति प्रथा के पोषकों पर**

प्रश्न : 4 'पूर्व लेख' से क्या आशय है ?
(क) भारतीय समाज द्वारा निर्धारित जाति प्रथा का नियम
(ख) मनुष्य के पूर्व जन्म के कर्म
(ग) संविधान आधारित नियम
(घ) लेखक द्वारा लिखे गए पहले के लेख **उत्तर – (क) भारतीय समाज द्वारा निर्धारित जाति प्रथा का नियम**

प्रश्न : 5 निम्नलिखित कथन और कारण को पढ़कर उत्तर दें -
कथन: ग़रीबी और उत्पीड़न बड़ी समस्या है।
कारण: जाति प्रथा के आधार पर श्रम विभाजन करने के कारण यह समस्या उपजी है।
(क) कथन सही नहीं है, कारण सही है
(ख) कथन तथा कारण दोनों सही हैं
(ग) कथन सही है, कारण सही नहीं है
(घ) कथन तथा कारण दोनों गलत हैं **उत्तर – (क) कथन सही नहीं है, कारण सही है**

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1- जाति प्रथा को श्रम विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे आम्बेडकर के क्या तर्क हैं?
उत्तर - लेखक जाति प्रथा को श्रम विभाजन का ही एक रूप नहीं मानता क्योंकि यह विभाजन अस्वाभाविक है। यह मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है। इसमें व्यक्ति की क्षमता की उपेक्षा की जाती है। यह केवल माता - पिता के सामाजिक श्रेणी का ध्यान रखती है। व्यक्ति के जन्म से पहले ही श्रम विभाजन होना अनुचित है। जाति प्रथा व्यक्ति को जीवन भर के लिए एक ही व्यवसाय से बाँध देती है। पेशा उपयुक्त या अनुपयुक्त कैसा भी हो , करने के लिए व्यक्ति बाध्य होता है। संकट के समय भी पेशा बदलने की अनुमति नहीं होती, भले ही मनुष्य को भूखा मरना पड़े।

प्रश्न 2- जाति प्रथा भारतीय समाज में बेरोज़गारी व भुखमरी का भी एक कारण कैसे बनती है ? क्या यह स्थिति आज भी है?
उत्तर - जाति प्रथा के कारण कोई भी व्यक्ति ऐसा पेशा नहीं चुन सकता जो उसका पैतृक पेशा न हो , भले ही वह उस पेशे में पारंगत हो। उद्योग धंधों की प्रक्रिया तथा तकनीक में सतत विकास और कभी - कभी अचानक ऐसे परिवर्तन होते हैं कि व्यक्ति पेशा बदलने को बाध्य होता है। ऐसे में यदि जाति प्रथा पेशा न बदलने दे तो भुखमरी और बेरोज़गारी आनी निश्चित है।
आज भयंकर जाति प्रथा के बाद भी ऐसी बाध्यता नहीं है। लोग पैतृक व्यवसाय त्याग कर नए पेशे में जा रहे हैं। जो लोग पैतृक व्यवसाय से ही जुड़े हैं, वे या तो स्वेच्छा से हैं अथवा अन्य क्षेत्र की दक्षता के अभाव के कारण कार्य कर रहे हैं।

प्रश्न 3- लेखक के मत से दासता की व्यापक परिभाषा क्या है?
उत्तर - लेखक के अनुसार दासता केवल क़ानूनी पराधीनता ही नहीं होती। दासता में वह स्थिति भी शामिल है जिससे कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों के द्वारा निर्धारित व्यवहार एवं कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है। यही स्थिति क़ानूनी पराधीनता न होने पर भी पाई जा सकती है। उदाहरणार्थ जाति प्रथा की तरह ऐसे वर्ग का होना संभव है यहाँ कुछ लोगों को अपनी इच्छा के विरुद्ध पेशे अपनाने पड़ते हैं।

प्रश्न 4- शारीरिक वंश परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार की दृष्टि से मनुष्यों में असमानता सम्भावित रहने के बावजूद आम्बेडकर समता को ही एक व्यवहार्य सिद्धान्त मानने का आग्रह क्यों करते हैं ? इसके पीछे उनके क्या तर्क हैं ?
उत्तर- डॉक्टर अंबेडकर यह जानते हुए भी कि शारीरिक वंश परंपरा और सामाजिक परंपरा की दृष्टि से मनुष्य में असमानता का होना संभव है ,समता के व्यवहार्य सिद्धांत को मानने का आग्रह करते हैं। इसके पीछे लेखक का तर्क है कि समाज को यदि अपने सदस्यों से अधिकतम उपयोगिता प्राप्त करनी है, तो समाज के सभी सदस्यों को आरंभ से ही समान अवसर एवं समान व्यवहार उपलब्ध कराए जाएँ। राजनीतिज्ञों को भी सब मनुष्यों के साथ समान व्यवहार करना चाहिए।

प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता का विकास करने के लिए बराबर अवसर देने चाहिए। उनका तर्क है कि वंश में जन्म लेना या सामाजिक परंपरा व्यक्ति के वश में नहीं है अतः उस आधार पर निर्णय लेना उचित नहीं है।

प्रश्न 5- सही में आम्बेडकर ने भावात्मक समत्व की मानवीय दृष्टि के तहत जातिवाद का उन्मूलन चाहा है जिसकी प्रतिष्ठा के लिए भौतिक स्थितियों और जीवन सुविधाओं का तर्क दिया है। क्या इससे आप सहमत हैं?

उत्तर - हम लेखक से पूरी तरह सहमत हैं। मेरे मतानुसार इसका तर्क यह है कि कुछ लोग किसी वंश में पैदा होने के कारण ही उत्तम व्यवहार के हक़दार बन जाते हैं। तनिक विचार करें, उसमें उनका अपना क्या योगदान है। सामाजिक परिवेश भी व्यक्ति को सम्मान दिला देता है, उसमें भी व्यक्ति की क्षमता का मूल्यांकन नहीं होता। मनुष्य की महानता उसके प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप तय होनी चाहिए। मनुष्य के प्रयत्नों का भी सही मूल्यांकन तभी हो सकता है, जब सभी को समान अवसर मिले। उदाहरण के लिए, ग्रामीण परिवेश में रहने वाला निर्धन व्यक्ति शहरों में रहने वाले अमीर व्यक्तियों से मुक़ाबला कैसे कर सकता है ? अतः पहले जातिवाद का उन्मूलन हो और फिर भौतिक स्थितियां व जीवन सुविधाएँ समान हों। तब जो श्रेष्ठ सिद्ध हो , वही उत्तम व्यवहार के हक़दार हों।

प्रश्न 6- जाति प्रथा और श्रम विभाजन में बुनियादी अंतर बताइए।

उत्तर - जाति प्रथा और श्रम विभाजन में बुनियादी अंतर यह है कि श्रम विभाजन श्रमिकों के विभिन्न वर्गों में स्वाभाविक रूप से विभाजन करता है ,जबकि जाति प्रथा श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन करने के साथ - साथ उन्हें एक - दूसरे की तुलना में ऊँचा- नीच भी क़रार देती है।

प्रश्न 7- जाति प्रथा को श्रम विभाजन का ही एक अंग न मानने के पीछे अंबेडकर का क्या तर्क था ?

उत्तर- जाति प्रथा को श्रम विभाजन का ही एक अंग न मानने के पीछे डॉक्टर अंबेडकर के निम्नलिखित तर्क थे -

1. जाति - प्रथा, श्रम - विभाजन के साथ - साथ श्रमिक विभाजन का रूप लिए हुए है।
2. श्रम विभाजन निश्चय ही सभ्य समाज की आवश्यकता है, परंतु किसी भी सभ्य समाज में श्रम विभाजन की व्यवस्था श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन नहीं करती।

3. भारत की जाति प्रथा श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन ही नहीं करती , बल्कि विभाजित विभिन्न वर्गों को दूसरे की अपेक्षा ऊँचा नीचा भी क़रार देती है , जो विश्व के किसी भी समाज में नहीं पाया जाता।

4. जाति प्रथा को यदि श्रम विभाजन मान लिया जाए तो यह सामाजिक विभाजन नहीं है, क्योंकि यह मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है

प्रश्न 8- आदर्श समाज के तीन तत्वों से एक भ्रातृता को रखकर लेखक ने अपने आदर्श समाज में स्त्रियों को भी सम्मिलित किया है अथवा नहीं ? आप इस भ्रातृता शब्द से कहाँ तक सहमत हैं? यदि नहीं तो आप क्या शब्द उचित समझेंगे / समझेंगी?

उत्तर - आदर्श समाज के तीसरे तत्व भ्रातृता पर विचार करते समय लेखक ने भले ही स्त्रियों का अलग से उल्लेख नहीं किया है किन्तु वह समाज की बात कर रहा है। समाज तो स्त्री- पुरुष दोनों से ही बनता है , अतः सम्मिलित करने या न करने की बात व्यर्थ है।

भ्रातृता शब्द व्यवहार में प्रचलित नहीं है। यह संस्कृतनिष्ठ शब्द है, अतः इसके स्थान पर भाईचारा शब्द उचित रहेगा।

प्रश्न 9- आम्बेडकर की कल्पना की आदर्श समाज की तीन विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर - डॉक्टर आम्बेडकर की कल्पना का आदर्श समाज स्वतंत्रता , समता और भ्रातृता अर्थात् भाईचारे पर आधारित है। उनके अनुसार ऐसे समाज में सभी के लिए एक जैसा मानदंड तथा उसकी रुचि के अनुसार कार्यों की उपलब्धता होनी चाहिए। सभी व्यक्तियों को समान अवसर व समान व्यवहार उपलब्ध होना चाहिए। उनके आदर्श समाज में जाति भेदभाव का तो नामोनिशान ही नहीं है। इस समाज में करनी पर बल दिया गया है , कथनी पर नहीं।

प्रश्न- 10 आदर्श समाज की स्थापना में डॉक्टर आम्बेडकर के विचारों की सार्थकता पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर - लेखक का आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता व भ्रातृता पर आधारित है। लेखक के आदर्श समाज में परिवर्तन का लाभ सभी को मिलेगा। ऐसे समाज में बहुविधि हितों में सबकी सहभागिता होगी। समाज के हित के लिए सभी सजग होंगे। सामाजिक जीवन में सबके लिए अबाध संपर्क के अनेक साधन व अवसर मिलेंगे। समाज में भाईचारा दूध और पानी के मिश्रण के समान होगा। हर कोई अपने साथियों के प्रति प्रेम और सम्मान की भावना रखेगा।

▧ पाठ 15: मेरी कल्पना का आदर्श समाज ✍ डॉ. भीमराव अंबेडकर के दृष्टिकोण से

पाठ का सारांश/ मुख्य बिंदुः-

"मेरी कल्पना का आदर्श-समाज" का मुख्य विषय डॉ. बी. आर. अंबेडकर द्वारा ऐसे समाज की परिकल्पना है, जो स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे पर आधारित हो। वे एक ऐसे लोकतांत्रिक समाज की वकालत करते हैं जहाँ प्रत्येक व्यक्ति को अपनी रुचि और योग्यता के अनुसार कार्य चुनने की स्वतंत्रता प्राप्त हो तथा सभी के साथ समानता और सम्मान का व्यवहार किया जाए।

अंबेडकर जी ऐसे समाज की कल्पना करते हैं जिसमें सभी को समान अवसर और गरिमा मिले। उनके अनुसार, आदर्श समाज में इतनी लचीलापन होना चाहिए कि समय के साथ आवश्यक परिवर्तन सहजता से किए जा सकें तथा समाज के सभी वर्गों को समान लाभ प्राप्त हो। वे भाईचारे की तुलना दूध और पानी से करते हैं, जो मिलकर एकरूप हो जाते हैं। उनके अनुसार, समाज में ऐसा ही भेदरहित और समरसता से परिपूर्ण भाईचारा होना चाहिए। अंबेडकर लोकतंत्र को केवल शासन-व्यवस्था नहीं मानते, बल्कि एक ऐसी सामाजिक संरचना मानते हैं, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति को अपने व्यवसाय और जीवनपथ चुनने की स्वतंत्रता हो और सभी को समान अधिकार व सम्मान प्राप्त हो।
जाति-प्रथा की आलोचना करते हुए वे कहते हैं कि यह व्यक्ति को उसकी इच्छा के विरुद्ध पूर्वनिर्धारित कार्यों में बाँध देती है, जो एक प्रकार की सामाजिक गुलामी है। वे इस बात पर बल देते हैं कि व्यक्ति की स्वतंत्रता और उन्नति के लिए जाति-प्रथा का अंत आवश्यक है, जिससे प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता और रुचि के अनुसार कार्य कर सके और समाज का समुचित विकास संभव हो सके।पाठ के माध्यम से डॉ. बी.आर. आंबेडकर एक ऐसे समाज की कल्पना करते हैं, जिसका आधार स्वतंत्रता, समता और भ्रातृता हो, इस समाज में सभी को समान अवसर और उचित सम्मान मिले। आंबेडकर का मानना है कि आदर्श समाज में सदैव इतनी संभावना हो कि समय के साथ आवश्यक परिवर्तन आसानी से किए जा सकें और सभी वर्गों को समान लाभ मिले। वे आदर्श समाज के 'भ्रातृता अर्थात भाईचारे' को दूध और पानी के उदाहरण के माध्यम से समझाने का प्रयास करते हैं, जिसमें दोनों तत्व मिलकर समान रूप धारण कर लेते हैं, बिना किसी भेदभाव के ऐसा ही भाईचारा आम्बेडकर समाज में लाना चाहते हैं।

आम्बेडकर का मानना है कि जाति प्रथा व्यक्ति को उसकी इच्छाओं के विरुद्ध पूर्व निर्धारित कार्यों में बांधकर रखती है, जो एक प्रकार की गुलामी है। वह इस बात पर विशेष बल देते हैं कि व्यक्ति की स्वतंत्रता और उन्नति के लिए जाति प्रथा को समाप्त करना आवश्यक है, जिससे हर व्यक्ति अपनी रुचि और योग्यता के अनुसार कार्य कर सके और समाज का समुचित विकास हो सके।समाज के सभी सदस्यों से अधिकतम उपयोगिता प्राप्त करने के लिए सबको अपनी क्षमता को विकसित करने तथा रुचि के अनुरूप व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। राजनीतिज्ञ को अपने व्यवहार में एक व्यवहार्य सिद्धांत की आवश्यकता रहती है और यह व्यवहार्य सिद्धांत यही होता है कि सब मनुष्यों के साथ समान व्यवहार किया जाए।

मुख्य बिंदु:

- **स्वतंत्रता:**आदर्श समाज में व्यक्तियों को अपने जीवन, शारीरिक सुरक्षा, संपत्ति और व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता प्राप्त होगी। यह स्वतंत्रता उन्हें अपने प्रयासों के अनुसार जीवन जीने का अवसर प्रदान करेगी।
- **समता:**समाज में सभी व्यक्तियों को समान अवसर और समान व्यवहार मिलेंगे, जिससे किसी भी प्रकार का भेदभाव समाप्त होगा। अंबेडकर जी के अनुसार, समता एक व्यवहार्य सिद्धांत है जो समाज में समानता सुनिश्चित करता है l
- **भ्रातृता :**इसका मतलब है कि सभी व्यक्ति एक-दूसरे के साथ भाई-बहन की तरह रहें, एक-दूसरे का सम्मान करें, और एक-दूसरे की मदद करें।

गद्यांश - 1

मेरा आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता, भ्रातृता पर आधारित होगा। क्या यह ठीक नहीं है, भ्रातृता अर्थात भाईचारे में किसी को क्या आपत्ति हो सकती है? किसी भी आदर्श समाज में इतनी गातिशीलता होनी चाहिए जिससे कोई भी वांछित परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे तक संचारित हो सके। ऐसे समाज के बहुविधि हितों में सबका भाग होना चाहिए तथा सबको उनकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए। सामाजिक जीवन में अबाध संपर्क के अनेक साधन व अवसर उपलब्ध रहने चाहिए। तात्पर्य यह कि दूध-पानी के मिश्रण की तरह भाईचारे का यही वास्तविक रूप है, और इसी का दूसरा नाम लोकतंत्र है। क्योंकि लोकतंत्र केवल शासन की एक पद्धति ही नहीं है, लोकतंत्र मूलतः सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति तथा समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है। इनमें यह आवश्यक है कि अपने साथियों के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव हो।

प्रश्न: 1 आंबेडकर किस समाज को आदर्श मानते हैं?

(क) स्वतंत्रता, समता व भ्रातृता पर आधारित
(ख) स्वतन्त्रता पर आधारित
(ग) समता पर आधारित
(घ) मिश्रित समाज **उत्तर: (क) स्वतंत्रता, समता व भ्रातृता पर आधारित**

प्रश्न :2 पाठ के लेखक का नाम है -

(क) हजारी प्रसाद द्विवेदी (ख) बाबा साहेब आंबेडकर
(ग) जैनेंद्र (घ) महादेवी वर्मा **उत्तर: (ख) बाबा साहेब आंबेडकर**

प्रश्न :3 अबाध संपर्क से लेखक क्या प्रकट करना चाहते हैं ?

(क) बाधारहित संपर्क (ख) समाज के साथ संपर्क
(ग) बाधासाहित संपर्क (घ) गतिहीन संपर्क **उत्तर: (क) बाधारहित संपर्क**

प्रश्न :4 लोकतांत्रिक शासन पद्धति में कौन सा भाव आवश्यक नहीं है?

(क) श्रद्धा का (ख) सम्मान का

(ग) उपरोक्त दोनों का (घ) जाति प्रथा के पोषक होने का **उत्तर: (घ) जाति प्रथा के पोषक होने का**

प्रश्न :5 सुमेलित करें-

स्तम्भ-क	**स्तम्भ-ख**
(।) स्वतंत्रता	(क) समानता
(।।) भ्रातृता	(ख) स्वाधीनता
(।।।) समता	(ग) भाईचारा

(क) (।) - क, (।।) - ख (।।।) - ग

(ख) (i) - ख, (ii) - ग (iii) - क

(ग) (i) - क, (ii) - ग (iii) - ख

(घ) (i) - ख, (।।) - क (iii) – ग **उत्तर: (ख) (i) - ख, (ii) - ग (iii) - क**

गद्यांश-2

मेरा आदर्श-समाज स्वतंत्रता, समता, भ्रातृता पर आधारित होगा। क्या यह ठीक नहीं है भ्रातृता अर्थात भाईचारे में किसी को क्या आपत्ति हो सकती है? किसी भी आदर्श-समाज में इतनी गातिशीलता होनी चाहिए जिससे कोई भी वांछित परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे तक संचारित हो सके। ऐसे समाज के बहुविधि हितों में सबका भाग होना चाहिए तथा सबको उनकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए। सामाजिक जीवन में अबाध संपर्क के अनेक साधन व अवसर उपलब्ध रहने चाहिए। तात्पर्य यह कि दूध-पानी के मिश्रण की तरह भाईचारे का यही वास्तविक रूप है, और इसी का दूसरा नाम लोकतंत्र है। क्योंकि लोकतंत्र केवल शासन की एक पद्धति ही नहीं है, लोकतंत्र मूलतः सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति तथा समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है। इनमें यह आवश्यक है कि अपने साथियों के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव हो।

1) प्रस्तुत गद्यांश के रचयिता कौन है?

i) जैनेंद्र कुमार ii) धर्मवीर भारती

iii) बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर iv) उपरोक्त सभी **उत्तर:- 3 बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर**

2) अंबेडकर जी के अनुसार आदर्श समाज में क्या-क्या विशेषताएं होनी चाहिए1

1) स्वतंत्रता2) भाईचारा

3) समता 4) उपर्युक्त तीनों **उत्तर:-4 उपर्युक्त तीनों**

3) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।

1. आदर्श समाज में बहुत अधिक गतिशीलता असंभव है।
2. लोकतंत्र में साथियों के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव होना चाहिए।
3. लोकतंत्र में उच्च वर्ग का आरक्षण होना चाहिए।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा सही है?

i) केवल 1

ii) केवल 2

iii) 1 और 2

iv) 1 और 3 **उत्तर:- (ii) केवल 2**

4) **निम्नलिखित कथन और कारण को पढ़कर उत्तर दें -**

कथन (A) आदर्श समाज लोकतंत्र का अभिन्न अंग होता है।

कारण (R) लोकतंत्र में सामाजिक व्यवस्था में आपसी मेल जोल के अनेक अवसर उपलब्ध रहते हैं।

कूट:-

i) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

ii) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत है।

iii) कथन (A) सही है किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

iv) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही है तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

उत्तर:- (iv) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही है तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

5. डॉ. अम्बेडकर समाज में कैसा भाईचारा चाहते थे?

(क) जिसमे दूध-पानी जैसा मिश्रण हो। (ख) जिसमे आग पानी जैसा मिश्रण हो।

(ग) जिसमें किसी को स्वतन्त्रता न हो (घ) जिसमें गतिशीलता न हो। **उत्तर:- 1 जिसमें दूध -पानी जैसा मिश्रण हो।**

पठित गद्यांश 3

व्यक्ति विशेष के दृष्टिकोण से, असमान प्रयत्न के कारण, असमान व्यवहार को अनुचित नहीं कहा जा सकता। साथ ही प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता का विकास करने का पूरा प्रोत्साहन देना सर्वथा उचित है। परंतु यदि मनुष्य प्रथम दो बातों में असमान है, तो क्या इस आधार पर उनके साथ भिन्न व्यवहार उचित हैं? उत्तम व्यवहार के हक की प्रतियोगिता में वे लोग निश्चय ही बाजी मार ले जाएंगे, जिन्हें उत्तम कुल, शिक्षा, पारिवारिक ख्याति, पैतृक संपदा तथा व्यवसायिक प्रतिष्ठा का लाभ प्राप्त है। इस प्रकार पूर्ण सुविधा संपन्नों को ही 'उत्तम व्यवहार' का हकदार माना जाना वास्तव में निष्पक्ष निर्णय नहीं कहा जा सकता। क्योंकि यह सुविधा संपन्नों के पक्ष में निर्णय देना होगा। अतः न्याय का तकाजा यह है कि जहाँ हम तीसरे (प्रयासों की असमानता, जो मनुष्यों के अपने वश की बात है। आधार पर मनुष्यों के साथ असमान व्यवहार को उचित ठहराते हैं, वहाँ प्रथम दो आधारों (जो मनुष्य के अपने वश की बातें नहीं हैं) पर उनके साथ असमान व्यवहार नितांत अनुचित है। और हमें ऐसे व्यक्तियों के साथ यथासंभव समान व्यवहार करना चाहिए। दूसरे शब्दों में, समाज की यदि अपने सदस्यों से अधिकतम उपयोगिता प्राप्त करनी है, तो यह तो संभव है, जब समाज के सदस्यों को आरंभ से ही समान अवसर एवं समान व्यवहार उपलब्ध कराए जाए l

1) उपयुक्त विवरण के आधार पर प्रश्न का उत्तर दीजिए:
"मेरी कल्पना का आदर्श समाज" पाठ "बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर की किस विधा की रचना है

i) पद्य ii) गद्य iii) चंपू iv) इनमें से कोई नहीं **उत्तरः- ii) गद्य**

2) प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता का विकास करने का पूरा प्रोत्साहन देना क्यों उचित है?

i) इससे व्यक्ति अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सक्षम होते हैं
ii) इससे समाज में असमानता बढ़ती है
iii) इससे केवल अमीर लोगों को लाभ होता है
iv) इससे व्यक्ति अपनी क्षमता को कम कर देते हैं **उत्तरः i) इससे व्यक्ति अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सक्षम होते हैं**

3) **निम्नलिखित कथन और कारण को पढ़कर उत्तर दें-**

कथनः उत्तम व्यवहार की प्रतियोगिता में सभी को समान अवसर मिलना चाहिए।
कारणः ताकि निष्पक्षता और समानता कायम हो सके।
i) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
ii) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत है।
iii) कथन (A) सही है किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
iv) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही है तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

उत्तरः iv) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही है तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

4) निम्नलिखित कथन और कारण को पढ़कर उत्तर दें-
(A) कथनः आदर्श समाज में शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएँ सभी के लिए उपलब्ध नहीं होनी चाहिए।
(R) कारणः इससे समाज में समानता और विकास को बढ़ावा नहीं मिलेगा।

(i) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ii) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
(iii) कथन (A) सही है किंतु कारण (R)उसकी गलत व्याख्या करता है।
(iv) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही है तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
उत्तरः (ii) कथन (A) तथा कारण(R) दोनों गलत है।

(5) गद्यांश का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(i) उत्तम व्यवहार की प्रतियोगिला का समर्थन करना
(ii) समाज में असमानता को बढ़ावा देना
(iii) व्यक्तिगत विशेषताओं के आधार पर भेदभाव करना
(iv) समाज में निष्पक्षता और समानता की आवश्यकता पर बल देना

उत्तरः iv) समाज में निष्पक्षता और समानता की आवश्यकता पर बल देना

पाठ में आए महत्त्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर

प्रश्न-1- आदर्श समाज के महत्त्वपूर्ण तत्व लिखिए-

उत्तर- आदर्श समाज के तीन तत्त्व हैं:-

1.**स्वतंत्रता:**आदर्श समाज में व्यक्तियों को अपने जीवन, शारीरिक सुरक्षा, संपत्ति और व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता प्राप्त होगी। यह स्वतंत्रता उन्हें अपने प्रयासों के अनुसार जीवन जीने का अवसर प्रदान करेगी।

2. **समता:**समाज में सभी व्यक्तियों को समान अवसर और समान व्यवहार मिलेंगे, जिससे किसी भी प्रकार का भेदभाव समाप्त होगा। अंबेडकर जी के अनुसार, समता एक व्यवहार्य सिद्धांत है जो समाज में समानता सुनिश्चित करता है l

3.**भ्रातृता:** इसका मतलब है कि सभी व्यक्ति एक-दूसरे के साथ भाई-बहन की तरह रहें, एक-दूसरे का सम्मान करें और एक-दूसरे की मदद करें।

प्रश्न 2.. आदर्श समाज के तीन तत्वों में से एक ' भ्रातृता ' को रखकर लेखक ने अपने आदर्श समाज में स्त्रियों को भी सम्मिलित किया है अथवा नहीं? आप इस ' भ्रातृता ' शब्द से कहाँ तक सहमत हैं? यदि नहीं, तो आप क्या शब्द उचित समझेंगे?

उत्तर- आदर्श समाज के तीन तत्वों में से एक 'भ्रातृता' को रखकर लेखक ने अपने आदर्श समाज में स्त्रियों को भी सम्मिलित किया है। लेखक समाज की बात कर रहा है और समाज स्त्री-पुरुष दोनों से मिलकर बना है। उसने आदर्श समाज में हर आयुवर्ग को शामिल किया है। 'भ्रातृता' शब्द संस्कृत का शब्द है जिसका अर्थ है-भाईचारा यह सर्वथा उपयुक्त है। समाज में भाईचारे के सहारे ही संबंध बनते है। कोई व्यक्ति एक दूसरे से अलग नहीं रह सकता। समाज में भाईचारे के कारण ही कोई परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे छोर तक पहुँचता है।

प्रश्न 3. समता काल्पनिक जगत की वस्तु है। फिर भी इस पर बल क्यों दिया जाता है ?

उत्तर- सभी मनुष्यों में शारीरिक वंश परंपरा, सामाजिक, उत्तराधिकार व मनुष्य के अपने प्रयत्न एक समान नहीं हो सकती। इसलिए समता काल्पनिक जगत की वस्तु है। डॉ. आंबेडकर का मानना है कि समाज में सभी लोगों को आगे बढ़ने का समान अवसर मिलना चाहिए व उनके साथ समान व्यवहार होना चाहिए। यही समता है और इसी पर बल दिया गया है।

प्रश्न 4. बाबा भीमराव आंबेडकर के अनुसार, उनकी कल्पना का आदर्श समाज कैसा होना चाहिए? अपने शब्दों में अभिव्यक्त कीजिए।

अथवा

डॉ. आंबेडकर के आदर्श समाज की परिकल्पना कैसी थी?

उत्तर- डॉ. आंबेडकर के अनुसार, उनकी कल्पना का आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता और भ्रातृत्व अर्थात् भाईचारे पर आधारित है। उनके अनुसार, ऐसे समाज में सभी के लिए एक जैसा मापदंड तथा उनकी रुचि के अनुसार कार्यों की उपलब्धता होनी चाहिए। सभी व्यक्तियों को समान अवसर एवं समान व्यवहार उपलब्ध होना चाहिए। उनके आदर्श समाज में जातीय भेदभाव का तो नामोनिशान ही नहीं है। इस समाज में करनी पर बल दिया गया है, कथनी पर नहीं।

प्रश्न 5. डॉक्टर भीमराव आंबेडकर के भाषण के अंश 'श्रम विभाजन और जाति-प्रथा' तथा 'मेरी कल्पना का आदर्श समाज' आपने पढ़े हैं। जाति-प्रथा की समस्या के उन्मूलन का उपाय लोकतांत्रिक मूल्य है। सिद्ध कीजिए।

अथवा

आदर्श समाज की स्थापना में डॉ. आंबेडकर के विचारों की सार्थकता पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर डॉ. भीमराव आंबेडकर के अनुसार, उनका आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता तथा भ्रातृत्व (भाईचारे) पर आधारित होगा। समाज में आपसी प्रेम एवं भाईचारे की वृद्धि होगी। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी योग्यता के अनुसार व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता रहेगी और प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता का विकास करने का पूर्ण अवसर उपलब्ध होगा। उनके मतानुसार, एक संतुलित एवं आदर्श समाज के प्रत्येक व्यक्ति को आरंभसे ही समान अवसर और समान व्यवहार उपलब्ध होना चाहिए। इस प्रकार जाति-प्रथा की समस्या के उन्मूलन के लिए स्वतंत्रता, समता तथा भ्रातृत्व आवश्यक हैं। ये तीनों ही लोकतांत्रिक मूल्य हैं, जो व्यक्ति को जाति-प्रथा की समस्या से मुक्त कराने में सहायक हैं।

वितान भाग-2
1-सिल्वर वेडिंग→ मनोहर श्याम जोशी

प्रश्नोत्तर-

1. 'सिल्वर वेडिंग' कहानी की मूल संवेदना क्या है?

उत्तर: पीढ़ी अंतराल ही 'सिल्वरवैडिंग' शीर्षक कहानी की मूल संवेदना है। यशोधर बाबू और उनके पुत्रों में एक पीढ़ी को अंतराल है। इसी कारण यशोधर बाबू अपने परिवार के अन्य सदस्यों के साथ सामंजस्य नहीं बिठा पाते हैं। यह सिद्धांत और व्यवहार की लड़ाई है। यशोधर बाबू सिद्धांतवादी हैं तो उनके पुत्र व्यवहार वादी। आज सिद्धांत नहीं व्यावहारिकता चलती है। यशोधर बाबू के विचार पूरी तरह से पुराने हैं जो नयी पीढ़ी के साथ कहीं भी तालमेल नहीं रखते। पीढ़ी का अंतराल और उनके विचारों का अंतराल यशोधर बाबू और उनके परिवार के सदस्यों में वैचारिक अलगाव पैदा कर देता है।

2. यशोधर बाबू की अपने परिजनों के प्रति क्या अभिलाषा रही है?

उत्तर: यशोधर जी चाहते हैं कि समाज उन्हें सम्मानित बुजुर्ग मानें, मेरे बच्चे मेरा आदर करें, हर बात पर मुझसे वैसे ही सलाह लें जिस प्रकार मैं किशनदा से लिया करता था, वे चाहते थे कि उनके बच्चे उनसे कहें कि पापा दूध, बाजार से सब्जी, दाल, डिपो से कोयला लाना जैसे काम छोड़ दें, उनका बेटा अपना वेतन उनको लाकर दे।

3. यशोधर बाबू की कहानी को दिशा देने में किशनदा की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। आपके जीवन को दिशा देने में किसका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा और कैसे ?

उत्तर: मेरे जीवन को दिशा देने मे सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान मेरे गुरुओं का रहा है। उन्होंने हमेशा मुझे यही शिक्षा दी की सत्य बोलो ।सत्य बोलने वाला व्यक्ति हर तरह की परेशानी से मुक्त हो जाता है। जबकि झूठ बोलने वाला व्यक्ति अपने ही जाल में फँस जाता है। उसे एक झूठ छुपाने के लिए सैकड़ों झूठ बोलने पड़ते हैं। अपने गुरुओं की इस बात को मैंने हमेशा याद रखा। वास्तव में उनकी इसी शिक्षा ने मेरे जीवन की दिशा बदल दी।

4.'समहाउ इंप्रापर' वाक्यांश का प्रयोग यशोधर बाबू लगभग हर वाक्य के प्रारंभ में तकिया कलाम की तरह करते है। इस वाक्यांश का उनके व्यक्तित्व और कहानी के कथ्य से क्या संबंध बनता है?

उत्तर: यशोधर बाबू अपनी हर बात की शुरुआत में 'समहाउ इंप्रापर' शब्द का प्रयोग किया करते हैं।यशोधर बाबू को जब कोई बात उचित नही लगती तब वह इस वाक्य को बोलते हैं।

- साधारण पुत्र को असाधारण वेतन मिलने पर
- स्कूटर की सवारी पर
- दफ्तर में सिल्वर वेडिंग
- छोटे साले के ओछेपन पर
- खुशहाली में रिश्तेदारों की उपेक्षा करने पर
- केक काटने की विदेशी परंपरा आदि

इस संदर्भ से यह पता चलता है यशोधर बाबू सिद्धांतों को मानने वाले व्यक्ति है। यशोधर बाबू आधुनिकता के समर्थक नहीं है बल्कि उनका मानना है कि आधुनिकता के कारण हमारी संस्कृतियाँ नष्ट होती जा रही है।

5. यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती है, लेकिन यशोधर बाबू असफल रहते हैं। ऐसा क्यों?

उत्तर: यशोधर बाबू बचपन से ही माता-पिता के देहांत हो जाने की वजह से जिम्मेदारियों के बोझ से लद गए थे। वे सदैव पुराने लोगों के बीच रहे, पले, बढ़े अतः वे उन परंपराओं को छोड़ नहीं सकते थे। यशोधर बाबू अपने आदर्श किशनदा से अधिक प्रभावित हैं और आधुनिक परिवेश में बदलते हुए जीवन-मूल्यों और संस्कारों के विरूद्ध हैं। जबकि उनकी पत्नी अपने बच्चों के साथ खड़ी दिखाई देती हैं। वह अपने बच्चों के आधुनिक दृष्टिकोण से प्रभावित हैं। वे बेटी के कहे अनुसार नए कपड़े पहनती हैं और बेटों के किसी मामले में दखल नहीं देती। यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ परिवर्तित होती है, लेकिन यशोधर बाबू अभी भी किशनदा के संस्कारों और परंपराओं से चिपके हुए हैं।

6. वर्तमान समय में परिवार की संरचना, स्वरुप से जुड़े आपके अनुभव 'सिल्वर वेडिंग' कहानी से कहाँ तक सामंजस्य बिठा पाते हैं?

उत्तर: इस कहानी में दर्शाए गए परिवार के स्वरूप व संरचना आज भी लगभग हर परिवार में पाई जाती है। संयुक्त परिवार प्रथा समाप्त हो रही है। पुरानी पीढ़ी की बातों या सलाह को नयी पीढ़ी सिरे से नकार रही है। नए युवा कुछ नया करना चाहते हैं, परंतु बुजुर्ग परंपराओं के निर्वाह में विश्वास रखते हैं। यशोधर बाबू की तरह आज का मध्यवर्गीय पिता विवश है। वह किसी विषय पर अपना निर्णय नहीं दे सकता। माताएँ बच्चों के समर्थन में खड़ी नजर आती हैं। आज बच्चे अपने दोस्तों के साथ पार्टी करने में अधिक खुश रहते हैं। वे आधुनिक जीवन शैली को ही सब कुछ मानते हैं। लड़कियाँ फ़ैशन के अनुसार वस्त्र पहनती हैं। यशोधर की लड़की उसी का प्रतिनिधि है। अत: यह कहानी आज लगभग हर परिवार की है।

7. सिल्वर वैडिंग कहानी के आधार पर उन जीवन मूल्यों की सोदाहरण समीक्षा कीजिए जो समय के साथ बदल रहें हैं ?

उत्तर: कहानी की कथावस्तु के अनुसार यशोधर बाबू और उनके बच्चों की सोच में पीढ़ी का अंतराल आ गया है I यशोधर बाबू संस्कारों से जुड़े रहना चाहते हैं और संयुक्त परिवार के संवेदनाओं को अनुभव करते हैं जबकि उनके बच्चे अपने आप में जीना चाहते हैं इसलिए जरुरत इस बात की है कि यशोधर बाबू को अपने बच्चों की सकारात्मक नयी सोच का स्वागत करते रहना चाहिए परंतु यह भी अनिवार्य है कि आधुनिक पीढ़ी की जीवन मूल्यों के प्रति उदासीनता संवेदनाओं और भावनाओं को खत्म करते हैं I

8. यशोधर पंत ने भविष्य के बारे में कभी नहीं सोचा, केवल वर्तमान के बारे में ही चिंता की। क्यों ?

उत्तर: सिद्धांतवादी लोग लकीर का फकीर बन जाते हैं। उन्हें भविष्य की कोई फिक्र नहीं होती। वे तो बस वर्तमान को ही सब कुछ मानते हैं। यशोधर पंत भी ऐसे ही व्यक्ति हैं। उन्होंने अपनी पत्नी और बच्चों के इस आग्रह को कई बार ठुकराया कि कोई मकान मोल क्यों न ले लिया जाए। रिटायर होने के बाद तो सरकारी क्वार्टर छोड़ना पड़ेगा, लेकिन इस बात को यशोधर बाबू ने कभी समझने का प्रयत्न ही नहीं किया। सदा यही कहते रहे कि जो होगा देखा जाएगा। यशोधर बाबू ने तो किशनदा की एक बात को गाँठ में बाँध लिया है कि मूर्ख लोग मकान बनाते हैं और समझदार लोग उसमें रहते हैं। इसलिए वर्तमान में जीन वाले यशोधर पंत भविष्य की चिंता करता भी तो क्यों?

2-जूझ-आनंद यादव

1. 'जूझ' शीर्षक लेखक की किस चारित्रिक विशेषता को दर्शाता है?

उत्तर: 'जूझ' पाठ का शीर्षक वास्तव में लेखक के संघर्ष को चित्रित करता है। शीर्षक में आनंद के संघर्ष की कहानी का मुख्य बिंदु है कि वह कैसे स्कूल तक जाने के लिए संघर्ष करता है। गाँव में रहता है। एक किसान परिवार की सोच और मान्यता इस कहानी में दर्शाई गई है। लेखक अध्ययन करना चाहता है। उनके पिता शिक्षा के महत्त्व से अनभिज्ञ हैं। पिता के अनुसार, किसान को केवल कृषि की गतिविधियों से ही आजीविका मिलती है इसलिए वह शिक्षा को महत्त्व नहीं देते हैं। वह बस्ता लेकर ही पहले खेतों में सिंचाई करता है और पिता के शर्तानुसार पहले कृषि कार्य करता है फिर पढ़ने जाता है। वह शिक्षा में मिलने वाले अवसर का पूरा फायदा उठाता है। उसका संघर्ष जल्द ही उसे अपने लक्ष्य तक ले जाताहै। कहानी का केंद्र बिंदु लेखक का पढ़ाई के प्रति संघर्ष है। जहाँ वह पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक और व्यक्तिगत स्तर पर खुद के लिए लड़ता है और सफल होता दिखता है।

2. कविता रचने के प्रति लगाव उत्पन्न होने से पहले और बाद में मुख्य रूप से लेखक के स्वभाव में क्या अंतर आया ?

उत्तर: इन कविताओं के साथ खेलते हुए मुझे दो बड़ी शक्तियाँ प्राप्त हुई। पहले ढोर चराते हुए, पानी लगाते हुए, दूसरे काम करते हुए अकेलापन बहुत खटकता था – किसी के साथ बोलते हुए, गपशप करते हुए काम करना अच्छा लगता था। लेकिन अब अकेलेपन से कोई ऊब नहीं होती। मैं अपने आप से खेलने लगा। उलटा अब तो ऐसा लगने लगा कि जितना अकेला रहूँ उतना अच्छा।

3. आपके ख्याल से पढ़ाई-लिखाई के संबंध में लेखक और दत्ता जी राव का रवैया सही था या लेखक के पिता का ?तर्क सहित उत्तर दें।

उत्तर: पढ़ाई-लिखाई के संबंध में लेखक और दत्ता जी का रवैया सही था। उसे पता था कि खेती से गुजारा नहीं होने वाला। पढ़ने से उसे नौकरी अवश्य मिल जाएगी और विठोबा अन्ना की तरह कुछ धंधा-कारोबार किया जा सकेगा। दत्ताजी राव का रवैया भी सही था । उन्होंने लेखक के पिता को धमकाया और लेखक को पाठशाला भिजवाया। इसके विपरीत, लेखक के पिताजी का रवैया एकदम अनुचित था।

4. 'जूझ' कहानी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'जूझ' शीर्षक के औचित्य पर विचार कीजिए।

उत्तर: इस पाठ का शीर्षक 'जूझ' सम्पूर्ण अध्याय में फैला हुआ है। जूझ का अर्थ 'जूझना' एवं 'संघर्ष करना' होता है। जूझ' कहानी का शीर्षक पाठ के अनुरूप ही है। यह एक बालक की गरीबी, अपने पिता के स्वभाव से दुःखी रहना तथा स्कूल जाने पर बच्चों द्वारा खिल्ली उड़ाना और दिन का अधिकतर समय खेत में काम करना इत्यादि दर्शाता है।उसके पिता ने ही उसके संघर्षों को और बढ़ा दिया था।

पहले तो उसे पाठशाला नहीं जाने दिया और जब राव जी के कहने पर पाठशाला भेजा तो भी उसे पिता की शर्तों का पालन करना पड़ता था। यदि काम अधिक होता, तो उसे पाठशाला से छुट्टी भी करनी पड़ती थी। अतः इन सब बातों से सिद्ध होता है कि वह बालक हमेशा परेशानियों से जूझता ही रहा है। जूझने की प्रवृत्ति लेखक के जीवन की हर घटना में सर्वत्र रूप से व्याप्त है।अपने जीवन में लेखक ने संघर्षों से जूझते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त किया। उसका लक्ष्य था-बड़े होकर एक शिक्षित व्यक्ति बनना, जो उसने कठिन परिस्थितियों में भी कर दिखाया। अतः 'जूझ' शीर्षक इस कहानी का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक है।

5.लेखक कविता किस ढंग से लिखता था और कविता बंदी के प्रति उसकी लगन कैसी थी?जूझ पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर:जब लेखक मराठी अध्यापक सौंदलगेकर से प्रभावित हुआ तो उसने खेतों में काम करते-करते कविताएँ लिखने अथवा रचना करने का निश्चय किया। भैंस चराते-चराते लेखक फसलों पर, जंगली फूलों पर तुकबंदी करता।

.6.श्री सौंदलगेकर के अध्यापन की उन विशेषताओं को रेखांकित करें जिन्होंने कविताओं के प्रति लेखक के मन में रुचि जगाई?

उत्तर: श्री सौंदलगेकर मराठी के अध्यापक थे। लेखक बताता है कि पढ़ाते समय वे स्वयं में रम जाते थे। उनका कविता पढ़ाने का अंदाज बहुत अच्छा था। सुरीला गला, छंद की बढ़िया लय-ताल और उसके साथ ही रसिकता थी उनके पास। पुरानी-नयी मराठी कविताओं के साथ-साथ उन्हें अनेक अंग्रेज़ी कविताएँ भी कंठस्थ थीं। पहले वे एकाध कविता गाकर सुनाते थे-फिर बैठे-बैठे अभिनय के साथ कविता का भाव ग्रहण कराते। उसी भाव की किसी अन्य की कविता भी सुनाकर दिखाते। वे स्वयं भी कविता लिखते थे। याद आई तो वे अपनी भी एकाध कविता यह सब सुनते हुए, अनुभव करते हुए लेखक को अपना भान ही नहीं रहता था। लेखक अपनी आँखें और प्राणों की सारी शक्ति लगाकर दम रोककर मास्टर के हाव-भाव, ध्वनि, गति आदि पर ध्यान देता था। उससे प्रभावित होकर लेखक भी तुकबंदी करने का प्रयास करता था। अध्यापक लेखक की तुकबंदी का संशोधन करते तथा उसे कविता के लय, छंद, अलंकार आदि के बारे में बताते। इन सब कारणों से लेखक के मन में कविताओं के प्रति रुचि जगी।

7. स्वयं कविता रच लेने का आत्मविश्वास लेखक के मन में कैसे पैदा हुआ?

उत्तर:कहानी में लेखक की पाठशाला में उसके मराठी के अध्यापक सौंदलगेकर थे। वह एक अच्छे कवि और वक्ता थे। उनका कविता पढ़ाने का तरीका अद्भुत था। लेखक जब भी उनके मुख से कविता सुनता तो उसे बेहद आनंद आता। धीरे-धीरे लेखक की कविता में रूचि बढ़ने लगी और उसके मन में स्वयं कविता रचने की भावना जागृत हुई।

लेखक नें पहले दूसरों की कविताओं को दूसरे रूप में गाना आरंभ किया। इस तरह उसके अंदर आत्मविश्वास जगा। जब वह कविता पाठन में निपुण हो जाता है, तब वह स्वयं की कविता रचना आरंभ करने लगता है। धीरे-धीरे अभ्यास करते करते वह एक अच्छा कवि बन जाता है और उसके मन के अंदर का डर निकल जाता है। लेखक को कविता रचने का आत्मविश्वास अपने मराठी के अध्यापक सौंदलगेकर की बातों से ही प्राप्त हुआ था।

8. जूझ कहानी प्रतिकूल परिस्थितियों से संघर्ष की प्रेरक कथा है – पुष्टि कीजिए।

उत्तर: "जूझ" उपन्यास आनंद यादव द्वारा रचित बहुचर्चित आत्मकथात्मक उपन्यास है I वे कथा नायक के संघर्षपूर्ण जीवन गाथा का वर्णन करते हैं I "जूझ" शब्द का अर्थ होता है संघर्ष। कथा नायक का जो चरित्र पाठ में दर्शाया गया है उसमें उनकी पाठशाला जाने की प्रबल इच्छा शक्ति और इच्छापूर्ति के लिए संघर्षगाथा है I संपूर्ण उपन्यास कथानायक के संघर्ष को रेखांकित करता है।

9. 'जूझ' कहानी आधुनिक किशोर-किशोरियों को किन जीवन-मूल्यों की प्रेरणा दे सकती है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:'जूझ' कहानी में किशोर युवक के संघर्ष को व्यक्त किया गया है। यह संघर्ष आधुनिक युवाओं को प्रेरणा दे सकता है जो निम्नलिखित हैं-

1. **दूरदर्शिता** – कहानी का नायक 'आनंदा' दूरदर्शी है। वह किशोर अवस्था में ही पढ़ाई के महत्त्व को समझ गया था। उसे पता था कि खेती में ज्यादा आमदनी नहीं है। वह नौकरी या व्यवसाय का महत्त्व समझ गया था।
2. **मेहनती** – आनंदा बेहद मेहनती था। वह खेत में कठोर मेहनत करता था तथा पढ़ाई में भी वह अव्वल था। यह प्रेरणा नए युवा ले सकते हैं।

3. **संघर्षशीलता –** आधुनिक किशोर-किशोरियाँ कम संघर्ष से सफलता अधिक चाहते हैं। आनंदा ने पढ़ाई, खेती, स्कूल, समाज हर जगह प्रतिकूल परिस्थितियाँ होते हुए भी सफलता पाई उसको संघर्ष प्रेरक है।
4. **अभ्यास –** आनंदा पढ़ाई में बेहद ध्यान देता था। कविता का अभ्यास वह भैंस की पीठ पर, पत्थर पर, खेतों में हर जगह करता था। गणित में भी वह बेहद होशियार था। नए विद्यार्थी अभ्यास का पाठ ले सकते हैं।

3-अतीत में दबे पाँव-ओम थानवी

1. टूटे-फूटे खंडहर, सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के साथ-साथ धड़कती जिंदगियों के अनछुए समयों के भी दस्तावेज़ होते हैं-इस कथन का भाव स्पष्ट कीजिए।
उत्तर: यह सच है कि टूटे-फूटे खंडहर, सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के साथ-साथ धड़कती जिंदगियों के अनछुए समयों का भी दस्तावेज होते हैं। मुअनजोदड़ो में प्राप्त खंडहर यह अहसास कराते हैं कि आज से पाँच हजार साल पहले कभी यहाँ एक सुनियोजित बस्ती थी। ये खंडहर उस समय की सभ्यता व्संस्कृति का परिचय कराते हैं। लेखक बताता है कि इस प्राचीन शहर के जो अब केवल खंडहर ही बचा है, उसके किसी भी मकान की दीवार पर पीठ टिकाकर सुस्ता सकते हैं, किसी घर की देहरी पर पाँव रखकर आप सहसा सहम सकते हैं, रसोई की खिड़की पर खड़े होकर उसकी गंध महसूस कर सकते हैं या शहर के किसी सुनसान मार्ग पर कान देकर बैलगाड़ी की रुन-झुन सुन सकते हैं। इस तरह जीवन के प्रति सजग दृष्टि होने पर पुरातात्विक खंडहर भी जीवन की धड़कन सुना देते हैं।ये एक प्रकार के दस्तावेज होते हैं जो इतिहास के साथ-साथ उस अनछुए समय को भी हमारे सामने उपस्थित कर देते हैं। जो कभी उन शहरों का हिस्सा रहे हैं।
2.मोहनजो-दड़ो के अजायबघर में रखी उन चीजों का वर्णन कीजिए जिससे सिन्धु घाटी सभ्यता की झलक दिखाई देती है?
उत्तर:मुहनजो-दड़ो की खुदाई में निकली पंजीकृत चीजों की संख्या पचास हजार से ज्यादा है। काला पड़ गया गेहूँ, तांबे आयर कांसे के बर्तन, मुहरें, वाद्य, विशाल मृद भांड, माप-तौल पत्थर, मिट्टी की बैलगाड़ी, खिलौने, पत्थरों के औजार, कुछ सोने के गहने, नर्तकी व दाढ़ी वाले नरेश की मूर्ति।

3. **'सिन्धु-सभ्यता की खूबी उसका सौंदर्य-बोध है जो राज-पोषित या धर्म-पोषित न होकर समाज-पोषित था।' ऐसा क्यों कहा गया है ?**
उत्तरः सिंधु घाटी के लोगों में कला या सुरुचि का महत्त्व ज्यादा था। वास्तुकला या नगर-नियोजन ही नहीं, धातु और पत्थर की मूर्तियाँ, मृद्-भांड, उन पर चित्रित मनुष्य, वनस्पति और पशु-पक्षियों की छवियाँ, सुनिर्मित मुहरें, उन पर बारीकी से उत्कीर्ण आकृतियाँ, खिलौने, केश-विन्यास, आभूषण और सबसे ऊपर सुघड़ अक्षरों का लिपिरूप सिंधु सभ्यता को तकनीक-सिद्धि से ज्यादा कला-सिद्धि ज़ाहिर करता है। अन्य सभ्यताओं में राजतंत्र और धर्मतंत्र की ताकत को दिखाते हुए भव्य महल, मंदिर ओर मूर्तियाँ बनाई गईं किंतु सिन्धु घाटी सभ्यता की खुदाई में छोटी-छोटी मूर्तियाँ, खिलौने, मृद-भांड, नावें मिली हैं। 'नरेश' के सर पर रखा मुकुट भी छोटा है। इसमें प्रभुत्व या दिखावे के तेवर कहीं दिखाई नहीं देते। यहाँ आम आदमी के काम आने वाली चीजों को सलीके से बनाया गया है।
अतः सिन्धु सभ्यता की खूबी उसका सौन्दर्यबोध है जो कि समाज पोषित है, राजपोषित या धर्मपोषित नहीं है।

4. सिंधु-सभ्यता साधन-संपन्न थी, पर उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था। कैसे?
उत्तरः सिन्धु सभ्यता,एक साधन-सम्पन्न सभ्यता थी परन्तु उसमें राजसत्ता या धर्मसत्ता के चिह्न नहीं मिलते। वहाँ की नगर योजना, वास्तुकला, मुहरों, ठप्पों, जल-व्यवस्था, साफ-सफाई और सामाजिक व्यवस्था आदि की एकरूपता द्वारा उनमें अनुशासन देखा जा सकता है। यहाँ पर सब कुछ आवश्यकताओं से ही जुड़ा हुआ है, भव्यता का प्रदर्शन कहीं नहीं मिलता। अन्य सभ्यताओं में राजतंत्र और धर्मतंत्र की ताकत को दिखाते हुए भव्य महल, मंदिर ओर मूर्तियाँ बनाई गईं किंतु सिन्धु घाटी सभ्यता की खुदाई में छोटी-छोटी मूर्तियाँ, खिलौने, मृद-भांड, नावें मिली हैं। 'नरेश' के सर पर रखा मुकुट भी छोटा है। इसमें प्रभुत्व या दिखावे के तेवर कहीं दिखाई नहीं देते।

5. पुरातत्त्व के किन चिह्नों के आधार पर आप यह कह सकते हैं कि "सिंधु-सभ्यता ताकत से शासित होने की अपेक्षा समझ से अनुशासित सभ्यता थी।"
उत्तरः हड़प्पा संस्कृति में न भव्य राजप्रसाद मिले हैं, न मंदिर। न राजाओं, महंतों की समाधियाँ। यहाँ के मूर्तिशिल्प छोटे हैं और औज़ार भी। मुअनजो-दड़ो 'नरेश' के सर पर रखा मुकुट भी छोटा है। दूसरी जगहों पर राजतंत्र या धर्मतंत्र की ताकत का प्रदर्शन करने वाले महल, उपासना-स्थल, मूर्तियाँ और पिरामिड आदि मिलते हैं। यहाँ आग आदमी के काम आने वाली चीजों को सलीके से बनाया गया है। यहाँ नगरयोजना, वास्तुकला, मुहरों, ठप्पों, जल-व्यवस्था, साफ-सफाई और सामाजिक व्यवस्था आदि में

एकरूपता देखने मिलती है। इन आधारों पर विद्वान यह मानते है कि 'सिंधु सभ्यता ताकत से शासित होने की अपेक्षा सगझ से अनुशासित सभ्यता थी।'

6. 'यह सच है कि यहाँ किसी आँगन की टूटी-फूटी सीढ़ियाँ अब आप को कहीं नहीं ले जातीं, वे आकाश की तरफ़ अधूरी रह जाती हैं। लेकिन उन अधूरे पायदानों पर खड़े होकर अनुभव किया जा सकता है कि आप दुनिया की छत पर हैं, वहाँ से आप इतिहास को नहीं उस के पार झाँक रहे हैं।' इस कथन के पीछे लेखक का क्या आशय है?

उत्तरः इस कथन से लेखक का आशय है कि इन टूटे-फूटे घरों की सीढ़ियों पर खड़े होकर आप विश्व की सभ्यता के दर्शन कर सकते हैं क्योंकि सिन्धु सभ्यता विश्व की महान सभ्यताओं में से एक है। सिन्धु सभ्यता आडंबररहित एवं अनुशासनप्रिय है। यहाँ के मकानों की सीढ़ियाँ उस कालखंड तथा उससे पूर्व का एहसास कराती हैं जब यह सभ्यता अपने चरम पर रही होगी। यह सभ्यता विश्व की प्राचीनतम सभ्यता है। खंडहरों से मिले अवशेषों और इन टूटे-फूटे घरों से मानवता के चिह्न और मानवजाति के क्रमिक विकास को भी देखा जा सकता है। इसकी नगर योजना अद्वितीय है। उस समय का ज्ञान, उसके द्वारा स्थापित गानदंड आज भी हमारे लिए अनुकरणीय हैं। इस प्रकार हम इन सीढ़ियों पर चढ़कर किसी इतिहास की ही खोज नहीं करना चाहते बल्कि सिन्धु सभ्यता के सभ्य मानवीय समाज को देखना चाहते हैं।

7.नदी, कुएँ, स्नानागार और बेजोड़ निकासी व्यवस्था को देखते हुए लेखक पाठकों से प्रश्न पूछता है कि क्या हम सिंधु घाटी सभ्यता को जल-संस्कृति कह सकते हैं? आपका जवाब लेखक के पक्ष में है या विपक्ष में? तर्क दें।

अथवा

'अतीत में दबे पाँव' पाठ में लेखक ने सिंधु घाटी सभ्यता को जल संस्कृति कहा है, इस तथ्य को प्रमाण सहित सिद्ध कीजिए।

उत्तरः लेखक ने सिंधु घाटी सभ्यता को जल सभ्यता इसीलिए कहा है क्योंकि मोहनजोदड़ो के पास से निकलकर बहती हुई सिंधु नदी स्नानागार शहरों में बेजोड़ जल निकास तथा कुँए की व्यवस्था सिंधु घाटी सभ्यता में थी। जल को मनुष्य के जीवन का आधार माना गया है। प्राचीन सभ्यताओं का विकास भी नदियों के किनारे ही हुआ है।आधुनिक युग में सबसे बड़ी समस्या 'जल-संकट' की पैदा हो चुकी है। इसी प्रकार जल की निकासी की समस्या से भी आज का युग जूझ रहा है। सिंधु सभ्यता के सामूहिक स्नान के लिए बने स्नानागार वास्तुकला के उदाहरण हैं।एक पाँत में आठ स्नानघर हैं और किसी एक का द्वार भी दूसरे के सामने नहीं खुलता।

कुंड के तल में और दीवारों पर ईंटों के बीच चूने और चिरोड़ी के गारे का उपयोग किया गया है, जिससे कुंड का पानी रिस न सके और बाहर का 'अशुद्ध' (गंदा) पानी कुंड में न आने पाए। यहाँ नगरों में सड़कों के साथ बनी नालियाँ भी पक्की ईंटों से ढकी हुई हैं।यहाँ पानी की निकासी का सर्वोत्तम प्रबंध है। सिंधु सभ्यता मेंनदी के महत्त्व के कारण जल की समुचित व्यवस्था के साथ-साथ कुएँ बनाए गए और कुंड भी बनाए गए, विशाल स्नानागार भी बने।जल निकासी की सुव्यवस्था को देखते हुए हम इसे 'जल-संस्कृति' कह सकते हैं।

8. कला की दृष्टि से हड़प्पा सभ्यता समृद्ध थी- पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए I

उत्तर: उनकी वास्तुकला वनगर नियोजन सुन्दर था।वह पत्थर व धातु की सुंदर मूर्तियाँ बनाते थे।उनके खिलौने व आभूषण सुन्दर थे।उनके मृदभांड (मिट्टी के बर्तन) सुन्दर थे जिनमें वनस्पतियों व पशु-पक्षियों के चित्र होते थे।उनकी मुहरें, लिपि व केश -विन्यास सुन्दर थे।उनकी काशीदाकारी व गुलकारी सुन्दर थी।इस प्रकार यह स्पष्ट है कि सिंधु सभ्यता कला संपन्न थी I

अभिव्यक्ति और माध्यम

3-विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन

महत्त्वपूर्ण बिन्दु:

विभिन्न माध्यम और उनके लिए लेखन:संचार के मुख्य माध्यम निम्नलिखित हैं और प्रत्येक के लिए लेखन की अपनी अलग आवश्यकताएँ और शैलियाँ हैं:

- प्रिंट माध्यम (मुद्रित माध्यम): इसमें समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, पुस्तकें आदि शामिल हैं।
- रेडियो (श्रव्य माध्यम): यह केवल सुनने पर आधारित माध्यम है।
- टेलीविजन (दृश्य-श्रव्य माध्यम): इसमें देखने और सुनने दोनों का महत्व होता है।
- इंटरनेट (डिजिटल माध्यम): इसमें वेबसाइटें, ब्लॉग, सोशल मीडिया, ऑनलाइन समाचार पोर्टल आदि शामिल हैं।

आइए, इनमें से प्रत्येक माध्यम के लिए लेखन की विशेषताओं को विस्तार से समझते हैं:

1. प्रिंट माध्यम (समाचार पत्र और पत्रिकाएँ):

- **विस्तार और गहराई:** समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में किसी विषय पर विस्तार से और गहराई से लिखने की संभावना होती है।
- **संरचना:** समाचार पत्रों में आमतौर पर उल्टा पिरामिड शैली (सबसे महत्त्वपूर्ण जानकारी पहले, फिर कम महत्त्वपूर्ण) का प्रयोग होता है। लेखों और फीचरों में विषय के अनुसार संरचना भिन्न हो सकती है।
- **भाषा:** भाषा औपचारिक और व्याकरण सम्मत होनी चाहिए। शब्दों का चयन सावधानीपूर्वक किया जाता है।
- **तथ्यों की सटीकता:** तथ्यों की सटीकता और विश्वसनीयता सर्वोपरि होती है।
- **शीर्षक और उपशीर्षक:** आकर्षक और सूचनात्मक शीर्षक और उपशीर्षक पाठकों का ध्यान आकर्षित करते हैं।
  उदाहरण: समाचार रिपोर्ट, संपादकीय, लेख, फीचर, साक्षात्कार आदि।

2. रेडियो (श्रव्य माध्यम):

- **श्रव्यता:** लेखन ऐसा होना चाहिए जो सुनने में स्पष्ट और सहज लगे। जटिल वाक्य और कठिन शब्दों से बचना चाहिए।
- **संक्षिप्तता:** रेडियो कार्यक्रमों की समय सीमा सीमित होती है, इसलिए लेखन संक्षिप्त और सारगर्भित होना चाहिए।
- **सरल भाषा:** भाषा सरल और आम बोलचाल की होनी चाहिए ताकि श्रोता आसानी से समझ सकें।
- **ध्वनि प्रभाव:** लेखन में ध्वनि प्रभावों (sound effects) और संगीत का उचित प्रयोग कहानी या जानकारी को अधिक प्रभावी बना सकता है।
- **वाचन शैली:** लेखक को यह ध्यान में रखना होता है कि उसके लिखे हुए को प्रस्तुत करने वाले की वाचन शैली कैसी होगी।
  उदाहरण: समाचार बुलेटिन, रेडियो नाटक, विज्ञापन, साक्षात्कार, टिप्पणी आदि।

3. टेलीविजन (दृश्य-श्रव्य माध्यम):

- **दृश्य प्रधानता:** टेलीविजन में दृश्य (visuals) महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। लेखन दृश्यों के अनुरूप होना चाहिए और उन्हें पूरक बनाना चाहिए।
- **संक्षिप्तता और प्रभाव:** स्क्रीन पर टेक्स्ट सीमित समय के लिए दिखता है, इसलिए भाषा संक्षिप्त, सीधी और प्रभावशाली होनी चाहिए।
- **संवाद:** टेलीविजन कार्यक्रमों में संवाद महत्वपूर्ण होते हैं और उन्हें स्वाभाविक और पात्रों के अनुकूल होना चाहिए।
- **ग्राफिक्स और एनिमेशन:** लेखन को ग्राफिक्स और एनिमेशन के साथ तालमेल बिठाना होता है।
  उदाहरण: समाचार बुलेटिन, धारावाहिक, फिल्म, विज्ञापन, डॉक्यूमेंट्री, टॉक शो आदि।

4. इंटरनेट (डिजिटल माध्यम):

- **बहुमाध्यम:** इंटरनेट पर टेक्स्ट के साथ चित्र, वीडियो, ऑडियो आदि का प्रयोग किया जा सकता है। लेखन को इन माध्यमों के साथ एकीकृत किया जा सकता है।
- **अन्तरक्रियाशीलता:** इंटरनेट पाठकों को टिप्पणी करने, प्रतिक्रिया देने और सामग्री साझा करने का अवसर प्रदान करता है। लेखन में इस पहलू को ध्यान में रखा जा सकता है।
- **अतिपरक:**लिंक के माध्यम से एक पृष्ठ से दूसरे पृष्ठ पर जाना संभव है। लेखन में प्रासंगिक लिंक्स का प्रयोग जानकारी को और अधिक विस्तृत बना सकता है।
- **खोज इंजन अनुकूलन:** वेबसाइटों और ऑनलाइन सामग्री को खोज इंजन के लिए अनुकूलित किया जाता है ताकि वे आसानी से खोजे जा सकें। लेखन में कीवर्ड का उचित प्रयोग महत्वपूर्ण होता है।
- **विभिन्न प्रारूप:** इंटरनेट पर लेख, ब्लॉग पोस्ट, सोशल मीडिया पोस्ट, ऑनलाइन समाचार, ईमेल आदि विभिन्न प्रारूपों में लेखन किया जाता है और प्रत्येक प्रारूप की अपनी विशेषताएँ होती हैं।

उदाहरण: वेबसाइट सामग्री, ब्लॉग पोस्ट, सोशल मीडिया अपडेट, ऑनलाइन समाचार लेख, ईमेल, विज्ञापन आदि।

विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन करते समय ध्यान रखने योग्य बातें:

- **लक्ष्य दर्शक:** प्रत्येक माध्यम के अपने दर्शक होते हैं। लेखन करते समय अपने लक्षित दर्शकों की रुचियों, आवश्यकताओं और समझ के स्तर को ध्यान में रखना चाहिए।
- **माध्यम की प्रकृति:** प्रत्येक माध्यम की अपनी सीमाएँ और संभावनाएँ होती हैं। लेखन को माध्यम की प्रकृति के अनुकूल होना चाहिए।
- **उद्देश्य:** लेखन का उद्देश्य स्पष्ट होना चाहिए - सूचना देना, मनोरंजन करना, प्रेरित करना या किसी विशेष कार्य के लिए प्रेरित करना।
- **भाषा और शैली:** भाषा और शैली माध्यम और दर्शकों के अनुसार बदलती रहती है।
- **प्रारूप:** प्रत्येक माध्यम में लेखन के अलग-अलग प्रारूप होते हैं। इन प्रारूपों की विशेषताओं को समझना महत्त्वपूर्ण है।

यह ध्यान रखना महत्त्वपूर्ण है कि विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन एक गतिशील क्षेत्र है और तकनीकी विकास के साथ इसमें लगातार बदलाव आ रहे हैं। एक कुशल लेखक को इन बदलावों के प्रति जागरूक रहना चाहिए और अपनी लेखन शैली को आवश्यकतानुसार अनुकूलित करना चाहिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. **रेडियो समाचार की बुनियादी आवश्यकताएँ क्या हैं?**
उत्तर: रेडियो समाचार की बुनियादी आवश्यकताएँ स्पष्ट और सीधी भाषा, संक्षिप्त वाक्य, प्रभावी ध्वनि प्रभाव और संगीत, तथा तत्काल श्रोताओं तक पहुँचने की क्षमता है।

प्रश्न 2.**टेलीविजन समाचार में दृश्य (विजुअल्स) का क्या महत्त्व है?**
उत्तर: टेलीविजन समाचार में दृश्य खबर को प्रमाणिकता और जीवंतता प्रदान करते हैं। वे दर्शकों को घटना स्थल का अनुभव कराते हैं और खबर को अधिक समझने योग्य बनाते हैं।

प्रश्न 3.**इंटरनेट पत्रकारिता के दो प्रमुख रूप कौन से हैं?**
उत्तर: इंटरनेट पत्रकारिता के दो प्रमुख रूप हैं: पारंपरिक समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के ऑनलाइन संस्करण, और स्वतंत्र रूप से संचालित न्यूज़ पोर्टल।

प्रश्न 4.**समाचार पत्रों में 'डेडलाइन' का क्या अर्थ है?**
उत्तर: समाचार पत्रों में 'डेडलाइन' वह अंतिम समय सीमा होती है जिसके भीतर किसी खबर या लेख को प्रकाशन के लिए तैयार करके संपादक तक पहुँचाना आवश्यक होता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न-1: रेडियो समाचार बुलेटिन तैयार करते समय किन प्रमुख बातों का ध्यान रखना चाहिए? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
रेडियो समाचार बुलेटिन तैयार करते समय निम्नलिखित प्रमुख बातों का ध्यान रखना आवश्यक है:

- **श्रव्यता:**रेडियो एक श्रव्य माध्यम है, इसलिए समाचार की भाषा सरल, स्पष्ट और सहज होनी चाहिए ताकि श्रोता उसे आसानी से समझ सकें। जटिल वाक्य और कठिन शब्दों से बचना चाहिए। उदाहरण के लिए, "अत्यधिक वर्षा के कारण जलभराव की स्थिति निर्मित हो गई है" के बजाय "भारी बारिश से कई जगह पानी भर गया है" कहना अधिक उपयुक्त होगा।
- **संक्षिप्तता:**रेडियो समाचारों के लिए समय सीमित होता है, इसलिए प्रत्येक खबर को संक्षिप्त और सारगर्भित रूप में प्रस्तुत करना चाहिए। अनावश्यक विवरणों से बचना चाहिए। मुख्य तथ्यों को प्राथमिकता देनी चाहिए।
- **सरल भाषा:**भाषा आम बोलचाल की होनी चाहिए ताकि सभी वर्ग के श्रोता उसे समझ सकें। तकनीकी या विशिष्ट शब्दावली का प्रयोग यथासंभव कम करना चाहिए।
- **ध्वनि प्रभाव:**आवश्यकतानुसार ध्वनि प्रभावों का प्रयोग समाचार को अधिक जीवंत और प्रभावी बना सकता है। उदाहरण के लिए, आग लगने की खबर में सायरन की आवाज या बाढ़ की खबर में पानी की आवाज का हल्का प्रयोग किया जा सकता है।
- **वाचन गति:**समाचार वाचक की गति सामान्य होनी चाहिए, न बहुत तेज और न बहुत धीमी, ताकि श्रोता सभी शब्दों को स्पष्ट रूप से सुन सकें और समझ सकें।
- **महत्त्वपूर्ण जानकारी पहले:**समाचार बुलेटिन में सबसे महत्त्वपूर्ण और ताजा खबरों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए और उन्हें शुरुआत में प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

प्रश्न 2: टेलीविजन समाचार और प्रिंट समाचार में प्रमुख अंतर क्या हैं?
उत्तर: टेलीविजन समाचार और प्रिंट समाचार दो अलग-अलग माध्यम हैं और इनमें कई प्रमुख अंतर हैं:

टेलीविजन समाचार	**प्रिंट समाचार**
दृश्य और श्रव्य	मुद्रित शब्द
अधिक तत्काल, घटनाओं का सीधा प्रसारण संभव	तैयारी और छपाई में समय लगता है.
संक्षिप्त, दृश्यों पर अधिक निर्भरता	विस्तृत जानकारी, गहराई से विश्लेषण संभव
भाषा सरल, सीधी, दृश्यों के अनुरूप	भाषाऔपचारिक, व्याकरण सम्मत, विस्तृत शब्दावली संभव
व्यापक, अनपढ़ लोग भी समझ सकते हैं	साक्षर लोगों तक सीमित
क्षणिक, दोबारा देखने के लिए रिकॉर्डिंग आवश्यक	स्थायी, संदर्भ के लिए सुरक्षित रखा जा सकता है

प्रश्न 3: टेलीविजन समाचार और प्रिंट समाचार की अपनी-अपनी खूबियाँ और सीमाएँ बताइए।
उत्तर: टेलीविजन समाचार और प्रिंट समाचार की निम्नलिखित खूबियाँ और सीमाएँ हैं-

- **टेलीविजन समाचार की खूबियाँ:** यह घटनाओं को जीवंत रूप में प्रस्तुत करता है, जिससे दर्शक भावनात्मक रूप से जुड़ते हैं। दृश्य होने के कारण खबर अधिक विश्वसनीय लगती है। तत्काल प्रसारण संभव है। इसकी पहुँच व्यापक है।
- **टेलीविजन समाचार की सीमाएँ:** समय की कमी के कारण खबरों का विश्लेषण सीमित होता है। दृश्यों की उपलब्धता खबर की प्रस्तुति को प्रभावित कर सकती है। यह निष्क्रिय देखने का माध्यम है।
- **प्रिंट समाचार की खूबियाँ:** यह खबरों का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है। पाठक अपनी गति से खबर पढ़ सकते हैं और महत्वपूर्ण हिस्सों को दोबारा देख सकते हैं। यह संदर्भ के लिए स्थायी होता है।
- **प्रिंट समाचार की सीमाएँ:** यह तत्काल उपलब्ध नहीं होता। यह केवल साक्षर लोगों तक सीमित है। यह दृश्य माध्यम नहीं है, इसलिए भावनात्मक जुड़ाव कम हो सकता है।

प्रश्न 4: इंटरनेट पत्रकारिता के विभिन्न स्वरूपों का उल्लेख करते हुए, इसके महत्व और चुनौतियों पर प्रकाश डालिए।
उत्तर: इंटरनेट पत्रकारिता के कई स्वरूप हैं, जिनमें प्रमुख हैं-

- **ऑनलाइन समाचार पोर्टल:** ये पारंपरिक समाचार पत्रों और टेलीविजन चैनलों के ऑनलाइन संस्करण होते हैं, जो टेक्स्ट, फोटो, वीडियो और ऑडियो के माध्यम से खबरें प्रस्तुत करते हैं (जैसे, आजतक.इन, बीबीसी हिंदी)।
- **ब्लॉग:** ये व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से बनाए गए ऑनलाइन डायरी या टिप्पणी मंच होते हैं, जहाँ किसी विशेष विषय पर विचार व्यक्त किए जाते हैं।
- **वेबसाइट आधारित पत्रकारिता:** विशेष विषयों या मुद्दों पर केंद्रित वेबसाइटें, जो गहन विश्लेषण और जानकारी प्रदान करती हैं।
- **सोशल मीडिया पत्रकारिता:** ट्विटर, फेसबुक जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का उपयोग खबरों को साझा करने, प्रतिक्रिया देने और प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त करने के लिए किया जाता है।

महत्त्व:

- **तत्काल सूचना:** इंटरनेट पर खबरें तुरंत उपलब्ध हो जाती हैं।
- **व्यापक पहुँच:** दुनिया भर के लोग आसानी से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।
- **बहुमाध्यमों का उपयोग:** टेक्स्ट, ऑडियो, वीडियो और ग्राफिक्स का संयोजन संभव है।
- **अन्तरक्रियाशीलता:** पाठक टिप्पणी कर सकते हैं और अपनी राय व्यक्त कर सकते हैं।
- **वैयक्तिकरण:** पाठक अपनी रुचि के अनुसार खबरें चुन सकते हैं।

चुनौतियाँ:

- **सूचनाओं की विश्वसनीयता:** गलत सूचनाओं और अफवाहों का तेजी से प्रसार।
- **पत्रकारिता के मूल्यों का हनन:** सनसनीखेज खबरें और पीत पत्रकारिता को बढ़ावा।
- **निजता का खतरा:** व्यक्तिगत जानकारी के दुरुपयोग की संभावना।
- **डिजिटल विभाजन:** इंटरनेट तक समान पहुँच का अभाव।
- **आर्थिक मॉडल:** गुणवत्तापूर्ण पत्रकारिता के लिए राजस्व उत्पन्न करने की चुनौती।

प्रश्न 5.समाचार लेखन के छह ककार कौन- कौन से हैं और इनका क्या महत्त्व है?

उत्तर: समाचार लेखन के छह ककार हैं: क्या, कौन, कब, कहाँ, क्यों, और कैसे। इनका महत्व यह है कि ये किसी भी घटना या समाचार की बुनियादी जानकारी प्रदान करते हैं और एक संपूर्ण और स्पष्ट खबर लिखने में सहायक होते हैं। इन सवालों के जवाब देने से पाठक को घटना की पूरी जानकारी मिलती है।

प्रश्न 6.इंटरनेट पत्रकारिता के विकास ने पारंपरिक पत्रकारिता को किस प्रकार प्रभावित किया है?

उत्तर: इंटरनेट पत्रकारिता के विकास ने पारंपरिक पत्रकारिता को कई तरह से प्रभावित किया है। इसने खबरों की गति और पहुँच को बढ़ाया है, जिससे तत्काल सूचना उपलब्ध हो पाती है। इसने बहुमाध्यमों (टेक्स्ट, ऑडियो, वीडियो) के उपयोग को बढ़ावा दिया है। साथ ही, इसने पाठकों को अपनी राय व्यक्त करने और प्रतिक्रिया देने का मंच प्रदान किया है, जिससे पत्रकारिता अधिक सहभागी बनी है। हालांकि, इसने खबरों की विश्वसनीयता और गुणवत्ता को लेकर चुनौतियाँ भी पेश की हैं।

प्रश्न 7.टेलीविजन समाचार लिखते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है?

उत्तर: टेलीविजन समाचार लिखते समय दृश्य (विजुअल्स) सबसे महत्वपूर्ण होते हैं, इसलिए लेखन दृश्यों के अनुरूप होना चाहिए। भाषा सरल और सीधी होनी चाहिए। बुलेट पॉइंट और कम शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। संवाददाता और एंकर के बीच समन्वय होना आवश्यक है। खबर की विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए तथ्यों की सटीकता पर ध्यान देना चाहिए।

प्रश्न 8. रेडियो और टेलीविजन समाचारों की भाषा-शैली में क्या अंतर होता है? दो अंतर लिखिए।

उत्तर: रेडियो और टेलीविजन समाचारों की भाषा-शैली में मुख्य अंतर यह है कि रेडियो विशुद्ध रूप से श्रव्य माध्यम है, जबकि टेलीविजन दृश्य और श्रव्य दोनों माध्यमों का संयोजन है। दो प्रमुख अंतर इस प्रकार हैं:

- **वाक्यों की संरचना:**रेडियो समाचारों में वाक्य छोटे, सीधे और आसानी से समझने योग्य होने चाहिए ताकि श्रोता सुनकर ही अर्थ ग्रहण कर सकें। टेलीविजन में दृश्य उपलब्ध होने के कारण वाक्य कुछ हद तक लम्बे और जटिल हो सकते हैं।
- **शब्दों का चयन:**रेडियो में ऐसे शब्दों का प्रयोग अधिक किया जाता है जो सुनने में आकर्षक और स्पष्ट हों। टेलीविजन में दृश्यों के साथ जानकारी प्रस्तुत की जाती है, इसलिए शब्दों का चुनाव दृश्यों के पूरक के रूप में किया जाता है।

-

प्रश्न 9. समाचार पत्रों में संपादकीय पृष्ठ का क्या महत्त्व है?
उत्तर: समाचार पत्रों में संपादकीय पृष्ठ अत्यंत महत्त्वपूर्ण होता है क्योंकि यह समाचार पत्र के विचारों, राय और विश्लेषण को प्रस्तुत करता है। इसका महत्त्व निम्नलिखित कारणों से है:

- **राय निर्माण:**यह महत्त्वपूर्ण सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक मुद्दों पर समाचार पत्र का दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जिससे पाठकों को अपनी राय बनाने में मदद मिलती है।
- **गहरी समझ:**संपादकीय लेख किसी घटना या मुद्दे की पृष्ठभूमि, कारणों और संभावित परिणामों का विश्लेषण करते हैं, जिससे पाठकों को विषय की गहरी समझ मिलती है।

प्रश्न 10. इंटरनेट पत्रकारिता के लाभ और हानियाँ बताइए।
उत्तर: इंटरनेट पत्रकारिता के कई लाभ और कुछ हानियाँ हैं:

लाभ:

- **तत्काल उपलब्धता:**समाचार तुरंत अपडेट होते हैं और दुनिया भर में आसानी से उपलब्ध होते हैं।
- **बहुमाध्यम:**पाठ, ऑडियो, वीडियो और इंटरेक्टिव ग्राफिक्स का उपयोग करके समाचारों को अधिक आकर्षक बनाया जा सकता है।

हानियाँ:

- **विश्वसनीयता का अभाव:**सूचनाओं की सत्यता को सत्यापित करना मुश्किल हो सकता है, जिससे फेक न्यूज़ का खतरा बढ़ता है।
- **ध्यान भंग:**विज्ञापनों और अन्य लिंक्स की उपस्थिति से पाठकों का ध्यान भटक सकता है।

प्रश्न 11. मुद्रित माध्यमों की तुलना में इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों की लोकप्रियता के दो कारण लिखिए।
उत्तर: मुद्रित माध्यमों की तुलना में इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों की लोकप्रियता के दो मुख्य कारण हैं:

- **तत्काल और गतिशील प्रकृति:**इलेक्ट्रॉनिक माध्यम समाचारों को तुरंत प्रसारित करते हैं और उनमें ऑडियो-विज़ुअल तत्वों का उपयोग किया जा सकता है, जो उन्हें अधिक जीवंत और आकर्षक बनाता है।
- **आसान उपलब्धता और पहुँच:**स्मार्टफोन और इंटरनेट की उपलब्धता के कारण इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से समाचार कहीं भी और कभी भी आसानी से प्राप्त किए जा सकते हैं।

प्रश्न 12. टेलीविजन के लिए समाचार लिखते समय दृश्यों का क्या महत्त्व होता है, उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
उत्तर: टेलीविजन के लिए समाचार लिखते समय दृश्यों का अत्यधिक महत्त्व होता है क्योंकि टेलीविजन एक दृश्य-श्रव्य माध्यम है। दृश्य समाचार की विश्वसनीयता और प्रभावशीलता को बढ़ाते हैं।

उदाहरण:यदि किसी दुर्घटना की खबर दिखाई जा रही है, तो घटनास्थल के वास्तविक दृश्य दिखाने से दर्शकों को घटना की गंभीरता का अंदाजा होता है। केवल मौखिक विवरण उतना प्रभावी नहीं होगा जितना कि क्षतिग्रस्त वाहनों या घायल लोगों के दृश्य दिखाना। दृश्यों से खबर अधिक विश्वसनीय और भावनात्मक रूप से जुड़ने वाली बनती है।

प्रश्न 13. इंटरनेट पर सूचनाओं की विश्वसनीयता को कैसे सुनिश्चित किया जा सकता है?
उत्तर: इंटरनेट पर सूचनाओं की विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं:

- **स्रोत की जाँच:**सूचना के स्रोत की प्रामाणिकता और विश्वसनीयता की जांच करें। प्रतिष्ठित समाचार वेबसाइटों, सरकारी स्रोतों और शैक्षणिक संस्थानों की जानकारी पर अधिक भरोसा करें।
- **लेखक की पहचान:**लेखक के बारे में जानकारी प्राप्त करें और देखें कि क्या वे विषय के विशेषज्ञ हैं।

- **तारीख और समय:**देखें कि सूचना कब प्रकाशित हुई थी। पुरानी जानकारी वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिक नहीं हो सकती है।
- **अन्य स्रोतों से तुलना:**एक ही जानकारी को कई अलग-अलग विश्वसनीय स्रोतों से सत्यापित करें।
- **पूर्वाग्रह की पहचान:**देखें कि क्या लेख में किसी विशेष दृष्टिकोण या पूर्वाग्रह को बढ़ावा दिया जा रहा है। निष्पक्ष जानकारी अधिक विश्वसनीय होती है।

4-पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया

सार:

अखबारों या पत्रिकाओं में समाचार, फीचर, विशेष रिपोर्ट, लेख और टिप्पणियाँ प्रकाशित होती हैं और इन सबको लिखने की अलग–अलग पद्धति है जिनका ज्ञान होना एक अच्छे पत्रकार या लेखक बनने के लिए आवश्यक है। जैसे – समाचार लेखन में उलटा पिरामिड–शैली का उपयोग किया जाता है। समाचार लिखते हुए छह ककारों का ध्यान रखना ज़रूरी है। समाचार लेखन के विपरीत फीचर लेखन में उलटा पिरामिड के बजाए फीचर की शुरुआत कहीं से भी हो सकती है। जबकि विशेष रिपोर्ट के लेखन में तथ्यों की खोज और विश्लेषण पर जोर दिया जाता है।

अच्छे लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य बातें –

1. जटिल व कठिन वाक्य की तुलना में सरल व छोटे वाक्य लिखने चाहिए।
2. आम बोलचाल में प्रयोग की जाने वाली भाषा और शब्दों का इस्तेमाल करना चाहिए।
3. गैर–ज़रूरी शब्दों के इस्तेमाल से बचना चाहिए।
4. शब्दों को प्रयोग उनके वास्तविक अर्थ को समझकर ही करना चाहिए।
5. यदि आप अच्छा लिखना चाहते हैं तो जाने–माने लेखकों की रचनाएँ ध्यान से पढ़नी चाहिए क्योंकि अच्छा लिखने के लिए अच्छा पढ़ना भी बहुत ज़रूरी है।
6. लेखन में विविधता लाने के लिए छोटे वाक्यों के साथ–साथ कुछ मध्यम आकार के और कुछ बड़े वाक्यों का प्रयोग कर सकते हैं। इसके साथ–साथ मुहावरों और लोकोक्तियों के प्रयोग से लेखन को आकर्षक बनाया जा सकता है।
7. लेखन में कसावट बहुत ज़रूरी है। इसके लिए अपने लिखे हुए को दोबारा ज़रूर पढ़ना चाहिए और उसमें हुई अशुद्धियों के साथ–साथ गैर–ज़रूरी चीजों को हटाने में संकोच नहीं करना चाहिए।
8. लिखते हुए यह ध्यान रखिए कि आपका उद्देश्य अपनी भावनाओं, विचारों और तथ्यों को व्यक्त करना है न कि दूसरे को प्रभावित करना।
9. एक अच्छे लेखक को पूरी दुनिया से लेकर अपने आसपास घटने वाली घटनाओं, समाज और पर्यावरण पर गहरी निगाह रखनी चाहिए अर्थात उसे इन सभी का गहराई से ज्ञान होना चाहिए।
10. एक अच्छे लेखक में तथ्यों को जुटाने और किसी विषय पर बारीकी से विचार करने का धैर्य होना चाहिए।

पत्रकारीय लेखन क्या है?

- अखबार पाठकों के लिए बाहरी दुनिया के ज्ञान का ऐसा जरिया है जो हर रोज़ सुबह देश–दुनिया और पास–पड़ोस की घटनाओं, समस्याओं, मुद्दों और विचारों से पाठकों को अवगत करवाते हैं।
- अखबार या अन्य समाचार माध्यमों में काम करने वाले पत्रकार अपने पाठकों, दर्शकों और श्रोताओं तक सूचनाएँ पहुँचाने के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का इस्तेमाल करते हैं। इसे ही पत्रकारीय लेखन कहते हैं और इसके कई रूप हैं।
- पत्रकार तीन तरह के होते हैं–पूर्णकालिक, अंशकालिक और फ्रीलांसर यानी स्वतंत्र।
- पूर्णकालिक पत्रकार किसी समाचार संगठन में काम करने वाला नियमित वेतन भोगी कर्मचारी होता है।
- अंशकालिक पत्रकार (स्ट्रिंगर) किसी समाचार संगठन के लिए एक निश्चित मानदेय पर काम करने वाला पत्रकार है।
- फ्रीलांसर पत्रकार का संबंध किसी खास अखबार से नहीं होता है बल्कि वह भुगतान के आधार पर अलग–अलग अखबारों के लिए लिखता है।
- ऐसे में, यह समझना बहुत ज़रूरी है कि पत्रकारीय लेखन का संबंध और दायरा समसामयिक और वास्तविक घटनाओं, समस्याओं और मुद्दों से है।

समाचार कैसे लिखा जाता है?

पत्रकारीय लेखन का सबसे जाना–पहचाना रूप समाचार लेखन है। आमतौर पर अखबारों में समाचार पूर्णकालिक और अंशकालिक पत्रकार लिखते हैं, जिन्हें संवाददाता या रिपोर्टर भी कहते हैं। अखबारों में प्रकाशित अधिकांश समाचार एक खास शैली में लिखे जाते हैं। इन समाचारों में किसी भी घटना, समस्या या विचार के सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य, सूचना या जानकारी को सबसे पहले पैराग्राफ में लिखा गया है। उसके बाद के पैराग्राफ में उससे कम महत्त्वपूर्ण सूचना या तथ्य की जानकारी दी गई है। यह प्रक्रिया तब तक जारी रहती है जब तक समाचार खत्म नहीं हो जाता।

उलटा पिरामिड–शैली

- समाचार लेखन को उलटा पिरामिड–शैली (इंवर्टेड पिरामिड स्टाइल) के नाम से जाना जाता है।
- यह समाचार लेखन की सबसे लोकप्रिय, उपयोगी और बुनियादी शैली है।
- यह शैली कहानी या कथा लेखन की शैली के ठीक उलटी है जिसमें क्लाइमेक्स बिलकुल आखिर में आता है।
- इसे उलटा पिरामिड इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य या सूचना 'यानी क्लाइमेक्स' पिरामिड के सबसे निचले हिस्से में नहीं होती बल्कि इस शैली में पिरामिड को उलट दिया जाता है।

समाचार लेखन और छह ककार

- किसी समाचार को लिखते हुए मुख्यतः छह सवालों का जवाब देने की कोशिश की जाती है क्या हुआ, किसके साथ हुआ, कहाँ हुआ, कब हुआ, कैसे और क्यों हुआ?
- समाचार के मुखड़े (इंट्रो) यानी पहले पैराग्राफ या शुरुआती दो–तीन पंक्तियों में आमतौर पर तीन या चार ककारों को आधार बनाकर खबर लिखी जाती है। ये चार ककार हैं–क्या, कौन, कब और कहाँ?
- इसके बाद समाचार की बॉडी में और समापन के पहले बाकी दो ककारों–कैसे और क्यों–का जवाब दिया जाता है।इस तरह छह ककारों के आधार पर समाचार तैयार होता है।

समाचार का इंट्रो – मास्को, 23 फरवरी (भाषा)। उत्तर पश्चिमी मास्को के बाओमांस्की बाजार में गुरुवार की शाम छत ढहने से 4 लोगों की मौत हो गई और 29 घायल हो गए। सौ से अधिक लोगों के अब भी मलबे में फँसे होने की आशंका है। घायलों को अस्पताल में भरती करा दिया गया है।

(यहाँ चार ककारों का उत्तर दिया गया है जैसे –
क्या – 4 मरे 29 घायल
कौन – आम नागरिक
कब – गुरुवार की शाम
कहाँ – उत्तर पश्चिम मास्को का बाओमांस्की बाजार)

समाचार की बॉडी – प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक पहले तो बाओमांस्की भूमिगत बाजार की गुंबदनुमा विशालकाय छत ढही और उसके बाद छत को संभालने वाले खंभे एक–एक कर गिरने लगे। शहर में मेयर ने इस दुर्घटना के पीछे किसी आतंकवादी संगठन का हाथ होने की बात से साफ इंकार किया है। प्रारंभिक जाँच से पता चला है कि पिछले दिनों हुए भारी हिमपात की वजह से इस 30 साल पुरानी इमारत की छत ढही है।0

(यहाँ अंतिम दो कारकों के उत्तर दिए गए हैं जैसे –
कैसे – छत ढहने से, आतंकवादी घटना नहीं
क्यों – छत पर बरफ जमने से)

फीचर क्या है?

अखबारों में समाचारों के अलावा भी अन्य कई तरह का पत्रकारीय लेखन छपता है। इनमें फीचर प्रमुख है। फीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है जिसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देने, शिक्षित करने के साथ मुख्य रूप से उनका मनोरंजन करना होता है।

फीचर लेखन के महत्त्वपूर्ण तथ्य-

- फीचर समाचार की तरह पाठकों को तात्कालिक घटनाक्रम से अवगत नहीं कराता।

- फीचर लेखन की शैली भी समाचार लेखन की शैली से अलग होती है।
- समाचार लेखन में वस्तुनिष्ठता और तथ्यों की शुद्धता पर जोर दिया जाता है यानी समाचार लिखते हुए रिपोर्टर उसमें अपने विचार नहीं डाल सकता जबकि फीचर में लेखक के पास अपनी राय या दृष्टिकोण और भावनाएँ जाहिर करने का अवसर होता है।
- फीचर लेखन में उलटा पिरामिड–शैली का प्रयोग नहीं होता यानी फीचर लेखन का कोई एक तय ढाँचा या फार्मूला नहीं होता है।
- फीचर लेखन की शैली काफी हद तक कथात्मक शैली की तरह है।
- फीचर लेखन की भाषा समाचारों के विपरीत सरल, रूपात्मक, आकर्षक और मन को छूनेवाली होती है।
- फीचर में समाचारों की तरह शब्दों की कोई अधिकतम सीमा नहीं होती।
- फीचर आमतौर पर समाचार रिपोर्ट से बड़े होते हैं। अखबारों और पत्रिकाओं में 250 शब्दों से लेकर 2000 शब्दों तक के फीचर छपते हैं।
- एक अच्छे और रोचक फीचर के साथ फोटो, रेखांकन, ग्राफ़िक्स आदि का होना ज़रूरी है।
- फीचर का विषय कुछ भी हो सकता है। हलके–फुलके विषयों से लेकर गंभीर विषयों और मुद्दों पर भी फीचर लिखा जा सकता है।
- कुछ समाचारों को फीचर शैली में भी लिखा जाता है। लेकिन हर समाचार को फीचर शैली में नहीं लिखा जा सकता है।

फीचर कैसे लिखें?

फीचर लिखते हुए कुछ बातों का ध्यान रखना बहुत ज़रूरी है।

- फीचर को सजीव बनाने के लिए उसमें उस विषय से जुड़े लोगों यानी पात्रों की मौजूदगी ज़रूरी है।
- पात्रों के माध्यम से उस विषय के विभिन्न पहलुओं को सामने लाने की कोशिश कीजिए।
- कहानी को बताने का अंदाज़ ऐसा हो कि आपके पाठक यह महसूस करें कि वे खुद देख और सुन रहे हैं।
- फीचर को मनोरंजक होने के साथ–साथ सूचनात्मक होना चाहिए।
- फीचर कोई नीरस शोध रिपोर्ट नहीं है। वह बड़ी घटनाओं, कार्यक्रमों और आयोजनों की सूखी और बेजान रिपोर्ट भी नहीं है।
- फीचर आमतौर पर तथ्यों, सूचनाओं और विचारों पर आधारित कथात्मक विवरण और विश्लेषण होता है।
- फीचर की कोई न कोई थीम होनी चाहिए। उस स्तंभ (कॉलम) लेखन

स्तंभ लेखन:

- स्तंभ लेखन विचारपरक लेखन का एक प्रमुख रूप है। कुछ महत्त्वपूर्ण लेखक अपने खास वैचारिक रुझान के लिए जाने जाते हैं। उनकी अपनी एक लेखन–शैली भी विकसित हो जाती है। ऐसे लेखकों की लोकप्रियता को देखकर अखबार उन्हें एक नियमित स्तंभ (कॉलम) लिखने का जिम्मा दे देते हैं। स्तंभ (कॉलम) का विषय चुनने और उसमें अपने विचार व्यक्त करने की स्तंभ (कॉलम) लेखक को पूरी छूट होती है। स्तंभ (कॉलम) में लेखक के विचार अभिव्यक्त होते हैं। यही कारण है कि स्तंभ (कॉलम) अपने लेखकों के नाम पर जाने और पसंद किए जाते हैं। कुछ स्तंभ (कॉलम) इतने लोकप्रिय होते हैं कि अखबार उनके कारण भी पहचाने जाते हैं लेकिन नए लेखकों को स्तंभ (कॉलम) लेखन का मौका नहीं मिलता है।

संपादक के नाम पत्र

अखबारों के संपादकीय पृष्ठ पर और पत्रिकाओं की शुरुआत में संपादक के नाम पाठकों के पत्र भी प्रकाशित होते हैं। सभी अखबारों में यह एक स्थायी स्तंभ होता है। इस स्तंभ के ज़रिये अखबार के पाठक न सिर्फ विभिन्न मुद्दों पर अपनी राय व्यक्त करते हैं बल्कि जन समस्याओं को भी उठाते हैं। एक तरह से यह स्तंभ जनमत को प्रतिबिंबित करता है। ज़रूरी नहीं कि अखबार पाठकों द्वारा व्यक्त किए गए विचारों से सहमत हो। यह स्तंभ नए लेखकों के लिए लेखन की शुरुआत करने और उन्हें हाथ माँजने का भी अच्छा अवसर देता है।

लेख

- सभी अखबार संपादकीय पृष्ठ पर समसामयिक मुद्दों पर वरिष्ठ पत्रकारों और उन विषयों के विशेषज्ञों के लेख प्रकाशित करते हैं।
- लेखों में किसी विषय या मुद्दे पर विस्तार से चर्चा की जाती है।
- लेख में लेखक के विचारों को प्रमुखता दी जाती है।

- लेख लिखने के लिए पर्याप्त तैयारी ज़रूरी है। इसके लिए उस विषय से जुड़े सभी तथ्यों और सूचनाओं के अलावा पृष्ठभूमि सामग्री भी जुटानी पड़ती है।
- लेख की कोई एक निश्चित लेखन शैली नहीं होती और हर लेखक की अपनी शैली होती है।
- लेख लिखने की शुरुआत उन विषयों के साथ करनी चाहिए जिस पर आपकी अच्छी पकड़ और जानकारी हो।
- लेख का भी एक प्रारंभ, मध्य और अंत होता है।

साक्षात्कार/इंटरव्यू

समाचार माध्यमों में साक्षात्कार का बहुत महत्त्व है। पत्रकार एक तरह से साक्षात्कार के ज़रिये ही समाचार, फीचर, विशेष रिपोर्ट और अन्य कई तरह के पत्रकारीय लेखन के लिए कच्चा माल इकट्ठा करते हैं।

पत्रकारीय साक्षात्कार और सामान्य बातचीत में यह फर्क होता है कि साक्षात्कार में एक पत्रकार किसी अन्य व्यक्ति से तथ्य, उसकी राय और भावनाएँ जानने के लिए सवाल पूछता है।

साक्षात्कार से सम्बंधित कुछ महत्त्वपूर्ण बातें –

- साक्षात्कार का एक स्पष्ट मकसद और ढाँचा होता है।
- एक सफल साक्षात्कार के लिए आपके पास न सिर्फ ज्ञान होना चाहिए बल्कि आपमें संवेदनशीलता, कूटनीति, धैर्य और साहस जैसे गुण भी होने चाहिए।
- एक अच्छे और सफल साक्षात्कार के लिए यह ज़रूरी है कि आप जिस विषय पर और जिस व्यक्ति के साथ साक्षात्कार करने जा रहे हैं, उसके बारे में आपके पास पर्याप्त जानकारी हो।
- आप साक्षात्कार से क्या निकालना चाहते हैं, इसके बारे में स्पष्ट रहना बहुत ज़रूरी है।
- आपको वे सवाल पूछने चाहिए जो किसी अखबार के एक आम पाठक के मन में हो सकते हैं।
- साक्षात्कार को अगर रिकार्ड करना संभव हो तो बेहतर है लेकिन अगर ऐसा संभव न हो तो साक्षात्कार के दौरान आप नोट्स लेते रहें।

लघुत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न-1. पत्रकारीय लेखन क्या है?

उत्तर - अखबार या अन्य समाचार माध्यमों में काम करने वाले पत्रकार अपने पाठकों, दर्शकों और श्रोताओं तक सूचनाएँ पहुँचाने के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का इस्तेमाल करते हैं। इसे ही पत्रकारीय लेखन कहते हैं।

प्रश्न-2. पत्रकार कितनी तरह के होते हैं?

उत्तर - पत्रकार तीन तरह के होते हैं- 1.पूर्णकालिक, 2. अंशकालिक 3. फ्रीलांसर यानी स्वतंत्र

प्रश्न-3. पूर्णकालिक पत्रकार किसे कहते हैं?

उत्तर - पूर्णकालिक पत्रकार किसी समाचार संगठन में काम करनेवाला नियमित वेतनभोगी पत्रकार होता है।

प्रश्न-4. अंशकालिक पत्रकार किसे कहते हैं?

उत्तर- अंशकालिक पत्रकार (स्ट्रिंगर) किसी समाचार संगठन के लिए एक निश्चित मानदेय पर काम करनेवाला पत्रकार है।

प्रश्न-5. फ्रीलांसर पत्रकार किसे कहते हैं?

उत्तर- फ्रीलांसर पत्रकार का संबंध किसी खास अखबार से नहीं होता है बल्कि वह भुगतान के आधार पर अलग-अलग अखबारों के लिए लिखता है।

प्रश्न-6. पत्रकारीय लेखन और सृजनात्मक लेखन में क्या अंतर है?

उत्तर-पत्रकारीय लेखन और सृजनात्मक लेखन में निम्नलिखित अंतर हैं-

पत्रकारीय लेखन	सृजनात्मक लेखन

पत्रकारीय लेखन का संबंध और दायरा समसामयिक और वास्तविक घटनाओं, समस्याओं और मुद्दों से है।	सृजनात्मक लेखन का सबंध और दायरा अत्यधिक विस्तृत है। इसमें इतिहास, संस्कृति और परंपरा की झलक होती है।
इस लेखन का रिश्ता तथ्यों से है न कि कल्पना से।	इस लेखन में कल्पना को भी स्थान दिया जाता है।
यह अनिवार्य रूप से तात्कालिकता और अपने पाठकों की रुचियों और जरूरतों को ध्यान में रखकर किया जाने वाला लेखन है।	साहित्यिक रचनात्मक लेखन में लेखक को काफ़ी छूट होती है।

प्रश्न-7. संवाददाता या रिपोर्टर किसे कहते हैं?
उत्तर- आमतौर पर अखबारों में समाचार पूर्णकालिक और अंशकालिक पत्रकार लिखते हैं, जिन्हें संवाददाता या रिपोर्टर भी कहते हैं।

प्रश्न-8. उल्टा पिरामिड शैली के कितने भाग होते हैं?
उत्तर- उल्टा पिरामिड शैली के तीन भाग होते हैं इंट्रो या मुखड़ा, बॉडी, समापन।

प्रश्न-9. उल्टा पिरामिड शैली में इंट्रो या मुखड़ा किसे कहा जाता है?
उत्तर-समाचारों में किसी भी घटना, समस्या या विचार के सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य, सूचना या जानकारी को सबसे पहले पैराग्राफ़ में लिखा गया है। इसे ही इंट्रो या मुखड़ा कहा जाता है।

प्रश्न-10. उल्टा पिरामिड शैली में बॉडी किसे कहा जाता है?
उत्तर - उल्टा पिरामिड शैली में इंट्रो या मुखड़ा के बाद घटते क्रम में ख़बर का विस्तृत ब्यौरा दिया जाता है। इसे ही उल्टा पिरामिड शैली का बॉडी भाग कहा जाता है।

प्रश्न-11. उल्टा पिरामिड शैली में समापन भाग के विषय में बताइए?
उत्तर- यह समाचार का सबसे कम महत्वपूर्ण भाग होता है। इसे सबसे अंत में बताया जाता है। इसके अंतर्गत तथ्य या स्रोत का विवरण दिया जाता है। अधिक महत्वपूर्ण न होने पर अथवा स्पेस न होने पर इसे काटकर छोटा भी किया जा सकता है।

प्रश्न-12. उल्टा पिरामिड शैली का विकास किस प्रकार हुआ?
उत्तर - इस शैली का प्रयोग 19वीं सदी के मध्य से ही शुरू हो गया था लेकिन इसका विकास अमेरिका में गृहयुद्ध के दौरान हुआ। उस समय संवाददाताओं को अपनी खबरें टेलीग्राफ़ संदेशों के जरिये भेजनी पड़ती थीं जिसकी सेवाएँ महँगी, अनियमित और दुर्लभ थीं। कई बार तकनीकी कारणों से सेवा ठप्प हो जाती थी। इसलिए संवाददाताओं को किसी घटना की खबर कहानी की तरह विस्तार से लिखने के बजाय संक्षेप में देनी होती थी। इस तरह उल्टा पिरामिड-शैली का विकास हुआ और धीरे-धीरे लेखन और संपादन की सुविधा के कारण यह शैली समाचार लेखन की मानक (स्टैंडर्ड) शैली बन गई।

प्रश्न–13. किसी घटना, समस्या या विचार से संबंधित खबर लिखते हुए किन छह ककारों को ही ध्यान में रखा जाता है?
उत्तर - किसी समाचार को लिखते हुए मुख्यतः छह सवालों का जवाब देने की कोशिश की जाती है क्या हुआ, किसके साथ हुआ, कहाँ हुआ, कब हुआ, कैसे और क्यों हुआ? इसको छह ककारों-क्या, किसके (या कौन), कहाँ, कब, क्यों और कैसे के रूप में भी जाना जाता है।

प्रश्न-14. किन ककारों के द्वारा खबर के विवरणात्मक, व्याख्यात्मक और विश्लेषणात्मक पहलू पर जोर दिया जाता है?
उत्तर - कैसे और क्यों के द्वारा खबर के विवरणात्मक, व्याख्यात्मक और विश्लेषणात्मक पहलू पर जोर दिया जाता है।

प्रश्न-15. फीचर क्या है?
उत्तर - फ़ीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है जिसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देने, शिक्षित करने के साथ मुख्य रूप से उनका मनोरंजन करना होता है।

प्रश्न-16. विशेष रिपोर्ट किसे कहते हैं?
उत्तर - अखबारों और पत्रिकाओं में सामान्य समाचारों के अलावा गहरी छानबीन, विश्लेषण और व्याख्या के आधार पर रिपोर्ट भी प्रकाशित होती हैं।

प्रश्न-17. विशेष रिपोर्ट कितने प्रकार की होती है?
उत्तर विशेष रिपोर्ट के कई प्रकार होते हैं जैसे खोजी रिपोर्ट (इंवेस्टिगेटिव रिपोर्ट), इन-डेप्थ रिपोर्ट, विश्लेषणात्मक रिपोर्ट, विवरणात्मक रिपोर्ट, फीचर रिपोर्ट आदि।

प्रश्न-18. खोजी रिपोर्ट क्या होती है?
उत्तर - खोजी रिपोर्ट में रिपोर्टर मौलिक शोध और छानबीन के जरिये ऐसी सूचनाएँ या तथ्य सामने लाता है जो सार्वजनिक तौर पर पहले से उपलब्ध नहीं थीं। खोजी रिपोर्ट का इस्तेमाल आमतौर पर भ्रष्टाचार, अनियमितताओं और गड़बड़ियों को उजागर करने के लिए किया जाता है।

प्रश्न-19. इन-डेप्थ रिपोर्ट क्या होती है?
उत्तर - इन-डेप्थ रिपोर्ट में सार्वजनिक तौर पर उपलब्ध तथ्यों, सूचनाओं और आँकड़ों की गहरी छानबीन की जाती है और उसके आधार पर किसी घटना, समस्या या मुद्दे से जुड़े महत्त्वपूर्ण पहलुओं को सामने लाया जाता है।

प्रश्न-20. विश्लेषणात्मक रिपोर्ट किसे कहते हैं?
उत्तर - विश्लेषणात्मक रिपोर्ट में जोर किसी घटना या समस्या से जुड़े तथ्यों के विश्लेषण और व्याख्या पर होता है।
प्रश्न-21. विवरणात्मक रिपोर्ट किसे कहते हैं?
उत्तर - विवरणात्मक रिपोर्ट में किसी घटना या समस्या के विस्तृत और बारीक विवरण को प्रस्तुत करने की कोशिश की जाती है।

प्रश्न-22. फीचर रिपोर्ट किसे कहते है?
उत्तर - जो रिपोर्ट उलटा पिरामिड शैली में न लिखकर कथात्मक शैली में लिखी जाती है उसे फीचर रिपोर्ट कहते हैं।

प्रश्न-23. विचारपरक लेखन किसे कहते हैं?
उत्तर - अखबारों में समाचार और फ़ीचर के अलावा विचारपरक सामग्री का भी प्रकाशन होता है। कई अखबारों की पहचान उनके वैचारिक रुझान से होती है। एक तरह से अखबारों में प्रकाशित होने वाले विचारपूर्ण लेखन से उस अखबार की छवि बनती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न-1. संपादकीय किसे कहा जाता है?
उत्तर- संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाले संपादकीय को उस अखबार की अपनी आवाज माना जाता है। संपादकीय के जरिये अखबार किसी घटना, समस्या या मुद्दे के प्रति अपनी राय प्रकट करते हैं। संपादकीय किसी व्यक्ति विशेष का विचार नहीं होता इसलिए उसे किसी के नाम के साथ नहीं छापा जाता। संपादकीय लिखने का दायित्व उस अखबार में काम करने वाले संपादक और उनके सहयोगियों पर होता है। आमतौर पर अखबारों में सहायक संपादक, संपादकीय लिखते हैं। कोई बाहर का लेखक या पत्रकार संपादकीय नहीं लिख सकता है।

प्रश्न-2. स्तंभ लेखन से आप क्या समझते हैं?
उत्तर- कुछ महत्त्वपूर्ण लेखक अपने खास वैचारिक रुझान के लिए जाने जाते हैं। उनकी अपनी एक लेखन-शैली भी विकसित हो जाती है। ऐसे लेखकों की लोकप्रियता को देखकर अखबार उन्हें एक नियमित स्तंभलिखने का जिम्मा दे देते हैं। स्तंभ का विषय चुनने और उसमें अपने विचार व्यक्त करने की स्तंभ लेखक को पूरी छूट होती है। स्तंभ में लेखक के विचार अभिव्यक्त

होते हैं। यही कारण है कि स्तंभ अपने लेखकों के नाम पर जाने और पसंद किए जाते हैं। कुछ स्तंभ इतने लोकप्रिय होते हैं कि अखबार उनके कारण भी पहचाने जाते हैं। लेकिन नए लेखकों को स्तंभ लेखन का मौका नहीं मिलता है।

प्रश्न-3. लेख किसे कहते हैं?
उत्तर - सभी अखबार संपादकीय पृष्ठ पर समसामयिक मुद्दों पर वरिष्ठ पत्रकारों और उन विषयों के विशेषज्ञों के लेख प्रकाशित करते हैं। इन लेखों में किसी विषय या मुद्दे पर विस्तार से चर्चा की जाती है। लेख विशेष रिपोर्ट और फ़ीचर से इस मामले में अलग है कि उसमें लेखक के विचारों को प्रमुखता दी जाती है। लेकिन ये विचार तथ्यों और सूचनाओं पर आधारित होते हैं और लेखक उन तथ्यों और सूचनाओं के विश्लेषण और अपने तर्कों के जरिये अपनी राय प्रस्तुत करता है। लेख लिखने के लिए पर्याप्त तैयारी जरूरी है। इसके लिए उस विषय से जुड़े सभी तथ्यों और सूचनाओं के अलावा पृष्ठभूमि सामग्री भी जुटानी पड़ती है। यह भी देखना चाहिए कि उस विषय पर दूसरे लेखकों और पत्रकारों के क्या विचार हैं?

प्रश्न-4. साक्षात्कार/इंटरव्यू किसे कहते हैं?
उत्तर - समाचार माध्यमों में साक्षात्कार का बहुत महत्त्व है। पत्रकार एक तरह से साक्षात्कार के जरिये ही समाचार, फ़ीचर, विशेष रिपोर्ट और अन्य कई तरह के पत्रकारीय लेखन के लिए कच्चा माल इकट्ठा करते हैं। साक्षात्कार को लिखते समय दो में से कोई भी एक तरीका अपना सकते हैं। साक्षात्कार को सवाल और फिर जवाब के रूप में लिख सकते हैं या फिर उसे एक आलेख की तरह भी लिख सकते हैं।

प्रश्न-5. अच्छे लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य कौन-कौन सी बातें होती हैं?
उत्तर - अच्छे लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य बातें-
1. छोटे वाक्य लिखें। जटिल वाक्य की तुलना में सरल वाक्य संरचना को वरीयता दें।
2. आम बोलचाल की भाषा और शब्दों का इस्तेमाल करें। गैर-जरूरी शब्दों के इस्तेमाल से बचें। शब्दों को उनके वास्तविक अर्थ समझकर ही प्रयोग करें।
3. लेखन में विविधता लाने के लिए छोटे वाक्यों के साथ-साथ कुछ मध्यम आकार के और कुछ बड़े वाक्यों का प्रयोग कर सकते हैं।
4. इसके साथ-साथ मुहावरों और लोकोक्तियों के प्रयोग से लेखन में रंग भरने की कोशिश कीजिए।
5. लिखते हुए यह ध्यान रखिए कि आपका उद्देश्य अपनी भावनाओं, विचारों और तथ्यों को व्यक्त करना है न कि दूसरे को प्रभावित करना।
6. एक अच्छे लेखक को पूरी दुनिया से लेकर अपने आसपास घटने वाली घटनाओं, समाज और पर्यावरण पर गहरी निगाह रखनी चाहिए और उन्हें इस तरह से देखना चाहिए कि वे अपने लेखन के लिए उससे विचारबिदु निकाल सकें।

प्रश्न-6. समाचार और फीचर में अंतर बताइए?

समाचार	फीचर
समाचार का कार्य पाठकों को सूचना देना होता है।	फीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है।
इसका उद्देश्य पाठकों को ताज़ी घटना से अवगत करना होता है।	इसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देना, शिक्षित करना और मनोरंजन करना होता है।
इसमें शब्द-सीमा होती है।	इसमें शब्द-सीमा नहीं होती। अच्छे फीचर में 250 से लेकर 2000 तक शब्द हो सकते हैं।
इसमें लेखक के विचारों और कल्पना के लिए कोई स्थान नहीं होता।	इसमें लेखक की कल्पना और विचारों को स्थान मिलता है।
इसमें फोटो का होना अनिवार्य नहीं है।	अच्छे फीचर के साथ फोटो या ग्राफिक्स होना अनिवार्य है।
इसमें उलटा पिरामिड शैली का प्रयोग किया जाता है।	इसमें उलटा पिरामिड शैली का प्रयोग नहीं होता।
इसकी भाषा में सपाट बयानी होती है।	फ़ीचर लेखन की भाषा समाचारों के विपरीत सरल, रूपात्मक, आकर्षक और मन को छूनेवाली होती है।

प्रश्न-7. विशेष रिपोर्ट कैसे तैयार की जाती है?
उत्तर- विशेष रिपोर्ट तैयार करने के आवश्यक बिन्दु निम्नलिखित हैं-
1. विशेष रिपोर्टों को तैयार करने के लिए किसी घटना, समस्या या मुद्दे की गहरी छानबीन की जाती है।
2. उससे संबंधित महत्त्वपूर्ण तथ्यों को इकट्ठा किया जाता है।
3. तथ्यों के विश्लेषण के जरिये उसके नतीजे, प्रभाव और कारणों को स्पष्ट किया जाता है।
4. आमतौर पर विभिन्न प्रकार की विशेष रिपोर्टों को समाचार लेखन की उलटा पिरामिड-शैली में ही लिखा जाता है लेकिन कई बार ऐसी रिपोर्टों को फ़ीचर शैली में भी लिखा जाता है।
5. चूँकि ऐसी रिपोर्ट सामान्य समाचारों की तुलना में बड़ी और विस्तृत होती हैं, इसलिए पाठकों की रुचि बनाए रखने के लिए कई बार उलटा पिरामिड और फ़ीचर दोनों ही शैलियों को मिलाकर इस्तेमाल किया जाता है।
6. रिपोर्ट बहुत विस्तृत और बड़ी हो तो उसे शृंखलाबद्ध करके कई दिनों तक किस्तों में छापा जाता है।
7. विशेष रिपोर्ट की भाषा सरल, सहज और आम बोलचाल की होनी चाहिए।

5-विशेष-लेखन स्वरुप एवं प्रकार

महत्त्वपूर्ण तथ्य:

- किसी भी समाचार पत्र की विशेषता उसके अलग-अलग विशेष स्तंभों एवं खण्डों से होती है। यह विशेष खंड समाचार-पत्रों में नियमित रूप से छापे जाते हैं। जिसे उस विशेष लेखन से जुड़े पाठकवर्ग प्रतिदिन के आधार पर रोचकता के साथ पढ़ते भी हैं।
- समाचार-पत्रों में हमारे जीवन और देश-दुनिया से जुड़े हुए तमाम लेख होते हैं। जिन्हें खास तरीके से अलग हटकर लिखा जाता है। समाचार-पत्रों में अलग-अलग खबरों के लिए अलग-अलग डेस्क बने होते हैं। इन डेस्कों पर अलग-अलग पत्रकारों का विशिष्ट समूह कार्य करता है। उदाहरण के लिए खेल की खबरों के लिए खेल-डेस्क, आर्थिक खबरों के लिए आर्थिक-डेस्क आदि देखने को मिलते हैं।
- खबरें कई प्रकार की होती है- जैसे राजनीतिक, अपराध जगत, आर्थिक, मनोरंजन, फिल्म, कृषि, अंतरिक्ष एवं प्रौद्योगिकी आदि तो उनसे संबंधित डेस्क भी अलग-अलग होते हैं।
- डेस्कों के आधार पर ही संवाददाताओं में काम का विभाजन किया जाता है। मीडिया की भाषा में इसे बीट कहा जाता है। उदाहरण के लिए खेल से संबंधित बीट में खेल की जानकारी और रुचि रखने वाला संवाददाता ही लेखन कार्य करता है। ऐसे में अपनी जानकारी और रुचि के आधार पर डेस्क और संबंधित बीट का निर्धारण होता है।
- बीट रिपोर्टिंग सामान्य रूप से विशेष लेखन से अलग है। बीट रिपोर्टिंग में पत्रकार को विशेष रूप से तैयारी करनी पड़ती है उदाहरण के लिए जो पत्रकार आर्थिक क्षेत्र में दिलचस्पी रखते हैं उन्हें आर्थिक क्षेत्र की प्रत्येक बारीकियों का पता होना चाहिए। विशेषकृत रिपोर्टिंग में संवाददाता बीट रिपोर्टिंग से हटकर तथ्यों में न पड़कर विश्लेषण पर आधारित लेखन कार्य करता है।
- बीट रिपोर्टिंग करने वाले रिपोर्टर को संवाददाता कहा जाता है जबकि विशेष की रिपोर्टिंग करने वाले रिपोर्टर को विशेष संवाददाता का दर्जा दिया जाता है।
- विशेषीकृत रिपोर्टिंग में फीचर लेखन, टिप्पणी, साक्षात्कार, लेख, समीक्षा और स्तंभ लेखन को शामिल किया जा सकता है।

- किसी भी क्षेत्र में विशेष लेखन करने के लिए आवश्यक है कि हमें उस क्षेत्र की अधिक-से-अधिक जानकारी हो और हम अपने आप को उस क्षेत्र में सदैव अद्यतन करते रहें।
- समाचार-पत्रों में इस प्रकार के विशेष लेखन करने वाले लेखक कई बार समाचार-पत्र से जुड़े ना होकर **स्वतंत्र लेखक** होते हैं जिन्हें अपने क्षेत्र विशेष से संबंधित विशेष जानकारी होती है।
- इन लेखकों के पास अपने क्षेत्र विशेष का लंबा अनुभव होता है जिसका वे सहज रूप से विश्लेषण करने में सक्षम होते हैं। उदाहरण के लिए कपिल देव, हरभजन सिंह, सचिन तेंदुलकर जैसे बड़े क्रिकेट खिलाड़ी जिन्हें क्रिकेट का विशेष ज्ञान है, वे खेल के मैदाने में विशेष रूप से कमेन्ट्री भी करते हैं और समाचार-पत्रों में विशेष लेखन भी करते हैं।
- विशेष लेखन की भाषा सरल एवं सहज होनी चाहिए जो सभी को समझ में आए।
- एक विशेष लेखक अपने क्षेत्र के तकनीकी पहलुओं को सरल और सहज रूप में पाठकों के सामने प्रस्तुत करते हैं। ऐसे में विशेष लेखन सामान्य लेखन से अलग होता है जिसमें एक विशेष पाठक वर्ग की सभी जिज्ञासाओं को शांत करने की क्षमता होती है।
- विशेष लेखन से सम्बंधित लेखक के लिए यह आवश्यक है कि वे अपने क्षेत्र की अधिक और विस्तृत जानकारी अपने साथ रखें।

विशेष लेखन का क्षेत्र

- विशेष लेखन का क्षेत्र अर्थ, व्यापार, खेल, विज्ञान-प्रौद्योगिकी, कृषि, विदेश, रक्षा, पर्यावरण, शिक्षा, स्वास्थ्य, फिल्म, मनोरंजन, अपराध, सामाजिक मुद्दे, कानून, संस्कृति, सोशल मीडिया आदि हो सकता है।

- विशेष लेखन में विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है किंतु आवश्यक नहीं कि यह विशेषज्ञता किसी विशेष डिग्री को प्राप्त करके ही अर्जित की जा सकती है अपितु इच्छा अनुसार भी किसी क्षेत्र की अधिक-से-अधिक जानकारी प्राप्त करके हम विशेष लेखन कर सकते हैं।
- विशेष लेखन के लिए अपनी रुचि के अनुसार पत्रकारिता उपर्युक्त विशेषज्ञता को हासिल करना चाहिए। इसके अतिरिक्त अधिक-से-अधिक पुस्तक पढ़ना, उसे क्षेत्र विशेष से जुड़े हुए लोगों से मिलना, विशेष क्षेत्र के स्थानों का भ्रमण, विशेष क्षेत्र से जुड़े अन्य विशेषज्ञों से जुड़े रहना चाहिए।
- जिस क्षेत्र में हमें विशेष लेखन करना है उसे क्षेत्र से जुड़ी हुई विभिन्न पुस्तकों, पत्रों, समाचार-पत्रों आदि का अध्ययन कर संबंधित संदर्भों व तथ्यों आदि को अलग से नोट करना अथवा उसकी कटिंग रखना भी विशेष लेखन का एक विशेष प्रयास हो सकता है।
- किसी क्षेत्र विशेष से जुड़ी हुई दक्षता को हासिल करने के लिए उससे जुड़े सरकारी संस्थानों, गैर-सरकारी संस्थानों, निजी संस्थाओं, वेबसाइटों आदि की जानकारी भी इकट्ठा करना चाहिए। किसी क्षेत्र विशेष की विशेषज्ञता रातो-रात प्राप्त नहीं होती। उसके लिए विशेष प्रयासों और लंबे अनुभवों की आवश्यकता होती है

लघुत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1 बीट से आप क्या समझते हैं?
उत्तर – बीट से तात्पर्य उस क्षेत्र से है जो किसी संवाददाता या पत्रकार को उसी विशेष क्षेत्र से संबन्धित समाचार तैयार करने के लिए दिया जाता है। कार्य का विभाजन उनकी रुचियों और ज्ञान को ध्यान में रखकर किया जाता है।

प्रश्न 2 विशेष लेखन क्यों किया जाता है?
उत्तर - विशेष लेखन से समाचार में विविधता आती है और उनका कलेवर बढ़ता है। पाठकों की व्यापकता रुचियों तथा आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उनकी जिज्ञासा शांत करने तथा मनोरंजन के लिए विशेष लेखन किया जाता है।

प्रश्न 3 भौगोलिक स्थिति के आधार पर खबरों को किस- किस रूप विभाजित किया जा सकता है?
उत्तर - भौगोलिक स्थिति के आधार पर खबरों को स्थानीय, क्षेत्रीय, आंचलिक, प्रांतीय, राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय आदि भिन्न-भिन्न रूपों में विभाजित किया जा सकता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1-समाचार-पत्रों में खेल की भूमिका को समझाइए?
उत्तर - खेल प्रत्येक आदमी के जीवन में नई ऊर्जा का संचार करता है। बचपन से ही मनुष्य की विभिन्न खेलों में रुचि होती है।समाचार-पत्रों और दूसरे माध्यमों में खेलों को बहुत ज्यादा महत्व मिलता है। सभी अखबारों में खेल के एक या दो पृष्ठ होते हैं और खेलों के समाचारों के बिना कोई भी टी० वी० और रेडियो बुलेटिन पूरा नहीं माना जाता। समाचार-पत्र और पत्रिकाओं में खेलों पर विशेष लेखन, खेल विशेषांक और खेल परिशिष्ट प्रकाशित होते रहते हैं। इसी प्रकार टी० वी० और रेडियो के माध्यम से खेलों के विशेष कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं।

प्रश्न 2-समाचार-पत्रों में विशेष लेखन के कौन–कौन से क्षेत्र हैं?
उत्तर-विशेष लेखन के अनेक क्षेत्र हैं – अर्थ व्यापार, खेल, विज्ञान-प्रौद्योगिकी, कृषि, विदेश, रक्षा, पर्यावरण, शिक्षा, स्वास्थ्य, फ़िल्म- मनोरंजन, अपराध, सामाजिक मुद्दे, कानून आदि। साधारणतया रोज़ाना की रिपोर्टिंग और बीट को छोड़कर सभी क्षेत्र विशेष लेखन के अंतर्गत आते हैं जिनमें अलग से विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है। परंतु अखबारों और दूसरे माध्यमों में खेल, कारोबार, सिनेमा, मनोरंजन, फैशन, स्वास्थ्य, विज्ञान, पर्यावरण, शिक्षा, जीवन-शैली एवं रहन-सहन जैसे विषयों को इन दिनों विशेष लेखन के कारण अधिक महत्त्व मिल रहा है।
प्रश्न 3- विशेष लेखन की भाषा और शैली का समाचार-पत्रों में विशेष महत्त्व है। भाषा और शैली किस प्रकार की होनी चाहिए ?
उत्तर - विशेष लेखन की भाषा और शैली निम्नलिखित प्रकार की होनी चाहिए –

- विशेष लेखन की भाषा-शैली सरल, साधारण और सहज होनी चाहिए।
- इसमें जटिल शब्दावली का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
- इसमें रोचक शैली का प्रयोग करना चाहिए।
- इसमें सामान्य लेखन की सामान्य शैली की अपेक्षा विशेष भाषा-शैली का प्रयोग करना चाहिए।
- इसमें प्रासंगिक लेखन से जुड़ी भाषा – शैली को अपनाना चाहिए।

प्रश्न 4- बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग में क्या अंतर है ?
उत्तर-बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग में महत्वपूर्ण अंतर है। एक बीट रिपोर्टर को अपने बीट से जुड़ी सामान्य खबरें ही लिखनी होती हैं। विशेषीकृत रिपोर्टिंग सामान्य खबरों से आगे बढ़कर उस क्षेत्र विशेष या विषय से जुड़ी घटनाओं से संबंधित हैं। इसमें वहाँ के मुद्दों और समस्याओं का बारीकी से विश्लेषण करना होता है और पाठकों के लिए उसका अर्थ स्पष्ट करना आवश्यक होता है।

11-कैसे करें कहानी का नाट्य रूपांतरण

महत्त्वपूर्ण बिन्दु -

- प्रत्येक कथा साहित्य में मूलतः एक कहानी होती है।
- साहित्य की अलग-अलग विधाओं का अलग-अलग स्वरूप होता है।
- न केवल उनकी रचना प्रक्रिया अलग होती है बल्कि उनके तत्त्व भी अलग होते हैं।
- भाषा का प्रयोग भी विधा बदल जाने पर परिवर्तित हो जाता है।
- कहानी का नाटक में रूपांतरण करने के लिए सबसे पहले कहानी और नाटक में वैविध्य तथा समानताओं को समझना आवश्यक है।
- इसके लिए हमें नाटक की विशेषताओं को समझना होगा। जहाँ कहानी का संबंध लेखक और पाठक से जुड़ता है। वहीं नाटक लेखक,निर्देशक,पात्र,दर्शक,श्रोता एवं अन्य लोगों को एक-दूसरे से जोड़ता है।

- दृश्य का स्मृतियों से गहरा संबंध होता है इसलिए नाटक एवं फ़िल्म को देर तक याद रखते हैं। यही कारण है कि गोदान, देवदास, उसने कहा था आदि के नाट्य रूपांतरण कई बार हुए हैं और कई तरह से हुए हैं।
- कहानी कही जाती है या पढ़ी जाती है जबकि नाटक मंच पर प्रस्तुत किया जाता है।
- नाटक को मंच पर अभिनेता अभिनय द्वारा प्रस्तुत करते हैं।
- मंच सज्जा होती है,संगीत होता है, प्रकाश व्यवस्था होती है।

कहानी और नाटक में समानता

- कहानी और नाटक दोनों में एक कहानी होती है।
- पात्र होते है।
- परिवेश होता है।
- कहानी का क्रमिक विकास होता है।
- संवाद होते हैं।
- द्वंद्व होता है।
- चरमोत्कर्ष होता है।

कहानी को नाटक में रूपांतरित करने के लिए

- सबसे पहले कहानी की विस्तृत कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित किया जाता है।

- कथावस्तु (कथानक) को सामने रखकर एक-एक घटना को चुन-चुनकर निकाला जाता है और उसके आधार पर दृश्य बनता है।
- स्थान और समय के आधार पर कहानी का विभाजन करके दृश्यों को लिखा जा सकता है।
- प्रत्येक दृश्य का कथानक के अनुसार औचित्य हो।
- प्रत्येक दृश्य का कथानुसार तार्किक विकास हो रहा है या नहीं।
- दृश्य विशेष के उद्देश्य और उसकी संरचना पर विचार आवश्यक है।
- प्रत्येक दृश्य एक बिंदु से प्रारंभ होता है।
- कथानुसार अपनी आवश्यकताएँ पूरी करता है और उसका ऐसा अंत होता है जो उसे अगले दृश्य से जोड़ता है।
- दृश्य का पूरा विवरण तैयार किया जाना चाहिए। कहीं ऐसा न हो कि दृश्य में कोई आवश्यक जानकारी छूट जाए या उसका क्रम बिगड़ जाए।
- नाटक ही में नहीं बल्कि नाटक के प्रत्येक दृश्य में प्रारंभ,मध्य और अंत होता है।
- दृश्य कई काम एक साथ करता है।
- एक ओर वह कथानक को आगे बढ़ाता है तो दूसरी ओर पात्रों और परिवेश को संवादों के माध्यम से स्थापित करता है।
- इसके साथ-साथ दृश्य अगले दृश्य के लिए भूमिका भी तैयार करता है।
- यह अवश्य देखना चाहिए कि जानकारियाँ,सूचनाएँ और घटनाएँ दोहराई न गई हों।

संवादों से जुड़े तथ्य / संवादों का महत्त्व

- सबसे पहली और महत्त्वपूर्ण शर्त यह है कि नए लिखे संवाद,कहानी के मूल संवादों के साथ मेल खाते हो।
- दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह कि उनके लिखे जाने का सौ प्रतिशत औचित्य हो।
- तीसरी बात जो ध्यान में रहे वह यह है कि संवाद छोटे,प्रभावशाली और बोलचाल की भाषा में हों।
- रूपांतरण करते समय कहानी के पात्रों की दृश्यात्मकता और नाटक के पात्रों में उसका प्रयोग किया जाना चाहिए।

संवाद को नाटक में प्रभावशाली बनाने का तरीका

- संवाद को नाटक में प्रभावशाली बनाने का अगला तरीका अभिनय है जो प्रायः निर्देशक का काम है,पर लेखक भी इस ओर संकेत कर सकता है।
- पात्र की भावभंगिमाओं और उसके तौर तरीकों (मैनरिज्म)से प्रभाव उत्पन्न किया जा सकता है। कहानी के लंबे संवादों को छोटा करके उन्हें अधिक नाटकीय बनाया जा सकता है।
- स्थानीय रंग में संवादों को रंग कर चरित्र चित्रणको परिमार्जित किया जा सकता है।
- ध्वनि और प्रकाश भी चरित्र-चित्रण करने तथा संवेदनात्मक प्रभाव उत्पन्न करने में कारगर सिद्ध हो सकते हैं।

नाटकीय प्रस्तुति में आने वाली समस्याएँ

- रूपांतरण में एक समस्या पात्रों के मनोभावों को कहानीकार द्वारा विवरण के रूप में व्यक्त प्रसंगों या मानसिक द्वंद्व के दृश्यों की नाटकीय प्रस्तुति में आ सकती है।
- रूपांतरण में इस तरह के विवरण प्रस्तुत करने के लिए स्वगत कथन का प्रयोग किया जाता है जिसमें लेखक मंच के कोने में जाकर अपने आपसे यह संवाद बोलता है। लेकिन आजकल 'वायस ओवर' अर्थात ऐसी ध्वनि जो दर्शकों को सुनाई देती है पर पात्र नहीं बोलता के माध्यम से संभव है।
- कहानी का नाट्य रूपांतरण करने से पहले यह जानकारी होना आवश्यक है कि वर्तमान रंगमंच में क्या संभावनाएँ हैं। यह तभी संभव है जब अच्छे नाटक देखे जाएँ। इसलिए रूपांतरण का पहला पाठ यही हो सकता है कि अच्छी नाट्य प्रस्तुतियाँ देखी जाएँ।

कुछ प्रसिद्ध कहानियाँ जिनका सफलतापूर्वक नाट्य रूपांतरण हुआ है-

चीफ़ की दावत - भीष्म साहनी
डिप्टी कलेक्टरी - अमरकांत
ईदगाह - प्रेमचंद

लघुत्तरात्मक प्रश्न	
प्रश्न-1.	कहानी के नाट्य रूपांतरण की आवश्यकता क्यों होती है?
उत्तर	कहानी को नाटक के रूप में प्रस्तुत करने से उसकी प्रभावशीलता और दर्शकों तक पहुँच बढ़ती है। मंचन के माध्यम से कहानी में भाव, संवाद, दृश्य और ध्वनि का समन्वय होता है जिससे वह अधिक जीवंत और आकर्षक बनती है।
प्रश्न-2.	नाट्य रूपांतरण करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?
उत्तर	नाट्य रूपांतरण करते समय इन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है: • कहानी की मूल भावना बनी रहे। • पात्रों के संवाद प्रभावशाली हों। • दृश्य विभाजन उचित हो। • मंचीय आवश्यकताओं जैसे प्रकाश, संगीत, वेशभूषा आदि का ध्यान रखा जाए।
प्रश्न-3.	कहानी और नाटक में क्या अंतर होता है?
उत्तर	• कहानी पढ़ी जाती है जबकि नाटक मंच पर प्रस्तुत किया जाता है। • कहानी में विवरण अधिक होता है, जबकि नाटक में संवादों और क्रियाओं पर बल होता है। • कहानी एक व्यक्ति द्वारा कही या पढ़ी जाती है, नाटक में अनेक पात्र होते हैं।
प्रश्न-4.	कहानी को नाटक में बदलने की प्रक्रिया क्या है?
उत्तर	कहानी को नाटक में बदलने की प्रक्रिया में प्रमुख घटनाओं का चयन, संवाद लेखन, दृश्य निर्धारण, पात्रों का चुनाव और मंचीय निर्देश शामिल होते हैं। यह प्रक्रिया कहानी को नाटक के अनुकूल बनाने के लिए होती है।
प्रश्न-5.	नाट्य रूपांतरण में संवादों की भूमिका स्पष्ट कीजिए।
उत्तर	नाट्य रूपांतरण में संवादों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। संवाद ही पात्रों के विचार, भावनाएं और स्थिति को दर्शकों तक पहुँचाते हैं। अच्छे संवाद पात्रों के चरित्र को उभारते हैं और दर्शकों को कथानक से जोड़े रखते हैं। संवादों के माध्यम से ही नाटक का कथानक आगे बढ़ता है, इसलिए उन्हें स्वाभाविक, सजीव और पात्रानुकूल बनाना आवश्यक होता है।
प्रश्न-6.	मंचीय प्रस्तुति में प्रकाश और ध्वनि का क्या महत्त्व है?
उत्तर	प्रकाश और ध्वनि नाट्य प्रस्तुति के दो मुख्य तकनीकी पक्ष हैं। प्रकाश के माध्यम से दृश्य का परिवेश, समय और वातावरण दिखाया जाता है, जैसे दिनरात-, भय, उल्लास आदि। वहीं, ध्वनि और पृष्ठभूमि संगीत भावनाओं को तीव्रता प्रदान करते हैं। ये दोनों तत्व मिलकर नाटक को अधिक प्रभावशाली बनाते हैं और दर्शकों की संवेदना को प्रभावित करते हैं।
प्रश्न-7.	कहानी से नाट्य रूपांतरण करते समय किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है?
उत्तर	कहानी से नाट्य रूपांतरण करते समय कई चुनौतियाँ सामने आती हैं जैसे: • कहानी के विस्तृत वर्णनों को संक्षेप में प्रस्तुत करना। • मंच पर दृश्य की व्यावहारिकता को ध्यान में रखना। • संवादों को पात्र के अनुरूप और प्रभावी बनाना। • भावनाओं को दृश्य माध्यम में प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत करना। • इन सबका समाधान करते हुए भी मूल भावना बनाए रखना चुनौतीपूर्ण होता है।
प्रश्न-8.	कहानी और नाटक की भाषा में क्या अंतर होता है?
उत्तर	• कहानी की भाषा वर्णनात्मक होती है जिसमें लेखक अपने भावों और वातावरण का विस्तार से चित्रण करता है। • कहानी में कथन शैली पर बल होता है। जबकि नाटक की भाषा संवादात्मक होती है, जिसमें पात्रों के बीच सीधी बातचीत होती है।

	• नाटक की भाषा अधिक संक्षिप्त, सहज और मंचन योग्य होती है जिससे दर्शक पात्रों की स्थिति को सहजता से समझ सकें।
प्रश्न-9.	यदि किसी कहानी में केवल दो पात्र हों और घटनाएँ सीमित हों, तो आप उसे दर्शकों के लिए रोचक नाटक में कैसे बदलेंगे?
उत्तर	• एक ही स्थान को दृश्य रूप से विविध दिखाने के प्रयास • प्रकाश, ध्वनि व शरीर भाषा का प्रयोग • प्रतीकों का उपयोग • संवादों की गहराई बढ़ाना
प्रश्न-10.	नाटक एक सामूहिक कला है जबकि कहानी लेखन एक व्यक्तिगत प्रक्रिया। इस अंतर को ध्यान में रखते हुए सोचिए किन रचनात्मक बदलावों की ज़रूरत होती है –?
उत्तर	• संवादों का सामूहिक स्वरूप • मंच के लिए दृश्य योजनाएँ • सहयोगी कलाकारों के साथ सामंजस्य • एक ही भाव को कई माध्यमों से दर्शाना
प्रश्न-11.	कल्पना कीजिए कि आपको एक लोकप्रिय बाल कहानी जैसे'पंचतंत्र' का नाट्य रूपांतरण करना है। आप क्या जोड़ेंगे या हटाएंगे ताकि आज के बच्चों को वह रोचक लगे?
उत्तर	• हास्य तत्वों का समावेश • आज के संदर्भ में पात्रों की भाषा • तकनीकी मंचन / साउंड इफेक्ट्स • समसामयिक नैतिक संदेश
प्रश्न-12.	यदि किसी कहानी में मंचन योग्य दृश्य नहीं हैं, फिर भी वह गहन संदेश देती है – क्या उसका नाट्य रूपांतरण करना उचित है? क्यों/ क्यों नहीं?
उत्तर	• मंच के लिए प्रतीकात्मकता का प्रयोग • मोनोलॉग का उपयोग (एकालाप) • ध्वनि और प्रकाश से दृश्यात्मकता की पूर्ति • कहानी की भावनात्मक शक्ति बनाये रखने की चुनौती
प्रश्न-13.	कहानी को नाटक में किस प्रकार रूपांतरित किया जा सकता है ?
उत्तर	(i) कहानी की कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित किया जाता है। (ii) कहानी में घटित विभिन्न घटनाओं के आधार पर दृश्यों का निर्माण किया जाता है। (iii) कथावस्तु से संबंधित वातावरण की व्यवस्था की जाती है।
दीर्घ उत्तरीय प्रश्न	
प्रश्न-1.	संवाद को नाटक में प्रभावशाली किस प्रकार बनाया जा सकता है?
उत्तर	• संवाद को नाटक में प्रभावशाली बनाने का तरीका • संवाद को नाटक में प्रभावशाली बनाने का एक तरीका अभिनय है जो प्रायः निर्देशक का काम है, पर लेखक भी इस ओर संकेत कर सकता है। • पात्र की भावभंगिमाओं और उसके तौर-तरीकों से प्रभाव उत्पन्न किया जा सकता है। • कहानी के लंबे संवादों को छोटा करके उन्हें अधिक नाटकीय बनाया जा सकता है। • स्थानीय रंग में संवादों को रंग कर चरित्रचित्रण को परिमार्जित किया जा सकता है।–
प्रश्न-2.	रूपांतरण में पात्रों के मनोभावों या मानसिक द्वंद्व के दृश्यों की नाटकीय प्रस्तुति में आने वाली समस्या का निर्धारण किस प्रकार किया जाता है?
उत्तर	पात्रों के मनोभावों या मानसिक द्वंद्व के दृश्यों की नाटकीय प्रस्तुति में समस्या व निर्धारण – रूपांतरण में एक समस्या पात्रों के मनोभावों को कहानीकार द्वारा विवरण के रूप में व्यक्त प्रसंगों या मानसिक द्वंद्व के दृश्यों की नाटकीय प्रस्तुति में आ सकती है। उदाहरण के लिए ईदगाह का वह हिस्सा जहाँ हामिद इस द्वंद्व में है कि क्या क्या खरीदे या जहाँ वह यह– सोचता है कि अम्मा का हाथ जल जाता है, उसका रूपांतरण कठिन है।

	रूपांतरण में इस तरह के विवरण प्रस्तुत करने के लिए स्वगत कथन का प्रयोग किया जाता है जिसमें लेखक मंच के कोने में जाकर अपने आपसे यह संवाद बोलता है। लेकिन आजकल अर्थात ऐसी'वायस ओवर' ध्वनि जो दर्शकों को सुनाई देती है पर पात्र नहीं बोलता के माध्यम से संभव है। अम्मा वाले अंश के लिए फ़ैलेशबैक शैली का उपयोग किया जा सकता।
प्रश्न -3.	किसी कहानी और नाटक में या अंतर हम किन आधार पर कर सकते हैं ?
उत्तर	कहानी और नाटक दोनों गद्य विधाएँ हैं। इनमें कुछ असमानताएँ या अंतर भी हैं जो इस प्रकार हैं– **कहानी—** • कहानियाँ ऐसी गद्य विधा है जिसमें जीवन के किसी अंक विशेष का मनोरंजन पूर्ण चित्रण किया जाता है। • कहानी का संबंध लेखक और पाठकों से होता है। • कहानी कहीं अथवा पढ़ी जाती है। • कहानी को आरंभ , मध्य और अंत के आधार पर बाँटा जाता है। • कहानी में मंच सज्जा , संगीत तथा प्रकाश का महत्त्व नहीं है। **नाटक–** • नाटक एक ऐसी गद्य विधा है जिसका मंच पर अभिनय किया जाता है। • नाटक का संबंध लेखक, निर्देशक, दर्शक तथा श्रोताओं से है। • नाटक का मंच पर अभिनय किया जाता है। • नाटक को दृश्यों में विभाजित किया जाता है। • नाटक में मंच सज्जा , संगीत और प्रकाश व्यवस्था का विशेष महत्व होता है।
प्रश्न-4.	विवरणों (विवरणात्मक टिप्पणी) को नाटक में किस प्रकार स्थान दिया जाता है?
उत्तर	विवरणों(विवरणात्मक टिप्पणी) को नाटक में स्थान विभिन्न प्रकार के विवरणों को नाटक में स्थान देने के अलग अलग तरीके हैं। उदाहरण के लिए विवरणात्मक–टिप्पणी यदि परिवेश के बारे में है तो उसे मंच सज्जा के अंतर्गत लिया जा सकता है या पार्श्व संगीत के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है। विवरण यदि पात्रों के बारे में है तो उन्हें संवादों के माध्यम से निर्धारित दृश्यों में उचित स्थान पर दिया जा सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि कहानी में व्यक्त महत्त्वपूर्ण सूत्र नाटक के स्वरूप के अनुसार अपनी जगह निर्धारित कर लेते हैं।
प्रश्न-5	कहानी और नाटक में क्याक्या समानताएँ होती हैं-?
उत्तर	कहानी और नाटक में निम्नलिखित समानताएँ हैं – • कहानी का मूलाधार कथानक होता है, नाटक भी कथानक पर ही आधारित होता है। • कहानी में घटनाएँ क्रमबद्ध रहती हैं, नाटक में भी घटनाओं का वर्णन क्रमबद्ध रूप में होता है। • कहानी में पात्रों की मुख्य भूमिका होती है, नाटक की रचना में भी पात्रों का मुख्य स्थान होता है। • कहानी में एक परिवेश रहता है, नाटक में भी परिवेश होता है। • कहानी में पात्रों के मध्य द्वंद्व होता है, नाटक के पात्रों के मध्य भी द्वंद्व दिखाया जाता है। • कहानी उद्देश्य विशेष को लेकर चलती है, नाटक भी उद्देश्य विशेष को लेकर ही लिखा जाता है। • कहानी का चरमोत्कर्ष होता है, नाटक का भी चरमोत्कर्ष होता है।

12-कैसे बनता है रेडियो नाटक

महत्त्वपूर्ण बिंदु :-

<u>सिनेमा, रंगमंच और रेडियो नाटक में समानताएँ</u> –

- सिनेमा, रंगमंच और रेडियो नाटक तीनों में चरित्र होते हैं।
- चरित्रों (पात्रों) में आपसी संवाद होते हैं।
- इन्हीं संवादों के ज़रिये कहानी आगे बढ़ती है।

- कहानी का आरंभ, मध्य और अंत होना।

सिनेमा, रंगमंच और रेडियो नाटक में असमानताएँ –

- सिनेमा और रंगमंच की तरह रेडियो नाटक में विजुअल्स अर्थात दृश्य नहीं होते।
- रेडियो पूरी तरह से श्रव्य माध्यम है इसीलिए रेडियो नाटक का लेखन सिनेमा व रंगमंच के लेखन से थोड़ा भिन्न भी है।
- रेडियो नाटकमें मंच सज्जा तथा वस्त्र सज्जा नहीं होती है जबकि सिनेमा और रंगमंच में इसकी आवश्यकता होती है।

रेडियो नाटक के लिए कहानी का चयन

कहानी आपकी मौलिक हो या चाहे किसी और स्रोत से ली हुई। उसमें निम्न बातों का ध्यान जरूर रखना होगा –

- कहानी ऐसी न हो जो पूरी तरह से एक्शन अर्थात हरकत पर निर्भर करती हो। क्योंकि रेडियो पर बहुत ज्यादा एक्शन सुनाना उबाऊ हो सकता है।
- आमतौर पर रेडियो नाटक की अवधि 15 मिनट से 30 मिनट होती है। उसके दो कारण हैं, श्रव्य माध्यम में नाटक या वार्ता जैसे कार्यक्रमों के लिए मनुष्य की एकाग्रता की अवधि 15 से 30 मिनट की होती है इससे ज़्यादा नहीं।
- घर पर बैठकर रेडियो सुनने वाला श्रोता मन उचटते ही किसी और स्टेशन के लिए सुई घुमा सकता है या उसका ध्यान कहीं और भी भटक सकता है। इसलिए अमूमन रेडियो नाटक की अवधि छोटी होती है और अगर आपकी कहानी लंबी हैं तो फिर वह एक धारावाहिक के रूप में पेश की जा सकती है, जिसकी हर कड़ी 15या 30 मिनट की होगी।

रेडियो नाटक में पात्रों की संख्या

- रेडियो नाटक की अवधि ही सीमित हैतो फिर अपने आप ही पात्रों की संख्या भी सीमित हो जाएगी।
- अगर संख्याओं में बात करनी है तो हम इस प्रकार कह सकते हैं, 15 मिनट की अवधि वाले रेडियो नाटक में पात्रों की अधिकतम संख्या 5-6 हो सकती है।
- 30-40 मिनट की अवधि के नाटक में 8 से 12 पात्र।
- पात्रों की संख्या के मामले में दो संकेत और उपरोक्त बताई गई संख्याएं एक अंदाजा मात्र हैं। अर्थात 15 मिनट के रेडियो नाटक में अगर जरुरत है तो 7 या 8 किरदार भी हो सकते हैं।
- तो हमने देखा कि रेडियो नाटक के लिए कहानी का चुनाव करते समय हमें तीन मुख्य बातों का खयाल रखना है –
  - कहानी सिर्फ घटना प्रधान न हो।
  - उसकी अवधि बहुत ज्यादा न हो।
  - पात्रों की संख्या सीमित हो।।
- रेडियो नाटक में पात्रों संबंधी तमाम जानकारी हमें संवादों के माध्यम से ही मिलती है। उनके नाम, आपसी संबंध, चारित्रिक विशेषताएं ये सभी हमें संवादों द्वारा ही उजागर करना होता है , इसलिए हमें पात्रों के अनुसार ही संवादों की भाषा का चयन करना चाहिए, जिससे नाटक में रोचकता तथा सरसता बनी रहे।

ध्यान रखने योग्य बातें :-

*नाट्य आंदोलन के विकास में रेडियो नाटक की अहम भूमिका रही है।
*सिनेमा और रंगमंच की तरह रेडियो एक दृश्य माध्यम नहीं, श्रव्य माध्यम है।
*रेडियो की प्रस्तुति संवादों और ध्वनि प्रभावों के माध्यम से होती है।
*फ़िल्म की तरह रेडियो में एक्शन की गुंजाइश नहीं होती।
*चूंकि रेडियो नाटक की अवधि सीमित होती है इसलिए पात्रों की संख्या भी सीमित होती है *क्योंकि सिर्फ़ आवाज़ के सहारे पात्रों को याद रख पाना मुश्किल होता है।
*पात्र संबंधी विविध जानकारी संवाद एवं ध्वनि संकेतों से उजागर होती हैं।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न-1. रेडियो नाटक के लिए पात्रों की संख्या सीमित क्यों रखनी चाहिए ?

उत्तर - रेडियो नाटक में पात्रों की संख्या सीमित इसलिए रखनी चाहिए क्योंकि इसमें श्रोता केवल ध्वनि के सहारे ही पात्रों को याद रख पाता है यदि रेडियो नाटक में अधिक पात्र होंगे तो श्रोता उन्हें याद नहीं रख सकेंगे।

प्रश्न-2. रेडियो नाटक के लिए कहानी का चुनाव करते समय किन तीन मुख्य बातों का ख्याल रखना चाहिए ?

उत्तर – रेडियो नाटक के लिए कहानी का चुनाव करते समय जिन तीन मुख्य बातों का ख्याल रखना चाहिए वो निम्नलिखित हैं –
1 कहानी सिर्फ़ घटना प्रधान न हो

2 उसकी अवधि बहुत ज़्यादा ना हो
3 पात्रों की संख्या सीमित हो

प्रश्न-3. रेडियो नाटक की अवधि छोटी क्यों रखी जाती है ?
उत्तर - रेडियो नाटक की अवधि छोटी इसलिए रखी जाती है क्योंकि रेडियो पूरी तरह से श्रव्य माध्यम है। इसमें संवादों को ध्वनि प्रभाव के माध्यम से संप्रेषित करना होता है। यहां न तो मंच सज्जा ,वस्त्र सज्जा होती है और न ही अभिनेता के चेहरे की भाव भंगिमा। केवल आवाज के माध्यम से ही नाटक को प्रस्तुत किया जाता है। इसमें मनुष्य की एकाग्रता सीमित होती है। अतः इन सभी कारणों से रेडियो नाटक की अवधि छोटी रखी जाती है।

<u>दीर्घ उत्तरीय प्रश्न</u>

प्रश्न-1. संवाद से जुड़ा वह कौन-सा तथ्य है, जो रेडियो नाटक पर विशेष रूप से लागू होता है और क्यों ?
उत्तर :- संवाद से जुड़ा एक तथ्य ऐसा है, जो रेडियो नाटक पर विशेष रूप से लागू होता है, क्योंकि रेडियो मुख्यतः संवाद प्रधान माध्यम है, इसलिए यहां इसका खास ध्यान रखना होता है वह तथ्य है - संवाद जिस चरित्र को संबोधित है, उसका नाम लेना। क्योंकि रेडियो में कौन किससे बात कर रहा है, हम देख नहीं पाते इसलिए संवाद जिस चरित्र को संबोधित है, उसका नाम लेना जरूरी होता है, खासतौर पर जब दृश्यों में दो से अधिक पात्र हों। इसके अलावा रेडियो नाटक में कई बार कोई पात्र विशेष जब कोई हरकत, कोई एक्शन करता है तो उसे भी संवाद का हिस्सा बनाना पड़ता है। उदाहरण के लिए हमारा चरित्र पार्क में है और उसे बेंच पर बैठना है तो उसका संवाद कुछ इस तरह का होगा - *कितनी गरमी है आज पार्क में। चलूं कुछ देर इस बेंच पर बैठ जाऊं (और वो आह की ध्वनि करता बेंच पर बैठ जाता है)*

प्रश्न-2. रेडियो नाटक की प्रमुख विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।
उत्तर – रेडियो नाटक की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित है –
(1) रेडियो नाटक में पात्रों से संबंधित सभी जानकारियां संवादों के माध्यम से मिलती हैं।
(2) नाटक का पूरा कथानक संवादों पर ही आधारित होता है।
(3) इसमें ध्वनि प्रभावों और संवादों के माध्यम से ही कथा को श्रोताओं तक पहुंचाया जाता है।
(4) पात्रों की चारित्रिक विशेषताएं संवादों के द्वारा ही उजागर होती हैं।
(5) संवादों के द्वारा ही श्रोताओं को संदेश दिया जाता है।
(6) रेडियो नाटक का उद्देश्य संवादों के माध्यम से ही स्पष्ट होता है।

प्रश्न-3. रेडियो नाटक तथा सिनेमा और रंगमंच में क्या-क्या समानताएँ होती हैं ? प्रमुख समानताएँ बताइए।
उत्तर – रेडियो नाटक तथा सिनेमा और रंगमंच में विभिन्न समानताएँ होती हैं –
1. रेडियो नाटक तथा सिनेमा और रंगमंच में एक कहानी होती है और कहानी का आरंभ, मध्य और अंत होता है.
2. इनमें चरित्र होते हैं.
3. इनमें पात्रों का आपस में संवाद होता है और अंत में समाधान होता है .
4.इनमें पात्रों के संवादों के माध्यम से कहानी का विकास होता है.

प्रश्न-4. रेडियो नाटक तथा सिनेमा और रंगमंच में क्या-क्या अंतर होते हैं ? प्रमुख अंतर बताइए।
उत्तर – 1- रेडियो नाटक एक श्रव्य माध्यम है जबकि सिनेमा और रंगमंच दृश्य माध्यम हैं।
2- रेडियो नाटक में कहानी को ध्वनि प्रभाव और संवादों के माध्यम से संप्रेषित किया जाता है जबकि सिनेमा और रंगमंच में कहानी को पात्रों की भावनाओं के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।
3- सिनेमा और रंगमंच में पात्रों की भाव-भंगिमाएं विशेष महत्त्व रखती हैं जबकि रेडियो नाटक में भाव-भंगिमाओं की कोई आवश्यकता नहीं होती।
4- रेडियो नाटक में दृश्य नहीं होते जबकि सिनेमा और रंगमंच में दृश्य होते हैं।

13. नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन

महत्त्वपूर्ण बिन्दुः

नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन करते समय, यह आवश्यक होता है कि विषय न केवल शैक्षिक दृष्टिकोण से प्रासंगिक हो, बल्कि छात्रों के सोचने और समझने की क्षमता को भी चुनौती दे। ऐसे विषयों को उठाना चाहिए जो विद्यार्थियों को उनकी सोच को विस्तारित करने में मदद करें।

निम्नलिखित मुख्य बिंदु ऐसे लेखन के लिए उपयोगी हो सकते हैं:

1. वर्तमान घटनाओं से जुड़ी सामग्री

सामाजिक, राजनीतिक और वैश्विक घटनाओं से परिचित कराना जरूरी है। इसके लिए आप ऐसे विषयों पर लेखन कर सकते हैं जो वर्तमान में चर्चा में हों, जैसे कि जलवायु परिवर्तन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मानवाधिकार, डिजिटल इंडिया, या COVID-19 महामारी के प्रभाव। इन विषयों पर लेखन विद्यार्थियों के सामूहिक विचारशीलता और जागरूकता को बढ़ावा देता है।

2. वैज्ञानिक और तकनीकी नवाचार

छात्रों को नए विज्ञान और तकनीकी नवाचार जैसे ग्रहों की खोज, अंतरिक्ष विज्ञान, क्वांटम कंप्यूटिंग, या जीनोम एडिटिंग जैसे विषयों पर लेखन के लिए प्रेरित करना चाहिए। यह विषय छात्रों को सोचने और भविष्य की वैज्ञानिक प्रगति के बारे में जानने का अवसर देते हैं।

3. समाज और संस्कृति

समाज और संस्कृति पर आधारित ऐसे विषय जिनमें सामाजिक बदलाव, संस्कृति का वैश्वीकरण, विविधता, या भारतीय समाज में हो रहे बदलावों के प्रभाव पर विचार किया जाए। जैसे किआधुनिक भारत में युवा मानसिकता, भारतीय साहित्य और फिल्मों का वैश्विक प्रभाव, या लिंग समानता पर बदलती दृष्टि। ये विषय विद्यार्थियों को सामाजिक संदर्भ में गहरे सवाल पूछने के लिए प्रेरित करेंगे।

4. नैतिकता और मूल्य

नैतिकता और मूल्यसे संबंधित ऐसे विषय, जो छात्रों को अपने जीवन में सही और गलत के बारे में सोचने का अवसर प्रदान करें। जैसे कि धार्मिक स्वतंत्रता और सहिष्णुता, आधुनिकता और पारंपरिक मूल्यों का संघर्ष, या सामाजिक मीडिया और व्यक्तिगत गोपनीयता। यह विषय उनके सोचने की क्षमता को बढ़ाते हैं और उन्हें सामाजिक दायित्वों का एहसास कराते हैं।

5. आधुनिक शिक्षा प्रणाली और चुनौतियाँ

आधुनिक शिक्षा प्रणाली और इसके बदलाव पर विचार करना जरूरी है। आप ऐसे विषय जैसे-ऑनलाइन शिक्षा का भविष्य, शिक्षा में तकनीकी क्रांति, मानविकी बनाम विज्ञानऔरअर्थशास्त्र में शिक्षा को चुन सकते हैं। इससे छात्रों को शिक्षा के विभिन्न पहलुओं को समझने और विश्लेषण करने का अवसर मिलेगा।

6. मानवाधिकार और वैश्विक मुद्दे

मानवाधिकारऔर वैश्विक मुद्दों पर लेखन करते समय, जैसे-शरणार्थियों के अधिकार, वैश्विक असमानता, आतंकवाद के प्रभाव या वैश्विक पर्यावरणीय संकट पर विचार करना छात्रों को एक वैश्विक नागरिक के रूप में सोचने के लिए प्रेरित करेगा।

7. भविष्य के रोजगार और करियर के अवसर

छात्रों को उनके भविष्य के करियर के बारे में विचार करने के लिए ऐसे विषय दिए जा सकते हैं, जैसे-स्वतंत्र पेशेवर या व्यवसायी बनने के फायदे, नौकरी के नए अवसरों का विकास, या उद्यमिता और नवाचार के क्षेत्र में अवसर। यह विषय विद्यार्थियों को उनके करियर को लेकर स्पष्ट दृष्टिकोण विकसित करने में मदद करेंगे।

8. विज्ञान, कला और समाज का संबंध

विज्ञान और कला के बीच संबंध पर विचार करने से छात्रों के रचनात्मक सोचने की क्षमता को बढ़ावा मिलता है। आप विषय जैसे-विज्ञान के माध्यम से कला का विकास, प्रौद्योगिकी और संस्कृति का तालमेल या कला और विज्ञान के मिलेजुले प्रभावपर लिखने का विचार कर सकते हैं। यह छात्रों को इन दोनों क्षेत्रों के बीच की सीमा को समझने का अवसर देता है।

9. मनोविज्ञान और मानसिक स्वास्थ्य
मानसिक स्वास्थ्य के महत्त्व और मनोविज्ञान से संबंधित ऐसे विषयों पर विचार करने के लिए प्रेरित करना चाहिए, जैसे-युवाओं में मानसिक तनाव और उसके समाधान, सकारात्मक मानसिकता का विकास, या मनोविज्ञान का जीवन में उपयोग। यह विषय मानसिक स्वास्थ्य को लेकर छात्रों की जागरूकता बढ़ाते हैं।

10. नैतिक और ऐतिहासिक विवाद
ऐतिहासिक और नैतिक विवादों पर विचार करना छात्रों को सामाजिक और ऐतिहासिक मुद्दों को समझने का मौका देता है। जैसे-भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के विवादित पहलू, ऐतिहासिक घटनाओं का पुनरावलोकन या नैतिकता के आधुनिक दृष्टिकोण। इससे छात्रों में आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा मिलता है।
11. आधुनिक जीवन और समय प्रबंधन
समय प्रबंधन और आधुनिक जीवन पर आधारित लेखन विद्यार्थियों को उनके दैनिक जीवन में संतुलन बनाने और कार्यों को प्राथमिकता देने की कला सिखाता है। जैसे-स्कूल के कार्य और व्यक्तिगत जीवन में संतुलन बनाना, मनोरंजन और पढ़ाई के बीच संतुलन, या समय प्रबंधन के प्रभावी तरीके।

12. संस्कृतियों के बीच संवाद और समझ
संस्कृतियों के बीच संवाद पर लेखन विद्यार्थियों को वैश्विक परिप्रेक्ष्य से सोचने के लिए प्रेरित करेगा। जैसे-विविधता और सहिष्णुता की संस्कृति, संस्कृतियों का समागम और प्रभाव या विश्व नागरिक के रूप में जिम्मेदारी।
इन बिंदुओं का पालन करके न केवल शैक्षिक बल्कि सामाजिक, नैतिक और मानसिक विकास को भी प्रोत्साहित कर सकते हैं। इन विषयों के माध्यम से आप उन्हें न केवल ज्ञान देंगे बल्कि उन्हें स्वतंत्र सोचने और आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए भी प्रेरित करेंगे।

प्रश्नोत्तर–
प्रश्न 1. अप्रत्याशित विषयों पर लेखन से क्या अभिप्राय है?
उत्तर- ऐसे विषय जिसकी आपने कभी आशा भी न की हो उस पर लेखन कार्य करना ही अप्रत्याशित विषयों पर लेखन कहलाता है। अप्रत्याशित विषयों पर लेखन कम समय में अपने विचारों को संकलित कर उन्हें सुंदर और शुगर ढंग से अभिव्यक्त करने की चुनौती है।

प्रश्न 2.अप्रत्याशित विषय पर लेखन में कौन-कौन सी बातों का ध्यान रखना चाहिए?
उत्तर –अप्रत्याशित विषय पर लेखन में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए-
1. विवेचन के सुसंबद्ध होने के साथ-साथ उसका सुसंगत होना भीअच्छे लेखन की एक खासियत है।
2. आपकी कही गई बातें न सिर्फ़ आपस में जुड़ी हुई हों, बल्कि उनमें तालमेल भी हो।
3. अगर आपकी दो बातें आपस में ही एक-दूसरे का खंडन करती हों, तो यह लेखन का ही नहीं, किसी भी तरह की अभिव्यक्ति का एक दोष है।

प्रश्न 3. अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के विषय क्या हो सकते हैं?
उत्तर- यह विषय कुछ भी हो सकते हैं जैसे दीवाल घड़ी, बारिश में बिन छतरी, तीन घंटे का अकेलापन, दिव्य शक्तियां और मैं, धारावाहिकों में स्त्री, समुद्र किनारे आप और आपकी यादें इत्यादि।

प्रश्न 4. अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के क्या नियम हैं ?
उत्तर- अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के निम्नलिखित नियम हैं-
- हम इसमें 'मैं' शैली का प्रयोग कर सकते हैं।
- विविध कोणों से विषय पर विचार करना।
- विवरण और विवेचन से संबंध और सुसंगत होना चाहिए।
- भाषा की शुद्धता पर विशेष ध्यान रखना चाहिए।

प्रश्न 5. अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के क्या लाभ हैं ?

उत्तर –अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के निम्नलिखित लाभ हैं-

- अप्रत्याशित विषय आपकी मौलिक रचना होती है।
- इसमें आप अपने विचारों को किसी तर्क विचार के माध्यम से पुष्ट करने की कोशिश करते हैं।
- इससे लेखन कौशल में विकास होता है।
- इससे भाषा पर अच्छी पकड़ होती है।
- अप्रत्याशित विषयों पर लेखन कम समय में अपने विचारों को संकलित करने सुंदर और शुगर ढंग से अभिव्यक्त करने की चुनौती है।

अप्रत्याशित विषयों पर लेखन

1. विषय: पर्यावरण संरक्षण में युवाओं की भूमिका

प्रस्तावना:

वर्तमान समय में पर्यावरण संरक्षण मानवता के सामने सबसे बड़ी चुनौती बन चुका है। जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, वायु प्रदूषण, प्लास्टिक कचरा और जल संकट जैसी समस्याएँ आज वैश्विक चिंता का विषय बन गई हैं। ऐसे में युवाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

युवा वर्ग में जोश, नवीन सोच, तकनीकी ज्ञान और परिवर्तन लाने की शक्ति होती है। यदि यह वर्ग पर्यावरण की रक्षा के लिए जागरूक हो जाए, तो एक बड़ा परिवर्तन संभव है।

मुख्य बिंदु:

बढ़ते प्रदूषण की समस्या:

औद्योगीकरण, वाहनों की वृद्धि और अत्यधिक प्लास्टिक उपयोग के कारण वायु, जल और भूमि प्रदूषण में तेजी आई है। इसके कारण न केवल मानव जीवन संकट में है, बल्कि जीव-जंतु, पेड़-पौधे और जलवायु भी प्रभावित हो रही है। यह स्थिति चिंताजनक है और इसके समाधान में युवाओं की भागीदारी आवश्यक है।

जलवायु परिवर्तन:

ग्लोबल वार्मिंग के कारण मौसम चक्र में असंतुलन देखा जा रहा है। कहीं सूखा, कहीं अतिवृष्टि, तो कहीं तापमान का अत्यधिक बढ़ना-घटना। युवा वर्ग विभिन्न मंचों पर इस मुद्दे को उठा सकते हैं, जागरूकता फैला सकते हैं और हरित जीवन शैली को अपनाकर समाज को प्रेरित कर सकते हैं।

स्कूलों और कॉलेजों में पर्यावरण क्लब:

शैक्षणिक संस्थानों में पर्यावरण क्लबों का गठन किया गया है, जो वृक्षारोपण, सफाई अभियान, प्लास्टिक मुक्त परिसर और जागरूकता रैलियों जैसे कार्यों में लगे रहते हैं। ये क्लब युवाओं को प्रकृति से जोड़ते हैं और उन्हें सामाजिक उत्तरदायित्व निभाने का अवसर प्रदान करते हैं।

व्यक्तिगत व सामाजिक प्रयास:

युवा अपनी दिनचर्या में छोटे-छोटे परिवर्तन लाकर पर्यावरण की रक्षा कर सकते हैं – जैसे साइकिल चलाना, सिंगल यूज़ प्लास्टिक का त्याग, ऊर्जा और पानी की बचत, डिजिटल माध्यमों का उपयोग आदि। सोशल मीडिया का प्रयोग भी जागरूकता फैलाने के लिए किया जा सकता है।

निष्कर्ष:

पर्यावरण को बचाने का कार्य किसी एक व्यक्ति या संस्था का नहीं है, यह हम सभी का साझा उत्तरदायित्व है। लेकिन युवा वर्ग इसमें अग्रणी भूमिका निभा सकता है क्योंकि उनमें परिवर्तन लाने की ऊर्जा और नवीन सोच होती है।

यदि आज के युवा जागरूक होकर पर्यावरण की रक्षा करें, तो आने वाली पीढ़ियाँ एक स्वच्छ, सुरक्षित और संतुलित पृथ्वी पर जी पाएंगी।

2. विषय: आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) का भविष्य पर प्रभाव

प्रस्तावना:

आज हम एक ऐसे दौर में जी रहे हैं जहाँ मशीनें सोचने, निर्णय लेने और मनुष्यों की तरह काम करने लगी हैं। इसे ही आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) कहते हैं। AI ने विज्ञान, शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा और संचार के क्षेत्र में क्रांति ला दी है। आने वाले वर्षों में इसका प्रभाव और भी गहरा होगा। यह विषय अब सिर्फ तकनीकी नहीं, बल्कि सामाजिक, नैतिक और आर्थिक रूप से भी महत्वपूर्ण बन चुका है।

मुख्य बिंदु:

रोजगार पर प्रभाव:

AI के कारण कई पारंपरिक नौकरियाँ समाप्त हो सकती हैं, जैसे डाटा एंट्री, कस्टमर सर्विस, निर्माण कार्य आदि। वहीं दूसरी ओर, नई प्रकार की नौकरियाँ और कौशल की आवश्यकता भी बढ़ेगी। युवाओं को नई तकनीकी क्षमताओं से लैस होना पड़ेगा।

शिक्षा और चिकित्सा में उपयोग:

AI आधारित रोबोट और सॉफ्टवेयर अब चिकित्सा निदान कर रहे हैं, ऑनलाइन क्लासेस को स्मार्ट बना रहे हैं और विशेष जरूरत वाले छात्रों के लिए अनुकूलन कर रहे हैं। इससे शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं की गुणवत्ता में सुधार हो रहा है।

नैतिक व सामाजिक चिंताएँ:

AI के साथ कुछ गंभीर चिंताएँ भी जुड़ी हैं, जैसे निजता का उल्लंघन, मशीनों पर अत्यधिक निर्भरता, भेदभावपूर्ण एल्गोरिद्म, और मानवता की भूमिका का कम हो जाना।
कई विशेषज्ञ यह भी चेतावनी देते हैं कि कहीं मशीनें भविष्य में मनुष्य के लिए चुनौती न बन जाएँ।

तकनीक बनाम मानवीय संवेदना:

AI में भावना, संवेदना, करुणा जैसी मानवीय विशेषताएँ नहीं होतीं। शिक्षा, न्याय और चिकित्सा जैसे क्षेत्रों में सिर्फ तकनीकी दक्षता पर्याप्त नहीं होती, वहाँ मानवीय स्पर्श भी जरूरी है। यह संतुलन बनाए रखना भविष्य की सबसे बड़ी चुनौती होगी।

निष्कर्ष:

AI निश्चित रूप से मानव सभ्यता की एक महान उपलब्धि है, परंतु इसका उपयोग विवेकपूर्ण और नियंत्रित होना चाहिए। हमें तकनीक को मानवता के हित में उपयोग करने का मार्ग अपनाना होगा। यदि सही दिशा में विकसित किया जाए, तो AI भविष्य का एक शक्तिशाली, सहायक और उपयोगी उपकरण बन सकता है.

3. प्रकृति से दूर होता हमारा जीवन

आजकल हम अपने जीवन में जिस तेजी से आधुनिकता की ओर बढ़ रहे हैं, उसका एक बुरा असर हमारे प्राकृतिक परिवेश पर भी पड़ रहा है। पहले जहाँ लोग प्रकृति के साथ घुलमिलकर रहते थे, वहीं आजकल की तकनीकी और शहरी जीवनशैली ने हमें उस सौंदर्य और शांति से दूर कर दिया है जो प्राकृतिक वातावरण में होती है।
प्रकृति से हमारा यह दूर होता हुआ रिश्ता अनेक समस्याओं का कारण बन चुका है। बढ़ती हुई जनसंख्या, शहरीकरण, औद्योगिकीकरण और वन्यजीवों के प्राकृतिक आवासों में कटौती, इन सभी कारणों ने प्रकृति और मानवता के बीच की खाई को और गहरा कर दिया है।

प्रकृति से संबंध का महत्त्व

प्रकृति मानव जीवन का अभिन्न हिस्सा रही है। यह न केवल हमें शारीरिक और मानसिक शांति प्रदान करती है, बल्कि हमारी जीवनशैली को संतुलित रखने में भी मदद करती है। हरियाली, स्वच्छ जल, ताजगी और ताजे वायु का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। इन सभी के बिना जीवन में नीरसता और तनाव उत्पन्न होता है।

इसके अलावा, प्राकृतिक संसाधनों का उचित उपयोग और उनका संरक्षण हमारे भविष्य के लिए आवश्यक है। यदि हम इन संसाधनों का अत्यधिक दोहन करते रहेंगे, तो आने वाली पीढ़ियों के लिए जीवन जीना कठिन हो जाएगा। प्राकृतिक असंतुलन के कारण कई समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं जैसे की जलवायु परिवर्तन, सूखा, बाढ़, और प्रदूषण।

शहरीकरण और इसके प्रभाव

शहरीकरण ने हमें प्राकृतिक दुनिया से दूर कर दिया है। हम ज्यादा से ज्यादा इमारतों और कंक्रीट की जंगली दुनिया में जी रहे हैं। खुले आकाश, हरियाली और शांत वातावरण की जगह अब ऊँची इमारतें और व्यस्त सड़कों ने ले ली है। इस बदलाव ने न केवल हमारे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को प्रभावित किया है, बल्कि प्राकृतिक संसाधनों का भी भारी नुकसान किया है। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई, जल स्रोतों का प्रदूषण, और प्रदूषण की बढ़ती दर हमें प्राकृतिक आपदाओं का शिकार बना सकती है।

प्रकृति से जुड़ने के उपाय

हालाँकि, इस बदलते हुए परिवेश में भी कुछ उपाय हैं, जिनके द्वारा हम प्रकृति से अपने संबंध को पुनः स्थापित कर सकते हैं।

1. **प्राकृतिक वातावरण में समय बिताना:** हमें अपनी व्यस्त दिनचर्या से समय निकालकर प्रकृति में समय बिताना चाहिए। पार्कों में घूमना, पहाड़ों पर चढ़ना, या समुद्र तट पर समय बिताना हमारे मानसिक स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है।
2. **प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण:** हमें जल, वायु और पृथ्वी के संसाधनों का समुचित उपयोग और संरक्षण करना चाहिए। जल को बचाने के लिए हमें जल पुनर्चक्रण को बढ़ावा देना चाहिए और ऊर्जा की खपत को नियंत्रित करना चाहिए।
3. **पेड़ लगाना:** वृक्षारोपण को बढ़ावा देना और अधिक से अधिक पेड़ लगाना, वातावरण में सुधार करने का एक आसान और प्रभावी तरीका है। यह न केवल प्रदूषण को कम करता है, बल्कि जलवायु परिवर्तन को भी नियंत्रित करता है।
4. **सतत विकास की ओर कदम बढ़ाना:** हमें विकास की दिशा में सतत प्रयास करना चाहिए, ताकि हमारी बढ़ती हुई जरूरतों को पूरा करते हुए हम प्राकृतिक संसाधनों को बचा सकें।

निष्कर्ष

आज के समय में, जब हम आधुनिकता के दुष्परिणामों से जूझ रहे हैं, हमें यह समझने की आवश्यकता है कि हमारे लिए प्रकृति से जुड़ना और इसे बचाना आवश्यक है। यह हमारी और आने वाली पीढ़ियों की भलाई के लिए जरूरी है। प्रकृति से हमारा रिश्ता केवल हमारे अस्तित्व के लिए नहीं, बल्कि समग्र जीवन के संतुलन के लिए महत्वपूर्ण है। हमें प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करना चाहिए ताकि हम एक स्वस्थ और सुरक्षित भविष्य की ओर बढ़ सकें।

4.अंतरराष्ट्रीय जगत में भारत का बढ़ता कद

आज के वैश्विक मंच पर भारत का प्रभाव पहले की तुलना में कहीं अधिक बढ़ चुका है। भारतीय अर्थव्यवस्था की ताकत, सशक्त विदेश नीति, तकनीकी प्रगति, और सांस्कृतिक धरोहर ने इसे दुनिया में एक महत्वपूर्ण स्थान दिलाया है। भारत अब केवल एक क्षेत्रीय शक्ति नहीं, बल्कि एक वैश्विक ताकत के रूप में उभर कर सामने आया है। आइए जानते हैं कि भारत का बढ़ता हुआ कद अंतरराष्ट्रीय जगत में किस प्रकार दिख रहा है।

1. वैश्विक आर्थिक शक्ति के रूप में भारत

भारत की अर्थव्यवस्था पिछले कुछ दशकों में तेजी से विकसित हुई है। विश्व बैंक और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) जैसे संस्थाएं भारत को दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक मानती हैं। भारतीय बाजार अब निवेशकों के लिए एक आकर्षक गंतव्य बन चुका है, खासकर तकनीकी और डिजिटल क्षेत्रों में।

भारत की जीडीपी अब 3 ट्रिलियन डॉलर से अधिक है और यह दुनिया की छठी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। इसके अलावा, भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में "मेक इन इंडिया" जैसे कार्यक्रमों ने विदेशी निवेशकों को आकर्षित किया है, जिससे भारत के उत्पादन क्षेत्र में भी वृद्धि हो रही है।

2. विदेश नीति और कूटनीतिक ताकत

भारत की विदेश नीति ने भी पिछले कुछ वर्षों में एक महत्वपूर्ण मोड़ लिया है। भारत ने अपनी कूटनीतिक पहुंच को बढ़ाया है और अब यह क्षेत्रीय और वैश्विक मंचों पर प्रमुख भूमिका निभाता है। भारत ने कई अंतरराष्ट्रीय संगठनों जैसे

संयुक्त राष्ट्र, G20, BRICS (ब्राजील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका) और SCO (शंघाई सहयोग संगठन) में अपनी उपस्थिति को मजबूती दी है।
भारत ने अमेरिका, रूस, जापान और यूरोपीय देशों के साथ अपने संबंधों को मजबूत किया है। विशेष रूप से "QUAD" (क्वाड) जैसे संगठनों के जरिए भारत ने हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव का मुकाबला करने में अपनी भूमिका को सशक्त किया है। इसके अलावा, भारत और अमेरिका के बीच रक्षा और रणनीतिक संबंध भी मजबूत हुए हैं, जिससे भारत की अंतरराष्ट्रीय कूटनीतिक स्थिति और भी सशक्त हुई है।

3. तकनीकी प्रगति और डिजिटल भारत
भारत ने तकनीकी क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण प्रगति की है। भारत की सूचना प्रौद्योगिकी (IT) और सॉफ़्टवेयर सेवाएं विश्व भर में प्रसिद्ध हैं। भारतीय कंपनियाँ जैसे TCS, Infosys, और Wipro वैश्विक स्तर पर प्रमुख टेक कंपनियां बन चुकी हैं। इसके अलावा, भारत का "स्टार्टअप इकोसिस्टम" भी तेजी से विकसित हो रहा है, जिसमें दिल्ली, बेंगलुरु और हैदराबाद जैसे शहर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तकनीकी नवाचार के केंद्र बन गए हैं।
"डिजिटल इंडिया" के तहत भारत में इंटरनेट और डिजिटल सेवाओं का विस्तार हुआ है, जिससे देश के दूरदराज इलाकों में भी लोग वैश्विक डिजिटल दुनिया से जुड़ने में सक्षम हो रहे हैं। इसका प्रभाव सिर्फ भारत की आंतरिक स्थिति पर ही नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर भी पड़ा है, क्योंकि भारत अब एक प्रमुख डिजिटल खिलाड़ी के रूप में उभरकर सामने आया है।

4. सांस्कृतिक प्रभाव और सॉफ्ट पावर
भारत की संस्कृति, कला, फिल्म उद्योग (बॉलीवुड), योग, और पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियाँ जैसे आयुर्वेद ने भी दुनिया भर में भारत का नाम रोशन किया है। बॉलीवुड फिल्मों ने वैश्विक स्तर पर एक बड़ा दर्शक वर्ग प्राप्त किया है, और भारतीय कला और संगीत में भी वैश्विक पहचान बनी है।
योग, आयुर्वेद और भारतीय दर्शन ने दुनियाभर में लोगों के बीच भारत की सॉफ़्ट पावर को बढ़ाया है। भारत में आयोजित होने वाले अंतरराष्ट्रीय योग दिवस जैसे कार्यक्रम ने दुनिया में भारतीय संस्कृति को एक नई पहचान दी है।

5. वैश्विक चुनौतियों में भारत का योगदान
भारत ने वैश्विक चुनौतियों का सामना करते हुए अपने कद को साबित किया है। जलवायु परिवर्तन, वैश्विक महामारी (COVID-19), और गरीबी उन्मूलन जैसे मुद्दों पर भारत ने हमेशा सक्रिय रूप से अपनी भूमिका निभाई है। भारत ने स्वदेशी वैक्सीन "कोवैक्सिन" के निर्माण और वितरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिससे उसे वैश्विक स्तर पर सराहना प्राप्त हुई। इसके अलावा, भारत के नेतृत्व में जलवायु परिवर्तन पर चल रही चर्चाओं में भी भारत की भूमिका महत्वपूर्ण रही है, जहाँ उसने पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास के लिए वैश्विक प्रयासों को प्रोत्साहित किया है।

निष्कर्ष
भारत का बढ़ता हुआ कद अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सिर्फ एक परिणाम नहीं, बल्कि एक प्रक्रिया है। एक तरफ जहां भारत की अर्थव्यवस्था और कूटनीतिक ताकत उसे एक वैश्विक महाशक्ति बना रही है, वहीं दूसरी ओर उसकी संस्कृति, तकनीकी नवाचार और वैश्विक जिम्मेदारियों के प्रति प्रतिबद्धता भी उसे अंतरराष्ट्रीय मंच पर एक महत्वपूर्ण स्थान दिला रही है। यह कहा जा सकता है कि भारत का भविष्य अब केवल एशिया तक सीमित नहीं है, बल्कि पूरी दुनिया में इसके प्रभाव का विस्तार हो रहा है।
इस परिवर्तनशील दुनिया में भारत का यह बढ़ता हुआ कद न केवल भारत के लिए, बल्कि पूरी मानवता के लिए एक सकारात्मक और प्रेरणादायक संकेत है।

5.सुपर बाज़ार की सैर

आज के समय में सुपर बाजार एक ऐसा स्थान बन गया है जहाँ हम न केवल खरीदारी करते हैं, बल्कि यह हमारे सामाजिक जीवन का भी एक हिस्सा बन चुका है। सुपर बाजारों का अस्तित्व शहरों में अत्यधिक बढ़ चुका है, और यह न केवल हमारे दैनिक जीवन के हिस्से बन चुके हैं, बल्कि हमारी खरीदारी की आदतों और जीवनशैली पर भी गहरा प्रभाव डालते हैं।

सुपर बाजार की सैर एक साधारण खरीदारी से कहीं अधिक है। यह एक अनुभव है, एक यात्रा है जो न केवल आवश्यक वस्त्रों और खाद्य सामग्री को खरीदने तक सीमित रहती है, बल्कि यह हमें समय के साथ बदलती उपभोक्ता संस्कृति और आधुनिक जीवनशैली की झलक भी दिखाती है।

1. सजावट और आकर्षक वातावरण

सुपर बाजारों में कदम रखते ही एक अद्भुत वातावरण का अहसास होता है। रंग-बिरंगे उत्पादों के पैकेट, चमकदार एलईडी लाइट्स, और हरियाली से सजे विभिन्न क्षेत्रों के बीच चलने का अनुभव बहुत ही आकर्षक होता है। प्रत्येक उत्पाद और विक्रेता अपने-आप में एक छोटी सी दुनिया की तरह प्रतीत होते हैं।

इसके अलावा, अब कई सुपर बाजारों में एक विशेष सेक्शन होता है जहां ताजे फल, सब्जियाँ, और विशेष खाद्य सामग्री रखी जाती हैं। इन खंडों में ताजगी और खुशबू का अनोखा अनुभव होता है, जो न केवल हमारी स्वादबोध को उत्तेजित करता है, बल्कि मानसिक शांति का भी एहसास कराता है।

2. आधुनिक जीवनशैली का प्रतिबिंब

सुपर बाजारों में वस्त्र, उपहार, इलेक्ट्रॉनिक सामान, ब्यूटी प्रोडक्ट्स, और खाने-पीने की चीजों के विशाल चयन को देखकर यह महसूस होता है कि आज का उपभोक्ता अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए एक ही स्थान पर सारा सामान ढूंढ सकता है। पहले जहाँ हम विभिन्न दुकानों से खरीदारी करते थे, वहीं अब सुपर बाजार में हमें सब कुछ एक जगह मिल जाता है।

इससे यह भी पता चलता है कि आज के समाज में लोग समय की बचत को प्राथमिकता देते हैं और उसी के हिसाब से खरीदारी की आदतें बदल रही हैं। सुपर बाजार ने एक तरह से खरीदारी को तेज, आसान और सुविधाजनक बना दिया है।

3. परिवार के साथ बिताया गया समय

सुपर बाजारों की सैर का एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह परिवार के साथ समय बिताने का एक बेहतरीन अवसर होता है। यहाँ पर बड़े-बच्चे, युवा, और बुजुर्ग सभी मिलकर अपनी जरूरत की चीजों की खरीदारी करते हैं। यह अनुभव एक परिवार के लिए अपने-आप में एक छोटी सी सैर जैसी होती है, जहाँ वे सामान तो खरीदते ही हैं, साथ ही एक-दूसरे के साथ समय भी बिता सकते हैं। बच्चों के लिए, सुपर बाजार एक रोमांचक स्थान बन जाता है, जहाँ उन्हें नए-नए उत्पाद देखने और स्वादिष्ट चीजें खरीदने का मौका मिलता है।

4. विभिन्न उत्पादों और ब्रांड्स का चयन

एक और खास बात यह है कि सुपर बाजार में एक ही उत्पाद के कई ब्रांड्स होते हैं, जिससे उपभोक्ता को विविधता का विकल्प मिलता है। अब कोई भी व्यक्ति अपनी पसंद और बजट के हिसाब से उत्पादों का चयन कर सकता है। ब्रांड्स की प्रतिस्पर्धा ने न केवल उत्पादों की गुणवत्ता को बेहतर किया है, बल्कि कीमतों में भी संतुलन लाया है।

यहाँ मिलने वाली सेल्स, डिस्काउंट्स और ऑफर्स उपभोक्ताओं को अतिरिक्त लाभ देते हैं, जिससे उन्हें खरीदारी करने में और भी मजा आता है। इसके अलावा, सुपर बाजार में अब "आर्गेनिक" और "हेल्दी" उत्पादों की भी बढ़ती मांग को देखते हुए इनकी उपलब्धता बढ़ी है।

5. सामाजिक दृष्टिकोण और अनुभव

सुपर बाजार केवल एक शॉपिंग डेस्टिनेशन ही नहीं, बल्कि एक सामाजिक स्थल भी बन गए हैं। यहाँ हम न केवल खरीदारी करते हैं, बल्कि अन्य लोगों से मिलते हैं, उनके साथ बातचीत करते हैं, और कभी-कभी खुद को भी समाज का हिस्सा महसूस करते हैं। कई बार सुपर बाजारों में कुछ विशेष आयोजन होते हैं जैसे कि स्वादिष्ट खाद्य स्टॉल्स, नए उत्पादों का प्रदर्शन, या हेल्थ चेकअप कैंप्स, जो हमारे समाज के सामाजिक स्वास्थ्य और जागरूकता को बढ़ावा देते हैं।

6. भविष्य की दिशा

आधुनिक तकनीकी परिवर्तनों के कारण, सुपर बाजारों में भी डिजिटल परिवर्तन हो रहा है। अब ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरह से खरीदारी करना आसान हो गया है। सुपर बाजारों ने ऑनलाइन खरीदारी के प्लेटफार्म को अपनाया है, जिससे ग्राहक घर बैठे भी अपनी पसंदीदा वस्तुएं मंगवा सकते हैं। इसके अलावा, कुछ सुपर बाजारों में

एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) और रोबोटिक्स का उपयोग भी हो रहा है, जिससे खरीदारी और भी आसान और तेज हो रही है।

निष्कर्ष

सुपर बाजार की सैर अब केवल एक खरीदारी का अनुभव नहीं, बल्कि एक सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधि बन चुकी है। यह हमारे जीवन के एक महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में उभरा है, जो न केवल हमें उपभोग की आदतें सिखाता है, बल्कि यह हमें सामूहिक जीवन का भी एहसास कराता है। आने वाले समय में, सुपर बाजारों के और भी विकास की संभावना है, जो हमें खरीदारी के तरीके और अनुभव में और भी नई दिशा दे सकता है।

अप्रत्याशित लेखन के अन्य महत्त्वपूर्ण विषय-

1- जल है तो कल है
2- मेरे जीवन में परिवार का महत्त्व
3- लोकतंत्र पर गलत सूचना का प्रभाव
4- बढ़ती जनसंख्या : घटते संसाधन
5- नारी सशक्तिकरण
6- जल-संरक्षण
7- वर्षा का एक दिन और विद्यालय
8- सोशल मीडिया और विद्यार्थी
9- कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन
10- एक कामकाजी औरत की शाम
11- सावन की पहली झड़ी
12- निराशा में डूबते बच्चे
13- एक ऐसी घटना, जिससे आपको जीवन का अमूल्य सबक मिला हो
14- अपने मित्र की किसी एक अच्छी आदत का वर्णन
15 -अपने माता-पिता से आपकी आशाएँ

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र, सत्र-2025-26 (सेट-1)

विषय-हिन्दी आधार (302)

कक्षा-बारहवीं

निर्धारित समय-3 घंटे **अधिकतम अंक-80**

सामान्य निर्देश:

इस प्रश्न-पत्र में तीन खंड हैं – खंड-'क', 'ख' और खंड 'ग'

खंड 'क' में **अपठित बोध** पर आधारित प्रश्न पूछे गए हैं।**सभी** प्रश्नों के उत्तर देना **अनिवार्य** है।

खंड 'ख' में **अभिव्यक्ति और माध्यम** पुस्तक के आधार पर प्रश्नपूछे गए हैं । प्रश्नों के उचित आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।

खंड 'ग' में **आरोह भाग-दो** एवं **वितान भाग-दो** पाठ्य पुस्तकों के आधार पर प्रश्न पूछे गए हैं । प्रश्नों के उचित आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।

यथासंभव तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।

	खंड-क (अपठित बोध)	**अंक 18**
प्र.1	**निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर लिखिए-**	**10 अंक**
	मनुष्य शारीरिक कष्ट से ही पीछे हटनेवाला प्राणी नहीं है। मानसिक क्लेश की संभावना से भी बहुत-से कर्मों की ओर प्रवृत्त होने का साहस उसे नहीं होता। जिन बातों से समाज के बीच उपहास, निंदा, अपमान इत्यादि का भय रहता है, उन्हें अच्छी और कल्याणकारिणी समझते हुए भी बहुत से लोग उनसे दूर रहते हैं। प्रत्यक्ष हानि देखते हुए भी कुछ प्रथाओं का अनुसरण बड़े-बड़े समझदार तक, इसीलिए करते चलते हैं कि उनके त्याग से वे बुरे कहे जाएँगे, लोगों में उनका वैसा आदर-सम्मान न रह जाएगा। उनके लिए मान-ग्लानि का कष्ट सब शारीरिक क्लेशों से बढ़कर होता है। जो लोग मान-अपमान का कुछ भी ध्यान न करके, निंदा-स्तुति की कुछ भी परवाह न करके किसी प्रचलित प्रथा के विरुद्ध पूर्ण तत्परता और प्रसन्नता के साथ कार्य करने जाते हैं, वे एक ओर तो उत्साही और वीर कहलाते हैं, दूसरी ओर भारी बेहया।किसी शुभ परिणाम पर दृष्टि रखकर निंदा-स्तुति, मान-अपमान आदि की कुछ परवाह न करके प्रचलित प्रथाओं का उल्लंघन करनेवाले वीर या उत्साही कहलाते हैं, यह देखकर बहुत से लोग केवल इस विरुद के लोभ में ही अपनी उछल-कूद दिखाया करते हैं। वे केवल उत्साही या साहसी कहे जाने के लिए ही चली आती हुई प्रथाओं को तोड़ने की धूम मचाया करते हैं। शुभ या अशुभ परिणाम से उन्हें कोई मतलब नहीं; उसकी ओर उनका ध्यान लेश मात्र नहीं होता। यदि किसी प्रिय मित्र के आने का समाचार पाकर हम चुपचाप ज्यों-के-त्यों आनंदित होकर बैठे रह जाएँ या थोड़ा हँस भी दें, तो यह हमारा उत्साह नहीं कहा जाएगा। हमारा उत्साह तभी कहा जाएगा, जब हम अपने मित्र का आगमन सुनते ही उठ खड़े होंगे, उससे मिलने के लिए दौड़ पड़ेंगे और उसके ठहरने आदि के प्रबंध में प्रसन्न-मुख इधर-उधर आते-जाते दिखाई देंगे। प्रयत्न और कर्म-संकल्प उत्साह नामक आनंद के नित्य लक्षण हैं।	
क	(i)लोग अच्छी और कल्याणकारी बातों से भी क्यों दूर रहते हैं? (A) वे उन्हें कठिन समझते हैं(B) वे आलसी होते हैं (C) सामाजिक उपहास व निन्दा के भय से (D)उन्हेंउनमेंरुचिनहींहोती	1
	(ii)निम्नलिखित कथन और कारण पर विचार करते हुए सही विकल्प का चुनाव करें कथन : शारीरिक क्लेश मानसिक क्लेश से अधिक दुखदायी होता है। कारण : सामाजिक अपमान मानसिक क्लेश का कारण होता है। (A) कथन ठीक है, कारण गलत है (B) कथन सही नहीं है, कारण सही है (C) कथन व कारण दोनों सही हैं परंतु कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता है	1

	(D)कथन और कारण दोनों सही हैं परंतु कारण, कथन की सही व्याख्या करता है	
	(iii)कुछ लोग प्रथाओं को तोड़ने का दिखावा क्यों करते हैं? (A)क्योंकि वे सच्चे सुधारक होते हैं (B)क्योंकि वे प्रसिद्ध होना चाहते हैं (C) क्योंकि वे अनपढ़ होते हैं (D) क्योंकि वे डरपोक होते हैं	1
ख	मनुष्य किससे पीछे हटने वाला प्राणी नहीं है?	1
ग	(i)जो लोग किसी प्रचलित प्रथा के विरुद्ध पूर्ण तत्परता और प्रसन्नता के साथ कार्य करते हैं, वे समाज में क्या कहलाते हैं? और क्यों ?	2
	(ii)शारीरिक कष्टों से बढ़कर कौनसा कष्ट होता है? स्पष्ट करें I	2
	(iii)आनंद के नित्य लक्षण क्या-क्या होते हैं? व्याख्या करें I	2
प्र.2	**निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर लिखिए -**	**8 अंक**
	ये अनजान नदी की नावें, जादू जैसे उनके पाल, उड़ती आतीं, मंथर चाल। नीलम की किरणोंकी साँझी, एक न डोरी,एक न माँझी, फिर भी लाद निरंतर लातीं- सिंदूर और प्रवाल! कुछ समीप की,कुछ सुदूर की, कुछ चंदन की, कुछ कपूर की, कुछ में गेरू, कुछ में रेशम, कुछ में केवल जाल।	
क	(i)कवि ने अनजान नदी की नावें किसे कहा है? (A)साँझ के बादल (B) साँझ की बिजली (C) साँझ के पक्षी (D) साँझ को लौटते चौपाये	1
	(ii) 'मंथर चाल' से आने का क्या तात्पर्य है? (A)धीरे-धीरे आना (B) तेज गति से आना (C)चुपचाप आना (D)शोर करते हुए आना	1
	(iii)निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए – (I)नदी की नावें धीरे-धीरे तैरती हुई आती सी प्रतीत होती हैं। (II) नदी की नावें पानी की लहरों को माना गया है। (III) नदी की नावें हवा में तैरते बादलों को माना गया है। (IV)कुछ नावें भरी हुई हैं तथा कुछ खाली हैं। (A)केवल कथन (I) सही है। (B) केवल कथन (I) तथा (III) सही हैं। (C)केवल कथन (I), (III) तथा (IV) सही हैं। (D)केवल कथन (I), (II) तथा (IV) सही हैं।	1
ख	'नीलम पर किरणों की साँझी' से कवि का क्या अर्थ है?	1
ग	(i)जादू जैसे उनके पाल का क्या आशय है ? नदी की नावों में क्या भरा हुआ था ?	2
	(ii)काव्यांश के अनुसार अनजान नदी की नावों की क्या विशेषताएँ हैं ?	2
	खंड ख	
प्र.3	**निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए-** (i)समुद्र तट पर एक दिन की सैर (ii)बाढ़ के डरावने दृश्य (iii)मित्रों के साथ स्टेडियम में मैच देखने का आनंद	**6x1=6**

<table>
<tr><td>प्र.4</td><td>निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए-</td><td>2x4=8</td></tr>
<tr><td>(i)</td><td>कहानी का नाट्य-रूपांतरण करते समय दृश्य विभाजन किस प्रकार किया जाता है ?</td><td></td></tr>
<tr><td>(ii)</td><td>नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के लिए पहले उसकी रूपरेखा स्पष्ट क्यों होनी चाहिए?</td><td></td></tr>
<tr><td>(iii)</td><td>विशेष लेखन को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिएI</td><td></td></tr>
<tr><td>(iv)</td><td>रेडियो के लिए समाचार लेखन की बुनियादी बातें कौन-कौनसी हैं ?</td><td></td></tr>
<tr><td>(v)</td><td>मुद्रित माध्यम से क्या अभिप्राय है ? सोदाहरण स्पष्ट करें I</td><td></td></tr>
<tr><td>प्र.5</td><td>निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए-</td><td>4x2=8</td></tr>
<tr><td>(i)</td><td>पत्रकारीय लेखन की परिभाषा लिखिए। पत्रकारों के प्रकारों को स्पष्ट कीजिए।</td><td></td></tr>
<tr><td>(ii)</td><td>टेलीविजन समाचारों के प्रस्तुतीकरण के विभिन्न चरणों पर प्रकाश डालिए।</td><td></td></tr>
<tr><td>(iii)</td><td>समाचार लेखन की उलटा पिरामिड शैली पर टिप्पणी कीजिए।</td><td></td></tr>
<tr><td></td><td>खंड 'ग'</td><td></td></tr>
<tr><td>प्र.6</td><td>निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर लिखिए-</td><td>1x5=5</td></tr>
<tr><td></td><td>रुद्ध कोष हैं, क्षुब्ध तोष
अंगना अंग से लिपटे भी–
आतंक अंक पर काँप रहे हैं
धनी! गर्जन से बादल–वज्र,
त्रस्त नयन मुखढाँप रहे हैं-।
जीर्ण बाहु है शीर्ण शरीर,
तुझे बुलाता कृषक अधीर,
ऐ विप्लव के वीर !
चूस लिया है उसका सार
हाड़मात्र ही हैं आधार–, ऐ जीवन के पारावार !</td><td></td></tr>
<tr><td>(i)</td><td>इस काव्यांश में किसके डरने की बात हो रही है?
(A) निर्धनों की(B) धनिकों की(C) कवियों (D) वीरों की</td><td></td></tr>
<tr><td>(ii)</td><td>कविता के अनुसार बादल को कौन आमंत्रित करता है?
(A) कवि (B) किसान(C) धनी (D) उपरोक्त सभी</td><td></td></tr>
<tr><td>(iii)</td><td>कॉलम-I को कॉलम-II से सुमेलितकीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए –
<table>
<tr><th>कॉलम 1</th><th>कॉलम 2</th></tr>
<tr><td>A रुद्ध</td><td>1 कमजोर</td></tr>
<tr><td>B क्षुब्ध</td><td>2 खिन्न</td></tr>
<tr><td>C जीर्ण</td><td>3 एकत्रित/रुका हुआ</td></tr>
</table>
विकल्प :
(A) A (1), B (2), C (3)(B)A (3), B (1), C (2)
(C)A (2), B (1), C (3)(D) A (3), B (2), C (1)</td><td></td></tr>
<tr><td>(iv)</td><td>कथन और कारणको पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए:
कथन: काव्यांश में अत्यधिक शोषण के कारण किसानों की दयनीय स्थिति को चित्रित किया गया है।
कारण: शोषण के कारण किसान का शरीर कृश हो गया है।
(A) कथनसही है, कारणगलत है
(B) कथनगलत है, कारणसही है।
(C) कथनतथा कारणदोनों सही हैं,कारण, कथनकी सही व्याख्या करता है।
(D)कथनतथा कारणदोनों सही हैं,कारणकथनकी सही व्याख्यानहीं करता है।</td><td></td></tr>
<tr><td>(v)</td><td>कविता में कवि किसे न्याय दिलाना चाहता है?
(A) बादलों को (B) सर्वहारा और शोषित वर्ग को
(C) अल्पसंख्यक वर्ग को(D) धनी तथा निर्धन वर्ग को</td><td></td></tr>
</table>

प्र.7	**निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए तीन में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए-**	**3 x2=6**
(i)	शायर राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कहकर क्या भाव व्यंजित करना चाहता है?	
(ii)	कैमरे में बंद अपाहिज करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है – विचार कीजिए।	
(iii)	जहाँ पर दाना रहते हैं, वहीं नादान भी होते हैं – कवि ने ऐसा क्यों कहा है? 'आत्मपरिचय' कविता के आधार पर लिखें।	
प्र.8	**निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए तीन में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए-**	**2 x2=4**
(i)	'उषा' कविता के आधार पर सूर्योदय से ठीक पहले के प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन कीजिए।	
(ii)	'छोटा मेरा खेत' कविता में कवि ने कविता को रस का अक्षय पात्र क्यों कहा है?	
(iii)	'लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम-विलाप' कविता में राम ने लक्ष्मण के किन गुणों का वर्णन किया है?	
प्र.9	**निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए -**	**1x5=5**
	रात्रि की विभीषिका को सिर्फ पहलवान की ढोलक ही ललकारकर चुनौती देती रहती थी। पहलवान संध्या से सुबह तक, चाहे जिस ख़याल से ढोलक बजाता हो, किन्तु गाँव के अर्द्धमृत, औषधि-उपचार-पथ्य-विहीन प्राणियों में वह संजीवनी शक्ति ही भरती थी। बूढ़े-बच्चे-जवानों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य नाचने लगता था। स्पंदन–शक्ति–शून्य स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी। अवश्य ही ढोलक की आवाज में न तो बुखार हटाने का कोई गुण था और न ही महामारी की सर्वनाश शक्ति को रोकने की शक्ति ही थी, पर इसमें संदेह नहीं कि मरते हुए प्राणियों को आँख मूँदते समय कोई तकलीफ नहीं होती थी, मृत्यु से वे डरते नहीं थे। जिस दिन पहलवान के दोनों बेटे क्रूर काल की चपेटाघात में पड़े, असह्य वेदना से छटपटाते हुए दोनों ने कहा था- "बाबा! उठा पटक दो, वाला ताल बजाओ!" 'चटाक-चट-धा, 'चटाक-चट-धा' सारी रात ढोलक पीटता रहा पहलवान। बीच-बीच में पहलवानों की भाषा में उत्साहित भी करता था। -"मारो बहादुर!" प्रातःकाल उसने देखा- उसके दोनों बच्चे जमीन पर निस्पंद पड़े हैं। दोनों पेट के बल पड़े हुए थे। एक ने दाँत से थोड़ी मिट्टी खोद ली थी। एक लंबी साँस ले पहलवान ने मुसकुराने की चेष्टा की थी- "दोंनो बहादुर गिर पड़े"	
(i)	रात्रि की विभीषिका को कौन चुनौती देता था? (A) चंद्रमा की रोशनी (B) राजा के सैनिक (C) पहलवान की ढोलक (D) पहलवान के शिष्य	
(ii)	महामारी के समय पहलवान द्वारा ढोलक बजाने से क्या होता था- (A) स्पंदन–शक्ति–शून्य स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी (B)पहलवान को अच्छा लगता था (C) लोगों का मनोरंजन होता था (D) ढोलक से बीमारों का इलाज किया जाता था	
(iii)	स्पंदन–शक्ति–शून्य स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी- का आशय था? (A) लोगों का मनोरंजन होता था (B) पहलवान को अच्छा लगता था (C) लोगों को मरते वक्त ज्यादा तकलीफ नहीं होती थी (D) ढोलक से बीमारों का इलाज किया जाता था	
(iv)	"उठापटकदोवालातालबजाओ!"यहकथनकिसकाहैऔरकिसकेप्रतिहै? (A) पहलवान का राजा के प्रति (B) पहलवान का गाँव वालों के प्रति (C) पहलवान का अपने बेटों के प्रति (D) पहलवान के बेटों का पहलवान के प्रति	
(v)	निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए –	

	(I) पहलवान की ढोलक में बीमारी दूर करने की कोई शक्ति नहीं थी। (II)पहलवान के दोनों बेटे भी महामारी के कारण मर गए थे। (III)पहलवान दिन-रात ढोलक बजाता था। (IV)'पहलवान की ढोलक' पाठ के लेखक धर्मवीर भारती जी हैं। (A) केवल कथन (I) सही है। (B) केवल कथन (I), (II) तथा (IV) सही हैं (C) केवल कथन (I) तथा (II) सही हैं। (D) केवल कथन (I), (II), (III) तथा (IV) सही हैं	
प्र.10	**निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए तीन में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए-**	**3x2=6**
(i)	बाजार का जादू चढ़ने और उतरने पर मनुष्य पर क्या-क्या असर पड़ता है? 'बाजार-दर्शन' पाठ के आधार पर लिखिए।	
(ii)	भक्तिन अच्छी है ,यह कहना कठिन होगा ,क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं। लेखिका ने ऐसा क्यों कहा होगा ?	
(iii)	आदर्शसमाजकीक्या-क्याविशेषताएँहोतीहैं?-"मेरीकल्पनाकाआदर्शसमाज"-अंशकेआधारपरलिखिए।	
प्र.11	**निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए तीन में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए-**	**2X2=4**
(i)	द्विवेदी जी ने शिरीष को कालजयी अवधूत(संन्यासी) की तरह क्यों कहा है ?	
(ii)	इंदर सेना पर पानी फेंके जाने को जीजी ने किस प्रकार सही ठहराया? 'काले मेघा पानी दे' पाठ के आधार पर बताइए।	
(iii)	'श्रम विभाजन और जाति प्रथा' पाठ के आधार पर श्रम विभाजन और श्रमिक-विभाजन का अंतर स्पष्ट कीजिए।	
प्र.12	**निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए तीन में से किन्हीं दो के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए-**	**5X2=10**
(i)	सिल्वर वैडिंग कहानी के आधार पर उन जीवन मूल्यों की सोदाहरण समीक्षा कीजिए जो समय के साथ बदल रहें हैं ?	
(ii)	जूझ कहानी प्रतिकूल परिस्थितियों से संघर्ष की प्रेरक कथा है – पुष्टि कीजिए।	
(iii)	कला की दृष्टि से हड़प्पा सभ्यता समृद्ध थी- पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिएI	

कक्षा-बारहवीं
अंकयोजना व उत्तर संकेत

समय-3 घंटे **पूर्णांक-80**

	खंड-क	अंक
प्र.1	**निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए वैकल्पिक प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**	**10 अंक**
(i)	(C) सामाजिक उपहास व निन्दा के भय से	1
(ii)	(D)कथन और कारण दोनों सही हैं परंतु कारण, कथन की सही व्याख्या करता है	1
(iii)	(B)क्योंकि वे प्रसिद्ध होना चाहते हैं	1
(iv)	शारीरिक कष्ट से	1
(v)	उत्साही और वीर कहलाते हैं क्योंकि वह निस्वार्थ भाव से कार्य में जुटे रहते है I	2
(vi)	मानसिक कष्ट, क्योंकि मन शांत ना होने से मनुष्य कार्य कुशलता की ओर अग्रसर नहीं हो पता I	2
(vii)	प्रयत्नशील, व्यवहार कुशलता, कर्मनिष्ठ, कर्म-संकल्प और उत्साह नामक गुण आनंद के नित्य लक्षण हैं।	2
प्र.2	**पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर -**	**8 अंक**
(i)	(A)साँझ के बादल	1
(ii)	(A)धीरे-धीरे आना	1
(iii)	(C)केवल कथन (I), (III) तथा (IV) सही हैं।	1
(iv)	नीलम पर किरणों की साँझी से कवि का अर्थ नीले आकाश में सूरज की किरणों का अठखेलियाँ करने से है I	1
(v)	जादू जैसे उनके पालसे कवि का आशय बादल से बनने वाली आकर्षक छवियों से हैं तथा नदी की नावों में सिंदूर और प्रवाल से भरा हुआ था I	2
(vi)	कवि के अनुसार अनजान नदी की नावों की विशेषता यह है कि यह तरह -तरह की नावें है I कुछ नावें सुदूर की, कुछ चंदन की ,कुछ कपूर की, कुछ में गेरू, कुछ में रेशम,कुछ में केवल जाल की जो दृष्टि को भ्रमित करके बाँधने का कार्य कर रही हैंI	**2**
	खंड 'ख'	
प्र.3	**निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 120 शब्दों में रचनात्मक लेख -**	**6x1=6**
	शिक्षक स्वविवेकानुसार अंक प्रदान करें आरम्भ- 1 अंक , विषय-वस्तु –3 अंक , भाषा- 1 अंक , प्रस्तुति - 1 अंक	
प्र.4	**पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उतर लगभग 40 शब्दों में -**	**2x4= 8**
(i)	कहानी का नाट्य-रूपांतरण करतेसमय दृश्य विभाजन इस प्रकार किया जाता है– 1. कहानी की कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित करके दृश्य बनाए जाते हैं। 2.प्रत्येक दृश्य कथानक के अनुसार होना चाहिए। 3.एक स्थान और समय पर घट रही घटना को एक दृश्य में लिया जाता है।	
(ii)	नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन से पहले उसकी रूपरेखा स्पष्ट कर लेनी चाहिए क्योंकि हमें अपनी बात को सुसंबद्ध और सुसंगत रूप से प्रस्तुत करना होता है। यदि हम एक अच्छी शुरुआत करते हैं तो उसी सुंदरता से बात को सिलसिलेवार तरीके से आगे बढ़ाना होता है ।इससे परस्पर विरोधी बातें भी नहीं आएगी।	
(iii)	किसी विषय पर सामान्य लेखन से हटकर किया जाने वाला लेख ,विशेष लेखन कहलाता है I अखबारों के लिए समाचार के अतिरिक्त खेल, राजनीति, फिल्म जगत, आर्थिक, कृषि, व्यापार, कानून आदि विभिन्न क्षेत्रों संबंधित लेखन विशेष लेखन के अंतर्गत आते हैं I विशेष लेखन की भाषा शैली विशेष होती है I	
(iv)	रेडियो के लिए समाचार कॉपी तैयार करते हुए कुछ बुनियादी बातें-	

	साफ सुथरी और टाइप कॉपी होनी चाहिए I एक लाइन में अधिकतम 12- 13 शब्द होने चाहिए I संदर्भ और संक्षिप्त अक्षर का प्रयोग आवश्यक है I	
(v)	छपाई वाले जनसंचार माध्यम मुद्रित माध्यम हैं। मुद्रित माध्यम जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे पुराना माध्यम है I मुद्रित माध्यम के तहत अखबार पत्रिकाएं पुस्तक आदि हैं I मुद्रित माध्यम की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें छपे हुए शब्दों में स्थायित्व होता है I	
प्र.5	**दो प्रश्नोंके उतर लगभग 80 शब्दों में -**	**4x2= 8**
(i)	**पत्रकारीयलेखन**- समाचारमाध्यमों में काम करने वालेपत्रकार अपनेपाठकोंतथा श्रोताओं तक सूचनाएँ पहुँचानेके लिए लेखन केविभिन्न रूपों काइस्तेमाल करते हैं, इसे ही पत्रकारीय लेखन कहते हैं। **पत्रकार के प्रकार**---पत्रकार तीन प्रकार केहोते हैं।1.पूर्ण कालिक 2. अंशकालिक (स्ट्रिंगर) 3.फ्रीलांसर या स्वतंत्रपत्रकार ।(विवरण के साथ उत्तर अपेक्षित)	
(ii)	**टी०वी० खबरों के विभिन्न चरण:** (1) फ़्लैश या ब्रेकिंग न्यूज (2) ड्राई एंकर (3) फ़ोन इन (4) एंकर-विजुअल (5) एंकर-बाइट (6) लाइव (7) एंकर-पैकेज ।(विवरण के साथ उत्तर अपेक्षित)	
(iii)	अखबारों में प्रकाशित अधिकांश समाचार एक खास शैली में लिखे जाते हैं इन समाचार में किसी भी घटना समस्या विचार के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य जानकारी को सबसे पहले पैराग्राफ में लिखा जाता है I उसके बाद उससे कम महत्वपूर्ण सूचना या तथ्य की जानकारी दी जाती है I यह प्रक्रिया तब तक जारी रहती है तब तक समाचार खत्म नहीं हो जाता I यह समाचार लेखन की सबसे लोकप्रिय उपयोगी और बुनियादी शैली है I इसमें क्लाइमैक्स बिल्कुल आखिर में आता हैI	
	खंड 'ग'	
प्र.6	**काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर -**	**1x5=5**
(i)	(B) धनिकों की	
(ii)	(B) किसान	
(iii)	(D) A (3), B (2), C (1)	
(iv)	(C) कथनतथा कारणदोनों सही हैं,कारण, कथनकी सही व्याख्या करता है।	
(v)	(B) सर्वहारा और शोषित वर्ग को	
प्र.7	**तीन में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में-**	**3 x2=6**
(i)	शायर राखी के लच्छे को बिजली कीचमक की तरह कहकर यह भाव व्यंजित करना चाहता है कि रक्षाबंधन सावन के महीने मेंआता है। इस समय आकाश में घटाएँ छाई होती हैं तथा उनमें बिजली भी चमकती है। राखीके लच्छे बिजली कौंधने की तरह चमकते हैं। बिजली की चमक सत्य को उद्घाटित करती हैतथा राखी के लच्छे रिश्तों की पवित्रता को व्यक्त करते हैं। घटा का जो संबंधबिजली से है, वही संबंध भाई का बहन से है।	
(ii)	दूरदर्शन पर एक अपाहिज का साक्षात्कार,व्यावसायिकउद्देश्योंकोपूराकरनेकेलिएदिखायाजाताहै।दूरदर्शनपरएकअपाहिजव्यक्तिकोप्रदर्शनकी वस्तुमानकरउसकेमनकीपीड़ाकोकुरेदाजाताहै,साक्षात्कारकर्ताकोउसकेनिजीसुखदुखसेकुछलेना-देनानहींहोताहै।यहाँपरकविकेकहनेकातात्पर्ययहहैकिदूरदर्शनपरदिखाएजानेवालेइसप्रकारकेअधिकतरकार्यक्रमकेवलसंवेदनशीलताकादिखावाकरतेहैं।वास्तवमेंवेअपाहिजव्यक्तिकीदुखभरीभावनाओंकोबेचतेहैं।	
(iii)	इस पंक्ति के दो अर्थ हैं। दाना का अर्थ है रोजी रोटी। जहाँ पर आजीविका होती है नादान लोग वहीं पर रहते हैं। दूसरे अर्थ में दाना का अर्थ ज्ञान है। जहाँ लोग ज्ञानी हैं वहीं वे अज्ञानी भी होते हैं। एक व्यक्ति अधिक से अधिक एक-दो विषयों का ज्ञाता हो सकता जबकि अन्य विषयों के बारे में वह अनभिज्ञ रहता है। इसलिए कवि ने कहा है जहाँ पर दाना रहते हैं, वहीं पर नादान भी होते हैं।	

प्र.8	**तीन में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में-**	**2 x2=4**
(i)	कवि सूर्योदय से पहले के दृश्य का चित्रण सुबह का आकाश ऐसा लगता है मानो नीला शंख हो उसकी नीलिमा और पवित्रता के कारण नभ की तुलना शंख से की गयी है। गीला चौका स्वच्छ होता है उसी तरह सुबह का आकाश भी स्वच्छ होता है। सूर्योदय से पहले आकाश स्लेट पर खड़िया चाक मल दिया गया हो। स्वच्छ नीले जल में गौर वर्ण वाली देह झिलमिला रही हो।	
(ii)	'छोटा मेरा खेत' कविता में कवि बताता है कि जब एक बार कविता लिखी जाती है तो उसका रस हमेशा के लिए बना रहता है, कभी समाप्त नहीं होता। उस कविता को चाहे कितनी बार पढ़ लें और उसका रस ले लें। उस कविता का रस चाहे कितने ही लोग लें परंतु वह रस कभी समाप्त नहीं होता।	
(iii)	लक्ष्मण राम से बहुत स्नेह करते हैं। उन्होंने भाई के लिए अपने माता–पिता का भी त्याग कर दिया। वे वन में वर्षा, हिम, धूप आदि कष्टों को सहन कर रहे हैं। उनका स्वभाव बहुत मृदुल है। वे भाई के दुःख को नहीं देख सकते।	
प्र.9	**गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर -**	**1x5=5**
(i)	(C) पहलवान की ढोलक	
(ii)	(A) स्पंदन–शक्ति–शून्य स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी	
(iii)	(C) लोगों को मरते वक्त ज्यादा तकलीफ नहीं होती थी	
(iv)	(D) पहलवान के बेटों का पहलवान के प्रति	
(v)	(C) केवल कथन (I) तथा (II) सही हैं।	
प्र.10	**तीन में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में-**	**3x2= 6**
(i)	बाजार का जादू चढ़ने पर मनुष्य बाजार के आकर्षक चीजों के वश में हो जाता है। वह लालच में आकर अनावश्यक चीजों को खरीदता चला जाता है। बाजार का जादू उतरने पर मनुष्य को पता चलता है कि फैंसी चीजों की बहुतायत आराम में मदद नहीं देती है, बल्कि खलल ही डालती हैं।	
(ii)	लेखिका को भक्तिन के निम्नलिखित कार्य दुर्गुण लगते हैं – 1. वह लेखिका के इधर-उधर पड़े पैसे-रुपये भंडार-घर की मटकी में छिपा देती है। 2. वह लेखिका को प्रसन्न रखने के लिए बात को इधर-उधर घुमाकर बताती है। वह इसे झूठ नहीं मानती। 3. शास्त्र की बातों को भी वह अपनी सुविधानुसार सुलझा लेती है। वह किसी भी तर्क को नहीं मानती। 4. वह दूसरों को अपने अनुसार ढालना चाहती है, परंतु स्वयं में कोई परिवर्तन नहीं करती।	
(iii)	डॉ० भीमराव आंबेडकर की कल्पना की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं – उनका यह आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता व भ्रातृता पर आधारित होगा। उस समाज में गतिशीलता होनी चाहिए जिससे कोई भी वांछित परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे तक संचारित हो सके।ऐसे समाज के बहुविधि हितों में सबका भाग होगा तथा सबको उनकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए। सामाजिक जीवन में अबाध संपर्क के अनेक साधन व अवसर उपलब्ध रहने चाहिए।	
प्र.11	**तीन में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में-**	**2X2= 4**
(i)	लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत कहा है। अवधूत वह संन्यासी होता है जो विषय-वासनाओं से ऊपर उठ जाता है, सुख-दुख हर स्थिति में सहज भाव से प्रसन्न रहता है तथा फलता-फूलता है। वह कठिन परिस्थितियों	

	में भी जीवन-रस बनाए रखता है। इसी तरह शिरीष का वृक्ष है। वह भयंकर गरमी, उमस, लू आदि के बीच सरस रहता है। उमस और लू में जीवन की अजेयता का मंत्र प्रचार करता रहता है।	
(ii)	i.पानी का अर्घ्य- कुछ पाने के लिए कुछ चढावा देना पडता है। इंद्र को पानी का अर्घ्य चढ़ाने से वे वर्षा करेंगे। ii. त्याग की भावना से दान-जिस वस्तु की अधिक जरूरत है उसके दान से फल मिलता है। iii. पानी की बुवाई- पानी को गलियों में बीज की तरह बोएँगे तब जाकर ही पानी की फसल (वर्षा) लहलहाएगी।	
(iii)	श्रम विभाजन का अर्थ होता है काम का बाँटना। यह विभाजन व्यक्ति की व्यक्तिगत योग्यताओं और रुचियों पर आधारित होता है। इसमें व्यक्ति के वंश या जाति पर ध्यान नहीं दिया जाता। दूसरी तरफ श्रमिक विभाजन का अर्थ होता है श्रमिकों को बाँटना। यह विभाजन जाति पर आधारित होता है। इसमें व्यक्ति का पेशा जन्म से पहले ही निर्धारित कर दिया जाता है। व्यक्ति अपनी जाति के अनुसार कार्य करने के लिए बाध्य होता है।	
प्र.12	**तीन में से किन्हीं दो के लगभग 60 शब्दों में उत्तर-**	**5X2=10**
(i)	कहानी की कथावस्तु के अनुसार यशोधर बाबू और उनके बच्चों की सोच में पीढ़ी का अंतराल आ गया है I यशोधर बाबू संस्कारों से जुड़े रहना चाहते हैं और संयुक्त परिवार के संवेदनाओं को अनुभव करते हैं जबकि उनके बच्चे अपने आप में जीना चाहते हैं इसलिए जरुरत इस बात की है कि यशोधर बाबू को अपने बच्चों की सकारात्मक नयी सोच का स्वागत करते रहना चाहिए परंतु यह भी अनिवार्य है कि आधुनिक पीढ़ी की जीवन मूल्यों के प्रति उदासीनता संवेदनाओं और भावनाओं को खत्म करते हैं I	
(ii)	“जूझ”उपन्यासआनंदयादवद्वारारचितबहुचर्चित आत्मकथात्मक उपन्यासहैI वे कथा नायक के संघर्षपूर्ण जीवन गाथा का वर्णन करते हैं I “जूझ”शब्दकाअर्थहोताहैसंघर्ष।कथानायककाजोचरित्रपाठमेंदर्शायागयाहैउसमेंउनकीपाठशालाजानेकीप्रबलइच्छाशक्तिऔरइच्छापूर्तिकेलिएसंघर्षगाथाहैI संपूर्ण उपन्यास कथानायक के संघर्ष को रेखांकित करता है।	
(iii)	उनकी वास्तुकला वनगर नियोजन सुन्दर था।वह पत्थर व धातु की सुंदर मूर्तियाँ बनाते थे।उनके खिलौने व आभूषण सुन्दर थे।उनके मृदभांड (मिट्टी के बर्तन) सुन्दर थे जिनमें वनस्पतियों व पशु-पक्षियों के चित्र होते थे।उनकी मुहरें, लिपि व केश - विन्यास सुन्दर थे।उनकी काशीदाकारी व गुलकारी सुन्दर थी।इस प्रकार यह स्पष्ट है कि सिंधु सभ्यता कला संपन्न थी I	

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र,सत्र-2025-26 (सेट-2)
विषय-हिन्दी केन्द्रिक (302)
कक्षा : XII

अधिकतम अंक : 80 **समय : 3 घंटे**

सामान्य निर्देश-
- इस प्रश्नपत्र में तीन खंड हैं – खंड ‘क’, ‘ख’ तथा खंड-‘ग’।
- खंड'क’ में **अपठित बोध** पर आधारित प्रश्न पूछे गए हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर देने अनिवार्य हैं।
- खंड‘ख’ में **अभिव्यक्ति और माध्यम** पाठ्यपुस्तक के आधार पर प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों के उचित आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- खंड ‘ग’ में **आरोह भाग -2** एवं **वितान भाग- 2** पाठ्यपुस्तकों के आधार पर प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों के उचित आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।

	खंड-‘क’	
प्रश्न संख्या	**अपठित बोध**	**अंक (18)**

<table>
<tr><td>प्रश्न-1</td><td>निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए बहुविकल्पीय (03 प्रश्न), अतिलघूत्तरात्मक (01 प्रश्न) तथा लघूत्तरात्मक प्रश्नों (03 प्रश्न) के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर लिखिए।</td><td>10 अंक</td></tr>
<tr><td></td><td>शिक्षा जीवन के सर्वांगीण विकास हेतु अनिवार्य है। शिक्षा के बिना मनुष्य विवेकशील और शिष्ट नहीं बन सकता। विवेक से मनुष्य में सही और गलत का चयन करने की क्षमता उत्पन्न होती है। विवेक से ही मनुष्य के भीतर उसके चारों ओर घटते घटनाक्रमों के प्रति एक उचित दृष्टिकोण उत्पन्न होता है। शिक्षा ही मानव-को-मानव के प्रति मानवीय भावनाओं से पोषित करती है।

शिक्षा से मनुष्य अपने परिवेश के प्रति जागृत होकर कर्त्तव्याभिमुख हो जाता है। 'स्व' से 'पर' की ओर अग्रसर होने लगता है। निर्बल की सहायता करना, दुखियों के दुःख दूर करने का प्रयास करना, दूसरों के दुःख से दुःखी हो जाना और दूसरों के सुख से स्वयं सुख का अनुभव करना जैसी बातें एक शिक्षित मानव में सरलता से देखने को मिल जाती हैं। इतिहास, साहित्य, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, दर्शनशास्त्र इत्यादि पढ़कर विद्यार्थी विद्वान् ही नहीं बनता, वरन् उसमें एक विशिष्ट जीवन दृष्टि, रचनात्मकता और परिपक्वता का सृजन भी होता है। शिक्षित सामाजिक परिवेश में व्यक्ति अशिक्षित सामाजिक परिवेश की तुलना में सदैव ही उच्च स्तर पर जीवन-यापन करता है।

आज के आधुनिक युग में शिक्षा का अर्थ बदल रहा है। शिक्षा भौतिक आकांक्षा की पूर्ति का साधन बनती जा रही है। व्यावसायिक शिक्षा के अंधानुकरण से छात्र सैद्धांतिक शिक्षा से दूर होते जा रहे हैं , जिसके कारण रूस की क्रांति, फ्रांस की क्रांति, अमेरिकी क्रांति, समाजवाद, पूँजीवाद, राजनीतिक व्यवस्था, सांस्कृतिक मूल्यों आदि की सामान्य जानकारी भी व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों को नहीं है।

यह शिक्षा का विशुद्ध रोजगारोन्मुखी रूप है। शिक्षा के प्रति इस प्रकार का संकुचित दृष्टिकोण अपनाकर विवेकशील नागरिकों का निर्माण नहीं किया जा सकता। भारत जैसे विकासशील देश में शिक्षा रोजगार का साधन न होकर साध्य हो गई है। इस कुप्रवृत्ति पर अंकुश लगाना आवश्यक है। जहां मानविकी के छात्रों को पत्रकारिता, साहित्य-सृजन , विज्ञापन, जनसंपर्क इत्यादि कोर्स भी कराए जाने चाहिए, ताकि उन्हें रोजगार के लिए भटकना न पड़े. वहीं व्यावसायिक कोर्स करने वाले छात्रों को मानविकी के विषय; जैसे-इतिहास, साहित्य, राजनीतिशास्त्र, दर्शन आदि का थोड़ा-बहुत अध्ययन अवश्य करना चाहिए, ताकि समाज को विवेकशील नागरिक प्राप्त होते रहें, तभी समाज में संतुलन बना रह सकेगा।</td><td></td></tr>
<tr><td>क</td><td>(क) एक शिक्षित व्यक्ति में समाज कल्याण हेतु किन बातों का होना आवश्यक है?
(i) निर्बल की सहायता करना
(ii) दूसरों के दुःख से दुःखी हो जाना
(iii) दुःखियों के दुःख दूर करने का प्रयास करना
(iv) उपरोक्त सभी
(ख) 'शिक्षा भौतिक आकांक्षा की पूर्ति का साधन बनती जा रही है' पंक्ति का क्या आशय है?
(i) व्यावसायिक शिक्षा मनुष्य को सभी सुविधाएँ उपलब्ध कराती है।
(ii) व्यावसायिक शिक्षा वर्तमान में मात्र धन कमाने का साधन बनती जा रही है।
(iii) व्यावसायिक शिक्षा मनुष्य के लक्ष्य प्राप्ति का साधन बन रही है।
(iv) व्यावसायिक शिक्षा मानवीय मूल्यों का विस्तार करने का साधन है।
(ग) व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों को किसकी जानकारी नहीं होती ?
1. राजनीतिक व्यवस्था
2. सांस्कृतिक मूल्यों की
3. सामाजिक इतिहास की
कूट
(1) केवल कथन 1
(ii) केवल कथन 2
(iii) कथन 1 और 2</td><td>01*03=
03 अंक</td></tr>
</table>

	(iv) कथन 1, 2 और 3	
ख	व्यावसायिक कोर्स करने वाले छात्रों को किसका अध्ययन अवश्य करना चाहिए ?	01*01= 01 अंक
ग	(1) स्व से पर की ओर अग्रसर होने से क्या तात्पर्य है? (2) शिक्षा का विशुद्ध रोजगारोन्मुखी रूप क्या है? (3) विद्यार्थी में रचनात्मकता और परिपक्वता का सृजन कैसे होता है?	02*03= 06 अंक
प्रश्न-2	**दिए गए पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए-**	**08 अंक**
	निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल। बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय को सूल।। पढ़े संस्कृत जतन करि, पंडित भे विख्यात। पै निज भाषा ज्ञान बिन, कहि न सकत इक बात।। अंग्रेजी पढ़ कै जदपि, सब गुन होत प्रबीन। पै निज भाषा ज्ञान बिन रहत हीन के हीन।। एक भाषा इक जीव मति सब घर के लोग। तबै बनत है सबन सों, मिटत मूढ़ता सोग।। और एक अति लाभ यह यामें प्रगट लखात। निज भाषा में कीजिए, जो विद्या की बात।।	
क	(क) मूर्खता और शोक का शमन करने की विशिष्टता से युक्त कौन होता है ? (i) ज्ञानी जन (ii) अज्ञानी जन (iii) अपनी भाषा (iv) अंग्रेजी भाषा (ख) कवि द्वारा निज भाषा में विद्या की बात को महत्व देने का क्या कारण हो सकता है ? (i) अन्य भाषा का बहिष्कार करना (ii) अपनी भाषा में संप्रेषण की सुगमता अधिक होती है। (i) अपनी भाषा को विश्व की सर्वश्रेष्ठ भाषा सिद्ध करना (iv) कठिन विषय अन्य भाषा में जल्दी समझ आता है (ग) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए। 1. मातृभाषा के ज्ञान के बिना मनुष्य अज्ञानी रहता है 2. मातृभाषा के ज्ञान से व्यक्ति की उन्नति संभव नहीं है 3. मातृभाषा के ज्ञान से शीघ्र विद्या प्राप्त हो जाती है कूट (i)केवल कथन 1 (ii) केवल कथन 2 (iii) कथन 1 और 3 (iv) कथन 3 और 2	01*03= 03 अंक
ख	संस्कृत पढ़ने वालों को कवि ने क्या माना है ?	01*01= 01 अंक
ग	(i) कवि ने अपनी भाषा की उन्नति के लिए क्या कहा है? (ii) अंग्रेजी पढ़ कै जदपि, सब गुण होत प्रबीनका तात्पर्य है?	02*02= 04 अंक

प्रश्न संख्या	**खंड-'ख' (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर)** **पाठ संख्या 3, 4, 5, 11, 12, तथा 13 पर आधारित**	22 अंक
प्रश्न-3	**दिए गए 03 अप्रत्याशित विषयों में से किसी 01 विषय पर आधारित लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए।** (क) एक ऐसी घटना, जिससे आपको जीवन का अमूल्य सबक मिला हो (ख) अपने मित्र की किसी एक बुरी आदत का वर्णन (ग) अपने माता-पिता से आपकी आशाएँ	6×1 = 6
प्रश्न-4	**निम्नलिखित 05 प्रश्नों में से किन्हीं 04 प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखें।** (i) जनसंचार का कौन-सा आधुनिक माध्यम सबसे पुराना है? इसकी शुरुआत कैसे हुई ? (ii) संपादकीय लेख किसे कहते हैं? (iii) विशेष रिपोर्टिंग तथा विशेषीकृत रिपोर्टिंग में क्या अंतर बताइए। (iv) नाट्य रूपांतरण करते समय कौन-कौन सी समस्याएँ आती हैं? (v) पूर्ण एवं अंशकालिक पत्रकार को स्पष्ट कीजिए।	02*04= 08 अंक
प्रश्न-5	**निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखें।** (क) रेडियो नाटकों का लेखन व संवादों का महत्व बताइए। अथवा ' मैली हो गई गंगा ' पर फीचर लिखिए। (ख) समाचार लेखन में इंट्रो किसे कहते हैं ? इंट्रो लिखते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ? अथवा टीवी खबरों के विभिन्न चरण के बारे में समझाइए।	04*02= 08 अंक
प्रश्न संख्या	**खंड 'ग' (आरोह भाग-2 एवं वितान भाग-2 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर)**	40 अंक
प्रश्न-6	**निम्नलिखितकाव्यांशको ध्यानपूर्वकपढ़कर उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए-** जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिबर कर हीना॥ अस मम जिवन बंधु बिनु तोही। जौं जड़ दैव जिआवै मोही॥ जैहउँ अवध कवन मुहुँ लाई। नारि हेतु प्रिय भाई गँवाई॥ बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं। नारि हानि बिसेष छति नाहीं॥ (1) भाई के बिना जीवन की तुलना किससे की गई है ? (i) पंखों के बिना पक्षी से (ii) सुंड के बिना हाथी से (iii) मणि के बिना साँप से (iv) ये सभी (2) राम किसकी तुलना में अपने भाई को अधिक महत्त्व दे रहे हैं? (i) धन की (ii) पत्नी की (iii) राज्य की (iv) पुत्र की (3) राम को लक्ष्मण के बिना अयोध्या जाने में क्या सहना पड़ेगा ? (i) विषाद (ii) ग्लानि (iii) आमोद (ii) कटु वचन (4) निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए।	5×1 = 5

	कथन (A)-श्री राम संसार में अपने इस अपयश से अधिक दुखी हैं, कि राम ने स्त्री के मोह में अपने भाई को दाँव पर लगा दिया। कारण (R) भाई के वियोग जैसे दुख से बढ़कर स्त्री की हानि जैसा दुःख भी नहीं है। (i) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है। (ii) कथन (A) गलत है. कारण (R) सही है। (iii) कथन (A) और कारण (R) दोनी सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है। (iv) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही है तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है। (5) ' नारि हानि बिसेष छति नाहीं ' पंक्ति में कौन-सा भाव व्यक्त हुआ है? (i) भाई के वियोग से उत्पन्न कष्ट का (ii) भातृप्रेम की समाप्ति का (iii) पत्नी के वियोग से उत्पन्न कष्ट का (iv) हर्ष का	
प्रश्न-7	**काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखितप्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए-** (i)दिन जल्दी-जल्दी ढलता है, में पक्षी तो लौटने को विकल है, पर कवि में उत्साह नहीं है। ऐसा क्यों? (ii)'कैमरे में बंद अपाहिज' में निहित क्रूरता को उजागर कीजिए। (iii)'कवितावली' के आधार पर पुष्टि कीजिए कि तुलसी को अपने समय की आर्थिक-सामाजिक समस्याओं की जानकारी थी।	**03*02= 06 अंक**
प्रश्न-8	**काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए-** (i)पतंगों के साथ-साथ वे भी उड़ रहे हैं – बच्चों का उड़ान से कैसा संबंध बनता है? (ii)बादल राग' कविता में कवि ने अट्टालिकाओं को आतंक-भवन क्यों कहा गया है? (iii)'शमशेर की कविता उषा गाँव की सुबह का जीवंत चित्रण है।'-पुष्टि कीजिए।	**02*02= 04 अंक**
प्रश्न-9	**निम्नलिखित पठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए-** फिर जीजी बोली, "देख, तू तो अभी से पढ़-लिख गया है। मैंने तो गाँव के मदरसे का भी मुँह नहीं देखा। पर एक बात देखी है कि अगर तीस-चालीस मन गेहूँ उगाना है तो किसान पाँच-छह सेर अच्छा गेहूँ अपने पास से लेकर ज़मीन में क्यारियाँ बना कर फेंक देता है। उसे बुवाई कहते हैं। यह जो सूखे में हम अपने घर का पानी इन पर फेंकते हैं; वह भी बुवाई है। यह पानी गली में बोएँगे तो सारे शहर, कस्बा, गाँव पर पानी वाले बादलों की फ़सल आ जाएगी। हम बीज बनाकर पानी देते हैं, फिर काले मेघों से पानी माँगते हैं। सब ऋषि-मुनि कह गए हैं कि पहले खुद दो तब देवता तुम्हें चौगुना-अठगुना करके लौटाएँगे। भइया, यह तो हर आदमी का आचरण है, जिससे सबका आचरण बनता है। यथा राजा तथा प्रजा सिर्फ यही सच नहीं है। सच यह भी है कि यथा प्रजा तथा राजा। यही तो गांधी जी महाराज कहते हैं।" (i) बुवाई के लिए किसान किस प्रकार से श्रम करता है ? (क) ज़मीन की निराई, गुड़ाई करना (ख) हल चलाना व क्यारियाँ बनाना (ग) बीज बोना (घ) उपर्युक्त सभी। (ii) त्याग की महत्ता को किसने बताया था ?	**5×1 = 5**

	(क) ऋषि-मुनियों ने (ख) इंदर सेना ने (ग) लेखक ने (घ) लेखक की जीजी ने (iii) इंदर सेना पर पानी फेंकना जीजी के अनुसार क्या है ? (क) पानी की बर्बादी (ख) पानी की बुवाई (ग) अंधविश्वास (घ) पानी का विसर्जन। (iv) निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए- कथन (A): जीजी ने अपने आचरण संबंधी बात के समर्थन में गांधी जी का नाम लिया। कारण (R): क्योंकि गाँधी-जी सत्य का समर्थन करते थे। (क) कथन (A) सही है तथा कारण (R) गलत है। (ख) कथन (A) गलत है तथा कारण (R) सही है। (ग) कथन (A) सही है तथा कारण (R) कथन की सही व्याख्या करता है। (घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं। (v) गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए- (I) जीजी किसान के उदाहरण द्वारा यह सिद्ध करना चाहती है कि इंदर सेना पर जल समर्पित करना होगा। (II) जीजी किसान के उदाहरण द्वारा यह सिद्ध करना चाहती है कि खेती के लिए हल आवश्यक है। (III) खेती का कार्य वर्षा पर पूरी तरह निर्भर होता है। उपरिलिखित कथनों में से कौन-सा / कौन-से सही है/ हैं? (क) केवल I (ख) केवल II (ग) केवल III (घ) I और III	
प्रश्न-10	**गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखितप्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए-** (i)जीजी ने इंदर सेना पर पानी फेंके जाने को किस तरह सही ठहराया? (ii)"श्रम विभाजन की दृष्टि से भी जाति-प्रथा गंभीर दोषों से युक्त है।" स्पष्ट करें। (iii)लुट्टन पहलवान ने ऐसा क्यों कहा होगा कि मेरा गुरु कोई पहलवान नहीं, यही ढोल है?	**03*02= 06 अंक**
प्रश्न-11	**गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखितप्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए-** (i)भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती कैसे हो गई? (ii)बाज़ार का जादू क्या है? उसके चढ़ने-उतरने का मनुष्य पर क्या प्रभाव पड़ता है? 'बाज़ार दर्शन' पाठ के आधार पर उत्तर लिखिए। (iii)शिरीष को 'अद्भुत अवधूत' क्यों कहा गया है?	**02*02= 04 अंक**
प्रश्न-12	**वितान भाग-2 के पाठों पर आधारित निम्नलिखितप्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए-** (i)यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती है, लेकिन यशोधर बाबू अतीत में जीता है। ऐसा क्यों? स्पष्ट करें। (ii)जूझ' कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिएकि पढ़ाई-लिखाई के संबंध में लेखक और दत्ताजी राव का रवैया सही था या लेखक के पिता का? तर्क सहित उत्तर दें।	**05*02= 10 अंक**

	(iii)पर्यटक मुअनजो-दड़ो में क्या-क्या देख सकते हैं? 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर वर्णन कीजिए।	

(सेट-2)

कक्षा : XII **अधिकतम अंक : 80**
विषय : हिंदी(आधार) **समय : 3 घंटे**

उत्तरमाला

	खंड-'क'	
प्रश्न संख्या	**अपठितबोध**	**अंक (18)**
प्रश्न-1	**निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए बहुविकल्पीय (03 प्रश्न), अतिलघूत्तरात्मक (01 प्रश्न) तथा लघूत्तरात्मक प्रश्नों (03 प्रश्न) के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर लिखिए।**	**10 अंक**
क	उत्तर:(iv) उपरोक्त सभी उत्तर:(ii) व्यावसायिक शिक्षा वर्तमान में मात्र धन कमाने का साधन बनती जा रही है उत्तर:(iv) कथन 1, 2 और 3	01*03= 03 अंक
ख	व्यावसायिक कोर्स करने वाले छात्रों को मानविकी विषय का अध्ययन अवश्य करना चाहिए।	01*01= 01 अंक
ग	(1) स्व से पर की ओर अग्रसर होने से तात्पर्य है परोपकार करना, निर्बल की सहायता करना, दुखियों के दुःख दूर करने काप्रयास करना, दूसरों के दूःख से दुःखी हो जाना और दूसरों के सुख से स्वयं सुख का अनुभव करना। (2) छात्र व्यावसायिक शिक्षा के अंधानुकरण से छात्र सैद्धांतिक शिक्षा से दूर होते जा रहे हैं, जिसके कारण रूस की क्रांति, अमेरिका क्रांति, समाजवाद, पूँजीवाद, राजनीतिक व्यवस्था, सांस्कृतिक मूल्यों आदि की सामान्य जानकारी भी व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों को नहीं है। यह शिक्षा का विशुद्ध रोजगारोन्मुखी रूप है। (3) विद्यार्थी में रचनात्मकता और परिपक्वता का सृजन इतिहास, साहित्य, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, दर्शनशास्त्र इत्यादि पढ़कर होता है। वह सदैव उच्च स्तर पर जीवनयापन करता है। वह एक विवेकशील नागरिक बनता है।	02*03= 06 अंक
प्रश्न-2	**दिए गए पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए-**	**08 अंक**
क	(क) उत्तर:(iii) अपनी भाषा (ख) उत्तर:(ii) अपनी भाषा में संप्रेषण की सुगमता अधिक होती है (ग) उत्तर:(iii) कथन 1 और 3	01*03= 03 अंक
ख	संस्कृत पढ़ने वालो को कवि ने वाणी विहिन पंडित माना है।	01*01= 01 अंक
ग	(i) कवि ने कहा है कि सब प्रकार की उन्नति का आधार अपनी भाषा (हिंदी) की उन्नति करना है। अपनी भाषा के ज्ञान के बिना हृदय का दुःख दूर नहीं हो सकता है। (ii) अंग्रेजी पढ़ कै जदपि, सब गुण होत प्रवीन का तात्पर्य है अंग्रेजी भाषा के माध्यम से आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की बातें सीखी जा सकती हैं, लेकिन जब तक हमें अपनी मातृभाषा का ज्ञान नहीं होगा हम छोटे ही रहेंगे। हम कभी उन्नति नहीं कर सकते।	02*02= 04 अंक
प्रश्न संख्या	**खंड-'ख' (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर)** **पाठ संख्या 3, 4, 5, 11, 12, तथा 13 पर आधारित**	**22 अंक**

प्रश्न-3	**दिए गए 03 अप्रत्याशित विषयों में से किसी 01 विषय पर आधारित लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए।** **आरंभ – 1 अंक** **विषय वस्तु – 3 अंक** **प्रस्तुति – 1 अंक** **भाषा - 1 अंक**	**6×1 = 6**
प्रश्न-4	**निम्नलिखित 05 प्रश्नों में से किन्हीं 04 प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखें।** (i) जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे पुराना माध्यम प्रिंट अर्थात् मुद्रण माध्यम है। इसकी शुरुआत चीन से हुई थी, परंतु आधुनिक छापेखाने का आविष्कार जर्मनी के गुटेनबर्ग ने किया था। यूरोप में पुनर्जागरण ' रेनेसां की शुरुआत में छापेखाने की एक महत्वपूर्ण भूमिका थी। भारत में पहला छापाखाना 1556 ई. में गोवा में खुला। इसे मिशनरियों ने धर्म प्रचार की पुस्तके छापने के लिए खोला था। (ii) संपादक द्वारा किसी प्रमुख घटना या समस्या पर लिखे गए विचारात्मक लेख को, जिसे संबंधित समाचार-पत्र की राय भी कहा जाता है. संपादकीय कहते हैं। संपादकीय किसी एक व्यक्ति का विचार या राय न होकर समग्र पत्र-समूह की राय होता है, इसलिए संपादकीय में संपादक अथवा लेखक का नाम नहीं लिखा जाता। (iii) 1. बीट रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता में उस क्षेत्र की जानकारीहोना पर्याप्त है, उसे सामान्य तौर पर खबरें ही लिखनी होती है 2.बीट कवर करने वाले रिपोर्टर को संवाददाता कहते हैं। विशेषीकृत रिपोर्टिंग विशेषीकृत रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता को सामान्य खबरों से आगे बढ़कर उस क्षेत्र से जुड़ी सूचनाओं का बारीकी सेविश्लेषण कर पाठकों के लिए उसका अर्थ स्पष्ट करना होता है। विशेषीकृत रिपोर्टिंग करने वाले रिपोर्टर को विशेष संवाददाताकहते हैं। (iv) नाट्य रूपांतरण करते समय अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जो निम्नलिखित हैं (i) सबसे प्रमुख समस्या कहानी के पात्रों के मनोभावों को कहानीकार द्वारा प्रस्तुत प्रसंगों अथवा मानसिक द्वंद्वों के नाटकीय प्रस्तुति मेंआती है। (ii) पात्रों के द्वंद्वों को अभिनय के अनुरूप बनाने में समस्या आती है। (iii) संवादों को नाटकीय रूप प्रदान करने में समस्या आती है। (iv) संगीत, ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था करने में समस्या होती है। (v) कथानक को अभिनय के अनुरूप बनाने में समस्या होती है। (v) (1) पूर्णकालिक पत्रकार यह किसी समाचार संगठन में कार्य करने वाला नियमित वेतनभोगी कर्मचारी होता है।	**02*04= 08 अंक**

	(ii) अंशकालिक पत्रकार इसे 'स्ट्रिंगर ' भी कहते है। यह किसी समाचार संगठन के लिए एक निश्चित मानदेय पर कार्य करता है।	
प्रश्न-5	**निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखें।** उत्तर (क) सिनेमा और रंगमंच की तरह ही रेडियो नाटक में भी चरित्र होते हैं। उनके आपसी संवाद होते हैं और इन्हीं संवादों के माध्यम से कहानी आगे बढ़ती है। रेडियो नाटक पूर्ण रूप से श्रव्य होते हैं, इसलिए इनका लेखन रंगमंच सिनेमा के लेखन की अपेक्षा मुश्किल व अलग होता है। रेडियो नाटक में सब कुछ संवादों व ध्वनि प्रभावों के माध्यम से ही संप्रेषित करना होता है। इन नाटकों में मंच सज्जा, वस्त्र सज्जा, चेहरे की भाव-भंगिमाएँ आदि की जरूरत नहीं पड़ती, केवल संवाद से ही पात्रों के अंतर्द्वंद्व, परिचय व समाधान की जानकारी मिलती है। अतः रेडियो नाटक की सफलता व असफलता केवल 'आवाज़ ' पर ही आश्रित होती है, जैसे-चोट लगने पर 'आह' या 'ओह' की आवाज़ तथा किसी को दूर से बुलाने के लिए तेज आवाज़ का प्रयोग करना होता है। अथवा मैली हो गई गंगा वर्तमान युग में मानव को जहाँ असंख्य वरदान मिले हैं. वहीं कुछ अभिशाप भी मिले हैं या हूँ कहा जाए कि प्रगति की होड़ में मानव ने वरदानों का दुरुपयोग किया है। इसका जीता जागता उदाहरण है जल-प्रदूषण जिस पतित पावनी गंगा में स्नान कर लोग निर्मल होते थे, आज यह गंगा उनके स्नान के योग्य नहीं रह गई है। धार्मिक आस्था के चलते यदि नहा भी लिया जाए तो विभिन्न प्रकार के त्वचा रोग होने की आशंका बनी रहती है। इसका कारण है गंगा का प्रदूषित जल जो कल-कारखानों से निकले अवशिष्ट पदार्थ, हानिकारक रसायन, दूषित जल आदि से प्रदूषित होता है, यह एक ऐसी विकराल समस्या बन गई है, जिसका कोई समाधान नहीं दिखाई देता। शहर भर का टनों कचरा, दूषित पदार्थ, पशुओं की हड्डियाँ, राख, मिट्टी आदि अनेक वस्तुएँ गंगा में प्रवाहित कर दी जाती हैं। परिणामतः प्रदूषण के कारण गंगा का आकार और स्वच्छता दिनों-दिन घटती जा रही है। प्रत्येक वर्ष सरकारी योजनाओं के तहत गंगा स्वच्छीकरण अभियान के नाम पर लाखों-करोड़ों रुपया बाँटा जाता है। संबंधित विभाग उसका ब्यौरा भी पेश करते हैं, परंतु गंगा की हालत जैसी की तैसी बनी हुई है। यदि हम समय पर सचेत नहीं हुए, तो इसके परिणाम भयंकर रूप से सामने आएँगे। हम सबको जागरूक होकर गंगा को मैली होने से बचाने के लिए कृत-संकल्प होना होगा। (ख) इंट्रो (प्रस्तावना) समाचार का पहला अनुच्छेद होता है. जिसमें क्या हुआ? के प्रश्न का उत्तर दिया जा सकता है। यह मुख्य समाचार होता है, जो थोड़े शब्दों में पाठक को बताता है कि 'क्या घटना घटित हुई है?' इंट्रो को 'आमुख', 'मुखड़ा' तथा 'लीड भी कहा जाता है। इंट्रो लिखते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए (i) इंट्रो सारगर्भित, संक्षिप्त तथा ठोस होना चाहिए। (ii) समीक्षकों के अनुसार आमुख (इंट्रो) 30-35 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए। (iii) इसमें किंतु, परंतु, लेकिन जैसे शब्दों से बचना चाहिए, क्योंकि ये शब्द इंट्रो को अव्यवस्थित तथा अयथार्थपरक बना देते हैं। अथवा	**04*02= 08 अंक**

	टीवी, प्रिंट, रेडियो आदि माध्यमों पर खबर देने का मूल आधार सबसे पहले सूचना देना होता है। टीवी द्वारा भी ये सूचनाएँ विभिन्न चरणों द्वारा दर्शकों तक पहुँचती हैं। ये चरण निम्नलिखित है (i) फ़्लैशबैक या ब्रेकिंग न्यूज इसमें कम-से-कम शब्दों में केवल सूचना के रूप में कोई बड़ी खबर तुरंत दर्शकों तक पहुँचाई जाती है। (ii) ड्राई एंकर इसके अंतर्गत एंकर खबर के बारे में दर्शकों को सीधे-सीधे बताता है कि कहाँ, क्या, कब और कैसे हुआ। (iii) फोन-इन इसमें रिपोर्टर घटनास्थल पर उपस्थित होता है और वहाँ से ज्यादा-से-ज्यादा जानकारियाँ दर्शकों को बताता है। (iv) एंकर-विज़ुअल जब घटना के दृश्य या विज़ुअल मिल जाते हैं, तब उन दृश्यों के आधार पर खबर लिखी जाती है, जो एंकर पढ़ता है। (v) एंकर-बाइट बाइट अर्थात् कथन का टेलीविजन पत्रकारिता में बड़ा महत्त्व है। (vi) लाइव किसी खबर का घटनास्थल से सीधा प्रसारण लाइव कहलाता है। (vii) एंकर-पैकेज पैकेज किसी भी खबर को संपूर्णता के साथ प्रस्तुत करने का एक माध्यम है।	
प्रश्न संख्या	**खंड 'ग' (आरोह भाग-2 एवं वितान भाग-2 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर)**	**40 अंक**
प्रश्न-6	**निम्नलिखितकाव्यांशको ध्यानपूर्वकपढ़कर उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के** (1) उत्तर:(iv) ये सभी (2) उत्तर:(ii) पत्नी की (3) उत्तर:(ii) ग्लानि (4) उत्तर:(iv) कथन (A) और कारण (2) दोनों सही है तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है। (5) उत्तर:(i) भाई के वियोग में उत्पन्न कष्ट का	**5×1 = 5**
प्रश्न-7	**काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखितप्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए-** (i)उत्तर:इस कविता में पक्षी अपने घरों में लौटने को विकल है, परंतु कवि में उत्साह नहीं है। इसका कारण यह है कि पक्षियों के बच्चे उनको इंतज़ार कर रहे हैं। कवि अकेला है। उसकी प्रतीक्षा करने वाला कोई नहीं है। इसलिए उसके मन में घर जाने का कोई उत्साह नहीं है (ii)उत्तर:यह कविता मानवीय करुणा तो प्रस्तुत करती ही है साथ ही इस कविता में उन लोगों की बनावटी करुणा का वर्णन भी मिलता है जो दुख दरिद्रता को बेचकर यश प्राप्त करना चाहते हैं। एक अपाहिज व्यक्ति के साथ झूठी सहानुभूति जताकर उसकी करुणा का सौदा करना चाहते हैं। एक अपाहिज की करुणा को पैसे के लिए टी.वी. पर दर्शाना वास्तव में क्रूरता की चरमसीमा है। (iii)उत्तर:'कवितावली' में उद्धृत छंदों के अध्ययन से पता चलता है कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है। उन्होंने समकालीन समाज का यथार्थपरक चित्रण किया है। वे समाज के विभिन्न वर्गों का वर्णन करते हैं जो कई तरह के कार्य करके अपना निर्वाह करते हैं। तुलसी दास तो यहाँ तक बताते हैं कि पेट भरने के लिए लोग गलत-सही सभी कार्य करते हैं। उनके समय में भयंकर गरीबी व बेरोजगारी थी। गरीबी के कारण लोग अपनी संतानों तक को बेच देते थे। बेरोजगारी	**03*02= 06 अंक**

	इतनी अधिक थी कि लोगों को भीख तक नहीं मिलती थी। दरिद्रता रूपी रावण ने हर तरफ हाहाकार मचा रखा था।	
प्रश्न-8	**काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखितप्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए-** (i)उत्तर:जिस तरह पतंग ऊपर और ऊपर उड़ती जाती है, ठीक उसी तरह बच्चों की आशाएँ भी बढ़ती जाती हैं। पतंगों के साथ साथ उनकी भावनाएँ भी उड़ती जाती हैं अर्थात् उनके मन में नई-नई इच्छाएँ और उमंगें आती हैं। वे भी आसमान की अनंत ऊँचाई तक पहुँच जाना चाहते हैं ताकि अपनी हर इच्छा पूरी कर सकें। (ii)उत्तर-'बादल राग' कविता में अट्टालिकाओं को आतंक-भवन इसलिए कहा गया है क्योंकि इन भवनों में शोषण के नए-नए तरीके खोजे जाते हैं। ये ऊँचे-ऊँचे भवन शोषण से लूटी गई संपत्ति के केंद्र होते हैं। (iii)उत्तर:कवि ने गाँव की सुबह का सुंदर चित्रण करने के लिए गतिशील बिंब-योजना की है। भोर के समय आकाश नीले शंख की तरह पवित्र लगता है। उसे राख से लिपे चौके के समान बताया गया है जो सुबह की नमी के कारण गीला लगता है। फिर वह लाल केसर से धोए हुए सिल-सा लगता है। कवि दूसरी उपमा स्लेट पर लाल खड़िया मलने से देता है। ये सारे उपमान ग्रामीण परिवेश से संबंधित हैं। आकाश के नीलेपन में जब सूर्य प्रकट होता है तो ऐसा लगता है जैसे नीले जल में किसी युवती का गोरा शरीर झिलमिला रहा है। सूर्य के उदय होते ही उषा का जादू समाप्त हो जाता है। ये सभी दृश्य एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। इनमें गतिशीलता है।	**02*02= 04 अंक**
प्रश्न-9	**निम्नलिखितपठित गद्यांशको ध्यानपूर्वकपढ़कर उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए-** (i) (घ) उपर्युक्त सभी। (ii) (क) ऋषि-मुनियों ने (iii) (ख) पानी की बुवाई (iv) (ग) कथन (A) सही है तथा कारण (R) कथन की सही व्याख्या करता है। (v) (क) केवल I	**5×1 = 5**
प्रश्न-10	**गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखितप्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए-** (i)उत्तर:यद्यपि लेखक बच्चों की टोली पर पानी फेंके जाने के विरुद्ध था लेकिन उसकी जीजी (दीदी) इस बात को सही मानती है। वह कहती है कि यह अंधविश्वास नहीं है। यदि हम इस सेना को पानी नहीं देंगे तो इंदर हमें कैसे पानी देगा अर्थात् वर्षा करेगा। यदि परमात्मा से कुछ लेना है तो पहले उसे कुछ देना सीखो। तभी परमात्मा खुश होकर मनुष्यों की इच्छाएँ पूरी करता है। (ii)उत्तर:लेखक कहता है कि श्रम विभाजन की दृष्टि से भी जाति-प्रथा दोषों से युक्त है। इस विषय में लेखक निम्नलिखित तर्क देता है – जातिप्रथा का श्रम विभाजन मनुष्य की इच्छा से नहीं होता। मनुष्य की व्यक्तिगत भावना तथा व्यक्तिगत रुचि का इसमें कोई स्थान अथवा महत्त्व नहीं रहता। जातिप्रथा के कारण मनुष्य में दुर्भावना से ग्रस्त रहकर टालू काम करने वे कम काम करने की भावना उत्पन्न होती	**03*02= 06 अंक**

	जातिप्रथा के कारण श्रम विभाजन होने पर निम्न कार्य समझे जाने वाले कार्यों को करने वाले श्रमिक को भी हिंदू समाज घृणित व त्याज्य समझता है। (iii)उत्तर:पहलवान ने ढोल को अपना गुरु माना और एकलव्य की भाँति हमेशा उसी की आज्ञा का अनुकरण करता रहा। ढोल को ही उसने अपने बेटों का गुरु बनाकर शिक्षा दी कि सदा इसको मान देना। ढोल लेकर ही वह राज-दरबार से रुखसत हुआ। ढोल बजा-बजाकर ही उसने अपने अखाड़े में बच्चों-लड़कों को शिक्षा दी, कुश्ती के गुर सिखाए। ढोल से ही उसने गाँव वालों को भीषण दुख में भी संजीवनी शक्ति प्रदान की थी। ढोल के सहारे ही बेटों की मृत्यु का दुख पाँच दिन तक दिलेरी से सहन किया और अंत में वह भी मर गया। यह सब देखकर लगता है कि उसका ढोल उसके जीवन का संबल, जीवन-साथी ही था।	
प्रश्न-11	**गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखितप्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए-** (i)उत्तर:भक्तिन के आ जाने से महादेवी ने लगभग उन सभी संस्कारों को, क्रियाकलापों को अपना लिया जो देहातों में अपनाए जाते हैं। देहाती की हर वस्तु, घटना और वातावरण का प्रभाव महादेवी पर पड़ने लगा। वह भक्तिन से सब कुछ जान लेती थी ताकि किसी बात की जानकारी अधूरी न रह जाए। धोती साफ़ करना, सामान बांधना आदि बातें भक्तिन ने ही सिखाई थी। वैसे देहाती भाषा भी भक्तिन के आने के बाद ही महादेवी बोलने लगी। इन्हीं कारणों से महादेवी देहाती हो गई। (ii)उत्तर:बाजार की चमक-दमक व उसके आकर्षण में फँसकर व्यक्ति खरीददारी करता है तो यही बाजार का जादू है। बाजार का जादू मनुष्य पर तभी चलता है जब उसके पास धन होता है तथा वस्तुएँ खरीदने की निर्णय क्षमता नहीं होती। वह आराम वे अपनी शक्ति दिखाने के लिए निरर्थक चीजें खरीदता है। जब पैसे खत्म हो जाते हैं तब उसे पता चलता है कि आराम के नाम पर जो गैर जरूरी वस्तुएँ उसने खरीदी हैं, वे अशांति उत्पन्न करने वाली है। वह झल्लाता है, परंतु उसका अभिमान उसे तुष्ट करता है। (iii)उत्तर:लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत कहा है। अवधूत वह संन्यासी होता है जो विषय-वासनाओं से ऊपर उठ जाता है, सुख-दुख हर स्थिति में सहज भाव से प्रसन्न रहता है तथा फलता-फूलता है। वह कठिन परिस्थितियों में भी जीवन-रस बनाए रखता है। इसी तरह शिरीष का वृक्ष है। वह भयंकर गरमी, उमस, लू आदि के बीच सरस रहता है। वसंत में वह लहक उठता है तथा भादों मास तक फलता-फूलता रहता है। उसका पूरा शरीर फूलों से लदा रहता है। उमस से प्राण उबलता रहता है और लू से हृदय सूखता रहता है, तब भी शिरीष कालजयी अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता का मंत्र प्रचार करता रहता है, वह काल व समय को जीतकर लहलहाता रहता है।	**02*02= 04 अंक**
प्रश्न - 12	**वितान भाग-2 के पाठों पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए-** (i)यशोधर बाबू बचपन से ही जिम्मेदारियों के बोझ से लद गए थे। बचपन में ही उनके माता-पिता का देहांत हो गया था। उनका पालन-पोषण उनकी विधवा बुआ ने किया। मैट्रिक होने के बाद वे दिल्ली आ गए तथा किशन दा जैसे कुंआरे के पास रहे। इस तरह वे सदैव उन लोगों के साथ रहे जिन्हें कभी परिवार का सुख नहीं मिला। वे सदैव पुराने लोगों के साथ रहे, पले, बढ़े। अत: उन परंपराओं को छोड़ नहीं सकते थे। उन पर किशन दा के सिद्धांतों का बहुत प्रभाव था। इन सब कारणों से यशोधर बाबू समय के साथ बदलने में असफल रहते हैं। दूसरी तरफ, उनकी पत्नी पुराने संस्कारों की थीं। वे एक संयुक्त परिवार में आई थीं जहाँ उन्हें सुखद अनुभव हुआ। उनकी इच्छाएँ अतृप्त रहीं। वे मातृ सुलभ प्रेम के कारण अपनी संतानों का पक्ष लेती हैं और बेटी के अंगु एकपाई पहात हैं। वे बेयों के किसी मामले में दल नाहीं देता। इस प्रकर वे स्वायं को शीघ्र ही बदल लेती है। (ii)पढ़ाई-लिखाई के संबंध में लेखक और दत्ता जी राव का रवैया सही था। लेखक का दृष्टिकोण पढ़ाई के प्रति यथार्थवादी था। उसे पता था कि खेती से गुजारा नहीं होने वाला। पढ़ने से उसे कोई-न-कोई	**05*02= 10 अंक**

	नौकरी अवश्य मिल जाएगी और गरीबी दूर हो जाएगी। वह सोचता भी है-पढ़ जाऊँगा तो नौकरी लग जाएगी, चार पैसे हाथ में रहेंगे, विठोबा आण्णा की तरह कुछ धंधा-कारोबार किया जा सकेगा। दत्ता जी राव का रवैया भी सही है। उन्होंने लेखक के पिता को धमकाया तथा लेखक को पाठशाला भिजवाया। यहाँ तक कि खुद खर्चा उठाने तक की धमकी लेखक के पिता को दी। इसके विपरीत, लेखक के पिता का रवैया एकदम अनुचित था। उसकी यह सोच, 'तेरे ऊपर पढ़ने का भूत सवार हुआ है। मुझे मालूम है बालिस्टर नहीं होने वाला है तू"-एकदम प्रतिगामी था। वह खेती के काम को ज्यादा बढ़िया समझता था तथा स्वयं ऐयाशी करने के लिए बच्चे की खेती में झोंकना चाहता था। (iii)पर्यटक मुअनजो-दड़ो में निम्नलिखित चीजें देख सकते हैं बौद्ध स्तूप – मुअनजो-दड़ो में सबसे ऊँचे चबूतरे पर बड़ा बौद्ध स्तूप है। यह स्तूप मुअनजो-दड़ो के बिखरने के बाद बना था। 25 फुट ऊँचे चबूतरे पर बना है। इसमें भिक्षुओं के रहने के कमरे भी बने हैं। स्नानागार – यहाँ पर 40 फुट लंबा तथा 25 फुट चौड़ा कुंड बना हुआ है। यह सात फुट गहरा है। कुंड के उत्तर और दक्षिण से सीढ़ियाँ उतरती हैं। उत्तर में आठ स्नानागार एक पंक्ति में हैं। इसमें एक तरफ तीन कक्ष हैं। अजायबघर – यहाँ का अजायबघर छोटा ही है। यहाँ काला पड़ गया गेहूँ, ताँबे और काँसे के बर्तन, मुहरें, वाद्य, चाक पर बने विशाल मृद्भांड, दीये, ताँबे का आईना, दो पाटन वाली चक्की आदि रखे हैं।	

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र, सत्र-2025-26 (सेट- 3)

कक्षा : XII **अधिकतम अंक : 80**
विषय : हिंदी आधार **समय : 3 घंटे**

सामान्य निर्देश-
- इस प्रश्नपत्र में तीन खंड हैं – खंड'क', 'ख' तथा खंड-'ग'।
- खंड 'क' में **अपठित बोध** पर आधारित प्रश्न पूछे गए हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर देने होंगे।
- खंड 'ख'में **अभिव्यक्ति और माध्यम** पाठ्यपुस्तक के आधार पर प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों के उचित आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- खंड 'ग' में **आरोह भाग -2** एवं **वितान भाग- 2** पाठ्यपुस्तकों के आधार पर प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों के उचित आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।

	खंड-'क'	
प्रश्न संख्या	**अपठितबोध**	**अंक (18)**
प्रश्न-1	**निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए बहुविकल्पीय (03 प्रश्न), अतिलघूत्तरात्मक (01 प्रश्न) तथा लघूत्तरात्मक प्रश्नों (03 प्रश्न) के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर लिखिए।**	10 अंक
	शिक्षा जीवन के सर्वांगीण विकास हेतु अनिवार्य है। शिक्षा के बिना मनुष्य विवेकशील और शिष्ट नहीं बन सकता। विवेक से मनुष्य में सही और गलत का चयन करने की क्षमता उत्पन्न होती है। विवेक से ही मनुष्य के भीतर उसके चारों ओर घटते घटनाक्रमों के प्रति एक उचित दृष्टिकोण उत्पन्न होता है। शिक्षा ही मानव-को-मानव के प्रति मानवीय भावनाओं से पोषित करती है।	

	शिक्षा से मनुष्य अपने परिवेश के प्रति जाग्रत होकर कर्त्तव्याभिमुख हो जाता है। 'स्व' से 'पर' की ओर अग्रसर होने लगता है। निर्बल की सहायता करना, दुखियों के दुःख दूर करने का प्रयास करना, दूसरों के दुःख से दुःखी हो जाना और दूसरों के सुख से स्वयं सुख का अनुभव करना जैसी बातें एक शिक्षित मानव में सरलता से देखने को मिल जाती हैं। इतिहास, साहित्य, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, दर्शनशास्त्र इत्यादि पढ़कर विद्यार्थी विद्वान् ही नहीं बनता, वरन् उसमें एक विशिष्ट जीवन दृष्टि, रचनात्मकता और परिपक्वता का सृजन भी होता है। शिक्षित सामाजिक परिवेश में व्यक्ति अशिक्षित सामाजिक परिवेश की तुलना में सदैव ही उच्च स्तर पर जीवन-यापन करता है। आज के आधुनिक युग में शिक्षा का अर्थ बदल रहा है। शिक्षा भौतिक आकांक्षा की पूर्ति का साधन बनती जा रही है। व्यावसायिक शिक्षा के अंधानुकरण से छात्र सैद्धांतिक शिक्षा से दूर होते जा रहे हैं , जिसके कारण रूस की क्रांति, फ्रांस की क्रांति, अमेरिकी क्रांति, समाजवाद, पूँजीवाद, राजनीतिक व्यवस्था, सांस्कृतिक मूल्यों आदि की सामान्य जानकारी भी व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों को नहीं है। यह शिक्षा का विशुद्ध रोजगारोन्मुखी रूप है। शिक्षा के प्रति इस प्रकार का संकुचित दृष्टिकोण अपनाकर विवेकशील नागरिकों का निर्माण नहीं किया जा सकता। भारत जैसे विकासशील देश में शिक्षा रोजगार का साधन न होकर साध्य हो गई है। इस कुप्रवृत्ति पर अंकुश लगाना आवश्यक है। जहां मानविकी के छात्रों को पत्रकारिता, साहित्य-सृजन , विज्ञापन, जनसंपर्क इत्यादि कोर्स भी कराए जाने चाहिए, ताकि उन्हें रोजगार के लिए भटकना न पड़े. वहीं व्यावसायिक कोर्स करने वाले छात्रों को मानविकी के विषय; जैसे-इतिहास, साहित्य, राजनीतिशास्त्र, दर्शन आदि का थोड़ा-बहुत अध्ययन अवश्य करना चाहिए, ताकि समाज को विवेकशील नागरिक प्राप्त होते रहें, तभी समाज में संतुलन बना रह सकेगा।	
क	(क) एक शिक्षित व्यक्ति में समाज कल्याण हेतु किन बातों का होना आवश्यक है? (i) निर्बल की सहायता करना (ii) दूसरों के दुःख से दुःखी हो जाना (iii) दुःखियों के दुःख दूर करने का प्रयास करना (iv) उपरोक्त सभी (ख) 'शिक्षा भौतिक आकांक्षा की पूर्ति का साधन बनती जा रही है' पंक्ति का क्या आशय है? (i) व्यावसायिक शिक्षा मनुष्य को सभी सुविधाएँ उपलब्ध कराती है (ii) व्यावसायिक शिक्षा वर्तमान में मात्र धन कमाने का साधन बनती जा रही है (iii) व्यावसायिक शिक्षा मनुष्य के लक्ष्य प्राप्ति का साधन बन रही है (iv) व्यावसायिक शिक्षा मानवीय मूल्यों का विस्तार करने का साधन है (ग) व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों को किसकी जानकारी नहीं होती ? 1. राजनीतिक व्यवस्था 2. सांस्कृतिक मूल्यों की 3. सामाजिक इतिहास की कूट (1) केवल कथन 1 (ii) केवल कथन 2 (iii) कथन 1 और 2 (iv) कथन 1, 2 और 3	01*03= 03 अंक
ख	व्यावसायिका कोर्स करने वाले छात्रों को किसका अध्ययन अवश्य करना चाहिए ?	01*01= 01 अंक
ग	(1) स्व से पर की ओर अग्रसर होने से क्या तात्पर्य है? (2) शिक्षा का विशुद्ध रोजगारोन्मुखी रूप क्या है? (3) विद्यार्थी में रचनात्मकता और परिपक्वता का सृजन कैसे होता है?	02*03= 06 अंक
प्रश्न-2	**दिए गए पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए-**	**08 अंक**
	निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल। बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय को सूल।। पढ़े संस्कृत जतन करि, पंडित भे विख्यात।	

	पै निज भाषा ज्ञान बिन, कहि न सकत इक बात।। अंग्रेजी पढ़ कै जदपि, सब गुन होत प्रबीन। पै निज भाषा ज्ञान बिन रहत हीन के हीन।। एक भाषा इक जीव मति सब घर के लोग। तबै बनत है सबन सों, मिटत मूढ़ता सोग।। और एक अति लाभ यह यामें प्रगट लखात। निज भाषा में कीजिए, जो विद्या की बात।।	
क	(क) मूर्खता और शोक का शमन करने की विशिष्टता से युक्त कौन होता है ? (i) ज्ञानी जन (ii) अज्ञानी जन (iii) अपनी भाषा (iv) अंग्रेजी भाषा (ख) कवि द्वारा निज भाषा में विद्या की बात को महत्व देने का क्या कारण हो सकता है ? (i) अन्य भाषा का बहिष्कार करना (ii) अपनी भाषा में संप्रेषण की सुगमता अधिक होती है (iii) अपनी भाषा को विश्व की सर्वश्रेष्ठ भाषा सिद्ध करना (iv) कठिन विषय अन्य भाषा में जल्दी समझ आता है (ग) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए। 1. मातृभाषा के ज्ञान के बिना मनुष्य अज्ञानी रहता है 2. मातृभाषा के ज्ञान से व्यक्ति की उन्नति संभव नहीं है 3. मातृभाषा के ज्ञान से शीघ्र विद्या प्राप्त हो जाती है कूट (i)केवल कथन 1 (ii) केवल कथन 2 (iii) कथन 1 और 3 (iv) कथन 3 और 2	01*03= 03 अंक
ख	संस्कृत पढ़ने वालों को कवि ने क्या माना है ?	01*01= 01 अंक
ग	(i) कवि ने अपनी भाषा की उन्नति के लिए क्या कहा है? (ii) अंग्रेजी पढ़ कै जदपि, सब गुण होतप्रबीनका तात्पर्य है।	02*02= 04 अंक
प्रश्न संख्या	**खंड-'ख' (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर) पाठ संख्या 3, 4, 5, 11, 12, तथा 13 पर आधारित**	**22 अंक**
प्रश्न-3	**दिए गए 03 अप्रत्याशित विषयों में से किसी 01 विषय पर आधारित लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए।** (क) एक ऐसी घटना, जिससे आपको जीवन का अमूल्य सबक मिला हो (ख) अपने मित्र की किसी एक बुरी आदत का वर्णन (ग) अपने माता-पिता से आपकी आशाएँ	**6×1 = 6**
प्रश्न-4	**निम्नलिखित 05 प्रश्नों में से किन्हीं 04 प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखें।** (i) जनसंचार का कौन-सा आधुनिक माध्यम सबसे पुराना है? इसकी शुरुआत कैसे हुई ? (ii) संपादकीय लेख किसे कहते हैं? (iii) विशेष रिपोर्टिंग तथा विशेषीकृत रिपोर्टिंग में क्या अंतर बताइए। (iv) नाट्य रूपांतरण करते समय कौन-कौन सी समस्याएँ आती हैं? (v) पूर्ण एवं अंशकालिक पत्रकार को स्पष्ट कीजिए।	**02*04= 08 अंक**

प्रश्न-5	**निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखें।** (क) रेडियो नाटकों का लेखन व संवादों का महत्त्व बताइए। **अथवा** ‘ मैली हो गई गंगा ’ पर फीचर लिखिए। (ख) समाचार लेखन में इंट्रो किसे कहते हैं ? इंट्रो लिखते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ? **अथवा** टी.वी. खबरों के विभिन्न चरणों के बारे में समझाइए।	**04*02= 08 अंक**
प्रश्न संख्या	**खंड ‘ग’ (आरोह भाग-2 एवं वितान भाग-2 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर)**	**40 अंक**
प्रश्न-6	**निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए-** जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिबर कर हीना॥ अस मम जिवन बंधु बिनु तोही। जौं जड़ दैव जिआवै मोही॥ जैहउँ अवध कवन मुहुँ लाई। नारि हेतु प्रिय भाई गँवाई॥ बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं। नारि हानि बिसेष छति नाहीं॥ (1) भाई के बिना जीवन की तुलना किससे की गई है ? (i) पंखों के बिना पक्षी से (ii) सुंड के बिना हाथी से (iii) मणि के बिना साँप से (iv) ये सभी (2) राम किसकी तुलना में अपने भाई को अधिक महत्त्व दे रहे हैं? (i) धन की (ii) पत्नी की (iii) राज्य की (iv) पुत्र की (3) राम को लक्ष्मण के बिना अयोध्या जाने में क्या सहना पड़ेगा ? (i) विषाद (ii) ग्लानि (iii) आमोद (iv) कटु वचन (4) निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए। कथन (A) श्री राम संसार में अपने इस अपयश से अधिक दुखी हैं, कि राम ने स्त्री के मोह में अपने भाई को दाँव पर लगा दिया। कारण (R) भाई के वियोग जैसे दुख से बढ़कर स्त्री की हानि जैसा दुःख भी नहीं है। (i) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है। (ii) कथन (A) गलत है. कारण (R) सही है। (iii) कथन (A) और कारण (R) दोनी सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है। (iv) कथन (A) और कारण (2) दोनों सही है तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है। (5) ‘ नारि हानि बिसेष छति नाहीं ’ पंक्ति में कौन-सा भाव व्यक्त हुआ है? (i) भाई के वियोग से उत्पन्न कष्ट का (ii) भातृप्रेम की समाप्ति का (iii) पत्नी के वियोग से उत्पन्न कष्ट का (iv) हर्ष का	**5×1 = 5**

प्रश्न-7	**काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखितप्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए-** (i)दिन जल्दी-जल्दी ढलता है, में पक्षी तो लौटने को विकल है, पर कवि में उत्साह नहीं है। ऐसा क्यों? (ii)‘कैमरे में बंद अपाहिज’ में निहित क्रूरता को उजागर कीजिए। (iii)‘कवितावली’ के आधार पर पुष्टि कीजिए कि तुलसी को अपने समय की आर्थिक-सामाजिक समस्याओं की जानकारी थी।	**03*02= 06 अंक**
प्रश्न-8	**काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए-** (i)पतंगों के साथ-साथ वे भी उड़ रहे हैं – बच्चों का उड़ान से कैसा संबंध बनता है? (ii)बादल राग’ कविता में कवि ने अट्टालिकाओं को आतंक-भवन क्यों कहा गया है? (iii)‘शमशेर की कविता गाँव की सुबह का जीवंत चित्रण है।’-पुष्टि कीजिए।	**02*02= 04 अंक**
प्रश्न-9	**निम्नलिखित पठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए-** फिर जीजी बोली, “देख, तू तो अभी से पढ़-लिख गया है। मैंने तो गाँव के मदरसे का भी मुँह नहीं देखा। पर एक बात देखी है कि अगर तीस-चालीस मन गेहूँ उगाना है तो किसान पाँच-छह सेर अच्छा गेहूँ अपने पास से लेकर ज़मीन में क्यारियाँ बना कर फेंक देता है। उसे बुवाई कहते हैं। यह जो सूखे में हम अपने घर का पानी इन पर फेंकते हैं; वह भी बुवाई है। यह पानी गली में बोएँगे तो सारे शहर, कस्बा, गाँव पर पानी वाले बादलों की फ़सल आ जाएगी। हम बीज बनाकर पानी देते हैं, फिर काले मेघों से पानी माँगते हैं। सब ऋषि-मुनि कह गए हैं कि पहले खुद दो तब देवता तुम्हें चौगुना-अठगुना करके लौटाएँगे। भइया, यह तो हर आदमी का आचरण है, जिससे सबका आचरण बनता है। यथा राजा तथा प्रजा सिर्फ यही सच नहीं है। सच यह भी है कि यथा प्रजा तथा राजा। यही तो गांधी जी महाराज कहते हैं।” (i) बुवाई के लिए किसान किस प्रकार से श्रम करता है ? (क) ज़मीन की निराई, गुड़ाई करना (ख) हल चलाना व क्यारियाँ बनाना (ग) बीज बोना (घ) उपर्युक्त सभी। (ii) त्याग की महत्ता को किसने बताया था ? (क) ऋषि-मुनियों ने (ख) इंदर सेना ने (ग) लेखक ने (iii) इंदर सेना पर पानी फेंकना जीजी के अनुसार क्या है ? (क) पानी की बर्बादी (ख) पानी की बुवाई (ग) अंधविश्वास (घ) पानी का विसर्जन। (iv) निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए- कथन (A): जीजी ने अपने आचरण संबंधी बात के समर्थन में गांधी जी का नाम लिया। कारण (R): क्योंकि गाँधी-जी सत्य का समर्थन करते थे। (क) कथन (A) सही है तथा कारण (R) गलत है। (ख) कथन (A) गलत है तथा कारण (R) सही है। (ग) कथन (A) सही है तथा कारण (R) कथन की सही व्याख्या करता है। (घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।	**5×1 = 5**

	(v) गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए (I) जीजी किसान के उदाहरण द्वारा यह सिद्ध करना चाहती है कि इंदर सेना पर जल समर्पित करना होगा। (II) जीजी किसान के उदाहरण द्वारा यह सिद्ध करना चाहती है कि खेती के लिए हल आवश्यक है। (III) खेती का कार्य वर्षा पर पूरी तरह निर्भर होता है। उपरिलिखित कथनों में से कौन-सा / कौन-से सही है/ हैं? (क) केवल I (ख) केवल II (ग) केवल III (घ) I और III	
प्रश्न-10	**गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखितप्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए-** (i)जीजी ने इंदर सेना पर पानी फेंके जाने को किस तरह सही ठहराया? (ii)“श्रम विभाजन की दृष्टि से भी जाति-प्रथा गंभीर दोषों से युक्त है।” स्पष्ट करें। (iii)लुट्टन पहलवान ने ऐसा क्यों कहा होगा कि मेरा गुरु कोई पहलवान नहीं, यही ढोल है?	**03*02= 06 अंक**
प्रश्न-11	**गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखितप्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए-** (i)भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती कैसे हो गई? (ii)बाज़ार का जादू क्या है? उसके चढ़ने-उतरने का मनुष्य पर क्या प्रभाव पड़ता है? ‘बाज़ार दर्शन’ पाठ के आधार पर उत्तर लिखिए। (iii)शिरीष को ‘अद्भुत अवधूत’ क्यों कहा गया है?	**02*02= 04 अंक**
प्रश्न-12	**वितान भाग-2 के पाठों पर आधारित निम्नलिखितप्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए-** (i)यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती है, लेकिन यशोधर बाबू अतीत में जीता है। ऐसा क्यों? स्पष्ट करें। (ii)जूझ’ कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि पढ़ाई-लिखाई के संबंध में लेखक और दत्ताजी राव का रवैया सही था या लेखक के पिता का? तर्क सहित उत्तर दें। (iii)पर्यटक मुअनजो-दड़ो में क्या-क्या देख सकते हैं? ‘अतीत में दबे पाँव’ पाठ के आधार पर वर्णन कीजिए।	**05*02= 10 अंक**

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 2025-26

उत्तर संकेत
(सेट- 3)

कक्षा : XII **अधिकतम अंक : 80**
विषय : हिंदी आधार **समय : 3 घंटे**

	खंड-'क'	
प्रश्न संख्या	**अपठितबोध**	**अंक (18)**
प्रश्न-1	**निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए बहुविकल्पीय (03 प्रश्न), अतिलघूत्तरात्मक (01 प्रश्न) तथा लघूत्तरात्मक प्रश्नों (03 प्रश्न) के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर लिखिए।**	**10 अंक**
क	उत्तर:(iv) उपरोक्त सभी उत्तर:(ii) व्यावसायिक शिक्षा वर्तमान में मात्र धन कमाने का साधन बनती जा रही है उत्तर:(iv) कथन 1, 2 और 3	01*03= 03 अंक
ख	व्यावसायिक कोर्स करने वाले छात्रों को मानविकी विषय का अध्ययन अवश्य करना चाहिए।	01*01= 01 अंक
ग	(1) स्व से पर की ओर अग्रसर होने से तात्पर्य है परोपकार करना, निर्बल की सहायता करना, दुखियों के दुःख दूर करने काप्रयास करना, दूसरों के दूःख से दुःखी हो जाना और दूसरों के सुख से स्वयं सुख का अनुभव करना। (2) छात्र व्यावसायिक शिक्षा के अंधानुकरण से छात्र सैद्धांतिक शिक्षा से दूर होते जा रहे हैं, जिसके कारण रूस की क्रांति, अमेरिका क्रांति, समाजवाद, पूँजीवाद, राजनीतिक व्यवस्था, सांस्कृतिक मूल्यों आदि की सामान्य जानकारी भी व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों को नहीं है। यह शिक्षा का विशुद्ध रोजगारोन्मुखी रूप है। (3) विद्यार्थी में रचनात्मकता और परिपक्वता का सृजन इतिहास, साहित्य, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, दर्शनशास्त्र इत्यादि पढ़कर होता है। वह सदैव उच्च स्तर पर जीवनयापन करता है। वह एक विवेकशील नागरिक बनता है।	02*03= 06 अंक
प्रश्न-2	**दिए गए पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस परआधारित प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए-**	**08 अंक**
क	(क) उत्तर:(iii) अपनी भाषा (ख) उत्तर:(ii) अपनी भाषा में संप्रेषण की सुगमता अधिक होती है (ग) उत्तर:(iii) कथन 1 और 3	01*03= 03 अंक
ख	संस्कृत पढ़ने वालो को कवि ने वाणी विहिन पंडित माना है।	01*01= 01 अंक
ग	(i) कवि ने कहा है कि सब प्रकार की उन्नति का आधार अपनी भाषा (हिंदी) की उन्नति करना है। अपनी भाषा के ज्ञान के बिना हृदय का दुःख दूर नहीं हो सकता है। (ii) अंग्रेजी पढ़ कै जदपि, सब गुण होत प्रवीन का तात्पर्य है अंग्रेजी भाषा के माध्यम से आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की बातें सीखी जा सकती हैं, लेकिन जब तक हमें अपनी मातृभाषा का ज्ञान नहीं होगा हम छोटे ही रहेंगे। हम कभी उन्नति नहीं कर सकते।	02*02= 04 अंक

प्रश्न संख्या	खंड-'ख' (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर) पाठ संख्या 3, 4, 5, 11, 12, तथा 13 पर आधारित	22 अंक
प्रश्न-3	दिए गए 03 अप्रत्याशित विषयों में से किसी 01 विषय पर आधारित लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए। आरंभ – 1 अंक विषय वस्तु – 3 अंक प्रस्तुति – 1 अंक **भाषा - 1 अंक**	**6×1 = 6**
प्रश्न-4	**निम्नलिखित 05 प्रश्नों में से किन्हीं 04 प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखें।** (i) जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे पुराना माध्यम प्रिंट अर्थात् मुद्रण माध्यम है। इसकी शुरुआत चीन से हुई थी, परंतु आधुनिक छापेखाने का आविष्कार जर्मनी के गुटेनबर्ग ने किया था। यूरोप में पुनर्जागरण ' रेनेसां की शुरुआत में छापेखाने की एक महत्वपूर्ण भूमिका थी। भारत में पहला छापाखाना 1556 ई. में गोवा में खुला। इसे मिशनरियों ने धर्म प्रचार की पुस्तके छापने के लिए खोला था। (ii) संपादक द्वारा किसी प्रमुख घटना या समस्या पर लिखे गए विचारात्मक लेख को, जिसे संबंधित समाचार-पत्र की राय भी कहा जाता है. संपादकीय कहते हैं। संपादकीय किसी एक व्यक्ति का विचार या राय न होकर समग्र पत्र-समूह की राय होता है, इसलिए संपादकीय में संपादक अथवा लेखक का नाम नहीं लिखा जाता। (iii) 1. बीट रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता में उस क्षेत्र की जानकारीहोना पर्याप्त है, उसे सामान्य तौर पर खबरें ही लिखनी होती है 2.बीट कवर करने वाले रिपोर्टर को संवाददाता कहते हैं। विशेषीकृत रिपोर्टिंग विशेषीकृत रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता को सामान्य खबरों से आगे बढ़कर उस क्षेत्र से जुड़ी सूचनाओं का बारीकी सेविश्लेषण कर पाठकों के लिए उसका अर्थ स्पष्ट करना होता है। विशेषीकृत रिपोर्टिंग करने वाले रिपोर्टर को विशेष संवाददाताकहते हैं। (iv) नाट्य रूपांतरण करते समय अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जो निम्नलिखित हैं (i) सबसे प्रमुख समस्या कहानी के पात्रों के मनोभावों को कहानीकार द्वारा प्रस्तुत प्रसंगों अथवा मानसिक द्वंद्वों के नाटकीय प्रस्तुति मेंआती है। (ii) पात्रों के द्वंद्वों को अभिनय के अनुरूप बनाने में समस्या आती है। (iii) संवादों को नाटकीय रूप प्रदान करने में समस्या आती है। (iv) संगीत, ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था करने में समस्या होती है। (iii) कथानक को अभिनय के अनुरूप बनाने में समस्या होती है। (v) (1) पूर्णकालिक पत्रकार यह किसी समाचार संगठन में कार्य करने वाला नियमित वेतनभोगी कर्मचारी होता है। (ii) अंशकालिक पत्रकार इसे 'स्ट्रिंगर ' भी कहते है। यह किसी समाचार संगठन के लिए एक निश्चित मानदेय पर कार्य करता है।	**02*04= 08 अंक**
प्रश्न-5	**निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखें।** उत्तर (क) सिनेमा और रंगमंच की तरह ही रेडियो नाटक में भी चरित्र होते हैं। उनके आपसी संवाद होते हैं और इन्हीं संवादों के माध्यम से कहानी आगे बढ़ती है। रेडियो नाटक पूर्ण रूप से श्रव्य होते हैं, इसलिए इनका लेखन रंगमंच सिनेमा के लेखन की अपेक्षा मुश्किल व अलग होता है। रेडियो नाटक में सब कुछ संवादों व ध्वनि प्रभावों के माध्यम से ही संप्रेषित करना	**04*02= 08 अंक**

	होता है। इन नाटकों में मंच सज्जा, वस्त्र सज्जा, चेहरे की भाव-भंगिमाएँ आदि की जरूरत नहीं पड़ती, केवल संवाद से ही पात्रों के अंतर्द्वंद्व, परिचय व समाधान की जानकारी मिलती है। अतः रेडियो नाटक की सफलता व असफलता केवल 'आवाज़ ' पर ही आश्रित होती है, जैसे-चोट लगने पर 'आह' या 'ओह' की आवाज़ तथा किसी को दूर से बुलाने के लिए तेज आवाज़ का प्रयोग करना होता है। अथवा मैली हो गई गंगा वर्तमान युग में मानव को जहाँ असंख्य वरदान मिले हैं. वहीं कुछ अभिशाप भी मिले हैं या हूँ कहा जाए कि प्रगति की होड़ में मानव ने वरदानों का दुरुपयोग किया है। इसका जीता जागता उदाहरण है जल-प्रदूषण जिस पतित पावनी गंगा में स्नान कर लोग निर्मल होते थे, आज यह गंगा उनके स्नान के योग्य नहीं रह गई है। धार्मिक आस्था के चलते यदि नहा भी लिया जाए तो विभिन्न प्रकार के त्वचा रोग होने की आशंका बनी रहती है। इसका कारण है गंगा का प्रदूषित जल जो कल-कारखानों से निकले अवशिष्ट पदार्थ, हानिकारक रसायन, दूषित जल आदि से प्रदूषित होता है, यह एक ऐसी विकराल समस्या बन गई है, जिसका कोई समाधान नहीं दिखाई देता। शहर भर का टनों कचरा, दूषित पदार्थ, पशुओं की हड्डियाँ, राख, मिट्टी आदि अनेक वस्तुएँ गंगा में प्रवाहित कर दी जाती हैं। परिणामतः प्रदूषण के कारण गंगा का आकार और स्वच्छता दिनों-दिन घटती जा रही है। प्रत्येक वर्ष सरकारी योजनाओं के तहत गंगा स्वच्छीकरण अभियान के नाम पर लाखों-करोड़ों रुपया बाँटा जाता है। संबंधित विभाग उसका ब्यौरा भी पेश करते हैं, परंतु गंगा की हालत जैसी की तैसी बनी हुई है। यदि हम समय पर सचेत नहीं हुए, तो इसके परिणाम भयंकर रूप से सामने आएँगे। हम सबको जागरूक होकर गंगा को मैली होने से बचाने के लिए कृत-संकल्प होना होगा। (ख) इंट्रो (प्रस्तावना) समाचार का पहला अनुच्छेद होता है. जिसमें क्या हुआ? के प्रश्न का उत्तर दिया जा सकता है। यह मुख्य समाचार होता है, जो थोड़े शब्दों में पाठक को बताता है कि 'क्या घटना घटित हुई है?' इंट्रो को 'आमुख', 'मुखड़ा' तथा 'लीड भी कहा जाता है। इंट्रो लिखते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए (i) इंट्रो सारगर्भित, संक्षिप्त तथा ठोस होना चाहिए। (ii) समीक्षकों के अनुसार आमुख (इंट्रो) 30-35 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए। (iii) इसमें किंतु, परंतु, लेकिन जैसे शब्दों से बचना चाहिए, क्योंकि ये शब्द इंट्रो को अव्यवस्थित तथा अयथार्थपरक बना देते हैं। अथवा टीवी, प्रिंट, रेडियो आदि माध्यमों पर खबर देने का मूल आधार सबसे पहले सूचना देना होता है। टीवी द्वारा भी ये सूचनाएँ विभिन्न चरणों द्वारा दर्शकों तक पहुँचती हैं। ये चरण निम्नलिखित है (i) फ़्लैशबैक या ब्रेकिंग न्यूज इसमें कम-से-कम शब्दों में केवल सूचना के रूप में कोई बड़ी खबर तुरंत दर्शकों तक पहुँचाई जाती है। (ii) ड्राई एंकर इसके अंतर्गत एंकर खबर के बारे में दर्शकों को सीधे-सीधे बताता है कि कहाँ, क्या, कब और कैसे हुआ। (iii) फोन-इन इसमें रिपोर्टर घटनास्थल पर उपस्थित होता है और वहाँ से ज्यादा-से-ज्यादा जानकारियाँ दर्शकों को बताता है। (iv) एंकर-विजुअल जब घटना के दृश्य या विजुअल मिल जाते हैं, तब उन दृश्यों के आधार पर खबर लिखी जाती है, जो एंकर पढ़ता है। (v) एंकर-बाइट बाइट अर्थात् कथन का टेलीविजन पत्रकारिता में बड़ा महत्त्व है। (vi) लाइव किसी खबर का घटनास्थल से सीधा प्रसारण लाइव कहलाता है। (vii) एंकर-पैकेज पैकेज किसी भी खबर को संपूर्णता के साथ प्रस्तुत करने का एक माध्यम है।	
प्रश्न संख्या	**खंड 'ग' (आरोह भाग-2 एवं वितान भाग-2 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर)**	**40 अंक**
प्रश्न-6	**काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर -** (1) उत्तर:(iv) ये सभी (2) उत्तर:(ii) पत्नी की (3) उत्तर:(ii) ग्लानि	**5×1 = 5**

	(4) उत्तर:(iv) कथन (A) और कारण (2) दोनों सही है तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है। (5) उत्तर:(i) भाई के वियोग में उत्पन्न कष्ट का	
प्रश्न-7	**काव्य-खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए-** (i)उत्तर:इस कविता में पक्षी अपने घरों में लौटने को विकल है, परंतु कवि में उत्साह नहीं है। इसका कारण यह है कि पक्षियों के बच्चे उनको इंतज़ार कर रहे हैं। कवि अकेला है। उसकी प्रतीक्षा करने वाला कोई नहीं है। इसलिए उसके मन में घर जाने का कोई उत्साह नहीं है (ii)उत्तर:यह कविता मानवीय करुणा तो प्रस्तुत करती ही है साथ ही इस कविता में उन लोगों की बनावटी करुणा का वर्णन भी मिलता है जो दुख दरिद्रता को बेचकर यश प्राप्त करना चाहते हैं। एक अपाहिज व्यक्ति के साथ झूठी सहानुभूति जताकर उसकी करुणा का सौदा करना चाहते हैं। एक अपाहिज की करुणा को पैसे के लिए टी.वी. पर दर्शाना वास्तव में क्रूरता की चरमसीमा है। (iii)उत्तर:'कवितावली' में उद्धृत छंदों के अध्ययन से पता चलता है कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है। उन्होंने समकालीन समाज का यथार्थपरक चित्रण किया है। वे समाज के विभिन्न वर्गों का वर्णन करते हैं जो कई तरह के कार्य करके अपना निर्वाह करते हैं। तुलसी दास तो यहाँ तक बताते हैं कि पेट भरने के लिए लोग गलत-सही सभी कार्य करते हैं। उनके समय में भयंकर गरीबी व बेरोजगारी थी। गरीबी के कारण लोग अपनी संतानों तक को बेच देते थे। बेरोजगारी इतनी अधिक थी कि लोगों को भीख तक नहीं मिलती थी। दरिद्रता रूपी रावण ने हर तरफ हाहाकार मचा रखा था।	**03*02= 06 अंक**
प्रश्न-8	**काव्य-खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए-** (i)उत्तर:जिस तरह पतंग ऊपर और ऊपर उड़ती जाती है, ठीक उसी तरह बच्चों की आशाएँ भी बढ़ती जाती हैं। पतंगों के साथ साथ उनकी भावनाएँ भी उड़ती जाती हैं अर्थात् उनके मन में नई-नई इच्छाएँ और उमंगें आती हैं। वे भी आसमान की अनंत ऊँचाई तक पहुँच जाना चाहते हैं ताकि अपनी हर इच्छा पूरी कर सकें। (ii)उत्तर-'बादल राग' कविता में अट्टालिकाओं को आतंक-भवन इसलिए कहा गया है क्योंकि इन भवनों में शोषण के नए-नए तरीके खोजे जाते हैं। ये ऊँचे-ऊँचे भवन शोषण से लूटी गई संपत्ति के केंद्र होते हैं। (iii)उत्तर:कवि ने गाँव की सुबह का सुंदर चित्रण करने के लिए गतिशील बिंब-योजना की है। भोर के समय आकाश नीले शंख की तरह पवित्र लगता है। उसे राख से लिपे चौके के समान बताया गया है जो सुबह की नमी के कारण गीला लगता है। फिर वह लाल केसर से धोए हुए सिल-सा लगता है। कवि दूसरी उपमा स्लेट पर लाल खड़िया मलने से देता है। ये सारे उपमान ग्रामीण परिवेश से संबंधित हैं। आकाश के नीलेपन में जब सूर्य प्रकट होता है तो ऐसा लगता है जैसे नीले जल में किसी युवती का गोरा शरीर झिलमिला रहा है। सूर्य के उदय होते ही उषा का जादू समाप्त हो जाता है। ये सभी दृश्य एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। इनमें गतिशीलता है।	**02*02= 04 अंक**
प्रश्न-9	**निम्नलिखित पठित गद्यांशको ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए-** (i) (घ) उपर्युक्त सभी। (ii) (क) ऋषि-मुनियों ने (iii) (ख) पानी की बुवाई (iv) (ग) कथन (A) सही है तथा कारण (R) कथन की सही व्याख्या करता है। (v) (क) केवल I	**5×1 = 5**

प्रश्न-10	**गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए-** (i)उत्तर:यद्यपि लेखक बच्चों की टोली पर पानी फेंके जाने के विरुद्ध था लेकिन उसकी जीजी (दीदी) इस बात को सही मानती है। वह कहती है कि यह अंधविश्वास नहीं है। यदि हम इस सेना को पानी नहीं देंगे तो इंदर हमें कैसे पानी देगा अर्थात् वर्षा करेगा। यदि परमात्मा से कुछ लेना है तो पहले उसे कुछ देना सीखो। तभी परमात्मा खुश होकर मनुष्यों की इच्छाएँ पूरी करता है। (ii)उत्तर:लेखक कहता है कि श्रम विभाजन की दृष्टि से भी जाति-प्रथा दोषों से युक्त है। इस विषय में लेखक निम्नलिखित तर्क देता है – जातिप्रथा का श्रम विभाजन मनुष्य की इच्छा से नहीं होता। मनुष्य की व्यक्तिगत भावना तथा व्यक्तिगत रुचि का इसमें कोई स्थान अथवा महत्त्व नहीं रहता। जातिप्रथा के कारण मनुष्य में दुर्भावना से ग्रस्त रहकर टालू काम करने वे कम काम करने की भावना उत्पन्न होती जातिप्रथा के कारण श्रम विभाजन होने पर निम्न कार्य समझे जाने वाले कार्यों को करने वाले श्रमिक को भी हिंदू समाज घृणित व त्याज्य समझता है। (iii)उत्तर:पहलवान ने ढोल को अपना गुरु माना और एकलव्य की भाँति हमेशा उसी की आज्ञा का अनुकरण करता रहा। ढोल को ही उसने अपने बेटों का गुरु बनाकर शिक्षा दी कि सदा इसको मान देना। ढोल लेकर ही वह राज-दरबार से रुखसत हुआ। ढोल बजा-बजाकर ही उसने अपने अखाड़े में बच्चों-लड़कों को शिक्षा दी, कुश्ती के गुर सिखाए। ढोल से ही उसने गाँव वालों को भीषण दुख में भी संजीवनी शक्ति प्रदान की थी। ढोल के सहारे ही बेटों की मृत्यु का दुख पाँच दिन तक दिलेरी से सहन किया और अंत में वह भी मर गया। यह सब देखकर लगता है कि उसका ढोल उसके जीवन का संबल, जीवन-साथी ही था।	**03*02= 06 अंक**
प्रश्न-11	**गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखितप्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए-** (i)उत्तर:भक्तिन के आ जाने से महादेवी ने लगभग उन सभी संस्कारों को, क्रियाकलापों को अपना लिया जो देहातों में अपनाए जाते हैं। देहाती की हर वस्तु, घटना और वातावरण का प्रभाव महादेवी पर पड़ने लगा। वह भक्तिन से सब कुछ जान लेती थी ताकि किसी बात की जानकारी अधूरी न रह जाए। धोती साफ़ करना, सामान बांधना आदि बातें भक्तिन ने ही सिखाई थी। वैसे देहाती भाषा भी भक्तिन के आने के बाद ही महादेवी बोलने लगी। इन्हीं कारणों से महादेवी देहाती हो गई। (ii)उत्तर:बाजार की चमक-दमक व उसके आकर्षण में फँसकर व्यक्ति खरीददारी करता है तो यही बाजार का जादू है। बाजार का जादू मनुष्य पर तभी चलता है जब उसके पास धन होता है तथा वस्तुएँ खरीदने की निर्णय क्षमता नहीं होती। वह आराम वे अपनी शक्ति दिखाने के लिए निरर्थक चीजें खरीदता है। जब पैसे खत्म हो जाते हैं तब उसे पता चलता है कि आराम के नाम पर जो गैर जरूरी वस्तुएँ उसने खरीदी हैं, वे अशांति उत्पन्न करने वाली है। वह झल्लाता है, परंतु उसका अभिमान उसे तुष्ट करता है। (iii)उत्तर:लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत कहा है। अवधूत वह संन्यासी होता है जो विषय-वासनाओं से ऊपर उठ जाता है, सुख-दुख हर स्थिति में सहज भाव से प्रसन्न रहता है तथा फलता-फूलता है। वह कठिन परिस्थितियों में भी जीवन-रस बनाए रखता है। इसी तरह शिरीष का वृक्ष है। वह भयंकर गरमी, उमस, लू आदि के बीच सरस रहता है। वसंत में वह लहक उठता है तथा भादों मास तक फलता-फूलता रहता है। उसका पूरा शरीर फूलों से लदा रहता है। उमस से प्राण उबलता रहता है और लू से हृदय सूखता रहता है, तब भी शिरीष कालजयी अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता का मंत्र प्रचार करता रहता है, वह काल व समय को जीतकर लहलहाता रहता है।	**02*02= 04 अंक**
प्रश्न-12	**वितान भाग-2 के पाठों पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए-** (i)उत्तर:यशोधर बाबू बचपन से ही जिम्मेदारियों के बोझ से लद गए थे। बचपन में ही उनके माता-पिता का देहांत हो गया था। उनका पालन-पोषण उनकी विधवा बुआ ने किया। मैट्रिक होने के बाद वे दिल्ली आ गए तथा किशन दा जैसे कुंआरे के पास रहे। इस तरह वे सदैव उन लोगों के साथ रहे जिन्हें कभी परिवार का सुख नहीं मिला। वे सदैव पुराने लोगों के साथ रहे, पले, बढ़े। अत: उन परंपराओं को छोड़ नहीं सकते थे। उन पर किशन दा के सिद्धांतों का बहुत प्रभाव था। इन सब कारणों से यशोधर बाबू समय के साथ बदलने में असफल	**05*02= 10 अंक**

	रहते हैं। दूसरी तरफ, उनकी पत्नी पुराने संस्कारों की थीं। वे एक संयुक्त परिवार में आई थीं जहाँ उन्हें सुखद अनुभव हुआ। उनकी इच्छाएँ अतृप्त रहीं। वे मातृ सुलभ प्रेम के कारण अपनी संतानों का पक्ष लेती हैं और बेटी के अंगु एकपाई पहात हैं। वे बेयों के किसी मामले में दल नाहीं देता। इस प्रकर वे स्वायं को शीघ्र ही बदल लेती है। (ii)उत्तर:पढ़ाई-लिखाई के संबंध में लेखक और दत्ता जी राव का रवैया सही था। लेखक का दृष्टिकोण पढ़ाई के प्रति यथार्थवादी था। उसे पता था कि खेती से गुजारा नहीं होने वाला। पढ़ने से उसे कोई-न-कोई नौकरी अवश्य मिल जाएगी और गरीबी दूर हो जाएगी। वह सोचता भी है-पढ़ जाऊँगा तो नौकरी लग जाएगी, चार पैसे हाथ में रहेंगे, विठोबा आण्णा की तरह कुछ धंधा-कारोबार किया जा सकेगा। दत्ता जी राव का रवैया भी सही है। उन्होंने लेखक के पिता को धमकाया तथा लेखक को पाठशाला भिजवाया। यहाँ तक कि खुद खर्चा उठाने तक की धमकी लेखक के पिता को दी। इसके विपरीत, लेखक के पिता का रवैया एकदम अनुचित था। उसकी यह सोच, 'तेरे ऊपर पढ़ने का भूत सवार हुआ है। मुझे मालूम है बालिस्टर नहीं होने वाला है तू"-एकदम प्रतिगामी था। वह खेती के काम को ज्यादा बढ़िया समझता था तथा स्वयं ऐयाशी करने के लिए बच्चे की खेती में झोंकना चाहता था। (iii)उत्तर:पर्यटक मुअनजो-दड़ो में निम्नलिखित चीजें देख सकते हैं- बौद्ध स्तूप – मुअनजो-दड़ो में सबसे ऊँचे चबूतरे पर बड़ा बौद्ध स्तूप है। यह स्तूप मुअनजो-दड़ो के बिखरने के बाद बना था। 25 फुट ऊँचे चबूतरे पर बना है। इसमें भिक्षुओं के रहने के कमरे भी बने हैं। स्नानागार – यहाँ पर 40 फुट लंबा तथा 25 फुट चौड़ा कुंड बना हुआ है। यह सात फुट गहरा है। कुंड के उत्तर और दक्षिण से सीढ़ियाँ उतरती हैं। उत्तर में आठ स्नानागार एक पंक्ति में हैं। इसमें एक तरफ तीन कक्ष हैं। अजायबघर – यहाँ का अजायबघर छोटा ही है। यहाँ काला पड़ गया गेहूँ, ताँबे और काँसे के बर्तन, मुहरें, वाद्य, चाक पर बने विशाल मृद्भांड, दीये, ताँबे का आईना, दो पाटन वाली चक्की आदि रखे हैं।	

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र, 2025-26 (सेट- 4)

कक्षा : XII **अधिकतम अंक : 80**

विषय : हिंदी आधार **समय : 3 घंटे**